श्रेष्ठि-देवचन्द्र लालभाई-जैन पुस्तकोद्धारे-ग्रन्थाङ्कः १०२।

भवविरहाङ्क-श्रीहरिभद्राचार्य-विरचित-पञ्चाशकेषु

श्रीचान्द्रकुलगच्छीय-श्रीश्रीचन्द्रसूरि-शिष्य-आचार्यश्रीयशोदेवदृब्धा

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णिः।



सम्पादकौ—आगमोद्धारक श्रीमद् आनन्दसागरसूरीश्वरस्य अन्तेवासिनौ-श्रीकंचनविजय-क्षेमंकरसागरौ।

प्रकाशकः—सुरतवास्तव्य-श्रेष्ठि-देवचन्द्र- लालभाई-जैनपुस्तकोद्धारकोशस्य अवैतनिक-
कार्यवाहकः-मोतीचंद मगनभाई चोकसी।

वीरात् २४७८। विक्रम संवत् २००८। शाके १८७४। ख्रिस्ताब्द १९५२।

प्रथम संस्करणम्] निष्क्रयं सार्द्ध द्वयं रूप्यकम्। [प्रतयः ५००

इदं पुस्तकं भावनगर्यां श्रेष्ठि-देवचन्द-लालभाई-जैनपुस्तकोद्धारसंस्थाया अवैतनिककार्यवाहक-मोतीचंद-मगनभाई चोकसी इत्यनेन महोदय मुद्रणालये, दाणापीठ मुद्रणमन्दिरे शाह गुलाबचद लल्लुभाई-द्वारा मुद्रापितम् ।

Printed By Gulābchand Lallubhāi S'ha at the " Mahodaya Printing Press "
Dana Peetha, Bhāvnagar (Saurāshtra)

Published for Sheth Devchand Lālbhāi Jain Pustakoddhār Fund, at Sheth Devchand Lālbhāi Jain Dharma Shālā (S'ri Ratna Sāgar Jain Boarding House), Badekhān chakla, Gopi-purā, Surat, by the Hon Managing Trustee, Motichand Maganbhai Chokasi



श्रेष्ठी देवचन्द लालभाई जव्हेरी

जन्म १९०९ वैक्रमाब्दे कार्तिकशुक्लैकादश्यां (देवदीपावली-सोमवासरे) सूर्यपूरे.	निर्याणम् १९६२ वैक्रमाब्दे पौषकृष्णतृतीयायाम्(मकरसक्रान्ति-मदवासरे) मोहमयीनगर्याम्.

The Late Sheth Devchand Lalbhai Javeri.

Born 22nd Nov, 1852 A, D Surat, Died 13th January 1906 A D Bombay.

Shetha Devchand Lālbhāi Jaina Pustakoddhāra Fund Series No 102

Ādya(Shrāvaka–Dharma)Paṇchāshaka Chūrni.

By

Bhava–Virahānka—

S'RĪ HARİBHADRA SŪRI

With the Commentary (Chūrni) of

Āchārya S'RI Yashodeva SURI

Commentated in

Vikrama Samvat 1172] [Christian 1116

Vikrama Samvat 2008] Price Ra. 2-8-0 [Christian Era 1952

विषयसूचिः

विषयः	पृष्ठाङ्कः
मुखबन्धः	५-१०
उपोद्घात	११-१५
विषयानुक्रमः	१६-२०
शुद्धिपत्रकम्	२१
आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णिः	१-१५९
परिशिष्टं-१ प्रमाणानामकारादिक्रमः	१६०-१८२
,, २ सञ्ज्ञास्पष्टीकरणम्	१८३-१८४
,, ३ ग्रन्थानामकारादिक्रमः	१८५-१८६
,, ४ विशिष्टनाम्नामकारादिक्रमः	१८७-१९०
,, ५ दृष्टान्ताः	१९१-१९३

णमो वीलयिणं वीयरागायं ।

श्रेष्ठि देवचंद-लालभाई-जैन पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०२

आद्य(श्रावकधर्म)पंचाशकचूर्णि—

मुखबन्ध ।



" नमिऊण वद्धमाणं " ए पहेला चरणमां, वर्द्धमानस्वामिने नमस्कार करीने १४४४ ग्रन्थना प्रणेता ग्रंथकार याकिणी महत्तरासूनु " भवविरहांक " पादवडे स्वग्रन्थोने अंकित करनार आचार्य श्रीहरिभद्रसूरीश्वर " सावगधम्मं समासओ वुच्छं । " ए बीजा चरणथी श्रावकधर्मने सक्षेपथी कहीश, एम दर्शावे छे. एटले पूर्वे थयेला आचार्य भगवंतोए विस्तारथी श्रावकधर्म कह्यो होवा छतां पण पोते सरळताथी, श्रावको; श्रावकधर्मने समझीने आदरे ए ज हेतुने लक्ष्यमां राखीने " समासओ " सक्षेपथी कहेवा प्रयत्न आदरे छे. साधुधर्म अने श्रावकधर्म बेउ वर्गने सहेलाईथी समझी आचरवुं सहेलुं थई पडे एटला खातर ज श्रीमद् उमास्वाति वाचकवर्ये अने श्रीमद् हरिभद्रसूरीश्वरे आवा नाना प्रकारना विषयोवाळा नानां नानां घणां ' प्रकरणो ' रचीने जगत पर अर्थात् बेउ वर्ग पर महान् उपकार कर्यो छे. तेवुं ज आ पंचाशक ग्रन्थमांनुं एक ' पंचाशक ' प्रकरण ज छे.

चूर्णिकार श्रीमद् यशोदेवसूरीश्वर पण चूर्णिमां " उमासाइवायगेण " इत्यादि पाठथी संकितपणे ए ज प्रश्नने उपाडे छे के " श्रीउमास्वाति वाचके " श्रावकप्रज्ञप्तिमां " श्रावकधर्मने कह्यो छे तो पछी आ अन्य पंचाशक-प्रकरणनुं प्रयोजन शुं ? " एनो उत्तर पण चूर्णिकार श्रीयशोदेवसूरि " पुव्वायरिएहिं गंभीरवयणेहिं भणियाणं—इत्यादि पाठथी आपे छे के पूर्वाचार्योए गंभीर-वचनोथी-सहजमां न अवगाही शकाय तेवा वचनोथी-आ विषय स्पर्श्यो छे तेथी व्रत-अतिचार आदि विषयोमां मंदबुद्धि शिष्योने भावार्थ कष्टथी समजाय एम होवाथी सरळताथी समजाववा, सक्षेपथी अने स्पष्टपणे वर्णव्यो छे. " स्पष्ट अने सक्षेप शब्दोनो अर्थ एटलो ज होय छे के " बहु सहेलाईथी समजी शकाय, समजावी शकाय अने स्पष्टपणे समजवामां आवेलो होय तो आदरवामां, दुष्करपणुं या कठिनास वर्ताय नहि तथा उल्लासपूर्वक तेनुं परिशीलन थई शके. "

श्रावकधर्मना नाना प्रकारना विषयोने चर्चतो आ ग्रन्थ प्रकरणरूपे ' देशविरतिधर्मना अनुशीलन माटे ' ५० गाथामां ग्रन्थ-कारे पूर्ण कर्यो छे. " भवविरहांक " श्रीहरिभद्रसूरिजी " विक्रमना छट्ठा " सैकामां थयेला धारवामां आवे छे. चूर्णिकार श्रीयशोदेवसूरिए वि० स० ११७२ मां आ श्रावकधर्म उपर चूर्णि रची छे, ए चूर्णिकारे पोते ज आ वाक्योथी जणाव्युं छे:—

" नयणमुणिथाणुमाणे(११७२)काले विगयंमि विक्कमनिवाओ ॥ ४ ॥ "

श्रीमद् यशोदेवसूरि श्रीचान्द्रकुल गच्छना श्रीचन्द्रसूरिना शिष्य छे ए वस्तु पोते आ पंचाशकचूर्णिमां सिद्ध करी छे. तदुपरात पोते ज श्रीपाक्षिकसूत्र[1]-विवरणमां तेनी पुष्पिकामा आ प्रमाणे दर्शावे छे:—

१ पाक्षिकसूत्र-विवरण आ फंड तरफथी पूर्वे ग्रन्थाङ्क ४ तरीके प्रसिद्ध थयेल छे

" चान्द्रकुलांबरशशिनो भव्याम्बुजबोधनैकदिनपतयः। गुणगणरत्नसमुद्रा आसन् श्रीवीरगणिमिश्राः ॥ १ ॥ "

" श्रीचन्द्रसूरिनामा तेषां शिष्यो बभूव गुणराशिः ॥ ३ ॥ "

× × × × × × × × × × × ×

" श्रीचन्द्रनामसूरेः पादपङ्कजसेविना। दृब्धेयं प्रस्तुता वृत्तिः श्रीयशोदेवसूरिणा ॥ ५ ॥ "

तथा पाक्षिकसूत्र-विवरणनो वि० सं० ११८० नो समय आऽमुजब पोते नोंध्यो छेः—

" एकादशशतैरऽधिकैरशीत्यां (११८०) विक्रमादुगतेः । "

आ ग्रन्थनी प्रेसकोपी स्वय आगमोद्धारकसूरीश्वरे सुधारी हती. अने पोते ज शोधनादि कार्य पूर्ण करवाना हता, परंतु परमसौभागी ए गुरुवर्यनो काळधर्म थवाथी, गुरुदेवनी, अहोरत्त, लेश पण खेद धर्या विना पूर्ण सावधपणे वैयावच्चादि करनार, सहयोगी श्रीगुणसागरजी महाराजनी प्रेरणाथी, श्रीआगमोद्धारकसूरीश्वरना पट्टप्रभावक श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरनी आज्ञावडे श्रीमत्कंचनविजयजी महाराज अने श्रीक्षेमंकरसागरजी महाराजे आ ग्रन्थनुं पूर्णपणे सम्पादन अने सशोधन करी आप्युं छे, जे बदल अमो ट्रस्टीओ एओ त्रणे गुरुवर्योनो जेटलो गुणानुवाद करीए ए ओछो ज छे. तदुपरांत विविध परिशिष्टो माटे पण एओश्रीओए खूब जहेमत उठावी पूर्ण करी आप्यां छे. सौम्यमूर्त्तिसमा पुण्यप्रभावक श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरना तो हंमेश माटे अमो ऋणी ज गणाइये.

चूर्णिकार श्रीमद् यशोदेवसूरीश्वर पण चूर्णिमां " उमासाइवायगेण " इत्यादि पाठथी सकितपणे ए ज प्रश्नने उपाडे छे के " श्रीउमास्वाति वाचके " श्रावकप्रज्ञप्तिमां " श्रावकधर्मने कह्यो छे तो पछी आ अन्य पंचाशक-प्रकरणनुं प्रयोजन शुं ? " एनो उत्तर पण चूर्णिकार श्रीयशोदेवसूरि " पुव्वायरिएहिं गंभीरवयणेहिं भणियाणं—इत्यादि पाठथी आपे छे के पूर्वाचार्योए गंभीर-वचनोथी-सहजमां न अवगाही शकाय तेवा वचनोथी-आ विषय स्पर्श्यो छे तेथी व्रत-अतिचार आदि विषयोमां मंदबुद्धि शिष्योने भावार्थ कष्टथी समजाय एम होवाथी सरळताथी समजाववा, सक्षेपथी अने स्पष्टपणे वर्णव्यो छे. " स्पष्ट अने सक्षेप शब्दोनो अर्थ एटलो ज होय छे के " बहु सहेलाईथी समजी शकाय, समजावी शकाय अने स्पष्टपणे समजवामां आवेलो होय तो आदरवामां, दुष्करपणुं या कठिनास वर्ताय नहि तथा उल्लासपूर्वक तेनुं परिशीलन थई शके. "

श्रावकधर्मना नाना प्रकारना विषयोने चर्चतो आ ग्रन्थ प्रकरणरूपे ' देशविरतिधर्मना अनुशीलन माटे ' ५० गाथामां ग्रन्थकारे पूर्ण कर्यो छे. " भवविरहांक " श्रीहरिभद्रसूरिजी " विक्रमना छट्ठा " सैकामा थयेला धारवामां आवे छे. चूर्णिकार श्रीयशोदेवसूरिए वि० स० ११७२ मां आ श्रावकधर्म उपर चूर्णि रची छे, ए चूर्णिकारे पोते ज आ वाक्योथी जणाव्युं छेः—

" नयणमुणिथाणुमाणे(११७२)काले विगयंमि विक्कमनिवाओ ॥ ४ ॥ "

श्रीमद् यशोदेवसूरि श्रीचान्द्रकुल गच्छना श्रीचन्द्रसूरिना शिष्य छे ए वस्तु पोते आ पंचाशकचूर्णिमां सिद्ध करी छे. तदुपरात पोते ज श्रीपाक्षिकसूत्र[1]-विवरणमां तेनी पुष्पिकामा आ प्रमाणे दर्शावे छेः—

[1] पाक्षिकसूत्र-विवरण आ फढ तरफथी पूर्वे ग्रन्थाङ्क ४ तरीके प्रसिद्ध थयेल छे

" चान्द्रकुलांबरशशिनो भव्याम्बुजबोधनैकदिनपतयः। गुणगणरत्नसमुद्रा आसन् श्रीवीरगणिमिश्राः ॥ १ ॥ "

" श्रीचन्द्रसूरिनामा तेषां शिष्यो बभूव गुणराशिः ॥ ३ ॥ "

× × × × × × × × × × × ×

" श्रीचन्द्रनामसूरेः पादपङ्कजसेविना। दृब्धेयं प्रस्तुता वृत्तिः श्रीयशोदेवसूरिणा ॥ ५ ॥ "

तथा पाक्षिकसूत्र-विवरणनो वि० सं० ११८० नो समय आऽमुजब पोते नोंध्यो छेः—

" एकादशशतैरऽधिकैरशीत्यां (११८०) विक्रमादुगतेः । "

आ ग्रन्थनी प्रेसकोपी स्वय आगमोद्धारकसूरीश्वरे सुधारी हती. अने पोते ज शोधनादि कार्य पूर्ण करवाना हता, परंतु परम-सौभागी ए गुरुवर्यनो काळधर्म थवाथी, गुरुदेवनी, अहोरत्त, लेश पण खेद धर्या विना पूर्ण सावधपणे वैयावच्चादि करनार, सहयोगी श्रीगुणसागरजी महाराजनी प्रेरणाथी, श्रीआगमोद्धारकसूरीश्वरना पट्टप्रभावक श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरनी आज्ञावडे श्रीमत्कंचन-विजयजी महाराज अने श्रीक्षेमंकरसागरजी महाराजे आ ग्रन्थनुं पूर्णपणे सम्पादन अने संशोधन करी आप्यु छे, जे बदल अमो ट्रस्टीओ एओ त्रणे गुरुवर्योनो जेटलो गुणानुवाद करीए ए ओछो ज छे. तदुपरात विविध परिशिष्टो माटे पण एओश्रीओए खूब जहेमत उठावी पूर्ण करी आप्यां छे. सौम्यमूर्त्तिमना पुण्यप्रभावक श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरना तो हंमेश माटे अमो ऋणी ज गणाइये.

केमके, श्रीआगमोद्धारकजीना समयना अधूरा कार्यो एओश्रीनी प्रेरणा, आज्ञा अने पुणीत–द्रष्टिवडे ज पूर्ण करवा हसो भाग्यशाली थया छीए.

श्रीमद् आगमोद्धारकसूरीश्वरे स्वहस्ते प्रेसकोपीमां घणे स्थाने पंक्तिओनी पंक्तिओ त्रूटक त्रूटक सुधारी हती, पण एक स्थळे–आना छापेला पाना ६२ नी अंदर अढी पंक्तिओ एक ज स्थळे होवाथी अमोए ते हस्ताक्षरनी यादि अने जाळवणी बदल छायावींनु––लाईन ब्लॉक करावी मूक्यो छे, ते अभ्यासी अने सशोधकवर्गे जोई लेवा तस्दी लेवी.

पूर्वलां कोई अशुभना उदयथी आगमोद्धारकसूरीश्वरनी त्रण त्रण वर्षनी मांदगी, अने तेमां पण केटलीक वखत गंभीररूप धारण करनार रोगना उछाळा होवा छतां पण पोते हाथमांथी लेखिनी हेठी मूकी नथी एनो आ सतत पूरावो छे. पोताना स्वरचित ग्रन्थो रचवाना प्रयासो उपरांत, आवी कोपीओ शोधी आपवा माटे गंभीर–मांदगीमांये ओठींगण लीधा विना एक ज दृष्टिये दत्तचित्ते सतत श्रुतनुं सान्निध्य आराधन करवुं ए कोई ए गुरुदेवनो अजब पुन्यप्रभाव! अजब साधना! अने अजय पुण्य सौभाग्य–योग ज लेखाय!

एओश्रीए पाना ६२ मां जे पंक्ति सुधारी छे अने जे आगमोद्धारकसूरीश्वरजीना हस्ताक्षरना ब्लोकथी मूकी छे ते पंक्तिओ आ मुजबनी छेः—

" भवंति, सिक्खगावि सागारियचिकाउं पुढो भुंजाविज्जंति, तहा सपायच्छिचा आवण्णं पायच्छित्ता, ते सह न भुंजंति, जओ तेसिं सबलं चारित्तं भवइ, सबलचारित्तेहिं सह न भुंजिज्जइ, तहा बाला वुड्डा य असहत्ति–

काउं पढममेव भुंजंति, ततो तेऽवि एगागिणो ”

ग्रन्थकार श्रीमद्धरिभद्रसूरीश्वरे अंतिम श्लोकना अंतिम चरणोमां “ देशविरति ” धर्मनुं (श्रावकधर्मनुं) परिपालन करतां “ सर्वविरति अथवा चारित्रधर्मनुं” परिणाम केवी रीते आत्मामां जन्मे या ऊपजे ते अतिस्पष्ट शब्दोथी वर्णवी ग्रन्थने संकेली लीधो छे. ते आ प्रमाणेः—“ भवविरहबीय भूयो जायइ चारित्तपरिणामो ॥ ५० ॥ ” साथोसाथ ग्रन्थकारे पोतानुं स्पष्ट नाम-निर्देश न करतां “ भवविरह ” शब्द सूचवी, भविजीवोने चेतव्या पण छे के अजर–अमर–अभयपद माटे ‘संवेगरसायण जेवो’ बीजो कोई मार्ग ज नथी.

शेठ देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फडमांथी आ “ देशविरतिधर्म अथवा श्रावकधर्मना ” परिशीलनने प्रतिपादन करतो आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णि नामनो ग्रन्थ “ अंक १०२ ” तरीके प्रसिद्ध करतां परम आह्लाद अनुभवीये छीए.

“ जिणवयणमेव सुणंतो सावगो होई ” जिनेश्वरदेवोना वचनोने सांभळे, विचारे अने परलोकना हितसंबंधे आदरे ए श्रावक बने, थाय, कहेवाय. श्रावकधर्मना लक्षणोमां पण असढभाव, सढभाव, सम्यक्त्व, असम्यक्त्व आदि विविध प्रकारना भेदो स्याद्वाददृष्टिए ग्रन्थकारोए वर्णवेलां छे. तथा संसारना निस्तार माटे; श्रावकधर्म अने साधुधर्म उपर पूर्वाचार्योए भविजनोना हित माटे अनेक ग्रन्थो योज्या छे.

पण, आवा ' सावगधम्मउवयेस ', ' देसविरइधम्मउवयेस ' अने ' यति–साहू–मुनि–महाव्रत–चारित्तधम्मउवयेस ' तथा ' सव्वविरइधम्मउवयेस 'ना सर्व ग्रन्थो, जेने आजे जरामात्र पण श्रावकवर्ग या ऊगतो नवीन साधुवर्ग स्पर्शी शके नहि एवी, पाइय–प्राकृत–मागधी–अर्धमागधी भाषाओमां कंडारेला ज रह्यां छे. ससारनिस्तारना अभिलाषी श्रावक अने यतिवर्ग माटे आवा ग्रन्थोनु गुजराती या हिन्दीभाषामां सपूर्णपणे रूपांतर आजे थवुं ज जोइए एम मारुं हृदय पोकारी रह्युं छे.

आजना सर्वभक्षी तांडवकाळमां आवुं कार्य कोई एक बे व्यक्ति ज करी शके एवो सभव तो घणो ज ओछो छे. परंतु जे जे उपाश्रय आदि स्थानोमां ज्ञानखातामां खर्चवानुं द्रव्य एकत्र थयुं होय ते ते स्थानना अधिकारीओ, थोडीक; स्वयं स्थाननी मूर्च्छा ओछी करीने, आवा रूपांतरो माटे एक इलायदुं ट्रस्ट फंड स्थापी ते द्वारा योग्य ज्ञानीओ पासे रूपांतर करावी प्रसिद्ध करे तो घणा भविजीवोने लाभ थवानो पूरेपूरो संभव छे एवुं मारुं नम्रपणे मानवुं छे ज.

वि० स० २००८
फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी,
सोमवार
मुंबइ ता १० मी मार्च १९५२.

भवदीय
मोतीचंद मगनभाई चोकसी
मानार्ह मेनेजींग ट्रस्टी
पोते अने अन्य ट्रस्टीओ वती.

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णेरुपोद्घातः ।



णमो वीयरायाणं । विदन्तु विद्वासः-अयं ग्रन्थ आद्यपञ्चाशकचूर्णि । भवविरहाङ्कलाञ्छितग्रन्थप्रणेतृभिः श्रीहरिभद्रसूरिवरैरेकोनविंशति-पञ्चाशकरूपश्रीपञ्चाशकप्रकरणं ग्रथितम् । प्रत्येकेषु पञ्चाशकेषु पञ्चाशत्पञ्चाशद्गाथा । अतोऽस्य पञ्चाशकमिति नाम । तस्मादस्य पञ्चाशकस्यापि पञ्चाशद्गाथा । श्रीअभयदेवसूरिभिः समस्तपञ्चाशकस्य वृत्तिर्विहिता । समूला सा वृत्तिः प्राक् श्रीआगमोद्धारकैर्द्वि. सपादिता । तन्मध्यगतमिदमाद्यपञ्चाशकम् । एतस्मिन् पञ्चाशके श्रावकधर्मं वक्तुं प्रतिज्ञातत्वादस्य पञ्चाशकस्य श्रावकधर्मपञ्चाशकमित्यप्यभिधानं सुप्रथितम् । एतस्य श्रीयशोदेवसूरिभिश्चूर्णिः प्रणीता ।

अतोऽस्मिन्नुपोद्घाते-चूर्णे. प्रणेतारः १, तेषा समयः २, तस्याः प्रयोजनं महत्त्वं च ३, तत्प्रतिपाद्या विषया ४ श्च निरूप्यन्ते ।

प्रणेतारः—" यद्यपि यशोदेवाभिधाना विपश्चित्प्रवरास्तस्यामेव शताब्द्या (द्वादशशताब्द्या) तस्यामेव विंशतिकायामनेके, एके पञ्चाशकेर्यापथिकीचैत्यवन्दनवन्दनचूर्णिप्रत्याख्यानविवरणकाराः श्रीयशोदेवा, अन्ये प्रमाणान्तरभावप्रणेतारो देवभद्रगुरुभ्रातरो यशोदेवाः, अपरे श्रीमुनिचन्द्रशिष्यमानदेवाचार्यशिष्या यशोदेवाः, परे तु पाक्षिकसूत्रवृत्त्यादिविधातारो यशोदेवा इत्येवमनेके संजाताः " इति नवपदवृहद्वृत्तेरुपोद्घाते (प० १) श्रीआगमोद्धारकैः प्रतिपादितम् । अतोऽत्र के चूर्णेः प्रणेतारो यशोदेवा इति प्रश्नः ? अतः तन्निराकरणे प्रशस्तिद्वयं विलोक्यते ।

तत्र–एकाऽस्य ग्रन्थस्यान्त्यपृष्ठीया (पृ० ८)–" मंदमईण हियत्थं एसा चुन्नी समुद्धिया सुगमा। सिरिचंदकुलनहगणमयंक-सिरिचंदसूरीणं ॥ १ ॥ सिरिवीरगणिमुणीसरकप्पूरसिद्धंतसिंधुसिस्साणं। सिस्सेहिं सिवमणेहिं सिरिमज्जसदेवसूरीहिं ॥ २ ॥" इति

द्वितीया च–श्रीपाक्षिकसूत्रविवरणान्त्यपत्रीया (प० ७८) " चान्द्रकुलाम्बरशशिनो भव्याम्बुजबोधनैकदिनपतयः। गुणगणरत्नसमुद्रा आसन् श्रीवीरगणिमिश्राः ॥ १ ॥" " श्रीचन्द्रसूरिनामा तेषां शिष्यो बभूव गुणराशिः। आनन्दितभव्यजन सगितसशुद्धसिद्धान्तः ॥ ३ ॥ कलिकालदुर्लभानां गुणरत्नाना (लब्धीनां यो) निधानमनवद्यम्। समयावदातबुद्धिस्तथापरो देवचन्द्रगणि. ॥ ४ ॥ श्री-चन्द्रनामसूरे पादपङ्कजसेविना। दृब्धेयं प्रस्तुता वृत्तिः श्रीयशोदेवसूरिणा ॥ ५ ॥" इति।

एतयोः प्रशस्त्योः चान्द्रकुलिनश्रीवीरगणिमिश्रशिष्यश्रीचन्द्रसूरिशिष्यश्रीयशोदेवसूरिवराः सन्ति, अतो आद्य(श्रावकधर्म)-पञ्चाशकचूर्णेः कर्तारः श्रीपाक्षिकसूत्रविवरणकाराश्च एक एव समभवन्, न भिन्नाः।

समयः—अस्याश्चूर्णेरन्तिमे पृष्ठे (१५८)–" नयणमुणिथाणुमाणे (११७२) काले विगयमि विक्कमनिवाओ।" इति, पाक्षिकसूत्रविवरणे च–"एकादशशतैरधिकैरशीत्याविक्रमाद्गतेः (११८०)।" इति दृश्यते। अत इत्थमनुमीयते यत् श्रीयशोदेवसूरिपादाना समयो द्वादशशताब्द्याम्। अत एवास्याश्च चूर्णे रचनासमयो वैक्रमं द्वासप्तत्यधिकैकादशशतम्।

चूर्णेः प्रयोजनमहत्त्वे—ननु कस्मादिदं श्रावकधर्मपञ्चाशकं, कस्माच्च तस्य चूर्णिः ?, उच्यते–उपदेष्टृभिर्मुख्यतयाऽनगारधर्मः प्रतिपादितव्यः, यदि तदङ्गीकर्तुं श्रोतारोऽशक्तास्तदाऽगारधर्मः प्रज्ञापितव्यः। तमुद्दिश्य श्रीउमास्वातिवाचकमुख्यैः श्रावकप्रज्ञप्तिर्निर्मिताऽस्ति। सा च बृहत्तरा, अतः इदं संक्षिप्तमगारधर्मनिरूपकमाद्यपञ्चाशकम्।

यद्यपि श्रीअभयदेवसूरिवरैः पञ्चाशकप्रकरणवृत्तावस्य (आद्यपञ्चाशकस्य) वृत्तिर्विहिता, सा च संस्कृतभाषानिबद्धा, तदपि श्रीआवश्यकचूर्णिगतदेशविरत्यधिकारगतां–" जारिसो जइ मेयो० ॥ १ ॥ " इति गाथामनुसृत्य यथा नवपदप्रकरणकारैर्नवद्वाराणि प्रतिपादितानि तथैव श्रीयशोदेवसूरिभिराद्यश्रावकधर्मपञ्चाशकस्य नवद्वारप्रतिपादनपुरस्सरमियं प्राकृतभाषया चूर्णिर्विहिता। इत्थं अस्याः महत्प्रमाणता, एते चूर्णेः प्रयोजनं महत्त्वं च।

चूर्णिकारैरादौ वृत्त्यनुसारित्वं ज्ञापयित्वाऽन्त्यभागे यानि शास्त्राणि चूर्णौ मुख्यतया गृहीतानि तान्यपि प्रदर्शितानि, तद्यथा–" पंचासगवित्तीओ आवस्सगसुत्तवित्तीचुन्नीणं। नवपयसावयपन्नत्तिमाइसत्थाण मज्झाओ ॥ १ ॥ " इति, अनेन चूर्णिकारः स्वस्य ग्रन्थानुसारित्वं ज्ञापयति।

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकस्य विषयाः—मंगलं, श्रावकधर्मकथनप्रतिज्ञा(गाथा० १), श्रावकशब्दार्थः (२), सम्यक्त्वमतिचाराश्च (३–६), द्वादशव्रतानि (७), पञ्चानुव्रतान्यतिचाराश्च (८–१८), त्रीणि गुणव्रतान्यतिचाराश्च (१९–२४), चत्वारि शिक्षाव्रतान्यतिचाराश्च (२५–३२), अतिचारवर्जनं (३३), उपायादि (३४–३८), व्रतानां कालमानं (३९), सलेखना (४०), श्राद्धनिवसनस्थानं (४१), श्राद्धदिनचर्या (४२–४९), भवविरहश्चे(५०)ति।

चूर्णेर्विषयाः—मंगलं चूर्णिकरणप्रतिज्ञा च (पृष्ठः १), सम्यक्त्वस्यैकादिप्रकाराः (९–१२), श्रद्धानादीनि (१३–१५), सम्यक्त्वलाभे दृष्टान्ताः (१६–१८), यतनाः (१९), राजाभियोगादीनि (२०–२१), दृष्टादौ सम्यक्त्वलाभे दृष्टान्ताः (२२–४३), अतिचाराः (४५–४९), द्वादशव्रतनामानि (४९–५१), पञ्चानामनुव्रताना स्वरूपमतिचाराश्च (५२–८१), त्रयाणां गुणव्रताना

तत्र—एकाऽस्य ग्रन्थस्यान्त्यपृष्ठीया (पृ० १५८ —" मंदमईण हियत्थं एसा चुन्नी समुद्धिया सुगमा । सिरिचंदकुलनहगणमयंक-सिरिचंदसूरीणं ॥ १ ॥ सिरिवीरगणिमुणीसरकप्पूरसिद्धंतसिंधुसिस्साणं । सिस्सेहिं सिवमणेहिं सिरिमज्ञसदेवसूरीहिं ॥ २ ॥ " इति

द्वितीया च—श्रीपाक्षिकसूत्रविवरणान्त्यपत्रीया (प० ७८) " चान्द्रकुलाम्बरशशिनो भव्याम्बुजबोधनैकदिनपतयः । गुणगणरत्नसमुद्रा आसन् श्रीवीरगणिमिश्राः ॥ १ ॥ " " श्रीचन्द्रसूरिनामा तेषां शिष्यो बभूव गुणराशिः । आनन्दितभव्यजन संशितसंशुद्धसिद्धान्तः ॥ ३ ॥ कलिकालदुर्लभानां गुणरत्नाना (लब्धीना यो) निधानमनवद्यम् । समयावदातबुद्धिस्तथापरो देवचन्द्रगणिः ॥ ४ ॥ श्री-चन्द्रनामसूरेः पादपङ्कजसेविना । दृब्धेयं प्रस्तुता वृत्तिः श्रीयशोदेवसूरिणा ॥ ५ ॥ " इति ।

एतयोः प्रशस्त्योः चान्द्रकुलिनश्रीवीरगणिमिश्रशिष्यश्रीचन्द्रसूरिशिष्यश्रीयशोदेवसूरिवराः सन्ति, अतो आद्य(श्रावकधर्म)-पञ्चाशकचूर्णेः कर्तारः श्रीपाक्षिकसूत्रविवरणकाराश्च एक एव समभवन् , न भिन्नाः ।

समयः—अस्याश्चूर्णेरन्तिमे पृष्ठे (१५८)-" नयणमुणिथाणुमाणे (११७२) काले विगयंमि विक्कमनिवाओ । " इति, पाक्षिकसूत्रविवरणे च—"एकादशशतैरधिकैरशीत्याविक्रमाद्गतेः (११८०)।" इति दृश्यते। अत इत्थमनुमीयते यत् श्रीयशोदेवसूरिपादाना समयो द्वादशशताब्द्याम् । अत एवास्याश्च चूर्णे रचनासमयो वैक्रमं द्वासप्तत्यधिकैकादशशतम् ।

चूर्णेः प्रयोजनमहत्त्वे—ननु कस्मादिदं श्रावकधर्मपञ्चाशकं, कस्माच्च तस्य चूर्णिः ?, उच्यते—उपदेष्टृभिर्मुख्यतयाऽनगारधर्मः

तोऽस्या मुद्रणमुचितम् । प्रतिः विरलेषु पुस्तकभांडागारेषु, अन्यच्च—अस्या प्राकृतभाषामयत्वम्, एतानि मुद्रापणे कारणानि, ग्रन्थग्रथनेन च

आगमादीना वाचनया आर्यस्कंदिलं, आगमादीनां मुद्रापणशिलारोपणताम्रपत्रारोहणेन देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणं,

भवविरहसूरिं स्मारकैः आगमोद्धारकाचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरैर्विक्रमस्य पादोनविंशतितमशताब्द्या 'श्रेष्ठीदेवचन्द्रलालभाई

जैन पुस्तकोद्धारकफंडे' त्याख्या संस्था संस्थापिता, तयाऽनेके ग्रंथाः प्रकाशिताः, तया संस्थया मुनिगुणसागरोपदेशेनैषा प्रकाशयितुं

निर्णीता, अस्या मुद्रणयोग्या प्रतिर्गुरुपादैः संशोधिताऽऽसीत्, तस्मादस्या मुद्रणं प्रारब्धम्; आगमोद्धारकाणामनन्यपट्टधरश्रुतस्थविर-

विद्यान्यासंग्याचार्यश्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरैर्दत्तसाहाय्याभ्यामस्माभ्यां संपादिता ।

अत्रोद्धृतानां प्रमाणानां यानि स्थलानि उपलब्धानि तानि प्रथमपरिशिष्टे (   ) इति सकेतपुरस्सरं दर्शितानि । केषांचित्प्र-

माणानां संस्कृतानां प्राकृतं कृतमित्यनुमीयावहे । केषुचित् प्रमाणेषु पाठान्तराण्यपि सन्ति । प्रमाण—संज्ञा—साक्षिग्रन्थ—विशिष्टनाम—

कथानां ज्ञापकानि परिशिष्टानि दर्शयित्वाऽयं ग्रन्थः शृङ्गारितः ।

अस्मिन् संपादने यदि क्षतयस्तर्हि विद्वत्सज्जनाः शोधयन्तु ज्ञापयन्तु चेत्यभ्यर्थना । श्रेयोऽर्थिन इदं ग्रन्थमुपयुञ्ज्यन्तु । इति शम् ।

इति निवेदकौ—

वीर २४७७ विक्रम २००७ मितेऽब्दे
जेष्ठासितत्रयोदश्याम् रविवासरे
दशाश्रीमालीधर्मशालाया
पुण्यपत्तने (पूनापत्तने)

श्रमणसेवकौ, आगमोद्धारकश्रीआनन्दसागरसूरीश्वराणां शिशू
अनानन्दौ कंचनविजयक्षेमंकरसागरौ ।

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णेर्विषयानुक्रमः ।

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	मगल, चूर्णिकरणप्रतिज्ञा च	१
१	अनुबंधादि, सूत्रस्वरूपञ्च	२–३
२	श्रावकशब्दार्थः, प्रधानश्रावकः	३–४
	सम्यक्त्वस्य मूलादिस्वरूपम्	४
	यादृशादीनि नव द्वाराणि	४–५
३	सम्यक्त्वस्य स्वरूपं गुणाश्च	५–६
४	सम्यग्दृष्टेर्लक्षणानि	६
५	व्रतस्य भजना	७
६	सम्यक्त्वदेशविरत्योरवसरः	७–८
	एकविधादि सम्यक्त्वभेदाः	९–१०
	दशविधसम्यक्त्वस्वरूपम्	१०–१३
	सम्यक्त्वस्य श्रद्धानलिंगोत्पत्ति-द्वाराणि	१३–१५
	'जह जायइ' दारं	१५
	सम्यक्त्वसामायिकलाभे पल्लगादि–दृष्टान्ताः	१६–१८
	देशविरतिलाभक्रमः	१८
	सम्यक्त्वस्य षडाकाराः	१८–२०
	आकारेषु कार्तिकादि-दृष्टान्ताः	२०–२२
	दृष्टाद्यष्टप्रकारेषु सम्यक्त्वलामे श्रेयांसादिदृष्टान्ताः	२२–२९
	अनुकम्पाद्येकादशप्रकारेषु सम्यक्त्वलामे वैतरणी-वैद्यादिदृष्टान्ताः	२९–४४
	दोषगुणयतनाद्वाराणि	४४–४५
	शंकादिपञ्चातिचारस्वरूपं, तेषु पेयापायकादिदृष्टान्ताश्च	४५–४९
७	श्राद्धस्य द्वादश व्रतानि	४९–५०
	स्थूलप्राणातिपातस्वरूपं, अष्टोत्तरशतभंगाश्च	५०–५१
८	विरतिविधिः	५१–५२
९	को धर्मदायकः ?	५२

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	प्राणातिपाते दोषगुण-यतना.	५३–५५
१०	अतिचाराः	५५–५७
११	मृषावादस्वरूपम्	५७–५८
	तत्पञ्चमेदाः	५८
	असत्यसत्ययोर्दोषगुणाः	५९
१२	स्थूलमृषावादविरतेरतिचाराः	५९–६१
१४	चतुर्भेदमदत्तम्	६१
	सप्तधा आलोकस्वरूपम्	६१–६३
१३	तृतीयानुव्रतस्वरूपम्	६४
	अदत्तविरताविरतयोर्दोषगुणयतनाः	६४–६६
१४	अतिचारा भावना च	६६–६८
	ब्रह्मचर्यव्रताधिकारः	६८
	अष्टादशधा ब्रह्मचर्यम्	६८
	चतुर्दशधा सप्राप्तकामः	६८–६९
	दशधाऽसंप्राप्तकामः	६९
१५	दशधाऽष्टादशधा च ब्रह्मचर्यस्वरूपम्	७०
	अष्टप्रकारं ब्रह्मचर्यम्	७०
	ब्रह्मचर्यव्रतस्वरूपम्	७०
	ब्रह्मचर्यस्य विषयः	७०–७१
	दोषगुणयतना	७१–७३
१६	अतिचाराः	७३–७५
	"कन्नाहल्लामेच्छा" इति किम् ?	७५–७६
	भावना	७६
१७	पञ्चमानुव्रतस्वरूपम्	७७
	अनिवृत्तनिवृत्तयोर्दोषगुणयतनाः	७७–७८
१८	अतिचारा भावना च	७८–८०
१९	प्रथमदिग्विरमणव्रतस्वरूपम्	८०
	दोषगुणयतनाः	८१
२०	अतिचाराः	८१–८२
२१	द्वितीयं गुणव्रतम्	८३
	भोगोपभोगयोर्व्याख्या:	८३
	अनन्तकायादिस्वरूपम्	८३

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	भोजनतः कर्मतश्च	
	द्वितीयगुणव्रतम्	८४–८५
	:	८५–८६
	दीना पञ्चदशाना	
		८६–८८
		८८
	गव्रतस्वरूपम्	८८
	तुर्थोऽनर्थदण्डः	८८
	परिहरन्तं गुणाः	८९
	तत् कथानकम्	८९–९१
	अतिचारा	९१–९२
	सामायिकाख्यं प्रथमगुणव्रत-स्वरूपम्	९३

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	द्विधा श्रावकः	९३
	सामायिकस्य स्थान विधिश्च	९३–९४
	श्रावकस्य सर्वसावद्यं त्रिधावर्जने प्रश्नः	९५
	श्रमणश्राद्धाना शिक्षादिदशभेदै-र्भेदः	९५–९७
	यतना	९७–९८
२६	अतिचारा भावना च	९८–९९
२७	देशावकाशिकव्रतस्वरूपम्	९९–१००
	तस्यावश्यकचूर्णिगतस्वरूपम्	१००
	यतना	१०१
२८	अतिचारा भावना च	१०१–१०२

गाथा	विषय.	पृष्ठ.
२९	पौषधव्रतस्वरूपम्	१०२
	तस्य चतुष्प्रकारता	१०२
	अव्यापारपौषधे सामायिकस्य नियमः	१०२
	पौषधग्रहणस्थानम्	१०३
	पौषधविधि.	१०३–१०४
	सामायिकसूत्रार्थः	१०४–१०५
	पौषधे दिनरात्रिचर्या	१०५–१०९
	संस्तारके चिंतनं	१०८
३०	अतिचारा भावना च	१०९–११०
३१	अतिथिसविभागस्वरूपं	१११
	अतिथिसविभागे विधिः	१११–११२
३२	अतिचारा भावना च	११२–११३

गाथा	विषय	पृष्ठ.
३३	अतिचारकथनप्रयोजनम्	११३
३४	सम्यक्त्वव्रतादीनामुपायग्रहण-प्रयत्नविषयाः	११४
३५	उद्यमे विरतिपरिणामोऽनुद्यमे पातश्च	११५
३६–३७	सम्यक्त्वादिस्थैर्यार्थमुपदेश	११६
३८	स्थैर्यस्य फलम्	११६–११७
३९	द्वादशव्रताना कालमानम्	११७
४०	सलेखना	११७
	ग्रामादिगमणे किं कर्तृत्वं	११८
	श्राद्धस्याभिग्रहाः	११८–११९
	श्राद्धस्यैकादशप्रतिमास्वरूपम्	११९–१२४

गाथा	विषय	पृष्ठ.
	सप्तसु प्रतिमासु मतांतरम्	१२४
	प्रतिमानां प्रयोजनम्	१२५
	श्रावकवर्णनम्	१२५–१२७
	भक्तप्रत्याख्यानविधिः	१२७
	संलेखनायाः कालमानं स्वरूपं च	१२८
	नागीतार्थपार्श्वेऽसंविग्नपार्श्वे चानशनम्	१२९
	गीतार्थपार्श्वेऽनशनम्	१२९
	अनशनकाले आचार्यस्यालोचयितव्यम्	१२९
	अनशनविधिः	१२९
	आलोचनाविधिः	१३०
	आलोचनायां गुणाः	१३१
	अनशनयोग्यं स्थानं	११२

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	निर्यापकाः (४८)	१३२
	संस्तारकविधिः	१३२
	कः स्वरूपः चरिमाहारः ?	१३२
	आहारे के गुणाः ?	१३२
	निर्यापकैः किं चिन्तितव्यम्	१३२
	अनशने का स्वरूपा निर्जरा	१३२
	सस्तारकस्वरूपं विधिश्च	१३३
	समाधावुदाहरणानि	१३३–१३४
	अर्हन्नकचरित्रम्	१३४–१३५
	संवेगनिर्वेदवचनैः समाधी	१३५–१३६
	परीषहपराजिते विधिः	१३६
	अनशनकारकस्य द्विधा चिह्नं	१३६

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	भोजनतः कर्मतश्च	
	द्वितीयगुणव्रतम्	८४–८५
२२	अतिचाराः	८५–८६
	इगालकर्मादीना पञ्चदशाना	
	वर्णनम्	८६–८८
	भावणा	८८
२३	तृतीयगुणव्रतस्वरूपम्	८८
	चतुर्थाऽनर्थदण्डः	८८
	परिहरन्तं गुणाः	८९
	तत् कथानकम्	८९–९१
२४	अतिचारा	९१–९२
२५	सामायिकाख्य प्रथमगुणव्रत-	
	स्वरूपम्	९३

गाथा	विषयः	पृष्ठः
	द्विधा श्रावकः	९३
	सामायिकस्य स्थान विधिश्च	९३–९४
	श्रावकस्य सर्वसावद्यं त्रिधावर्जने	
	प्रश्नः	९५
	श्रमणश्राद्धाना शिक्षादिदशभेदे-	
	भेदः	९५–९७
	यतना	९७–९८
२६	अतिचारा भावना च	९८–९९
२७	देशावकाशिकव्रतस्वरूपम्	
		९९–१००
	तस्यावश्यकचूर्णिगतस्वरूपम्	१००
	यतना	१०१
२८	अतिचारा भावना च	१०१–१०२

गाथा	विषय.	पृष्ठ.
२९	पौषधव्रतस्वरूपम्	१०२
	तस्य चतुष्प्रकारता	१०२
	अव्यापारपौषधे सामायिकस्य	
	नियमः	१०२
	पौषधग्रहणस्थानम्	१०३
	पौषधविधि.	१०३–१०४
	सामायिकसूत्रार्थः	१०४–१०५
	पौषधे दिनरात्रिचर्या	१०५–१०९
	संस्तारके चिंतनं	१०८
३०	अतिचारा भावना च	१०९–११०
३१	अतिथिसंविभागस्वरूपं	१११
	अतिथिसंविभागे विधिः	१११–११२
३२	अतिचारा भावना च	११२–११३



			पालओवमा०
	१३	जावइयग	जावइय
	१,१६,१	जाई०	जाइ०
१३	११	गइठिई०	गइठिइ०
१७	२	कम्मठिई०	कम्मठिइ०
१७	६	अईदीहा	अइदीहा
१७	१४	मेसज्जो०	मेसज्जो०
२०	१	तउसफालइ	तउसफलाइ
२१	८	साहू	सावओ साहू
२२	९	मणुभूए	मणुभूए
२६	६	०सरंतो	०सरंतो
३१	९	दिट्ठा	दिट्ठा
३३	१३	बधुकी	जवुकी
		ण्हायग०	ण्हाण०
५०	१३	चउराईया	चउराइया
५५	५	अइयमार	अइभार
६३	४	अच्छति	अच्छति
६५	५	०व०	०त०
६६	५	आई०	आइ०
८५	८	सयारेज्जा	संघारेज्जा
९८	१२	चिय	चिय
१००	३	न	०
१००	१४	इच्छाए	पच्छाए
१०३	१०	सामाइयम्मिव	सामाइयमिव
११०	३	०चारस्स भावना	०चारा भावना च
११३	६	जीवइय	जीवदयं
११३	७	धम्मो	धम्मो
,,	,,	वित्त	चित्त
१२३	९	मत्तपि	मत्तपि
१२४	७	जे इमे	जारिसे
१२९	४	अगीओ	अग्गीओ
१३१	३	जह–"	"जह
१३२	१२	विगइओ सव्व	नव विगइ सत्त
१३२	१४	०ती	०तीरे
१३६	३	सुइय	सुइय
,,	४	दुहयर	दुहपर
१५८	११	श्रावक	श्रावकधर्म
१५९	६	,,	,,
,,	७	लाला०	लाल०
१६०–१८०		पृष्टाङ्क	पृष्ठाङ्क.
१६०	२	श्रावक	श्रावकधर्म



गाथा	विषयः	पृष्ठः
	भक्तप्रत्याख्यानस्यानिर्वाहे विधिः	१३७–१३८
	पञ्चधा क्लिष्टभावना	१३८–१३९
	इङ्गिनीमरणविधिः	१३९
	पादपोपगमनविधिः	१३९–१४०
	तत्र स्कन्दकोदाहरणम्	१४०–१४२
	धन्नाशालिभद्रादीनां चिंतनम्	१४२
	तद्वतोऽवंतिसुकुमालदृष्टान्तः	१४२–१४३
	पादपोपगमने शक्तेरभावः	१४३
	अनशने श्रावकस्य सामाचारी	१४३–१४४
	संलेखनाया अतीचाराः	१४४–१४५

गा	विषयः	पृष्ठः
	अनशनदशायां भावनाः	१४५–१४६
४१	श्राद्धः कुत्र वसेत् ?	१४६
	चैत्यादिसानिध्यवसने गुणाः	१४६
४२–४५	श्राद्धदिनकृत्यानि	१४६–१५०
	साधुसमीपे चैत्यघरे वाऽऽगमश्रवण	१४८
	साधुश्राद्धानामवश्यकरणीयमावश्यकम्	१४९
४६	अब्रह्मविरति–मोहदुगच्छा–स्त्रीकलेवरविचाराः	१५०
४७	सुप्तप्रबुद्धे चिंतवनमधिगरणोपशम च	१५०

गाथा	विषयः	पृष्ठः
४८	धर्मेषु सदा चित्तस्थापनम्	१५१
	मनुष्यभवदुर्लभत्वे चुल्लक–पाशक–धान्य–द्यूत–रत्न–स्वप्न––चक्र––चर्म–युग––परमाणूनां दृष्टान्ताः	१५१–१५६
	दुर्लभमानुष्यत्वे कर्तव्यम्	१५६-१५७
	धर्मगुणाः	१५७
४९	धर्माचार्यादिषु चित्तस्थापने संवेगरसायणम्	१५७
५०	विधिरक्तस्य भवविरहः	१५८
	चूर्णौ गृहिताधाराः	१५८
	ग्रन्थकर्तुः प्रशस्तिः समयश्च	१५८



शुद्धिपत्रकम् ।

पृष्ठः	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
४	६	अहारो	आहारो
६	१	दवंति	दवति
८	३	पलिउवमा०	पलिओवमा०
८	१३	जावइयग	जावइय
११,१६,१		जाई०	जाइ०
१३	११	गइठिई०	गइठिइ०
१७	२	कम्मठिई०	कम्मठिइ०
१७	६	अईदीहा	अइदीहा
१७	१४	मेसज्जो०	मेसज्जो०
२०	१	तउसफालइ	तउसफलाइ
२१	८	साहू	सावओ साहू
२२	९	मणुभूए	अणुभूए
२६	६	०सरंतो	०सरंतो
३१	९	दिट्ठा	दिट्ठा
३३	१३	बधुकी	अबुकी

पृष्ठः	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
३५	७	वडेऽति	वडेति
३९	६	ण्हायण०	ण्हाण०
५०	१३	चउराईया	चउराइया
५५	५	अइयमार	अइमार
६३	४	अच्छति	अच्छति
६५	५	०व०	०त०
६६	५	आई०	आइ०
८५	८	सथारेज्जा	संथारेज्जा
९८	१२	चिय	चिय
१००	३	न	०
१००	१४	इच्छाए	पच्छाए
१०३	१०	सामाइयम्मिव	सामाइयमिव
११०	३	०चारस्य भावना	०चारा भावना च
११३	६	जीवद्दय	जीवदयं
११३	७	धम्मो	धम्मो

पृष्ठः	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः
,,	,,	वित्त	चित्त
१२३	९	मत्तपि	भत्तंपि
१२४	७	जे इमे	जारिसे
१२९	४	अगीओ	अग्गीओ
१३१	३	जह–"	"जह
१३२	१२	विगइओ सव्व	नव विगइ सत्त
१३२	१४	०ती	०तीरं
१३६	३	मुहय	मुहय
,,	४	दुहयर	दुहपर
१५८	११	श्रावक	श्रावकधर्म
१५९	६	,,	,,
,,	७	लाला०	लाल०
१६०–१८०		पृष्ठाङ्क	पृष्ठाङ्क
१६०	२	श्रावक	श्रावकधर्म

शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड तथा श्रीमती आगमोदयसमितिना हालमां मलता ग्रंथो.

आ उपरांत आगमोद्धारक आचार्य श्रीआनंदसागरसूरीश्वरजीनी दृष्टितले तैयार थयेली तथा केटलीक अवचूर्णिओ प्रेसमां छापवा गयेल छे.

समितिना:—

अंक.	नाम.	किं. रु.	अंक.	नाम.	किं. रु.
४५	भक्तामरस्तोत्र पादपूर्तिरूप काव्य (प्रथम विभाग टीका भाषांतर)	३–०–०	५५	नयादि(सप्तसूत्र)गाथाद्यकारादियुतो विषयानुक्रमः	२–०–०
४७	पंचसंग्रह–(टीकासह)	२–८–०	५६	आवश्यकसूत्र (मलयगिरिकृत टीकायुक्त पूर्वभाग)	४–०–०
५०	जीवसमासप्रकरण (सटीक)	१–८–०	५७	लोकप्रकाश–प्रथमविभाग (द्रव्यलोक सर्ग १ थी ११ भाषांतर)	३–८–०
५१	स्तुतिचतुर्विंशतिका (सचित्र श्रीशोभनमुनिकृत संस्कृत)	८–०–०	५९	चतुर्विंशतिका–जिनानंद स्तुति (सचित्र मेरुविजयकृत भाषांतर)	६–८–०
५२	स्तुतिचतुर्विंशतिका व ऐंद्रस्तुति (सचित्र कवि धनपालकृत)	६–०–०	६०	आवश्यकसूत्र (मलयगिरिकृत टीकायुक्त द्वितीयभाग) (त्रीजो संपूर्ण फंडमाथी छपायो छे)	२–८–०
५३	चतुर्विंशतिका (सचित्र श्रीबप्पभट्टिसूरिकृत भाषांतरयुक्त)	६–०–०	६१	लोकप्रकाश–द्वितीयविभाग (क्षेत्रलोक सर्ग १२ थी २० भाषा०)	३–०–०
५४	भक्तामरस्तोत्र पादपूर्तिरूप काव्य (द्वितीय विभाग टीका भाषांतरसह)	३–८–०			

फंडना:—

अंक.	नाम.	किं. रु.	अंक.	नाम.	किं. रु.
८५	आवश्यकसूत्र मलयगिरिकृत टीकायुक्त (तृतीयभाग.)	२–८–०	८८	प्रशमरतिप्रकरण (बृहद्गच्छीय श्रीहरिभद्रसूरिकृत विवरण-समेत वाचक उमास्वाति विरचित)	१–४–०
८६	लोकप्रकाशमूल चतुर्थ विभाग (२७ सर्गथी संपूर्णग्रन्थ)	१–०–०	८९	अध्यात्मकल्पद्रुम (रत्नचंद्रगणि व धनविजयगणिकृत टीकायुक्त)	३–०–०
८७	भरतेश्वर–बाहुबलिवृत्ति द्वितीयविभागः (संपूर्ण)	२–०–०			

९०	गौतमीय काव्य (रूपचद्रगणिकृत महाकाव्य)	१–८–०
९१	सटीक वैराग्यशतकादि प्रथपचक (व्याख्यान योग्य)	१–०–०
९२	श्रीअभिधानचिन्तामणिकोश	४–०–०
९३	जैनकुमारसभव	२–८–०
९४	सिद्धहेमशब्दानुशासन–बृहद्वृत्त्यवचूर्णी (नवपाद, अवचूर्णिकार–अमरचन्द)	५–०–०
९५	श्रीवीतरागस्तोत्र (अवचूर्णि, विवरण अने भाषांतर समेत)	३–०–०
९६	श्राद्धविधि (श्रावकोने दिनचर्यादिमा अति उपयोगी ग्रन्थ, गुजराती भाषांतर)	२–८–०
९७	पचप्रतिक्रमणसूत्र	१–४–०
९८	देवसीराईप्रतिक्रमणसूत्र	०-१२-०
९९	समणसूत्तादिअवचूरि	१–०–०
१००	वदनप्रतिक्रमणअवचूरि	१–८–०
१०१	अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोश प्रथम भाग	प्रेसमा
१०२	श्रावकधर्मपचाशक चूर्णि	२–८–०

प्राप्तिस्थान—

शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड.

गोपीपुरा, सुरत.

—' आजे ज मंगावो :—

पूर्व महर्षिओए शास्त्रसमुद्रनुं मंथन करी काढेलां रत्नोमांनां केटलांक रत्नो याने जैन–तत्त्वज्ञ

	नाम	रू. आ. पा.		नाम	रू. आ. पा		नाम.	रू आ० पा.
१	अगाकारादि	४–०–०	१७	प्रज्ञापनासूत्र टीका भा २ (हारि०)	२–८–०	३३	संसर्गगुणदोष	०–८–०
२	आगमीयसूक्तावली	२–४–०	१८	प्रवचनपरीक्षा भा १	६–०–०	३४	स्वाध्यायप्रकाश	०–५–०
३	आचारागचूर्णि	५–०–०	१९	,, ,, ,, २	४–०–०	३५	उपदेशरत्नाकर (सार्थ)	५–०–०
४	उपदेशमाळा याने पुष्पमाळा	६–०–०	२०	प्रव्रज्याविधान	२–८–०	३६	तत्त्वार्थकर्तृतन्मतनिर्णय	०-१०-०
५	उत्पादादिसिद्धि	२–८–०	२१	भवभावना भा २	३-१० ०	३७	पर्वदेशना (व्या सं.)	५–०–०
६	उपांगादि अनुक्रमादि	४–८–०	२२	,, छाया	०-१०-०	३८	पञ्चवस्तुभाषान्तर	०–८–०
७	कथाकोष	१–४–०	२३	भगवतीजी भा ३	४–०–०	३९	प्रवचनपरीक्षानी महत्ता	०–८–०
८	कल्पसमर्थन	०–८–०	२४	विशेषावश्यक भा २	६–०–०	४०	प्रशमरति (व्या स.)	५–०–०
९	कल्पकौमुदी	२–०–०	२५	श्राद्धदिनकृत्य ,, १	३-१२-०	४१	बृहत्सिद्धप्रमाव्याकरण	२–०–०
१०	कृष्णचरित्र	०-१०-०	२६	श्राद्धदिनकृत्य भा २	२–४–०	४२	मध्यम ,, ,, ,,	०-१०-०
११	दशवैकालिकसूत्र भाग १–२	१०–०–०	२७	श्रावकधर्मदेशना	०–६–०	४३	लघु ,, ,, लघुतमनामकोश	२–८–०
१२	नमस्कारमाहात्म्य	०–५–०	२८	श्रेणिकचरित्र	०–६–०	४४	सागर–समाधान भा २	३–०–०
१३	नवस्मरण गौतमरास	१–८–०	२९	साधर्मिकवात्सल्य	०–८–०	४५	स्थानांगसूत्र (व्यां. स.) भा. १	५–०–०
१४	पर्युषणादशशतक	०-१० ०	३०	सूयगडांगचूर्णि	५–०–०	४६	शासनजयपताका	२–०–०
१५	पचाशकप्रकरण	६–०–०	३१	सघाचारभाष्य	५–०–०	४७	आचारांगसूत्र (व्या. स)	५–०–०
१६	प्रज्ञापनासूत्र टीका भा १(हारि०)	२–०–०	३२	संस्कृतप्राचीनप्रकरण	० १२-०	४८	तात्त्विक–प्रश्नोत्तर (भा. १, गु.)	९–०–०

प्राप्तिस्थान —**श्रीजैनानंदपुस्तकालय, गोपीपुरा, सुरत.**

नमो वीतरागाय ॥

श्रेष्ठि–देवचन्द्र–लालभाई–जैन–पुस्तकोद्धार–ग्रन्थाङ्के—१०२

भवविरहाङ्कश्रीहरिभद्राचार्यरचितपंचाशकेष्वाद्यपंचाशकस्य

श्रीयशोदेवसूरिकृता चूर्णिः ।

(श्रावकधर्मपञ्चाशकचूर्णिः)



नमिय भुवणेकभाणुं णाणकिरणाहिभूयतिमिरभरं । भवियजणाणंदयरं अवियलपयमग्गपयडपयं ॥ १ ॥
आइमपंचासगपगरणस्स गिहिधम्मविहिपईवस्स । सिरिअभयदेवमुणिवइविरइयवित्तीऽणुसाराओ ॥ २ ॥
सत्थंतरसुत्ताण य नियनियभणियवठाणपत्ताणं । चुन्निं तुच्छमईणं वोच्छामि अणुग्गहट्ठाए ॥ ३ ॥ जुम्मं ॥

तत्थ ताव मंगलाभिधेयसंबंधपयोयणत्था आईए इमा गाहा—

नमिऊण वद्धमाणं सावगधम्म समासओ वुच्छं । सम्मत्ताई भावत्थसंगयं सुत्तनीईए ॥ १ ॥

तत्थ सग्गापवग्गहेउम्मि सेओभूयम्मि एयम्मि पगरणे पयट्टमाणाणं विग्घं संभवइत्ति तदुवसमणत्थं इट्ठदेवयानमोक्काररूवं भावमंगलं कायव्वं । तहा अभिधेयसंबंधपओयणरहिए सत्थे सोयारा न पयट्टंति अओ तप्पवित्तिनिमित्तं अभिधेयाईणि भणियव्वाणित्ति । तत्थ नमिऊण—पणमिऊण, कं ? वद्धमाणं चरिमतित्थाहिवइं, परमोवगारित्ति एयस्स विसेसेण नमोक्कारो कओ, एएण मंगलं भणियं । नमिऊण किं कायव्वं ? तं दरिसेइ—सावगधम्मंति—सावगाणं—समणोवासगाणं धम्मो—सम्मत्तमूलदुवालसवयसरूवो तं सावगधम्मं वोच्छं—भणिस्सामि । अणेण य एयस्स सत्थस्स अभिधेयं भणियं । अभिधेयभणणेण अभिहाणाभिधेयलक्खणो संबंधोऽवि भणिओ चेवत्ति । नणु पुव्वायरिएहिं चेव सावगधम्मो भणिओ, किं तेण भणिएण ?, एयमासंकिय भणइ—समासओत्ति—संखेवेण, पुव्वायरिएहिं वित्थरेण भणिओ अहं पुण मंदमइमत्ताणुग्गहत्थं संखेवेण सावगधम्मं भणिस्सामि । एएण य आयरिओ पगरणकरणे अत्तणो पयोयणं दंसेइ, जओ पओयणं विणा न मंदोऽवि पयट्टइ, तहा संखित्तपगरणस्स सुहेण पढणाई कीरइत्ति वित्थरगंथपढणाइअसमत्था सीसा एत्थ पयट्टिया भवंति । केरिसं सावगधम्मं ?, तमाह—'सम्मत्ताइ' त्ति सम्मत्तं—तत्त(त्थ)सद्दहाणरूवं आदी—पढमं जस्स अणुव्वयाइधम्मस्स तं सम्मत्ताई, पागयलक्खणेण बिंदुलोवो(दीहो य) । नणु उमासाइवायगेण समासेणं सम्मत्ताई य सावगपन्नत्तिमाइसु सो सावगधम्मो भणिओ तओ किं अणेण पगरणेण ?, एयमासंकिय भणइ— भावत्थसंगयंति, भावत्थो—परमत्थो तेण संगतो—जुत्तो तं भावत्थसंगयं । अयमिह परमत्थो—पुव्वायरिएहिं गंभीरवयणेहिं भणियाणं वयाइयारमाइयाणं अत्थाणं जो मंदबुद्धिसिस्साणं दुरवगमो

भावत्थो तेण संगयं तं भणिस्सामि। सुत्तनीईएत्ति–आगमाणुसारेण, सुत्तसरूवं च इमं—" पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं। पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं ॥ १ ॥" तहा—" सुत्तं गणहररइयं १, तहेव पत्तेयबुद्धरइयं च २। सुयकेवलिणा रइयं ३, अभिन्नदसपुव्विणा रइयं ४ ॥ १ ॥" इति ॥ १ ॥ 'सावगधम्मं वोच्छं' ति जं भणियं तत्थ सावगसद्दत्थनिरूवणत्थमाह—

परलोगहियं सम्मं जो जिणवयणं सुणेइ उवउत्तो। अइतिव्वकम्मविगमा सुक्कोसो सावगो एत्थ॥२॥

जो सुणेइ सो सावगो, एवमिह किरियासंबंधो, ज इति सामन्ननिद्देसो, तेण जो कोइ जीवो, न पुण विसिट्ठकुलुप्पन्न एव, जहा माहणकुलुप्पन्न एव माहणो होइत्ति, किरियाविसेसनिमित्तं सावगत्तंतिकाउं, नणु जो सुणेइ सो सावओत्ति एवं सवणमेत्तनिबंधणं सावगत्तं पावइ, तं पुण सव्वेसिं सोइंदियलद्धिजुत्ताणं संभवइ, विसिट्ठं च सावगत्तं इच्छिज्जइ, एवमासंकाए आह–जिणवयणंति–सव्वन्नुआगमं, किं विसिट्ठं जिणवयणं ?, परलोगहियं–परलोगपत्थं, परलोगसाहगं, जिणवयणमेव सुणंतो सावगो होइ, न पुण जोइसनिमित्तजोणीपाहुडाइं सुणंतोवि, जओ भणियं "संपत्तदंसणाई पइदियहं जइजणा सुणेई य। सामायारिं परमं जो खलु तं सावगं वेंति ॥१॥" कहं सुणेइ ?, सम्मंति–असढभावेण, सढभावेण सुणंतोऽवि न सावगो होइत्ति भावत्थो, सुणेतित्ति–आयन्नेति, उवउत्तोत्ति–भावसारं आयरपरो, अणुवउत्तसवणं हि न सफलं, अत एव तन्निसेहणत्थं भणियमागमे–"निद्दाविगहापरिवज्जिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं। भत्तिबहुमाणपुव्वं उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥ १ ॥" ति, एवंविहं सवणं कहं भवइ ?, तत्थ कारणं दंसेइ अइतिव्वकम्मविगमत्ति–अतिसंकिलिट्ठनाणावरणीयमिच्छत्तमोहणीयाइ-

कम्मविणासाओ, नहि तिव्वकम्मविगमं विणा पुव्वभणियसवणसंभवो, जओ भणियं-" सत्तण्हं पयडीणं अब्भिंतरओ उ कोडि-कोडीए। काऊण सागराणं जइ लहइ चउण्हमन्नयरंति ॥ १ ॥" सुत्ति-अणंतरभणिओ जीवो, उक्कोसोत्ति-पहाणो, अहवा सुक्कोत्ति-सुक्कपक्खिगो, अवड्ढपोग्गलपरावत्तब्भंतरीभूयसंसारो इत्यर्थः, सोत्ति-भणियसरूवो, सावगोत्ति-समणोवासओ, एत्थत्ति-एयंमि सावगधम्मवियारावसरे, अन्नत्थ पुण सामन्नेण सुणंतो सुणावेंतो वा नामादिभेदभिन्नो वा सावगो होइत्ति ॥२॥

सम्मत्ताई सावगधम्मं वोच्छंति पुव्वं भणियं, तत्थ सम्मत्तं सव्वगुणाधारोत्तिकाउं पढमं उद्दिट्ठं, जओ भणियं-" मूलं दारं पइट्ठाणं, अहारो भायणं निही। दुछक्कस्सवि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं ॥ १ ॥" तत्थ मूलं महादुमस्सेव, दारं सपागारमहानगरस्सेव, पइट्ठाणंत्ति पेढं भन्नइ, तं पुण जहा पासायस्स, आधारो जहा धरणी सव्वपयत्थाणं, भायणं पहाणदव्वाणंपिव, निहाणं सुवन्नाइरयणाणंपिव, तहा सम्मत्तजुत्तस्स चेव सव्वावि किरिया सहलत्ति, जओ भणियं-" कुणमाणो वि य किरियं परिच्चयंतोवि सयणधणभोए। देंतोऽवि दुहस्स उरं न जिणइ अंधो पराणीयं ॥१॥ कुणमाणोऽवि निवित्तिं परिच्चयंतो वि सयणधणभोगे। देंतोऽवि दुहस्स उरं मिच्छद्दिट्ठी न सिज्झइ उ ॥२॥ तम्हा कम्माणीयं जेउमणो दंसणंमि पयइज्जा। दंसणवओ हि सहलाणि होंति तवणाणचरणाणि ॥ ३ ॥" एएणवि कारणेण पढमं उद्दिट्ठं। तहा सम्मत्तलाभाणंतरं पारमत्थिया विरई होइ, जओ भणियं-" सम्मत्तंमि उ लद्धे पलियपुहत्तेण सावओ होज्जा।" एवमाइ, अओवि पढमं उद्दिट्ठं। तस्स-एवं पढमोवइट्ठस्स दिसिदरिसणत्थं केसिंचि वयाण य पुव्वायरियभणिएहिं नवहिं दारेहिं निरूवणं करिस्सामि, ताणि य इमाणि, तंजहा—" जारिसओ १ जइभेओ २ जह जायइ ३ जह य एत्थ दोस ४ गुणा ५। जयणा ६ जह अइयारा ७

भंगो ८ तह भावणा ९ नेया ॥ १ ॥ " एएसिं सरूवं पुण इमं-जारिसओ-जारिससरूवो सम्मत्ताइगुणो होइ एयं जाणियव्वं १। जइभेओ-तस्सेव सम्मत्ताइगुणस्स जत्तिया भेया संभवंति, एयंपि नायव्वं २। जह जायइ-जेण पगारेण उप्पज्जइ ३। जह य एत्थ-सम्मत्तादिगुणे अगहिए दोसा हौंति ४। गहिए जहा गुणा संभवंति ५। जयणा-जहासत्तीए अकप्पपरिहाररूवा ६। जहा अइयारा-भंगाभंगरूवा तेसु संभवंति ७। भंगो-अभावो, जहा होइ सम्मत्ताइसु ८। तहा भावणा-सम्मत्ताइगुणाणं वुड्ढिनिमित्तं जा सुहज्झवसायसरूवा भाविज्जइ ९। नेयत्ति किरियापयं सव्वत्थ दट्ठव्वं।

तत्थ सम्मत्तसरूवं पसंगेण तप्फलं च निरूवंतो भणइ—

तत्तत्थसद्दहाणं सम्मत्तमसग्गहो न एयंमि। मिच्छत्तखओवसमा सुस्सूसाई उ हौंति दढं॥ २॥

तत्तत्थाणं-सव्वन्नुभासियाणं (प्र. भणियाणं) जीवाजीवादिपयत्थाणं, सद्दहाणं-जं जिणेहिं भणियं तं तहेवत्ति रूई, सम्मत्तंति-सम्मदरिसणं भवइ, एयं सम्मत्तस्स सरूवं भणियं। इयाणिं सम्मत्तस्सेव दोसनिवित्तिरूवं फलं भन्नइ, अहवा तत्तत्थसद्दहाणं निण्हगाणं पि अत्थित्ति तेसिंपि सम्मत्तं पावइत्ति एयमासंकिय आह-असग्गहो न एयंमि, असग्गहो-असुंदराभिनिवेसो, एयंमि-सम्मत्ते विज्जमाणे न होइ, तओ निण्हगाणं कहं सम्मत्तं संभवइ ?, नणु किं कारणं सम्मत्ते सइ असग्गहो न भवइ ?, भन्नइ-मिच्छत्तखओवसमा-मिच्छत्तस्स-मिच्छत्तमोहणीयकम्मदलियस्स, खओवसमो-उदिन्नस्स खओ-विणासो अणुदिन्नस्स उदयविक्खंभो तओ मिच्छत्तखओवसमाओ कारणाओ, उवलक्खणं च एसो तेण, खयाओ उवसमाओ य, एयंपि दट्ठव्वं, मिच्छत्तुदओ हि असग्गहकारणं, मिच्छत्तुदओ य सम्मत्ते विज्जमाणे नत्थित्ति असग्गहो एत्थ न

होइत्ति भावत्थो। के पुण सम्मत्ते पडि भवंति ?, भन्नइ–सुस्सूसाई उ होंति दढंति, सुस्सूसा–धम्मसत्थसवणाभिलासो आइसद्दाओ अन्ने धम्मरागादयो रिं भन्नमाणा घेप्पंति, हुंति–उप्पज्जंति, मिच्छत्तखओवसमखयउवसमाओ चेव, एएणवि सम्मत्तस्स फलं भणियं, दढं–अइसएण, जारिसेहिं तेहिं सम्मत्तं लक्खिज्जइत्ति ॥ ३ ॥

सुस्सूसाई उ भवंतित्ति पुव्वं भणियं, अतो ते भन्नंति—

सुस्सूस धम्मराओ गुरुदेवाणं जहासमाहीए। वेयावच्चे नियमो वयपडिवत्तीएॅ(इ) भयणा उ ॥४॥

सोउं इच्छा सुस्सूसा–पहाणबोहहेतुधम्मसत्थसुणणाभिलासो, मा पुण सुस्सूसा वियड्ढाइगुणजुत्ततरुणनरकिन्नरगेयसवणरागाओवि अहियतरा सम्मत्ते सइ होति। तहा धम्मरागोत्ति, धम्मो–सुयचरित्तरूवो, तत्थ सुयधम्मरागो सुस्सूसापएण चेव भणिओ, अतो इह धम्मरागो–चारित्तधम्मरागो घेप्पइ, सो धम्मरागो कम्मदोसाओ चारित्तधम्मअकरणेवि कंतारुत्तिण्णदरिद्दछुहाकिलंतमाहणघयपुन्नभोयणाभिलासाओवि अहिगो सम्मत्ते विज्जमाणे-होइ। तहा गुरुदेवाणं जहासमाहीए वेयावच्चे नियमोत्ति, गुरू-धम्मदेसगा आयरियाई, देवा य तिलोयपूयणिज्जा अरहंता तेसिं जहासमाहीए–जहासत्तीए, वेयावच्चे–तप्पडिवत्तिविस्सामणपूयणाइए, नियमो–अवस्सं कायव्वंति पडिवत्ती सम्मत्ते सति होइत्ति, किं जहा सम्मत्ते होंते सुस्सूसाइया गुणा होंति, तहा किं वयाणिवि भवंतित्ति ?, एयमासंकिय आह–वयपडिवत्तीए भयणा उत्ति वयाणं–अणुव्वयाईणं पडिवत्ती–अब्भुवगमो अंगीकरणं वयपडिवत्ती तीए पुण भयणा–वियप्पणा, सम्मत्ते होंते वयाणि कयाइ भवंति कयाइ न भवंति इत्यर्थः ॥ ४ ॥ भयणाकारणमेव भन्नइ—

जं सा अहिगयराओ कम्मखओवसमओ न य तओ(गो)वि ।
होइ परिणामभेया लहुंति तम्हा इहं भयणा ॥ ५ ॥

जं—जेण कारणेण, सा—वयपडिवत्ती, अहियराओ कम्मखओवसमओत्ति—अहियराओ सम्मत्तलाभनिमित्त-
कम्मखओवसमावेक्खाए बहुतरगाओ कम्मखओवसमाओ, चरि-त्तमोहणीयकम्मखओवसमाउ होइ, नणु सम्मत्तलाभावसरे
चेव चारित्तमोहणीयकम्मखओवसमो कम्हा न भवइ?, भण्णइ—न य तगोविति—नगारो पडिसेहे, चकारो अवधारणे, तगो—
चारित्तमोहणीयकम्मखओवसमो, जंमि चेव काले सम्मत्तपडिवत्तिहेऊ कम्मखओवसमो होइ, न तंमि चेव चरणपडिवत्तिहे-
ऊवि, कम्हा पुण एवं?, भण्णइ—परिणामभेयत्ति, तहाभवत्तनिबंधणजीवज्झवसायविसेसाओ विसिट्ठतरपरिणामेणं चारित्तमो-
हणीयकम्मखओवसमो होइत्ति भावत्थो । लहुंतित्ति—सिग्घमेव, सम्मत्तकारणकम्मखओवसमाणंतरमेवेत्यर्थः, तम्हा—तेण
कारणेण इह—वयपडिवत्तीए, भयणा—वियप्पणा, सुसड्ढसाइसु पुण नियमो, जइवि गंठिभेयाउ चेव सम्मत्तमुपज्जइ तत्थ य
वयपडिवत्तिमेव पहाणयरं मन्नइ, तहावि जावइयाए कम्मगंठीए भिज्जमाणीए सम्मत्तलाभो होइ न तावइयाए चेव वयपडि-
वत्तीऽवि भावओ भवइत्ति ॥ ५ ॥ एयं चेव भणइ—

सम्मा पलियपुहुत्ते वगए कम्माण भावओ होंति । वयपभिईणि भवन्नवतरंडतुल्लाणि नियमेण ॥ ६ ॥

सम्मत्ति—'सूचनां सूत्र'मिति न्यायाओ सम्मत्तलाभाओ, पलियपुहुत्ते पलिओवमाण—णणकारपमदांणं कालपरिमाणविसेस-

लक्खणाणं पुहुत्तं-दुप्पभिइनवंत. वमपुहुत्तं तंमि, अवगए-वेडए, केसि पलिओवमपुहुत्ते वेइए? कम्मा-
णंति-नाणावरणीयाईणं, इह कम्माण .त्रि कम्मठिइएत्ति दट्ठवं, जओ मोहणीयाइकम्माणं उक्कोमट्ठिईओ अहापवत्त-
करणेण ताव ठिइं खवेइ जाव पलिउवमा . भागूणा एगा सागरोवमकोडाकोडी, ततो गंठिभेएण मम्मत्तं लहइ, तओ
सेमकम्मट्ठिईए पलिओवमपुहुत्ते खविए अणुव्वयाणि लहइत्ति एम आगमाभिप्पाओ, भावओत्ति-परमत्थेण, दव्वओ पुण अइ-
दीहाएवि कम्मठिईए महव्वयाणिवि भवंति, किं पुण अणुव्वयाणि?, जओ भणियं-"सव्वजियाणं जम्हा सुत्ते गेवेज्जगेसु उववाओ।
भणिओ जिणेहिं सो न य लिंगं मोत्तुं जओ भणियं ॥१॥ जे दंसणवावन्ना लिंगग्गहणं करंति सामन्ने। तेसिंपिय उववाओ
उक्कोसो जाव गेवेज्जा ॥२॥" हुंति-भवंति, काणि?, भण्णइ-वयपभिईणि-अणुवयगुणवयाईणि, सरूवेण केरिसाणि एयाणि?
तं भन्नइ-भवन्नवतरंडतुल्लाणित्ति-संसारसागरतरणनावादिसरिसाणि, नियमेण-अवस्संभावेण, भणियं य-"मम्मत्तंमि
उ लद्धे पलियपुहत्तेण सावओ होज्जा। चरणोवसमखयाणं सागरसंखंतरा होंति ॥ १ ॥" पलिओवमपुहुत्ताइअणुभवणीयस्स
कम्मुणो विगमो पुण अणुक्कमेण वा होइ (अणुक्कमवेयणेण इत्यर्थः) वीरियउल्लासेण करणंतरपविचीए अइसिग्घकालेण वा,
जओ भणियं-"एवं अप्परिवडिए सम्मत्ते देवमणुयजम्मेसु। अन्नयरसेढिवज्जं एगभवेणं च सव्वाइं ॥ १ ॥" नणु जया सम्म-
त्तजुत्तो चेव नवपलिओवमअहिगठिइगेसु देवेसु उप्पज्जइ तया देवभवे विरइअभावाओ कहं "सम्मत्तंमि तु लद्धे पलियपुहत्तेण
सावओ होज्ज"त्ति एयं घडइ? एत्थ भण्णइ-तीए अवत्थाए जावइयगं ठितिं खवेइ तावइयं अण्णं बंधइ, तओ देसूणसागरो-
वमकोडाकोडिपरिमाणाए ठिईए पलिओवमपुहत्तविगमो न भवइ, ततो न देवभवाइसु देसविरइलाभसंभवो, अओ नत्थि

विरोहो ॥ ६ ॥

भणियं सप्पसंगं सम्मत्तसरूवदारं, संपयं भेयदारं भण्णइ—

" एगविह दुविह तिविहं चउहा पंचविह दसविह सम्म। दव्वाइ कारगाइ य उवसमभेएहि वा सम्मं॥१॥"

तत्थ एगविहं सवन्नुपणीयजीवाइपयत्थरुई (१) दुविहं पुण दव्वसम्मत्तं भावसम्मत्तं च, तेसिं इमं सरूवं—"जिणवयणमेव तत्तं एत्थ रुई होइ दव्वसम्मत्तं। जहभावनाणसद्धापरिसुद्धं भावसम्मत्तं ॥ १ ॥" जिणवयणमेव—सव्वण्णुवयणमेव तत्तं, न अन्नं, एवंविहा रुई, एत्थ—सम्मत्तवियारे होइ दव्वसम्मत्तं—अणाभोगपयट्टं रुइमेत्तं, जहभावाओ—जहट्ठियवत्थुगाहगाओ नाणाओ जा सद्धा तीए परिसुद्धं सकज्जपसाहगत्तेण निच्छइगं भावसम्मत्तं, एसेव अत्थो दिट्ठंतेण भाविज्जइ—"सम्मं अन्नायगुणे सुंदररयणंमि होइ जा सद्धा। तत्तोणंतगुणा खलु विन्नायगुणंमि बोद्धव्वा ॥१॥" सम्मं अन्नायगुणे—मणयं अन्नायगुणे, सुंदररयणे—चिंतामणिमाइए होइ, जा सद्धा—गहणविसया इच्छा तत्तो अणंतगुणा चेव अइतिव्वयरा विन्नायगुणे सुंदररयणे बोद्धव्वा, उवणओ सयं कायव्वो, अहवा निच्छयववहारभेयओ दुविहं, तं पुण इमं—"जं मोणं तं सम्मं जं सम्मं तमिह होइ मोणं तु। निच्छयओ इयरस्स उ सम्मं सम्मत्तहेऊवि ॥ १ ॥" जं मोणंति—मुणी—साहू तस्स संबंधि जं पडिपुण्णाणुट्ठाणं, तं सम्मंति—तं सम्मत्तं वुच्चइ, जं सम्मंति—जं सम्मत्तं तमिह होइ मोणं तु, भणियं च—आयारंगे "जं मोणंति पासहा तं सम्मंति पासहा, जं सम्मंति पासहा तं मोणंति पासहा।" निच्छयउत्ति—निच्छयनयाभिप्पाएण, जओ निच्छयनयाभिप्पाओ इमो—"जो जहवायं न कुणइ मिच्छद्दिट्ठी तओ हु को अन्नो ?। वड्ढेइ य मिच्छत्तं परस्स संकं जणेमाणो ॥ १ ॥" एवमाई, इयरस्स—ववहारनयस्स

मएण सम्मत्तहेऊवि सम्मत्तं भण्णइ, अरिहंतसासणपीइमाइयंपि उवयारओ सम्मत्तंति, जओ सुद्धचित्ताणं एयंपि पारंपरेण मोक्खसाहगं भवइ, अओ ववहारनयंपि पमाणं, जओ भणियं-" जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारनिच्छए मुयह। ववहारनउच्छेए तित्थुछेओ जओ वस्सं ॥ १ ॥" एवमाइ, अहवा निसग्गअभिगमभेएण दुविहं, तत्थ निसग्गो-सभावो तेण निसग्गेण परोवएसं विणा जं होइ तं निसग्गसम्मत्तं, परोवएसाउ जं होइ तं अहिगमसम्मत्तं, एवमादि दुविहं भणियव्वंति(२) तिविहं कारगरोयगदीवगभेएणं, कारगादिसरूवं पुण इमं-" जं जह भणियं तं तह करेइ सति जंमि कारगं तं तु। रोयगसम्मत्तं पुण रुइमेत्तकरं मुणेयव्वं ॥ १ ॥ सयमिह मिच्छद्दिट्ठी धम्मकहाईहिं दीवइ परस्स। सम्मत्तमिणं दीवग कारणफलभावओ नेयं ॥ २॥" अहवा तिविहं-खाओवसमियं १ उवसमियं २ खाइयं ३, तिण्हंपि सरूवं इमं-" मिच्छत्तं जमुइण्णं तं खीणं अणुइयं च उवसंतं। मीसीभावपरिणयं वेइज्जंतं खओवसमं ॥१॥ उवसामगसेढीगयस्स होइ उवसामियं तु सम्मत्तं। जो वा अकयतिपुंजो अखवियमिच्छो लहइ सम्मं ॥ २ ॥ खीणे दंसणमोहे तिविहंमिवि भवनियाणभूयंमि। निप्पच्चवायमउलं सम्मत्तं खाइयं होइ ॥३॥" त्ति(३)। तहा चउव्विहं-खाउवसमिगादितिगं सासायणसहियं चउविहं, सासायणसरूवं इमं-"उवसमसम्मत्ताओ चयओ मिच्छं अपावमाणस्स। सासायणसम्मत्तं तयंतरालंमि छावलिया ॥१॥" (४)एयं चेव चउविहं वेयगसहियं पंचविहं होइ, तत्थ वेयगसरूवं इमं-"बावीससंतमोहस्स सुद्धदलियक्खयंमि आढत्ते। जीवस्स चरिमसमए अणुहवणे वेययं होइ ॥ १ ॥" (५)दसविहं पुण निसग्गरुइमाइगाउ दस रुईओ, तंजहा-" निसग्गुवएसरुई आणरुइ सुत्तबीयरुइमेव। अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुइ ॥ १ ॥"त्ति, तत्थ निसग्गेण-सभावेण रुई जस्स सो निसग्गरुई, किं भणियं होइ?,

॥ १ ॥" दंसणे–निस्संकियाइए अट्ठपगारे दंसणायारे, नाणे–कालविणयाइअट्ठपगारे नाणायारे, चरित्ते–वयसमणाइगे चरित्तायारे, तवे–दुवालसविहे, विणए–अब्भुट्ठाणाइअणेगपगारे, सच्चे–अविसंवायगवावारसरूवे, समिईसु–ईरियासमियाइसु पंचसु, गुत्तीसु–मणगुत्तिमाइसु तिसु जो किरियाभावरुइत्ति, किं भणियं होइ ?, भन्नइ–दंसणादिआयाराणुट्ठाणेसु जस्स भावओ रुई अत्थि, सो खलु निच्छएण किरियारुई नाम । इह च चारित्तगहणेण तवविणयाईणं लद्धाणंपि जं भेएण गाहाए गहणं कयं तं एएसिं विसेसेण मोक्खसाहगत्तजाणावणत्थं । ८ । संखेवो–संगहो समासो तेण रुई जस्स सो संखेवरुई–"अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइत्ति होइ नायव्वो । अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ १ ॥" अणभिग्गहिया–न अंगीकया कुदिट्ठी–बुद्धमयाइसरूवा जेण सो संखेवरुइत्ति नायव्वो, अविसारओ–अकुसलो, पवयणे–सव्वण्णुसासणे, तहा अणभिग्गहिओ–अकुसलो, चगारो समुच्चये, कम्मि अणभिग्गहिओ ?, भन्नइ–सेसेसु कविलाइपरूवियपवयणेसु, एवंविहो संखेवेण चेव चिलातीपुत्तोव्विव उवसमाइपयतिगेण तत्तरुइं पावेइत्ति संखेवरुई वुच्चइ । ९ । धम्मो–सुयधम्माई तेण रुई जस्स सो धम्मरुई–"जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च । सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरुइत्ति नायव्वो ॥ १ ॥" जो अत्थिकायाणं–धम्माधम्मागासाईणं धम्मं–गइठिईउवट्ठंभअवगाहदाणाइयं जाणइ, सुयधम्मं–अंगपविट्ठाइआगमसरूवं, चरित्तधम्मं–सामाइअच्छेओवट्ठावणियाइ, चसद्दो विगप्पे, सद्दहइ–तहत्ति पडिवज्जइ जिणाभिहियं–तित्थगरभणियं सो धम्मरुइत्ति नायव्वो । १० । निरूविया सम्मत्तभेया ।

संपयं तग्गमगलिंगेसुवि भेयसंभवो अत्थित्ति तप्पदरिसणत्थमिमं भन्नइ–"परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणं वावि ।

गोविंदवायगोव सुत्तरुइत्ति नायव्वो। बीयमिव बीयं, जं एगमवि अणेगत्थपडिबोहउप्पायगं वयणं तेण रुई जस्स सो बीयरुई, "एगेण अणेगाइं पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं। उदएव्व तेल्लबिंदू सो बीयरुइत्ति नायव्वो ॥ १ ॥" एगेण पएण जीवाइणा, अणेगाइंति—अणेगेसु बहुसु पएसु जीवाइसु जो पसरई, उत्ति, तुसद्दो अवधारणे, तेण पसरति चेव, सम्मत्तंति सम्मत्ताभिन्नोत्तिकाउं जीवोवि सम्मत्तं वुच्चइ, एत्थ दिट्ठंतो—उदयेव तेल्लबिंदुत्ति, जहा उदगएगदेसगओवि तेल्लबिंदू सव्वमुदगं अक्कमइ तहा तत्तेगदेसउप्पन्नरुईवि जीवो विसिट्ठखओवसमवसाओ सव्वतत्तेसु रुइवंतो होइ, सो एवंविहो बीयरुइत्ति नायव्वो, जहा बीयं कमेण अणेगबीयाणं जणगं एवं एयस्सवि एगतत्तविसया रुई अणेगत्थविसयाओ अणेगरुइओ जणेइत्ति ५। अभिगमो-नाणं तेण रुई तत्तसद्दहाणं जस्स सो अभिगमरुई "सो होइ अभिगमरुई सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं। एकारसअंगाइं पइण्णगा दिट्ठिवाओ य ॥१॥" सो जीवो अभिगमरुई होइ, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठंति—जेण सुयनाणस्स अत्थो अहिगओ, किं पुण तं सुयनाणं?, भन्नइ—एक्कारस अंगाइं—आयाराईणि, पइन्नगाइं—उत्तरज्झयणाईणि, दिट्ठिवाओ—परिकम्मसुत्ताइभेयं बारसमं अंगं, पहाणंति काउं भेदेण भणियं, चसद्दाओ उववाइयाईणि उवंगाणि घेप्पंति ६। वित्थारो-वित्थरो तेण रुई जस्स सो वित्थाररुई। "दव्वाण सव्वभावा सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा। सव्वाहिं नयविहीहिं य वित्थाररुई मुणेयव्वो ॥ १ ॥" दव्वाणं—धम्मत्थिकायादीणं, सव्वभावा—सव्वपज्जाया, सव्वपमाणेहिं—पच्चक्खाईहिं, उवलद्धा—विन्नाया, सव्वाहिं नयविहीहिं—सयलेहिं नेगमादिनयभेएहिं, जो नयो जं भावं इच्छइ एयं उवलद्धं जस्स भवइ, सो वित्थाररुइत्ति नायव्वो ७। किरिया—अणुट्ठाणं तेण रुई जस्स सो किरियारुई—"दंसणनाणचरित्ते तवविणए सव्वसमिइगुत्तीसु। जो किरियाभावरुई सो खलु किरियारुई नामं

भवेसु निव्वेयउ वमइ दुक्खं। अकयपरलोयमग्गो ममत्तविसवेगरहिओ य ॥१॥” नारयतिरियनरामरभवेसु सव्वेसु चेव निव्वेयओ–निव्वेएण हेउणा दुक्खं वमइ–दुक्खेण अच्छइ, अकयपरलोयमग्गोत्ति–अकयधम्माणुट्ठाणो, एसो हि संसारे परलोगाणुट्ठाणं विणा सव्वमेव असारं मन्नइत्ति, ममत्तविसवेगरहिओ य–पयईए पुत्तकलत्ताइसु निम्ममत्त एव विन्नायपरमत्थोत्तिकाउं (३)। तहा–“दट्ठूण पाणिनिवहं भीमे भवसागरंमि दुक्खत्तं। अविसेसओऽणुकंपं दुहावि सामत्थओ कुणइ ॥१॥” दट्ठूण पाणिनिवहं–जीवसमूहं भीमे–भयजणगे भवसागरे–संसारसमुद्दे दुक्खत्तं–सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं अभिभूयं–पीडिअं, अविसेसओ–सामन्नेण सकीयपरकीयविचाराभावेण अणुकंपं–दयं, दुहावि–दव्वओ भावओ य, तत्थ दव्वओ फासुगपिंडाइदाणेण, भावओ सुमग्गजोयणेण, सामत्थओ–ससत्तिअणुरूवं अणुकंपं करेइत्ति (४)। तहा–“मन्नइ तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पन्नत्तं। सुहपरिणामो सव्वं कंखाइविसोत्तियारहिओ ॥ १ ॥” मन्नइत्ति–पडिवज्जइ, तमेव सच्चं निस्संकं-संकारहियं जं जिणेहिं पन्नत्तं–जं तित्थगरेहिं भणियं, सुभपरिणामो-पुव्वभणियविसेसणजुत्तो, सव्वं मन्नइ, न पुण किंचि मन्नई किंचि न मन्नइत्ति, कंखाइविसोत्तियारहिओ-कंखा–अन्नोन्नदंसणग्गहसरूवा, आइसद्दाओ विचिकिच्छाई घेप्पंति, सुभज्झवसायाओ असुभज्झवसायगमणं विसोत्तिया भण्णइ, एयाहिं रहिउत्ति (५) भणियं भेयदारं।

संपयं 'जह जायइ'त्ति तइयदारं दंसिज्जइ–“काऊण गंठिभेयं सहसंमइयाइ पाणिणो केई। परवागरणा अन्ने लहंति संमत्तवररयणं ॥ १ ॥” जीवस्स कम्मजणिओ घणरागदोसपरिणामो गंठी भन्नइ, तस्स य भेयं काऊण, किं ? लहंति–पावंति, संमत्तवररयणं–संमत्तमेव दव्वरयणवेक्खाए वरं–पहाणं रयणं संमत्तवररयणं, केइ पाणिणो–भव्वजीवा, कहं ?

वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ १ ॥" परमत्था—जीवाइपयत्था तेसु संथवो-पुणो पुणो तस्सरूवभावणाजणिओ परिचओ, वासद्दो उत्तरलिंगविगप्पावेक्खाए समुच्चए, सु—सुट्ठु दिट्ठा—उवलद्धा परमत्था जीवादओ जेहिं ते सुदिट्ठपरमत्था—आयरियाई तेसिं सेवणं—पज्जुवासणं, वासद्दो अभणियत्थसमुच्चए, तेण जहासत्तीए तेसिं वेयावच्चकरणं च, अविसद्दो पुव्वावेक्खाओ समुच्चए, वावन्नकुदंसणत्ति वावन्नं—विणट्ठं दंसणं जेसिं ते वावन्नदंसणा, जेहिं लद्धंपि सम्मत्तं कम्मदोसाओ वमियं, तहा कुच्छियं दरिसणं जेसिं ते कुदरिसणा—सक्कतावसाई तेसिं वज्जणं-परिहारो वावन्नकुदंसणवज्जणं, मा होउ एए अपरिहरंतस्स संमत्तमालिन्नंति, चकारो समुच्चये, संमत्तसद्दहणं—संमत्तं अत्थित्ति एएहिं सद्दहिज्जइ अओ लिंगाणि एयाणित्ति। तहा पसमसंवेगनिव्वेयअणुकंपाअत्थित्तसरूवाणिवि आगमे भणियाणि लिंगाणि, तंजहा—"पयईए कम्माणं वियाणिउं वा विवागमसुहंति। अवरद्धेऽवि न कुप्पइ उवसमओ सव्वकालंपि॥ १ ॥" पयईए वा—संमत्तपोग्गलवेयगजीवसहावेण, कम्माणं—कसायजणियाणं, वियाणिउं विवागं असुभंति—कसायाविट्ठो अंतोमुहुत्तेण जं कम्मं बंधइ तं अणेगाहिं सागरोवमकोडाकोडीहिंवि दुक्खेण चेव एइत्ति, अओ असुभो कम्माणं विवागो, एयं जाणेत्ता किं? अवरद्धेवि—विणासकारगेऽवि न कुप्पइ—न कोवं करेइ, उवसमओ—उवसमेण हेउणा सव्वकालंपि जाव संमत्तपरिणामो अत्थित्ति (१)। तहा—"नरविबुहेसरसोक्खं दुक्खं चिय भावओ उ मन्नंतो। संवेगओ न मोक्खं मोत्तूण वा किंचि पत्थेइ॥ १ ॥" नरेसरो—चक्कवट्टी, विबुहेसरो—इंदो एएसिं सोक्खं अमाभाविगत्ताओ कम्मजणियत्ताओ सावसाणत्ताओ य दुक्खमेव भावओ—परमत्थओ मन्नंतो, संवेगओ-संवेगेण हेउणा न मोक्खं-साभाविकजीवरूवं अकम्मजं अपज्जवसाणं मोत्तुं किंचिवि पत्थेइ—अभिलसइत्ति (२)। तहा—"नारयतिरियनरामर-

थाणं थाणुसिरे वा ओरुहणं वा मुइंगाणं ॥ १ ॥ खितिगमणंपिव पढमं, थाणूसरणं व करणमप्पुव्वं । उप्पयणं पिव तत्तो जीवाणं करणमनियट्टिं ॥ २ ॥ थाणुव्व गंठिदेसो गंठियसत्तस्स तत्थऽवत्थाणं । ओयरणंपिव तत्तो पुणोवि कम्मठिईविवड्ढी ॥ ३ ॥" (३) । पुरिसदिट्ठंतो–जहा केइ तिन्नि पुरिसा किंपि महानयरं गंतुकामा महाडविं पडिवन्ना, सुदीहंअद्धाणं अइक्कमंता कालाइक्कमभीया भयठाणं ढुक्कंता सिग्घयरगईए गच्छंति, ततो पुरउ उभयपासेसु गहियनिसियकरवाला पत्ता दो चोरा, ते दट्ठूण एगो पच्छामुहो पलाणो, अन्नो तेहिं चेव गहिओ, तहा अवरो ते अइक्कमिऊण इच्छियनयरं पत्तो, एस दिट्ठंतो । अयं अत्थोवणओ–एवं इह संसाराडवीए पुरिसा संसारिणो तिन्नि विवक्खिज्जंति, पंथो कम्मठिई अईदीहा, भयठाणं पुण गंठिदेसो, चोरदुगं पुण रागद्दोसा, तत्थ पच्छामुहगामी जो अहापवत्तकरणेण गंठिदेसं पावित्ता पुणो अणिट्ठपरिणामो होउं कम्मठिइं उक्कोसं पावेइ, चोरदुगगहिओ पुण पबलरागदोसोदयगहिओ गंठियसत्तोत्ति जं भणियं होइ, अभिलसियनयरसंपन्नो पुण अपुव्वकरणेण रागद्दोसे चोरे निहणित्ता अनियट्टिकरणेण संपत्तसंमद्दंसणोत्ति (४) । एत्थ आह सीसो–स हि संमत्तं उवएसेण लहइ उयाहु अणुवएसेण चेव लहइत्ति ?, एत्थ भण्णइ–दोहिंवि पगारेहिं लहइ, कहं ?, पहपरिभट्ठपुरिसतिगदिट्ठंतेण–जहा कोइ पंथाओ परिभट्ठो उवएसं विणा चेव परिब्भमंतो सयमेव पंथं पावेइ, कोइ पुण परोवएसेण, अवरो पुण न पावइ चेव, एवं एत्थऽवि अच्चंतपणट्ठसुमग्गो जीवो अहापवत्तकरणेण संसाराडवीए परिब्भमंतो कोई गंठिं पावित्ता अपुव्वकरणेण य गंठिमइक्कमइत्ता(ग्रं० ३००) अनियट्टिकरणं पाविऊण सयमेव संमत्ताइयं निव्वाणपुरस्स मग्गं लहइ, कोइ पुण परोवएसाओ, अन्नो पुण पच्छाभिमुहगामी गंठिसत्तो वा न लहइत्ति (५) । इयाणिं जरदिट्ठंतो–जहा जरो कोइ सयमेव अवेइ, कोइ भेसजोवओगेणं, कोइ पुण

न चेव अवेइ, एवं इह मिच्छत्त सयमेव अवेइ, कोई अरिहंतवयणभेसज्जोवओगेणं, अन्नो पुण अरिहंतवयणभेसज्जोवओगेणवि न अवेइ (६)। इया॥ दिट्ठंतो–जहा हि केसिंचि कोद्दवाणं मयणभावो सयमेव कालंतरे अवेइ, तहा केसिंचि गोमयाइपरिकम्मवसेणं, तहा अन्नेसिं न अवेइ, एवं मिच्छत्तभावोवि, कोइ सयमेव अवेइ, कोई पुण परोवएसपरिक्कमणाए, अवरो पुण नावेइ, एत्थ य भावत्थो–स हि जीवो अपुव्वकरणेण मयणअसुद्धअद्धसुद्धसुद्धकोद्दवसरिसं दरिसणं मिच्छादरिसणसंमामिच्छदरिसणसम्मदरिसणभेएण तिहा काऊण तओ अनियट्टिकरणविसेसाओ संमत्तं पावेइ, एवं करणतिगसहियस्स भवजीयस्स सम्मद्दंसणसंपत्ती, अभवस्सवि कस्सइ अहापवत्तकरणेण गंठिपत्तस्स अरिहंताइरिद्धिसंदंसणेण अन्नेण वा केणइ पओयणेण पयट्टंतस्स सुयसामाइयलाभो भवति, न सेसलाभो होइत्ति (७)। इयाणिं जलदिट्ठंतो–जहा जलं मलिणअद्धसुद्धसुद्धभेएण तिहा होइ, एवं दंसणमवि मिच्छादंसणसंमामिच्छादंसणसंमदंसणभेएण अपुव्वकरणेण तिहा करेइत्ति (८), एवं वत्थदिट्ठंतेऽवि जोयणा कायव्वत्ति (९)। संमत्तलाभविहिपसंगेणं लाघवत्थं देसविरइमाईणंपि लाभविही भन्नइ–

एवं संमद्दंसणलाभुत्तरकालं सेसकम्मस्स पलिओवमपुहुत्तठिइपरिक्खयाओ उत्तरकालं देसविरई लब्भइ, पुणो सेसकम्मस्स ठिइमज्झाओ संखेज्जसागरोवमेसु गएसु सव्वविरई लब्भइ, पुणो अवसेसठिईइ मज्झाओ संखेज्जेसु चेव सागरोवमेसु गएसु उवसमसेढी, पुणोऽवि संखेज्जेसु चेव सागरोवमेसु खीणेसु खवगसेढित्ति, एवं जह जायइत्ति दारं भणियं। अहवा मिच्छत्तपरिच्चाएण संमत्तं होइ, जओ भणियं "मिच्छत्तपरिच्चाएण होइ"त्ति संमत्तंति तत्थाहिकयं चेव, तव्वज्जणं च एवं-समणोवासए पुव्वामेव मिच्छत्ताओ पडिक्कमइ संमत्तं उवसंपज्जइ, "नो से कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नतित्थिए वा अन्नतित्थियदेवयाणि

वा अन्नतित्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तएणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं" ति, एयस्स अत्थविवरणा–समणोवासओ–सावओ सो पुव्वामेव–पढममेव मिच्छत्ताओ–तत्त(त्थअ)सद्दहाणसरूवाओ पडिक्कमइ–नियत्तइ, पडिक्कमणं पुण मिच्छत्ताओ संमत्तगमणं, अत एवाह–संमत्तं उवसंपज्जइ–संमत्त अंगीकरेइ, तस्स मिच्छत्ताओ पडिक्कमंतस्स संमत्तरसायणं ओगाढस्स इमा जयणा, जयणा नाम सत्तीए अकप्पपरिहारो, नो से कप्पइ न से तस्स-सावगस्स कप्पइ–जुज्जइ, अज्जप्पभिइ–संमत्तपडिवत्तिकालाओ आरब्भ, किं न कप्पइ ?, अन्नतित्थिए वा, अन्नतित्थिया–चरगपरिव्वायगभिक्खुससरक्खाइया, अन्नतित्थियदेवयाणि वा–रुद्दविण्हुबुद्धाईणि, अन्नतित्थियपरिग्गहियाणि व चेइयाणि–अरहंतपडिमासरूवाणि, जहा उल्लगपरिग्गहियाणि वीरभद्दमहाकालाईणि, बोडियपरिग्गहियाणि वा वंदित्तए वा, नमंसित्तए वा, तत्थ वंदणं–पणामो, नमंसणं–पणामपुव्वगं पसत्थवयणेहिं गुणुक्कित्तणं, तत्थ को दोसो होइ ? भन्नइ–अन्नेसिं सत्ताणं मिच्छत्ताइथिरीकरणाइदोसोत्ति । तहा पुव्वं-पढमं अणालत्तेणं तेहिं तित्थिएहिं ते आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तत्थ एक्कसिं भासणं आलवणं, पुणो पुणो संलवणं, एत्थ दोसा–ते हि अन्नतित्थिया अइतत्तलोहगोलगसरिसा आसणाइकिरियाए वावारिया भवंति, तप्पच्चओ य कम्मबंधो होइ, तहा तेण परिचएण गिहागमणं करेंति, तत्थ य सावगस्स सयणपरियणो अगहियसमयसारो तेण सह संबंधं गच्छेज्जा, एवमाइ, पढमालत्तेणं पुण असंभमं लोगाववायभएण केरिसो तुमंति एवमाइ किंचि वत्त । तहा तेसिं अन्नतित्थियाणं असणं–चयपुन्नाउं, पाणं–दक्खापाणगाइ,

न चेव अवेइ, एवं इह मिच्छत्तमहाजरो वि कोई सयमेव अवेइ, कोई अरिहंतवयणभेसज्जोवओगेणं, अन्नो पुण अरिहंतवयणभेसज्जोवओगेणवि न अवेइ (६)। इयाणिं कोद्दवदिट्ठंतो–जहा हि केसिंचि कोद्दवाणं मयणभावो सयमेव कालंतरे अवेइ, तहा केसिंचि गोमयाइपरिकम्मवसेणं, तहा अन्नेसिं न अवेइ, एवं मिच्छत्तभावोवि, कोइ सयमेव अवेइ, कोई पुण परोवएसपरिकंमणाए, अवरो पुण नावेइ, एत्थ य भावत्थो–स हि जीवो अपुव्वकरणेण मयणअसुद्धअद्धसुद्धसुद्धकोद्दवसरिसं दरिसणं मिच्छादरिसणसंमामिच्छदरिसणसम्मदरिसणभेएण तिहा काऊण तओ अनियट्टिकरणविसेसाओ संमत्तं पावेइ, एवं करणतिगसहियस्स भवजीयस्स सम्मदंसणसंपत्ती, अभवस्सवि कस्सइ अहापवत्तकरणेण गंठिपत्तस्स अरिहंताइरिद्धिसंदंसणेण अन्नेण वा केणइ पओयणेण पयट्टंतस्स सुयसामाइयलाभो भवति, न सेसलाभो होइत्ति (७)। इयाणिं जलदिट्ठंतो–जहा जलं मलिणअद्धसुद्धसुद्धभेएण तिहा होइ, एवं दंसणमवि मिच्छादंसणसंमामिच्छादंसणसंमदंसणभेएण अपुव्वकरणेण तिहा करेइत्ति (८), एवं वत्थदिट्ठंतेऽवि जोयणा कायव्वत्ति (९)। संमत्तलाभविहिपसंगेणं लाघवत्थं देसविरइमाईणंपि लाभविही भन्नइ–

एवं संमद्दंसणलाभुत्तरकालं सेसकम्मस्स पलिओवमपुहुत्तठिइपरिक्खयाओ उत्तरकालं देसविरई लब्भइ, पुणो सेसकम्मस्स ठिइमज्झाओ संखेज्जसागरोवमेसु गएसु सव्वविरई लब्भइ, पुणो अवसेसठिईइ मज्झाओ संखेज्जेसु चेव सागरोवमेसु गएसु उवसमसेढी, पुणोऽवि संखेज्जेसु चेव सागरोवमेसु खीणेसु खवगसेढित्ति, एवं जह जायइत्ति दारं भणियं। अहवा मिच्छत्तपरिहारेण संमत्तं होइ, जओ भणियं "मिच्छत्तपरिच्चाएण होइ"त्ति संमत्तंति तत्थाहिकयं चेव, तव्वज्जणं च एवं-समणोवासओ पुव्वामेव मिच्छत्ताओ पडिकमइ संमत्तं उवसंपज्जइ, "नो से कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नतित्थिए वा अन्नतित्थियदेवयाणि

खाइमं–तउसफालइ साइमं–कक्कोलवंगाइ–दाउं वा अणुप्पयाउं वा न कप्पइ, तत्थ एक्कसिं दाणं, पुणो पुणो अणुप्पयाणं, वासद्दो विगप्पे, किं सव्वहा न देइ ?, नन्नत्थ रायाभिओगेण इत्यादि, रायाभिओगं मोत्तूणं गणाभिओगं मूत्तूणं बलाभिओगं मोत्तूणं देवयाभिओगं मोत्तूणं, गुरुनिग्गहं मोत्तूणं, वित्तीकंतारं मोत्तूणं, किं भणियं होइ ? भन्नइ–रायाभिओगाइणा देंतोवि न धम्ममइक्कमइ, कहं ? रायाभिओगेण देंतो नाइचरइ धम्मं। तत्थुदाहरणं–हत्थिणाउरे नगरे जितसत्तू नाम राया, कत्तिओ सेट्ठी णेगमसहस्सपढमासणिओ सावगवन्नगो, एवं कालो वच्चति, तत्थ य परिव्वायगो मासंमासेण खमति, तं सव्वलोगो आढाति, कत्तिओ नाढाति, ताहे से सो गेरुओ पओसमावन्नो, छिद्दाणि मग्गति, अन्नया रायाए निमंतिओ पारणे नेच्छइ, बहुसो २ राया निमंतेइ, ताहे भण्णति–जइ णवरं मे कत्तिओ परिवेसेति तो जेमेमि, राया भण्णति ? एवं करेमि, राया समणूसो कत्तियस्स घरं गओ, कत्तिओ भण्णति–संदिसह, राया भण्णति–गेरुयस्स परिवेसेहि, कत्तिओ भणइ–वट्टइ अम्ह, तुब्भं विसयवासित्ति करोमि, चिंतेइ–जइ पव्वइओऽहं होंतो तो ण एवं संभवंत, पच्छा णेण परिवेसियं, सो परिवेसिज्जंते अंगुलिं चालेति, पच्छा कत्तिओ तेण निव्वेएण पव्वतितो णेगमसहस्सपरिवारो मुणिसुव्वयसामिसमीवे, बारसअंगाणि (पढिओ) परियाओ बारस वरिसाणि, पूरियाऊ सोहंमे कप्पे सक्को जातो, सो परिव्वायगो तेण अभिओगेण आभिओगिओ एरावणो जातो, पासिय सक्कं पलाओ, गहिओ, सक्को विलग्गो, दो सीसाणि कयाणि, सक्कावि दो जाता, एवं जावंतियाणि सीसाणि विउव्वति तावतियाणि सक्कोवि सक्करूवाणि विउव्वति, ताहे नासिउमारद्धो, सक्केणाहओ पच्छाठिओ, एवं रायाभिओगेण त्यं(दें)तो नातिक्कमति, केत्तिया एरिसया होहिंति जे पव्वइस्संति तम्हा न दायव्वं। गणाभिओगेण वरुणो, जहा गणाभिओ-

गेण चरुणो रहमुसले निउत्तो, एवं कोवि सावगो गणाभिओगेण भत्तं दवाविज्जेज्ज, देंतोवि सो नाइयरति धम्मं। गणो नाम समुदाओ। बलाभिओगेवि एमेव। देवताभिओगेण जहा एगो गिहत्थो सावगो जातो, तेण वाणमंतराणि चिरपरिचिताणि उज्झियाणि, एगा तत्थ वाणमंतरी पओसमावण्णा तस्स गावीरक्खणगो पुत्तो, तीए वाणमंतरीए गावीहिं समं अवहरिओ, ताहे उइण्णा साहइ तज्जेंती किं ममं उज्झसि नवत्ति ? सावगो भणति-नवरि मा मम धम्मविराहणा भवउ, सा भणति-ममं अच्चेहि, सो भणति-जिणपडिमाणं अवसाणे ठाहि, आमं ठामि, तेण ठविया, ताहे दारगो गावीउ आणीयाउ, एरिसया केत्तिया होहिंति तम्हा न दायव्वं, एवं दवाविज्जंतो नातिचरति। गुरुनिग्गहेण-भिक्खुउवासगपुत्तो सावगधूयं मग्गति, ताणि न देंति, सो कवडसड्ढत्तणेण साहू सेवेति, तस्स भावओ उवगतं, पच्छा साहेति-तेण कारणेण पुव्वं ढुक्कोमि, इयाणिं सब्भावो सावयो, साहू पुच्छति, तेहिं कहितं, ताहे दिन्ना धूया, सो सावगो जुयघरं करेति, अन्नया तस्स मातापितरा भत्तं भिक्खुगाण करेंति, ताइं भणंति-अज्ज एक्कसिं वच्चाहि, सो गओ, भिक्खुएहिं विज्जाए अभिमंतिऊण फलं दिन्नं, ताए वाणमंतरीए अहिट्ठिओ, घरं गओ तं सावगधूयं भणति, भिक्खुगाण भत्तं देमो, सा नेच्छति, दासाणि सयणो य आरद्धो, सज्झो उस्सविया, आयरियाण गंतुं कहेति, तेहिं जोगपडिभेदो दिन्नो, सा बाणमंतरी णट्ठा, साभाविओ जाओ, पुच्छति-कहं कहं वत्ति, कहिते पडिसेहेति, अन्ने भणति-तीए मयणमिज्जाए वामिओ (प्र० वमाविओ) सुत्तो साभाविओ जाओ, भणंति-अंबापिउच्छलेण मणामि वंचिउत्ति, तं किर फासुयं साहूणं दिन्नं, एरिसया केत्तिया आयरिया होहिंति ?, तम्हा परिहरेज्जा। वित्तीकंतारेणं देज्जा, जहा सोरट्ठगो सड्ढो उज्जेणिं वच्चति दुकाले तच्चणिएहिं समं, तस्स पत्थयणं खीणं,

न पुण जाणंति किं पुण भविस्सतित्ति, राया भणति कुमारस्स महंतो कोइ लाभो भविस्सतित्ति भणिऊण उट्ठिओ अत्थाणाओ, सेज्जंसोऽवि गओ नियभवणं, तत्थ ओलोयणठिओ पेच्छति सामिं पविसमाणं, सो चिंतेइ-कहिं मया एरिसं नेवत्थं दिट्ठपुव्वं, जारिसं च पपियामहस्सत्ति, जाईं संभरिया, सो पुव्वभवे भगवओ सारही आसि, तेण तत्थ तित्थयरो तित्थयरलिंगेण दिट्ठोत्ति, वइरनाभे य पव्वयंते इमोवि अणुपव्वइओ, तेण तत्थ सुयं-जहेस वइरनाभो भरहे पढमतित्थयरो भविस्सतित्ति, तं एसो सो भगवंति, तस्स य मणूसो खोयरसघडएण सह अईइ, तं गहाय भगवंतमुवट्ठिओ, कप्पतित्ति सामिणा पाणी पसारिओ, सव्वो निसट्ठो पाणीसु, अच्छिद्दपाणी भयवं, उवरि सिहा वड्ढइ, ण य च्छडिज्जइ, भगवतो एस लद्धी, भगवया सो पारिओ, तत्थ दिव्वाणि पाउब्भूयाणि, तंजहा-वसुहारा वुट्ठा, चेलुक्खेवो कओ, आहयाओ देवदुंदुहिओ, गंधोदयकुसुमवरिसं मुक्कं, आगासे य अहो दाणं २ घुट्ठंति, ततो तं देवसन्निवायं पासिऊण लोगो सेज्जंसघरमुवगओ, ते तावसा अन्ने य रायाणो, ताहे सेज्जंसो ते पन्नवेति-एवं भिक्खा दिज्जइ, एएसिं च दिण्णे सोगतिं गम्मइ, ततो ते सव्वेऽवि पुच्छंति-कहं तुमे जाणियं जहा सामिस्स भिक्खा दायव्वत्ति, सेज्जंसो भणति-जातिस्सरणेण, अहं सामिणा सह अट्ठ भवग्गहणाणि अहेसि, ततो संजायकोउहल्ला भणंति-इच्छामो नाउं अट्ठसु भवग्गहणेसु को को तुमं सामिणो आसित्ति ?, ततो सो तेसिं पुच्छंताणं अप्पणो सामिस्स य अट्ठभव-संबद्धं कहं कहेति। सयंभूरमणमच्छा वा जहा पडिमासंठियमच्छे पउमे य दट्ठूण लभंति, तत्थ किर मच्छपउमाणं सव्वसंठाणाणि अत्थि, मोत्तुं वलयसंठाणाति (१), 'सुए' य तित्थगराइवयणे लब्भइ, जहा आणंदकामदेवेहिं लद्धं, तेसिं चरियाणि जहा उवास-[illegible], तहा दट्ठव्वाणि (२), 'अणुभूए' य किरियाकलावे सइ लब्भइ, जहा वक्कलचीरिणा पिउसंतगं उवगरणं पडिलेहं-

भिक्खुएहिं भणइ–अम्ह एयं वहाहि पत्थयणं, तो तुज्झवि देज्जिहित्ति, तेण पडिवन्नं, अन्नया तस्स पोट्टसरणी जाया, सो चीवरेहिं वेढिओ तेहिं अणुकम्पाए, सो भट्टारगाण नमोकारं करेंतो कालं गओ देवो वेमाणिओ जाओ, ओहिणा तच्चन्निवायसरीरं पेच्छइ ताहे सभूसणेण हत्थेण परिवेसेति, सड्ढाण ओगंभावणा, आयरियाण आगमणं, कहणं च, तेहिं भणियं–जाह अग्गहत्थं गिण्हिऊण भणह–नमो अरहंताणं बुज्झ गुज्झगा २, तेहिं घेत्तूण भणिओ, संबुद्धो, वंदित्ता लोगस्स कहेति जहा–नत्थि एत्थं धम्मो, तम्हा परिहरेज्जा, अह तेसिं दाणे को दोसो होज्जा जेणेवं असणाइदाणनिसेहो कीरइ ? भन्नइ–तेसिं तब्भत्ताणं च मिच्छत्तथिरीकरणं, धम्मबुद्धीए देंतस्स संमत्तलच्छणं आरंभाइदोसो य होइ, अणुकंपाए पुण देज्जावि, जओ भणियं–"सव्वेहिंपि जिणेहिं दुज्जयजियरागदोसमोहेहिं । सत्ताणुकंपणट्ठा दाणं न कहिंचि पडिसिद्धं ॥ १ ॥" तहा वुत्तीएवि भणियं, दाणेवि एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ तेण न देइ, कालुणियाए पुण देइवि जयणाए, नवि धम्मोत्ति ।

अहवा इमेहिं पगारेहिं संमत्ताइलाभो होइ–"दिट्ठे[1] सुए[2] मणुभूए[3] कम्माणं खए कए उवसमे य । मणवयणकायजोगे य पसत्थे लब्भए बोही ॥ १ ॥" दिट्ठे–भगवंतपडिमाइए सम्मत्ताइलाभो होइ, जहा सेयंसेण भगवंतदंसणाउ लद्धं, तत्थ कहाणगं–कुरुजणवए गयपुरनगरे बाहुबलिपुत्तो सोमप्पभो, तस्स पुत्तो सेज्जंसो जुवराया, सो सुमिणे मंदरं पव्वयं सामवण्णं पासति, ततो णेण अमयकलसेणाभिसित्तो अब्भहियं सोहिउमाढत्तो, नयरसेट्ठी सुबुद्धीनामा, सो सूरस्स रस्सिसहस्सं थाणाउ चलियं पासति, नवरि सेज्जंसेण हुक्खुत्तं सो अहियथरं तेयसंपन्नो जाओ, राइणा सुमिणे एक्को पुरिसो महप्पमाणो महया रिवुबलेण सह जुज्झंतो दिट्ठो, सेज्जंसेण साहेज्जं दिन्नं, तओ तेण तं बलं भग्गंति, ततो अच्छाणीए एगतो मिलिया सुमिणे साहेंति,

न पुण जाणंति किं पुण भविस्सतित्ति, राया भणति कुमारस्स महंतो कोइ लाभो भविस्सतित्ति भणिऊण उट्ठिओ अत्थाणाओ, सेज्जंसोऽवि गओ नियभवणं, तत्थ ओलोयणट्ठिओ पेच्छति सामिं पविसमाणं, सो चिंतेइ—कहिं मया एरिसं नेवत्थं दिट्ठपुव्वं, जारिसं च पपियामहस्सत्ति, जाई संभरिया, सो पुव्वभवे भगवओ सारही आसि, तेण तत्थ तित्थयरो तित्थयरलिंगेण दिट्ठोत्ति, वइरनाभे य पव्वयंते इमोवि अणुपव्वइओ, तेण तत्थ सुयं—जहेस वइरनाभो भरहे पढमतित्थयरो भविस्सतित्ति, तं एसो सो भगवंति, तस्स य मणूसो खोयरसघडएण सह अईइ, तं गहाय भगवंतमुवट्ठिओ, कप्पतित्ति सामिणा पाणी पसारिओ, सव्वो निसट्ठो पाणीसु, अच्छिद्दपाणी भयवं, उवरि सिहा वड्ढइ, ण य उच्छडिज्जइ, भगवतो एस लद्धी, भगवया सो पारिओ, तत्थ दिव्वाणि पाउब्भूयाणि, तंजहा-वसुहारा वुट्ठा, चेलुक्खेवो कओ, आहयाओ देवदुंदुहिओ, गंधोदयकुसुमवरिसं मुक्कं, आगासे य अहो दाणं २ घुट्ठंति, ततो तं देवसन्निवायं पासिऊण लोगो सेज्जंसघरमुवगओ, ते तावसा अन्ने य रायाणो, ताहे सेज्जंसो ते पन्नवेति—एवं भिक्खा दिज्जइ, एएसिं च दिण्णे सोगतिं गम्मइ, ततो ते सव्वेऽवि पुच्छंति—कहं तुमे जाणियं जहा सामिस्स भिक्खा दायव्वत्ति, सेज्जंसो भणति—जातिस्सरणेण, अहं सामिणा सह अट्ठ भवग्गहणाणि अहेसि, ततो संजायकोउहल्ला भणंति—इच्छामो नाउं अट्ठसु भवग्गहणेसु को को तुमं सामिणो आसित्ति ?, ततो सो तेसिं पुच्छंताणं अप्पणो सामिस्स य अट्ठभवग्गहणं कहेति । सयंभूरमणमच्छा वा जहा पडिमासंठियमच्छे पउमे य दट्ठूण लभंति, तत्थ किर मच्छपउमाण सव्वसंठाणाणि [illegible], मोत्तं वलयसंठाणाति (१), 'सुत' य तित्थगराइरूवाणि लब्भइ, जहा आणंदपुरे [illegible] लद्धं, तेसिं चरियाणि जहा उच्चास्स- [illegible] (२), 'अणुभव' य किरियाकलावे गइ लब्भइ, जहा [illegible] रिणा पिउसंतागं उवगरणं पडिलेहं—

तेणंति, तस्सक्खाणगं इमं–पोयणपुरे णगरे मचंदो राया, तस्स धारिणी देवी, सा कयाइ तस्स रण्णो ओलोयणगयस्स केसे रएति, पलियं दट्ठूण भणति–सामि ! दूओ आगउत्ति, रण्णा दिट्ठी विसारिया, ण य पस्सति अपुव्वं जणं, ततो भणति—देवि ! दिव्वं ते चक्खू, तीए पलियं दंसियं, धम्मदुओ य सोत्ति, तं च दट्ठूण दुम्मणसिओ राया, तं नाऊण देवी भणइ–लज्जह वुड्ढभावेणं, निवारिज्जिहिति जणो, ततो भणति देवि ! ण एवं, कुमारो बालो असमत्थो पयापालणे होज्जत्ति मे मण्णुं जायं, पुव्वपुरिसाणुचिण्णेणं मग्गेणं ण गतोऽहंति, वियारे, तुमं पसण्णचंदं सारक्खमाणी अच्छतुत्ति, सा निच्छिता गमणे, ततो पुत्तस्स रज्जं दाऊण धातिदेविसहिओ दिसापोक्खियतावसत्ताए दिक्खिओ, चिरसुन्ने आसमपदे ठिओ, देवीए पुव्वाहुओ गब्भो य परिवड्ढइ, पसन्नचंदस्स य चारपुरिसेहिं निवेइओ, पुण्णसमए य पसूया कुमारं, वक्कलेसु ठवितउत्ति वक्कलचीरीति, देवी विसूइयारोगेण मया, वणमहिसीदुद्धेण य कुमारो वड्ढाविज्जइ, धातीवि जाव कालेण कालगता, कढिणेण वहति रिसी, वक्कलचीरि परिवड्ढिओ य, लिहिऊण दंसिओ चित्तकारेहिं पसण्णचंदस्स, तेण सिणेहेण गणिगादारिगाउ रिसिरूविणीओ खंडमयविविहफलेहिं तं लोभेहत्ति पत्थवियाओ, ताओ णं फलेहिं मधुरेहिं वयणेहिं सुकुमालपीणुन्नयथणसंपीलणेहि य लोभिंति, सो कयसमवाओ गमणे जाव अतिगओ तावसभंडगं संठवेउं ताव रुक्खारूढेहिं चारपुरिसेहिं तासिं सन्ना दिन्ना–रिसी आगउत्ति, ताओ दुयमवक्कंताओ, सो तासिं वीहिमणुसज्जमाणो तातो अपस्समाणो अन्नतो गतो, सो अडवीए परिभमंतो रहगतं पुरिसं दट्ठूण तात अभिवादयामित्ति भणंतो रहिणा पुच्छितो–कुमार ! कत्थ गंतव्वं ?, सो भणइ–पोयणं नाम आसमपयं, तस्स य पुरिसस्स तत्थेव गंतव्वं, तेण समयं वच्चमाणो रहिणो भारियं तायत्ति आलवति, तीए भणियं–को इमो उवयारो ?, रहिणा

[illegible] संदरि ! हत्थिगिरहिए नूणं एस आसमपदे वड्ढिओ ण याणति विसेसं, ण से कुप्पियव्व, तुरगे य भणति—किं इमे मिगा [illegible] ?, ततो [illegible] भणिओ—कुमार ! एते णयंमि चेव कज्जे उवजुज्जंति, ण एत्थ दोसो. तेणवि से दिण्णा मोदगा, सो भणति [illegible] कुमारेहिं एतारिसाणि चेव फलाणि दिन्नपुव्वाणिति, वच्चंताण य से एक्कचोरेण सह जुद्धं जायं, [illegible] भणति—अत्थि विउलं धणं तं गेण्हसु सूरत्ति, तेहिं तीहिंवि जणेहिं रहो भरिओ, [illegible] (सामविजया?) [illegible] निग्गच्छिओ, उज्जयं मग्गसुत्ति, सो भमंतो गणियाघरे गंतूण भणइ ताय ! अभिवाद- [illegible] णिमो दिस्सति, निनमत्ति, तीए कामन्तो मदाविओ, ततो अणिच्छंतस्स कतं नहप- [illegible] गणियादारिया पाणिं गाहिओ ण्हाविओ य, मा मे रिसिवेसं अवणेहित्ति जंपमाणो [illegible] हरिसो तपयारो कीरइ, ताओ य गणियाओ गायमाणीउ वहूवरं चिट्ठंति, जो य [illegible] रण्णो—कुमारो अज्जंमि अतिगतो, अम्हेहिं रिसिस्स भण्ण

प्पणीओ पिऊणो पसण्णचंदस्स रण्णो, ते दोऽवि लद्धसंमत्ता (ग्रं. ५००) पणया सिरेहिं केवलिणो, सुट्ठु मे दंसिओ मग्गोत्ति वक्कलचीरी पत्तेयबुद्धो गओ पियरं गहेऊण वद्धमाणसामिणो पासं ॥

तहा कम्माण खए कए लब्भइ, जहा चंडकोसिएणं लद्धं, तस्स कहाणगं–एगो खमगो पारणए गओ वासिगभत्तस्स, तेणं मंडुक्किया विराहिया, खुड्डएण पडिचोइओ, ताहे सो भणति–किं इमाओवि मए मारियाओ ?, लोयमारियाउ दंसेति, ताहे खुड्डएण नायं–वियाले आलोएहिति, सो आवस्सए आलोएत्ता उवविट्ठो, खुड्डओ चिंतेइ–नूणं से विस्सरियं, ताहे सारियं, रुट्ठो, आहणामित्ति उद्धाइओ खुड्डगस्स, तत्थ खंभे आवड्डिओ मओ विराहियसामन्नो जोतिसिएसु उववण्णो, तत्तो चुओ कणगखले पंचण्हं तावससयाणं कुलवतिस्स तावसीए उयरे आयाओ, ताहे दारगो जातो, तत्थ से कोसिउत्ति नाम कयं, सो अईव तेणं सहावेणं चंडकोहो, तत्थ अण्णेवि अत्थि कोसिया तस्स चंडकोसिओत्ति नामं कयं, सो य कुलवती मतो, पच्छा सो कुलवती जातो, सो तत्थ वणसंडे मुच्छिओ तेसिं तावसाणं ताणि फलाणि न देति, ते अलहंता गया दिसोदिसिं, जेउवि तत्थ गोवालादि एति तपि हंतु धाडेति, तस्स अदूरे सेयविया नाम नयरी, तओ रायपुत्तेहिं आगंतूण विरहिए पडिनिवेसेण भग्गो वणसंडो, तस्स गोवालएहिं कहियं, सो कंटियाणं गयओ, ताओ छड्डेत्ता परसुहत्थो गओ रोसेण धमधमेंतो, कुमारेहिं दिट्ठो एंतो, तो तं दट्ठूण पलाया, सोवि कुहाडहत्थो पहावंतो खड्डे आवडिऊण पडिओ, सो कुहाडो अड्डो ठिओ, तत्थ से सिरं दोभाए कयं, तत्थ मओ तंमि चेव वणसंडे दिट्ठीविसो सप्पो जाओ, तेण रोसेण लोभेण य तं रक्खइ वणसंडं, ते तावसा सव्वे दड्ढा, जे अदड्ढा ते णट्ठा, सोऽवि तिसंज्झं वणसंडं परियंचिऊण जं सउणगमवि पासति तं डहति, ताहे सामी तेण

दिट्ठो, ततो आसुरत्तो ममं न याणसि ?; सूर नज्झाइत्ता पच्छा सामिं पलोएति, सो न डज्झति जह अन्ने, एवं दो तिन्नि वारे, ताहे गंतूण डसति, डसइत्ता अवक्कमति मा मे उवरिं पडिहिति, तहवि न मरति, एवं तिन्नि वारे, ताहे पलोएंतो अच्छति अमरिसेणं, तस्स भगवतो रूवं पेच्छंतस्स ताणि विसभरियाणि अच्छीणि विज्झायाणि सामिणो कंतिसोहम्मयाए, ताहे सामिणा भणिय–उवसम भो चंडकोसिया ! ताहे ईहावूहमग्गणगवेसणं करेंतस्स जाइस्सरणं समुप्पन्नं, ताहे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता भत्तं पच्चक्खाइ, मणसा तित्थयरो जाणति, ताहे सो बिले तुंडं छोढुं ठिओ माऽहं रुट्ठो संतो लोगं मारेहिस्सामि, सामी तस्स अणुकंपाए अच्छति, सामिं दट्ठूण गोवालवच्छवाला अल्लियंति, रुक्खेहिं आवरेत्ता अप्पाणं तस्स सप्पस्स पहाणे खिवंति, न चलइत्ति अल्लीणा, कट्ठेहिं घट्टिओ तहवि न फुरइत्ति, तेहिं लोगस्स सिट्ठं, ततो लोगो आगंतूण सामिं वंदित्ता तंपि महेति, अन्नाओ य घयविक्कणियाउ तं सप्पं मक्खेति फरिसेंति, सो पिवीलियाहिं गहिओ, तं वेयणं अहियासेति, अद्धमासस्स मओ सहस्सारे उववन्नो ॥

तहा उवसमे य संते लब्भइ जहा अंगरिसिणा लद्धं, तस्स चरियं–चम्पाए कोसियज्जो नाम अज्झावओ, तस्स दो सीसा–अंगरिसी रुद्दओ य, अंगओ भद्दओ, तेण से अंगरिसी नामं कयं, रुद्दओ सो गंठिच्छेयओ, ते तेण उवज्झाएण दारुगाणं पत्थविया, अंगरिसी अडवीओ उ भारगं गहाय पडिएन्ति, रुद्दओ दिवसं रमेत्ता वियाले संभरियं, ताहे पहाविओ अडविं तं च पेच्छइ दारुगभारगेण एंतगं, चिंतेइय–निच्छूढो मि उवज्झाएणंति, इओ य जोइजसा नाम वच्छवाली पुत्तस्स पंथगस्स भत्तं नेऊण दारुगभारएण एति, रुद्दएण सा एगगड्डाए मारिया, तं च दारुगभारं गहाय अन्नेण मग्गेण पुरओ आगओ उवज्झायस्स

तत्थे भूणमाणो कहेइ, जहा तेण तुज्झ मुंदरसीसेण जोतिजमा मारिया, रमणे(ण्णे) विमासा, आगतो घाडिओ, नगसडे चिंतेति सुहज्झनमाणो, जाती मरिया, संजमो केवलनाणं, देवा महिमं करेंति, देवेहिं कहियं जहा एतेण अब्भक्खाणं दिन्नं, रुद्दगो लोगेण हीलिज्जइ, सो चिंतेति—सच्चं मे अब्भक्खाणं दिन्नं, सो चिंतंतो संबुद्धो, पत्तेयबुद्धो जाओ, इयरो बंभणो बंभणीवि दोवि पव्वइयाणि उप्पन्ननाणाणि सिद्धाणि चत्तारिवि । मणवयणकायजोगेहि य पमत्थेहि य बोही समत्ताइ गुणकलावो लब्भइ ॥

अहवा अणुकंपाईहिं सम्मत्ताई लब्भइ, तंजहा—"अणुकंपेऽकामनिज्जरबालतवे दाणविणयविब्भंगे[1] । संजोगविप्पओगे वसणू सववइड्ढिसक्कारे ॥ १ ॥ वेज्जे मेंढे[2] तह इंदनागे[3] कयपुन्न पुप्फसालसुए । सिव दुमहुरवणि भाउय आहीरदसन्निलापुत्ते ॥ २ ॥" एयासिं अत्थो जुगवं कहिज्जइ—अणुकंपापरो जीवो सम्मत्ताद लहइ, सुहपरिणामसहिउत्ति काउं, वेज्जेति, विज्जवत्, तत्थोदाहरणं—बारवत्तीए कण्हस्स वासुदेवस्स दो वेज्जा—धन्नंतरी य वेयरणी य, धण्णंतरी अभविओ, वेयरणी भविओ, सो साहूणं गिलाणाणं पिएण साहइ, जं जस्स कायव्वं, फासुएण पडोयारेण, जइ से अप्पणो अत्थि ओसहाणि तो देतित्ति, धण्णंतरी पुण जाणि सावज्जाणि ताणि साहइ, असाहुपाउग्गाणि, ते उ साहुणो भणंति—अम्हं कओ एयाणि ? सो भणइ न मए समणाणं अट्ठाए अज्झाइयं वेज्जसत्थं, ते दोवि महारंभा महापरिग्गहा, सव्वाए बारवतीए तिगिच्छं करेंति, अण्णया कण्हो वासुदेवो तित्थयरं पुच्छति—एए बहूणं ढंकाईणं वहकरणं काऊण कहिं गमिस्संति ?, ताहे सामी साहइ—एस धण्णंतरी अपइट्ठाणे नरए उववज्जिहिति, एस पुण वेयरणी कालंजरवत्तिणीए गंगामहानईए विंझस्स य अंतरा वानरत्ताए पच्चायाहिति, ताहे सो वयपत्तो सयमेव जूहवइत्तणं काहिति, तत्थ अण्णया साहुणो सत्थेण समं वीइवइस्संति, एगस्स य साहुस्स पाए

सल्लो लग्गिहिति, ताहे ते भणति अम्हे पडिच्छामो, सो भणइ–सवे मरामो, वच्चह तुब्भे अहं भत्तं पच्चक्खामि, ताहे निबंधं काउं ठिओ सोवि, न तीरइ सल्लो णीणेउं, पच्छ थंडिल्लं पाविओ छायं च, तेवि गया, ताहे सो वानरजूहवई तं पएसं एति जत्थ सो साहू, जाव पुरिल्लेहिं तं दट्ठूण किलिकिलाइयं, ततो तेण जूहाहिवेण तेसिं किलिकिलाइयसद्दं सोऊण रूसिएणं आगंतूण दिट्ठो सो साहू, तस्स तं दट्ठूण इहावूहा, कहिं मया एरिसो दिट्ठोत्ति ?, जाई संभरिया, बारवइं संभरति, ततो सो साहुं वंदति, तं च से सल्लं पासति, ताहे सो तिगिच्छं संभरति, ततो सो गिरिं विलग्गिऊण सल्लुद्धरणिसल्लरोहिणीओ ओसहीओ गहाय आगतो, ताहे सल्लुद्धरणीए पाओ आलित्तो, ततो एगंते पडिओ सल्लो, पउणाविओ संरोहणीए, ताहे तस्स पुरओ अक्खराणि लिहइ–जहाऽहं वेयरणीनाम वेज्जो पुवभवे बारवतीए जो आसि, तेणवि सो सुयपुवो, ताहे सो साहू धम्मं कहेइ, ताहे सो भत्तं पच्चक्खाति तिन्निरातिंदियाणि जीवित्ता सहस्सारं गओ भणियं च–"सो वानरजूहवई कंतारे सुविहियाणुकंपाए। भासुरवरबोंदिधरो देवो वेमाणिओ जाओ ॥१॥" ओहिं पउंजइ, जाव पेच्छति त सरीरगं, तं च साहुं, ताहे आगंतूण देविड्ढिं दावेति, भणइ–तुम्हप्पभावेण मे देविड्ढी लद्धत्ति, ततो णेण सो साहू साहरिओ तेसिं साहूणं सगासंति, ते पुच्छंति–किह तुमं आगओ ? ताहे साहति। एवं तस्स वानरस्स सम्मत्तसामाइयसुयसामाइयचरित्ताचरित्तसामाइयाण अणुकंपाए लाभो जाओ, इयरहा नरयगमणपाउग्गाणि कम्माणि करेत्ता नरयं गओ होंतो, ततो चुयस्स चरित्तसामाइयं भविस्सति सिद्धी य। (१)

तहा अकामनिज्जराए जीवो सम्मत्ताइ पावेइ सुहपरिणामजुत्तोत्तिकाउं, मेंठवत्, तस्सक्खाणयं इमं–वसंतपुरे नगरे इब्भवहूगा (इसवहूगा) नईए ण्हाइ, अन्नो य तरुणो तं दट्ठूण भणति–"सुण्हायं ते पुच्छति एस णई मत्तवारणकरोरु। एते णईरुक्खा

माणि मंतेति ?, अहं पि वंचिओ णाए, णत्थि मइत्तणं धुत्तीए, जाव चिंतेति ताव निष्फिडिया, ताहे सो थेरो सव्वेण लोगेण हीलिओ, तस्स ताए अधिइए निद्दा णट्ठा, ताहे रण्णो तं कण्णे गयं, रायाणएण अंतेउरपालओ कओ, आभिसेयं च हत्थिरयणं रण्णो वासघरस्स हेट्ठा बद्धं अच्छति, देवी य हत्थिमेंठेण आसत्तिया, नवरं रत्तिं हत्थिणा हत्थो पसारिओ, ओलोयाओ ओयारिया, पुणरवि पभाए पडिविलइया, एवं वच्चति कालो, अन्नया चिरजायंति हत्थिमेंठेण संकलाए आहया, सा भणति–सो एरिसो ण सुवइ, मा रूसह, तं थेरो पेच्छति, सो चिंतेति–जदि एयाउवि एवं किं नु ताओ भद्दियाउत्ति सुत्तो, पभाए सव्वो लोगो उट्ठिओ, सो ण उट्ठेति, राया भणइ–सुवउ, सत्तमि दिवसे उट्ठिओ, राइणा पुच्छिओ, कहियं जहेगा देवी ण याणामि कयरत्ति, ताहे राइणा भिंडमओ हत्थी कारिओ, सव्वाउ अंतेउरियाओ भणियाउ–एयस्स अच्चणियं करेत्ता उलंडेह, सव्वाहिं उलंडिओ, सा णेच्छति, भणइ–बीहेमि, ताहे राइणा उप्पलनालेण आहया, जाव मुच्छिया पडिया, ताहे से उवगयं जहेसा दोसकारिणित्ति, भणिया–"मत्तगयमारुहंतीए भिंडमयस्स गयस्स भयंतीए। इह मुच्छिय उप्पलाहया तत्थ ण मुच्छिय संकलाहया ॥ १ ॥" पुट्ठी से जोइया, जाव संकलप्पहारा दिट्ठा, ताहे राइणा हत्थिमेंठो सा य तंमि हत्थिमि विलग्गाविऊणं छिण्णटंकए विलग्गावियाणि, भणिओ य मेंठो–इहं अप्पततिओवि गिरिप्पवायं देहि, हत्थिस्स दोहिवि पासेहिं वेलुग्गाहा ठविया, जाव हत्थिणा एगो पाओ आगासे कओ, लोओ भणति–किं तिरिओ जाणति ?, एयाणि मारियव्वाणि, तहावि राया रोसंपि न मुयति, तओ दो पाया आगासे, तईयवाराए तिण्णि पाया आगासे, एक्केण पाएण ठिओ, लोयाण अक्कंदो कओ, किं एयं हत्थिरयणं विणासेहि ?, रण्णो चित्तं वलियं, भणिओ–तरसि णीयत्तेउं ?, भणइ–जइ अभयं

दहि, दिण्णं, तेण णियत्तिओ अंकुसेण जहा समित्ता वले ठिओ, ताहे उयारित्ता णिविमयाणि कयाणि, एगत्थ पच्चंतगामे गुन्नघरे ठियाणि, तत्थ य गामेल्लयपारद्धो चोरो तं सुन्नघर अनिगओ, ते भणंति-वेढेउं अच्छामो, मा कोवि पविसउ, गोसे गेण्हामो, सोऽवि चोरो लोयंतो अच्छइ, कहवि तीए फासो वेइओ, सा ढुक्का भणति-कोऽसि तुमं ?, सो भणति-चोरोऽहं, तीए भणियं-तुमं मम पती होहि जा एयं साहामो, जहा एस चोरोत्ति, तेहिं तहा कएल्लं, पभाए मंठो गहिओ, सूलेण भिन्नो, चोरेण समं वच्चति, जावंतरा णदी, सा तेण भणिया-जहा एत्थ सरत्थंवे अच्छ जाव अहं एयाणि वत्थाभरणाणि उत्तारेमि, सो गओ, उत्तिण्णो पहाविओ, सा भणइ-किं जाहि ?, सो भणइ-जहा ते सो माराविओ एवं ममंपि कहिंचि मारावेसि, इयरोऽवि तत्थ विद्धो उदगं मग्गति, तत्थेगो सड्ढो, सो भणति-जइ णमोक्कारं करेसि तो देमि, तो उदगस्स अट्ठा गओ, जाव तंमि अपत्ते चेव सो णमोक्कारं करेंतो चेव कालगतो, वाणमंतरो जाओ, सड्ढोऽवि आरक्खियपुरिसेहिं गहिओ, सो देवो ओहिं पउंजइ, पेच्छइ सरीरगं, सड्ढं च वद्धं, ताहे सो सिलं विउव्वित्ता मोएइ, तं च पेच्छइ सरत्थंवे निलुक्कं, ताहे से घिणा समुप्पन्ना, सियालरूवं विउव्वित्ता मंसपेसीए गहियाए उदगतीरे वोलेति, जाव णईओ मच्छो उच्छलिऊण तडे पडिओ, ततो सो मंसपेसिं मोत्तूण मच्छस्स पहाविओ सो पाणिए पडिओ, मंसपेसी सेणेण गहिआ, ताहे सियालो झायइ, ताए भण्णति-"मंसपेसिं परिच्चज्ज मच्छं पत्थेसि जंबुया ! । चुक्को मच्छं च मंसं च, कलुणं झायसि कोण्हुया ! ॥१॥" तेण भण्णइ-"पत्तपुडपडिच्छन्ने, जणयस्स अयसकारीए । चुका । पतिं च जारं च, कलुणं झायसि बंधुकी ॥१॥" एवं भणिया विलिया जाया, ताहे सो सयरूवं दंसेइ, पण्णवेत्ता वुत्ता-पव्वयाहि, ताहे सो राया तज्जिओ तेण पडिवन्ना, सक्कारेण णिक्खंता, देवलोगं गया । (२)

बालतवजुत्तो जीवो सम्मत्ताइ लहइ, जहा इंदनागेणं, तस्स चरियं—वसंतपुरं णगरं, तत्थ सेट्ठिघरं मारीए उच्छाइयं, इंदनागो नाम दारगो, सो छुट्टो, छुहिओ गिलाणो पाणियं मग्गति, जाव सव्वाणि मयाणि पेच्छइ, बारंपि लोगेण कंटियाहिं ढक्कियं, ताहे सो सुणयछिद्देण निग्गंतूण तंमि णयरे कप्परेण भिक्खं हिंडइ, लोगो से देइ इब्भपुत्तोत्तिकाउं, एवं सो संवड्ढति, इओ य एगो सत्थवाहो रायगिहं जाउकामो घोसणं घोसावेति, तेण सुयं, सत्थेण समं पत्थिओ, तत्थ तेण सत्थे कूरो लद्धो, सो जिमिओ, ण जिण्णो, बीयदिवसे अच्छति, सत्थवाहेण दिट्ठो, चिंतेइ नूणं एस उववासिओ, सो य अव्वत्तलिंगी, बीयदिवसे हिंडंतस्स सेट्ठिणा बहुं णिद्धं च दिण्णं, सो तेणं दुवे दिवसा अजिण्णएण अच्छइ, सत्थवाहो जाणति एस छट्ठकालिओ, तस्स अत्था जाया, सो तइयदिवसे हिंडंतो सत्थवाहेण सद्दाविओ, कीस कल्लं नागओ?, तुण्हिक्को अच्छति, जाणइ जहा छट्ठं कएल्लयं, ताहे से दिण्णं, तेणवि अन्ने दो दिवसे अच्छाविओ, लोगोवि पणओ, अण्णस्स णिमंतेंतस्सवि ण गेण्हइ, अण्णे भणंति—सो एगपिंडिओ, तेण तं अट्ठवयं लद्धं, सत्थवाहेण भणिओ—मा अण्णस्स खणा गेण्हेज्जासित्ति जाव णगरं गम्मति ताव अहं देमि, गया णगरं, तेण से नियघरे मढो कओ, ताहे सीसं मुंडावेइ, कासायाणि य चीवराणि गेण्हइ, ताहे विक्खातो जातो, ताहे तस्सवि पेच्छइ, ताहे जद्दिवसं पारणयं तद्दिवसं लोगो आणेइ भत्तं, एगस्स पडिच्छइ, तओ लोगो न याणइ कस्स पडिच्छियंति, ताहे लोगेण जाणणानिमित्तं भेरी कता, जो देति सो ताडेति, ताहे लोगो पविसति, एवं वच्चइ कालो, सामी समोसरिओ, ताहे साहू संदिसावेंता भणिया—मुहुत्तं अच्छह अणेसणा वट्टति, तंमि जेमिए भणिया—उयरह, गोतमो य भणिओ—मम वयणेणं भणेज्जासि—भो भो अणेगपिंडिया! एगपिंडिओ तं दट्ठमिच्छइ, ताहे गोतमसामिणा भणिओ, रुट्ठो, तुब्भे अणे-

गाहियाओ, परिणीओ, मायाए दुल्ललियगोट्ठीए छूढो, तेहिं गणियाघरं पवेसिओ, बारसहिं वरिसेहिं निद्धणं कुलं कयं, तोवि सो ण णिग्गच्छइ, मायापियाणि से मयाणि, भज्जा य से आभरणगाणि चरिमदिवसे पेसेति, गणियामायाए णायं-णिस्सारो कओ, ताहे ताणि अन्नं च सहस्सं पडिविसज्जियं, गणियामाया भणति-णिच्छुभउ एसो, सा णेच्छति, ताहे चोरियाए णीणिओ घरं सज्जिज्जेति, उइण्णोवि बाहिं अच्छति, ताहे दासीए भण्णति-णिच्छूढोऽवि अच्छसि ?, ताहे नियघरं मडियपडियं गओ, ताहे से भज्जा संभमेणं उट्ठिया, ताहे से सवं कहियं, सोगेणं अप्फुण्णो भणति-अत्थि किंचि अन्नहिं जाइत्ता ववहरामि ?, ताहे जाणि आभरणगाणि गणियाए मायाए जं च सहस्सं कप्पासमोल्लं दिन्नं ताणि से दंसियाणि, सत्थो य तद्दिवसं कंपि देसं गंतुकामो, सो य भंडमोल्लं गहाय तेण सत्थेण समं पहाविओ, बाहिं देउलियाए खट्टं पाडिऊण सुत्तो अन्नस्स वाणिययस्स, मायाए सुयं जहा-तव पुत्तो मओ वहणे भिन्ने, तीए तस्स दवं दिन्नं, मा कस्सति कहेज्जासि, ताए चिंतियं-मा दवं राउलं पविसिहिति अपुत्ताए, ताहे रतिं तं सत्थं एइ, जा किंचि अणाहं पवेसेमि, ताहे य तं पासति, पडिबोहेत्ता पवेसिओ, ताहे घरं नेऊण रोयति-चिरणट्ठगो सि पुत्ता, सुण्हाणं चउण्हं ताणं कहेति-एस देवरो ते चिरणट्ठओ, ताओ तस्स लाइयाओ, तत्थवि बारस वरिसाणि अच्छति, तत्थ एक्केक्काए चत्तारि पंच चेडरूवाणि जायाणि, थेरीए भणियं-एत्ताहे णिच्छुभउ, ताओ न तरंति धारेउं, ताहे ताहिं संबलमोयगा कया अंतो रयणाणं भरिया, वरं से एयं पाउग्गं होति, ताहे वियडं पाएत्ता ताए चेव देवउलियाए ऊसीसए संबलं ठवित्ता पडियागया, सोऽवि सीयलएणं पवणेणं पडिबुद्धो, पभायं च जायं, सोऽवि सत्थो तद्दिवसं आगओ, भज्जाएवि गवेसओ पेसिओ, ताहे उट्ठवेत्ता घरं णीओ,

समोमरिओ, कयपुण्णओ सामिं वंदिऊण पुच्छति-अप्पणो संपत्तिं विपत्तिं च, भगवया कहियं पायसदाणं, संवेगेण पव्वइओ, एवं दाणेण सामाइयं लब्भति। (४)

तहा विणयाराहगो जीवो सम्मत्ताइ पावेइ, जहा-पुप्फसालसुएणं, कहाणगं इमं-मगहाविसए गोब्बरगामे पुप्फसालो नाम गाहावती, भद्दा भारिया, पुत्तो सिं पुप्फसालसुतो, सो मायापितरं पुच्छति-को धम्मो?, तेहिं भण्णइ-मायापियरं सुस्सूसियव्वं-"दो चेव देवयाइं, माया पियरो य जीवलोगंमि। तत्थवि पिया विसिट्ठो जस्स वसे वट्टई माया॥१॥" सो ताणं पायमुहधोवणादिविभासो, देवयाणिव सुस्सूमति, अन्नया गामभोइओ समागओ, ताणि संभंताणि पाहुण्णं करेंति, सो चिंतेति-एयाणवि एस देवयं, एयं पूएमि तो धम्मो होहिति, तस्स सुस्सूसा पकआ, अण्णया तस्स भोइओ, तस्सवि अण्णो, जाव सेणियं रायाणं ओलग्गिउमारद्धो, सामी समोसढो, सेणिओ इड्ढीए गंतूण वंदति, ताहे सो सामिं भणति-अहं तुज्झे ओलग्गामि?, सामिणा भणियं-अहं रयहरणपडिग्गहमत्तएणं ओलग्गिज्जामि, ताण सुणणाए संबुद्धो, एवं विणएण सामाइयं लब्भइ। (५)

तहा लद्धविभंगनाणो जीवो लहइ, जहा-तावसस्सिवरायरिसिणा लद्धं, भावत्थो इमाओ कहाणगाओ नेओ, जहा-अत्थि मगहाजणवए सिवो राया, तस्स धणधण्णहिरण्णादि पइदियहं वड्ढति, चिंता जाया-अत्थि धम्मफलंति, तो महं हिरण्णादि वड्ढतित्ति, तो पुण्णं करेमित्ति कलिऊणं भोयणं कारियं, दाणं च णेण दिण्णं, ततो पुत्तं रज्जे ठविऊणं सकयतंबमयभिक्खाभायणरूडुच्छुगोवगरणो दिसापोक्खियतावसाण मज्झे तावसो जातो, छट्ठट्ठमाउ परिसडियपंडुपत्ताणि आणेऊण आहारेति, एवं से चिट्ठमाणस्स कालेण विभंगनाणमुप्पन्नं संखेज्जदीवसमुद्दविसयं, ततो नगरमागंतूण जहोवलद्धे पण्णवेति, अण्णया साहवो

तस्स महाधणस्स नामं रायललिओ, इयरस्स गंगदत्तो, सो मइल्लो जं किंचि लभइ ततो तस्स वि देइ, माऊए पुण अणिट्ठो, जहिं पेच्छति तहिं कट्ठाईहिं पहणइ, अन्नया इंदमहो जाओ, ततो जणएण अप्पसागारियं आणिओ, आसंदगस्स हेट्ठा कओ जेमाविज्जति, ओहाडियाओ, ताए किहवि दिट्ठो, ताहे हत्थे घेत्तूण कड्ढिओ, चंदणियाए पक्खित्तो, ताहे सो रोयति, पिउणा ण्हाणिओ, एत्थंतरे साहू भिक्खस्स अतिगओ, सेट्ठिणा पुच्छिओ–भयवं ! माऊए पुत्तो अणिट्ठो भवति ? हंता भवति, किह पुण ?; ताहे भणति–"जं दट्ठुं वड्ढए कोहो, नेहो य परिहायए। स निण्णेओ मणुस्सेण, ममागं पुव्ववेरिओ ॥ १ ॥ जं दट्ठुं वड्ढए नेहो, कोहो य परिहायइ। स विन्नेओ मणुस्सेण, एसो मे पुव्वबंधवो ॥ २ ॥" ततो सो भणइ–भयवं ! पव्वावेह एयं, बाढंति विसज्जिओ, पव्वतितो तेसिं आयरियाण सगासे, भागावि सिणेहाणुरागेण पव्वइओ, ते साहू जाया ईरियासमिया, अणिस्सियं तवं करेंति, ताहे सो तत्थ णियाणं करेति 'जइ अत्थि इमस्स तवनियमस्स फलं तो आगमिस्साणं जणमणणयणाणंदणो भवामि,' घोरं तवं करेत्ता देवलोगं गया, ततो चुओ वसुदेवपुत्तो वासुदेवो जाओ, इयरोऽवि बलदेवो, एवं तेण वसणेण सामाइयं लद्धं । (८)

तहा अणुभूयउच्छवोऽवि लहइ, आभीरवत् (इव), तेसिं कहाणगं इमं–एगंमि पच्चंतियगामे आभीराणि, ताणि साहूण पासे धम्मं सुणेंति, ताहे देवलोए वण्णेंति, एवं तेसिं अत्थि धम्मस्स बुद्धी, अन्नया कयाइ इंदमहे वा अण्णंमि वा उस्सवे गयाणि नगरं, जारिसा बारवती, तत्थ लोयं पासंति मंडियपसाहियं, सुगंधनिग्गितणेवत्थं, ताणि तं दट्ठूण भणंति–एस सो देवलोओ जो साहूहिं वण्णिओ, एत्ताहे जदि वच्चामो सुंदरं करेमो, जेण अम्हेवि देवलोगे उववज्जामो, ताहे ताणि गंतूण साहूण

[illegible] सत्थवाहस्स धूया पढमजा वट्टमाणा वायणय गहाय अच्छइ, ताहे सो साहू तं भोयणभंडं पेच्छइ, सत्थवाहेण भिक्खा णीणाविया, गहिएवि अच्छति, ताहे पुच्छति–किं भगवं ! एयं चेडिं पलोएह ?, ताहे सो भणति–ण मम चेडीए पयोयणं, एयं भोयणभंडं पलोएमि, ततो पुच्छति कओ एयस्स तुज्झ आगमो ?, सो भणइ–अज्जयपज्जयागयं, तेण भणियं–सब्भावं साहह !, तेण भणियं मम ण्हायंतस्स एवं चेव ण्हाणविही उवट्ठिया, एवं सव्वावि भोयणविही, सिरिघराणिवि भरियाणि णिक्खयाणि दिट्ठाणि, अदिट्ठपुव्वा य घरिया आणेत्ता देंति, साहू भणति–एयं मम आसि, किह ?, तो कहेति–ण्हाणादि, ततो पच्चयनिमित्तं अणेण तं भोयणपत्तीखंडं ढोइयं, झडत्ति लग्गं, पिउणो य णामं साहति, ताहे णायं जह एस सो जामाउओ, ताहे उट्ठेऊण अवतासेत्ता परुण्णो, भणति–एयं सव्वं तव तदवत्थं अच्छति, एसा ते पुव्वदिण्णा चेडी पडिच्छसुत्ति, सो भणति–पुरिसो वा पुव्विं कामभोगे विप्पहयति, कामभोगा वा पुव्विं पुरिसे विप्पहयंति, ताहे सोऽवि संवेगमावण्णो, मा ममंपि एमेव विप्पयहिस्संतित्ति पव्वतितो, तत्थ एगेण विप्पओगेण लद्धं, एगेण संयोगेण सामाइयं लद्धंति । (७)

तहा अणुभूयवसणो लहइ, जहा दोहिं भाउगेहिं लद्धं, भावत्थो कहाणगाओ णेओ, तं च इमं–दो भाउया सगडेण वच्चंति, चक्कुलेंडा य सगडपहे लोट्टइ, महल्लेण भणियं–उवत्तेह भंडिं, इयरेण वाहिया भंडी, सा सण्णी सुणेति, छिण्णा चक्केण, मया, इत्थिया जाया हत्थिणापुरे णगरे, सो महल्लतरो पुव्विं मरित्ता तीसे पोट्टे आयाओ, पुत्तो जाओ, इट्ठो, इयरोवि तीए चेव पोट्टे आयाओ, जं सो उववण्णो तं सा चिंतेति–सिलं व हावेज्जामि, गब्भपाडणेहिं वि ण पडति, ततो सो जाओ, दासीए हत्थे दिन्नो, छड्डेहि, सो सेट्ठिणा दिट्ठो णिज्जंतो, तेण घेत्तुण अण्णाए दासीए दिण्णो, सो तत्थ संवड्ढइ,

णिआइणिणि गामपुव्वह, मरिऊण देवलोगं गयाणि, अहाउगं भुत्तं, इओ य इलावद्धणे णगरे इला देवया, तं एगा सत्थवाही पुत्तकामा ओलग्गति, सो चविऊण पुत्तो से जाओ, णामं च से कयं इलापुत्तो, इयरीवि गव्वदोसेणं तओ चुया लंखगकुले उप्पन्ना, दोवि जोव्वणं पत्ताणि, अण्णया तेण सा लंखगचेडी दिट्ठा, पुव्वभवरागेण अज्झोववण्णो, सा मग्गिज्जंती ण लब्भति जत्तिएण मउणंति, ताणि भणंति—एसा अम्ह अक्खयणिही, जइ सिप्पं सिक्खति अम्हेहिं समं हिंडइ, तो से देमो, सो तेहिं समं हिंडिओ, सिक्खिओ य, ताहे विवाहणिमित्त रण्णो पेच्छणयं करेहत्ति भणिओ, बेण्णायडं गयाणि, तत्थ राया पेच्छति संतेउरो, इलापुत्तो खेड्डाओ करेति, रायाए दिट्ठी दारियाए, राया ण देइ, रायाणए अदेंते अण्णोऽवि ण देंति, साहुक्कारगं पडिच्छति । भणिओ लंख ! पडणं करेहि, सो य किर वंससिहरे, अड्डं कड्डं कण्हयं, तत्थ खीलिया, सो पाउगाओ परिहेति, मूले णिविडियाओ, ततो असिखेडगहत्थगओ आगासं उप्पइत्ता ते खीलिया पाउयाणालियाए पवेसेइ, सत्त अग्गतो कुतो सत्त पच्छिमाहुत्तो, जदि फिडइ ततो पडिओ सयखंड खंडिज्जति, तेण कयं, राया दारियं पलोएति, लोगेण कलयलो कओ, ण देति राया, ण पेच्छति, राया चिंतेति—जदि मरति तो अहं एयं दारियं परिणेमि, भणति—ण दिट्ठं, पुणोऽवि करेति, तत्थवि ण दिट्ठं, तइयवारं कयं, तत्थवि ण दिट्ठं, चउत्थियाए वाराए भणिए पुणोऽवि करेहत्ति, रंगो विरत्तो, ताहे सो इलापुत्तो वंससिहरे ठिओ चिंतेइ धिरत्थु भोगाणं, एस राया एत्तियाहिं ण तित्तो, एयाए रंगोवजीवियाए लग्गिउं मग्गति, एयाए कारणा ममं मारेउमिच्छति, सो य तत्थ ठिओ एगस्स सेट्ठिघरे साहुणो पडिलाभिज्जमाणे पासति सव्वालंकारविभूसियाहिं इत्थियाहिं, साहू य [illegible] अणोलोएमाणो पेच्छति, ताहे भणति—अहो धन्ना ! निरभिलासा विसएसु, अहं सेट्ठिसुओ एत्थंपि एस अवस्था, तत्थे।

साहेंति–जो तुब्भेहिं अम्हे कहिओ देवलोगो सो पच्चक्खो अम्हेहिं दिट्ठो, साहू भणंति–न तारिसो देवलोगो, अण्णारिसो अओ अणंतगुणो, ततो ताणि अब्भहियजायविम्हयाणि पव्वइयाणि, एवं उस्सवेण सामाइयलंभो। (९)

(तहा) महिड्ढियदंसणाओत्ति लब्भइ, जहा दसन्नभद्देणं राइणा, कहाणयं इमं–दसन्नपुरे णगरे दसन्नभद्दो राया, तस्स पंच देवीसयाणि ओरोहे, एवं सो रूवेण जोव्वणेण वलेण य पडिबद्धो, एरिसं अन्नस्स नत्थित्ति चिंतेति, सामी य समोसरिओ दसन्नकूडे पव्वए, ताहे सो चिंतेति–तहा कल्लं वंदामि जहा ण केणवि अन्नेण वंदियपुव्वो, तं अज्झत्थियं च सक्को नाऊण चिंतेति–वराओ अप्पाणं न याणति, तओ राया महया समुदएण णिग्गओ वंदिउं सव्विड्ढीए, सक्को य देवराया एरावणं विलग्गो, तस्स अट्ठ मुहे विउव्वति, मुहे २ अट्ठ २ दंते विउव्वति, दंते २ अट्ठ २ पुक्खरणीओ विउव्वति, एक्केक्काए पुक्खणीए अट्ठ २ पउमे विउव्वति, पउमे २ अट्ठट्ठ पत्ते विउव्वति, पत्ते २ अट्ठट्ठ बत्तीसपयाणि नाडगाणि विउव्वति, एवं सो सव्विड्ढीए उवगिज्जमाणो आगओ, ततो एरावणं विलग्गो चेव तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, ताहे सो हत्थी अग्गपाएहिं भूमीए ठिओ, ताहे तस्स हत्थिस्स दसन्नकूडे पव्वए देवयप्पभावेण अग्गपयाणि उट्ठियाणि, ततो से नामं कयं गयग्गपदगोत्ति, ताहे सो दसण्णभद्दो विचिंतेति–एरिसा कओ अम्हारिसाण इड्ढित्ति, अहो कएल्लओ अणेण धम्मो, अहमवि करेमि, ताहे सो सव्वं छड्डेऊण पव्वतितो, एवं इड्ढीए सामाइयं लब्भइ। (१०)

तहा सक्कारपत्थणेवि गय(अलद्ध)सक्कारो जीवो लहति, जहा इलापुत्तेण, कहाणगं च इमं–एगो धिज्जाइओ, तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा समहिलिओ पव्वइओ, उग्गं पव्वज्जं करेंति, णवरमवरोप्परं पीई ण ओसरति, महिला मणागं

नडागपरबंधो । पिप्पलअसंजयाणं पावारहलाइगोदाणं ॥ २ ॥ " असंजयाणंति–माहणाईणं, पावारंति–पूरहिगाइ उत्तारिआगं, एमाइ अण्णंपि अन्नेसिं मिच्छत्तथिरीकरणाइकारणं जहा न होइ तहा जइयबं, जओ मिच्छत्तथिरीकरणं अइअणिट्ठफलं, भणियं च—" अन्नेसिं सत्ताणं मिच्छत्तं जो जणेइ मूढप्पा । सो तेण निमित्तेणं न लहइ बोहिं जिणाभिहियं ॥ १ ॥"

संपयं 'अइयारा', ते पुण पंच होंति, तंजहा–संका कंखा वितिगिच्छा परपासंडपसंसा परपासंडसंथवो य, तत्थ संका–भगवंतअरहंतपणीएसु पयत्थेसु धम्मत्थिकायाइसु अच्चंतगहणेसु मइदुब्बलेण संमं अणवधारिज्जमाणेसु संसओ संका, किं एवं होज्जा न वत्ति?, जओ भणियं " संसयकरणं संका ", सा पुण दुविहा–देससंका सबसंका य, तत्थ देससंका एगदेसविसया, जहा–किमेस जीवो असंखेज्जपएसरूवो होज्जा, किंवा निप्पएसो निरवयवो होज्जत्ति ?, सबसंका पुण–सबेवि अत्थिकाए संकइ, जिणसासणं वा संकइत्ति, एसा पुणरेवमइयारो–" संकाए मालिन्नं जायइ चित्तस्सऽपच्चओ य जिणे । संमत्ताणुचिओ खलु इति अइयारो भवे संका ॥ १ ॥" दोसा य इत्थ इमे–" नासइ इमीए नियमा तत्ताभिनिवेसमो सुकिरिया य । तत्तो य कंमबंधो संसारनिबंधणो होइ (बंधदोसो तम्हा एयं विवज्जिज्जा) ॥ १ ॥" तम्हा मोक्खत्थिणा नवगयसंकेण जिणवयणं सच्चमेव सबंपि पडिवज्जियबं, इहलोएवि जो अविसयं संकं करेइ सो विणस्सइ, जहा–सो पेज्जापायओ, पेज्जाए मासा जे परिभज्जिया छूढा, अंधकारे लेहसालाउ आगया दो पुत्ता पियंति, एगो चिंतेइ–एयाओ मच्छियाओ, तस्स संकाए वग्गुलीवाओ संजाओ मओ य, बीओ चिंतेइ न मम माया मच्छिया देइ, सो जीविओ, एए दोसा संकाएत्ति, इह पुण सबत्थ वि अइयारो परिणामविसेसाओ नयमयभेयओ वा संमत्तमालिन्नमेत्तं संमत्ताभावो वा नायबोत्ति ।

विरागं गयस्स केवलनाणं समुप्पण्णं, ताएवि ... ए विरागो, विभासा, अग्गमहिसीएवि, रण्णोऽवि पुणरावत्ती जाया, विरागो विभासा, एवं ते चत्तारिवि केवली जाया, सिद्धा य, एवं असक्कारेण सामाइयं लब्भति । (११)

जइवि परमत्थेण कम्मखयाउ चेव सम्मत्ताइलाभो होइ, तहवि मिच्छत्तपरिहारो " दिट्ठे सुयमणुभूए " एवमाईणि य कम्मखओवसमे कारणीभवंति, तेण मिच्छत्तपरिहाराईणिवि एत्थ निदंसियाणि, भणियं ' जह जायइ ', त्ति दारं ।

संपयं ' दोसदारं, ' " संमत्तपरिब्भट्ठो जीवो दुक्खाण भायणं होइ । नंदमणियारसेट्ठी दिट्ठंतो एत्थ नायव्वो ॥ १ ॥ " अक्खरत्थो सुगमो, कहाणगं नायाधम्मकहासु । तहा " दंसणविराहगाणं तह्णाणुक्कोसणंतकालाओ । तम्हा दंसणरयणं सव्वपयत्तेण रक्खेज्जा ॥ १ ॥ " एवमाइ दोसविभासा कायव्वा ।

इयाणिं 'गुणदारं' भणइ, " संमत्तंमि उ लद्धे ठइयाइं नरयतिरियदाराइं । दिव्वाणि माणुसाणि य मोक्खसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥ कुसमयसुईण महणं संमत्तं जस्स सुट्ठियं हियए । तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं व भवमहणं ॥ २ ॥ " एवमाई

नट्ठागमपरंपरो । विप्पलयमंजयाणं पावागच्छाहओदाणं ॥ २ ॥" उमंजयानंति–माहणाईणं, पावागति–एरिहियाडं उत्तरिजागं, एगमाइ अण्णंपि अंधंमि मिच्छत्तथिरीकरणाइकारणं जहा न होइ तहा जइयव्वं, जओ मिच्छत्तथिरीकरणं अइणिट्ठफलं, भणियं च —" अंधंमि मत्ताणं मिच्छत्त जो जणेइ मूढप्पा । सो तेण निमित्तेणं न लहइ बोहिं जिणाभिहियं ॥ १ ॥"

संपयं 'अइयारा', ते पुण पंच होंति, तंजहा–संका कंखा वितिगिच्छा परपासंडपसंसा परपासंडसंथवो य, तत्थ संका–भगवंतअरहंतपणीएसु पयत्थेसु धम्मत्थिकायाईसु अच्चंतगहणेसु मइदुब्बलत्तेण संम अणभिगम्ममाणेसु संसओ संका, किं एवं होज्जा न वत्ति?, जओ भणियं " संसयकरणं संका ", सा पुण दुविहा–देससंका सव्वसंका य, तत्थ देससंका एगदेसविसया, जहा–किमेस जीवो असंखेज्जपएसओ होज्जा, किंवा निप्पएसो निरवयवो होज्जत्ति ?, सव्वसंका पुण–सव्वेवि अत्थिकाए संकइ, जिणसासणं वा संकइत्ति, एसा पुणरेवमइयारो–" संकाए मालिन्नं जायइ नित्तम्मडपच्चओ य जिणे । संमप्पाणुचिओ खलु इति अइयारो भवे संका ॥ १ ॥" दोसा य इत्थ इमे–" नासइ इमीए नियमा तत्ताभिनिवेसओ सुकिरिया य । तत्तो य कम्मबंधो संसारनिबंधणो होइ (बंधदोसो तम्हा एयं विवज्जिज्जा) ॥ १ ॥" तम्हा मोक्खत्थिणा वयणसंकेण जिणवयणं सव्वमेव सव्वंपि पडिवज्जियव्वं, इहलोएवि जो असियं संकं करेइ सो विणस्सइ, जहा–सो पेज्जापायओ, पेज्जाए मासा जे परिभज्जिया छूढा, अंधकारे लेहसालाउ आगया दो पुत्ता पियंति, एगो चिंतेइ–एयाओ मच्छियाओ, तस्स संकाए वग्गुलीवाओ संजाओ मओ य, बीओ चिंतेइ न मम माया मच्छिया देइ, सो जीविओ, एए दोसा संकाएत्ति, इह पुण सव्वत्थ वि अइयारो परिणामविसेसाओ नयमयभेयओ वा संमत्तमालिन्नमेत्तं संमत्ताभावो वा नायव्वोत्ति ।

विरागं गयस्स केवलनाणं समुप्पण्णं, ताएवि चेडीए विरागो, विभासा, अग्गमहिसीएवि, रण्णोऽवि पुणरावत्ती जाया, विरागो विभासा, एवं ते चत्तारिवि केवली जाया, सिद्धा य, एवं असक्कारेण सामाइयं लब्भति। (११)

जइवि परमत्थेण कम्मखयाउ चेव सम्मत्ताइलाभो होइ, तहवि मिच्छत्तपरिहारो " दिट्ठे सुयमणुभूए " एवमाईणि य कम्मखओवसमे कारणीभवंति, तेण मिच्छत्तपरिहाराईणिवि एत्थ निदंसियाणि, भणियं ' जह जायइ ', त्ति दारं।

संपयं ' दोसदारं, ' " संमत्तपरिब्भट्ठो जीवो दुक्खाण भायणं होइ। नंदमणियारसेट्ठी दिट्ठंतो एत्थ नायव्वो ॥ १ ॥ " अक्खरत्थो सुगमो, कहाणगं नायाधम्मकहासु। तहा " दंसणविराहगाणं तह्यभुकोसणंतकालाओ। तम्हा दंसणरयणं सव्वपयत्तेण रक्खेज्जा ॥ १ ॥ " एवमाइ दोसविभासा कायव्वा।

इयाणिं 'गुणदारं' भणइ, " संमत्तंमि उ लद्धे ठइयाइं नरयतिरियदाराइं। दिव्वाणि माणुसाणि य मोक्खसुहाइं सहीणाइं ॥ १ ॥ कुसमयसुईण महणं संमत्तं जस्स सुट्ठियं हियए। तस्स जगुज्जोयकरं नाणं चरणं व भवमहणं ॥ २ ॥ " एवमाई संमत्तगुणा एत्थ वत्तव्वा।

अहुणा 'जयणादारं,' "लोइयतित्थे पुण ण्हाणदाणपेसवणपिंडहुणणाई। संकंतुवरागाइसु लोइयतवकरणमिच्चाइ ॥ १ ॥ " लोइयतित्थं गंगापयागाइ, तत्थ ण्हाणं धम्मबुद्धीए न कायव्वं, तहा दाणं धिज्जाइयाईणं, पेसवणं अट्ठिगाईणं गंगाइसु, पिंडप्पयाणं मयजणगाइनिमित्तं, हुणणं अग्गीए तिलघयाईणं, आइसद्दाओ सूयगाइ घेप्पइ, संकंती उत्तरायणाइसु, उवरागो—चंदसूरगहणं, लोइयतवकरणं वच्छबारसिमाइसु अगणिअपक्कभक्खणाई, आदिसद्दाओ—" धम्मग्गिट्ठिगवण्हिगअणाहसाला-

तडागपववंधो । पिप्पलअसंजयाणं पावारहलाइगोदाणं ॥ २ ॥ ” असंजयाणंति–माहणाईणं, पावारंति–पूरट्टिगाइं उत्तरिज्जगं, एवमाइ अण्णंपि अन्नेसिं मिच्छत्तथिरीकरणाइकारणं जहा न होइ तहा जइयव्वं, जओ मिच्छत्तथिरीकरणं अइअणिट्ठफलं, भणियं च—“ अन्नेसिं सत्ताणं मिच्छत्तं जो जणेइ मूढप्पा । सो तेण निमित्तेणं न लहइ बोहिं जिणाभिहियं ॥ १ ॥ ”

संपयं ‘ अइयारा ’, ते पुण पंच होंति, तंजहा–संका कंखा वितिगिच्छा परपासंडपसंसा परपासंडसंथवो य, तत्थ संका–भयवंतअरहंतपणीएसु पयत्थेसु धम्मत्थिकायाइसु अच्चंतगहणेसु मइदुब्बल्लेण संमं अणवधारिज्जमाणेसु संसओ संका, किं एवं होज्जा न वत्ति?, जओ भणियं “ संसयकरणं संका ”, सा पुण दुविहा–देससंका सव्वसंका य, तत्थ देससंका एगदेसविसया, जहा–किमेस जीवो असंखेज्जपएसरूवो होज्जा, किंवा निप्पएसो निरवयवो होज्जत्ति ?, सव्वसंका पुण–सव्वेवि अत्थिकाए संकइ, जिणसासणं वा संकइत्ति, एसा पुणरेवमइयारो–“ संकाए मालिन्नं जायइ चित्तस्सऽपच्चओ य जिणे । संमत्ताणुचिओ खलु इति अइयारो भवे संका ॥ १ ॥ ” दोसा य इत्थ इमे–“ नासइ इमीए नियमा तत्ताभिनिवेसमो सुकिरिया य । तत्तो य कंमबंधो संसारनिबंधणो होइ (बंधदोसो तम्हा एयं विवज्जिज्जा) ॥ १ ॥ ” तम्हा मोक्खत्थिणा ववगयसंकेण जिणवयणं सच्चमेव सव्वंपि पडिवज्जियव्वं, इहलोएवि जो अविसयं संकं करेइ सो विणस्सइ, जहा–सो पेज्जापायओ, पेज्जाए मासा जे परिभज्जिया छूढा, अंधकारे लेहसालाउ आगया दो पुत्ता पियंति, एगो चिंतेइ–एयाओ मच्छियाओ, तस्स संकाए वग्गुलीवाओ संजाओ मओ य, बीओ चिंतेइ न मम माया मच्छिया देइ, सो जीविओ, एए दोसा संकाएत्ति, इह पुण सव्वत्थ वि अइयारो परिणामविसेसाओ नयमयभेयओ वा संमत्तमालिन्नमेत्तं संमत्ताभावो वा नायव्वोत्ति ।

कंखा-बुद्धाइपणीयदरिसणेसु गाहो-अभिलासो, जओ भणियं-" कंखा अन्नोन्नदंसणग्गाहो, " सा पुण दुविहा-देसकंखा, सव्वकंखा य, देसकंखा-एगदेसविसया, एगमेव किंचि बुद्धाइदंसणं कंखति, एत्थवि चित्तनिरोहो भणिओ, एस चेव चित्तजओ पहाणो मोक्खहेऊ, तओ एयंपि दंसणं घडमाणगं, न अच्चंतविरुद्धंति, सव्वकंखा सव्वाणि चेव दरिसणाणि कंखइ, सव्वेसुवि अहिंसा भासिज्जइ, इहलोए य न अच्चंतकिलेसो कहिज्जइ, अओ एयाणिवि सोहणाणित्ति, अहवा परलोइय-फलाणि कंखइत्ति कंखा, पडिसिद्धा य एसा तित्थगराईहिं, जओ भणियं-" नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोग-ट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा नो कित्तिवन्नसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, " कित्ती-सव्वदिसासु पसिद्धी, वन्नो-एगदिसाए, सद्दो-अद्धदिसाए, सिलोगो-सठाणे चेव, एवमाई, अओ एयं करेंतस्स सम्मत्ताइयारो होइ, तम्हा एगंतियं अच्चंतियं निराबाहं मोक्खसुहं मोत्तूण अन्नत्थ न कंखा कायव्वा। तत्थोदाहरणं—राया कुमारामच्चो य अस्सेणावहिया अडवीं पविट्ठा, छुहापरद्धा फलाणि खायंति, पडिनियत्ताण राया चिंतेति-लड्डुगपूयलगमाईणि खामि, आगता दोवि जणा, रन्ना सूता भणिया-जं लोए पयरति तं सव्वं रंधहत्ति, उवट्ठवियं च रन्नो, सो राया पेच्छणयदिट्ठंतं करेइ, कप्पडिया बलिएहिं धाडि-ज्जंति, एवमिट्ठस्स अवकासो होतित्ति कणकुंडगमंडगादीणिवि खाइयाणि, तेहिं सूलेण मओ, अमच्चेण पुण वमणविरेयणाणि कताणि, सो आभागी भोगाण जाओ, इयरो विणट्ठो।

विचिगिच्छा-मइविब्भमो जुत्तीए आगमेण य घडमाणे वि अत्थे फलं पइ संमोहो-किं एयस्स महंतस्स तवकिलेसस्स निरासायवालुयाकणचव्वणसरिसस्स कणगावलिरयणावलिमाइगस्स जम्मंतरे मम फलसंपत्ती भविस्सइ किं वा न भविस्सइत्ति,

जओ उभयप्पगाराओ इह किरियाओ फलमहियाओ निप्फलाओ य दीसंति करिसगाईणं। अह संकाविचिगिच्छाणं को परोप्पर विसेसो?, भन्नइ, संका जीवाइदव्वविसया, विचिगिच्छा पुण किरियाविसयत्ति, एसावि न कायव्वा, सव्वन्नुभणियकुसलाणुट्ठाणाओ होइ चेव फलसंपत्तित्ति, एत्थोदाहरणं—विज्ञासाहगो सावगो, नंदीसरवरगमण दिव्वगंधाणं देवसंघरिसेण मित्तस्स पुच्छणं, विज्ञाए दाण, साहणं, मसाणे चउप्पायं सिकगं हेट्ठा इगाला खायरो य मूलो अट्ठसय वारा परिजवेत्ता पादो सिकगस्स छिज्जइ, एवं बितिओ तइओ, चउत्थे छिन्ने आगासेणं वच्चइ, तेण विज्ञा गहिया, किण्हचउद्दसिरत्तिं साहेति ममाणे, चोरो आरक्खिएहिं पारज्ज(पेल्लिओ परिभम)माणो तत्थेव आगओ, ताहे वेढेउं सुसाणं ठिया पभाए घेप्पिहितित्ति, सो य भमंतो विज्ञासाहगं पेच्छति, तेण पुच्छिओ, भणति-'विज्जं साहेमि', चोरो भणति-केण ते दिण्णा?, सो भणति-सावगेण, चोरेण भणियं इमं दव्वं गेण्हाहि, विज्जं देहि, सो सड्ढो वितिगिंछति सिज्झेज्जा न वत्ति, तेण दिन्ना, सो चिन्तेति-सावगो कीडियाएवि पावं नेच्छति, सच्चमेयं, सो साहिउमारद्धो, सिद्धा, इयरो सड्ढो गहिओ, तेण आगासगएण लोगो भेसिओ, ताहे सो मुक्को, सड्ढा दोवि जाया, एवं निव्वितिगिंछेण होयव्वं। अहवा विउदुगुंछा, तत्थ विउ-साहवो विन्नायसंसारसहावा परिच्चत्तसव्वसंगा तेसिं दुगुंछा-निन्दा, जहा किर साहू अण्हाणगेण सेयमिस्समलखरंटियसरीरा दुग्गंधा भवन्ति ते निन्दइ, को दोसो होज्जा? जइ फासुगजलेणं अंगपक्खालणं एए करेंतित्ति, एसावि न कायव्वा, देहस्स चेव परमत्थओ असुचिसहावत्ताउत्ति, एत्थोदाहरणं—एगो सड्ढो पच्चंते वसति, तस्स धूयाए विवाहे कहवि साहवो आगता, सा पिउणा भणिया-पुत्तिगे! पडिलाभेहि साहुणो, मंडियपसाहिया पडिलाहेति, साहूण जल्लगंधो तीए अग्घातो, चिंतेति-अहो अणवज्जो भट्टारगेहिं धम्मो

दंसिओ, जइ पुण फासुएण ण्हाएज्जा को दोसो होज्जा ?, सा तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालं किच्चा रायगिहे गणियाए पोट्टे उववन्ना, गब्भगता चेव अरतिं जणेइ, गब्भपाडणेहिं न पडति, जाता समाणी उज्झिया, सा गंधेण तं वणं वासेति, सेणिओ य तेण पदेसेण निग्गच्छति सामिणो वन्दगो, सो खंधावारो तीए गंधं न सहति, रन्ना पुच्छियं किमेयंति ?, कहियं-दारियाए गंधो, गंतूण दिट्ठा, भणति-' एसेव पढमपुच्छ'त्ति, गओ, वन्दित्ता पुच्छति, भट्टारओ पुव्वभवं कहेति, भणति राया-कहिं एसा पच्चणुभविस्सति सुहं वा दुक्खं वा, सामी भणति-एतेण कालेण वेदितं, इयाणिं सा तव चेव भज्जा भविस्सति अग्गमहिसी अट्ठ संवच्छराणि, जाव तुज्झं रममाणस्स पिट्ठीए हंसोलीणं काहिति तं जाणेज्जासित्ति, वंदित्ता गओ, सा अवगयगंधा एगाए आभीरिए गहिया, संवड्ढिया, जोव्वणत्था जाता, कोमुइचारे मायाए समं आगता, अभओ सेणिओ य पच्छन्ना कोमुइचारं पेच्छंति, सेणिओ तीसे दारियाए अंगफासेण अज्झोववन्नो, नाममुद्दं दसियाए तीसे बंधति, अभयस्स कहिय नाममुद्दा हारिया, मग्गाहि, तेण मणुस्सा दारेहिं ठविया, एक्केक्कं माणुसं पलोएऊण नीणिज्जति, सा दारिगा दिट्ठा, चोरित्ति गहिया, परिणीया य, अन्नया य वज्झुकेण रमंति, रायणियाओ जिएण पोत्तेण वाहेंति इतरी पोत्तं देंति सा विलग्गा, रन्ना सरियं मुक्का य पव्वइया, एतं दुगुंछाफलं ।

' परपासंडपसंस'ति परपासंडा-अन्नतित्थिया तेसिं, पसंसा-संथुई परपासंडपसंसा, परपासंडाणं च सामन्नेणं तिन्नि सयाणि तिसट्ठिअहियाणि भवंति, जओ भणियं-" तिन्नि सया तेसट्ठा पासंडीणं परोप्परविरुद्धा । "-तहा " असियसयं किरियाणं अकिरियवाईण जाण (होइ) चुलसीई । अन्नाणिय सत्तट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसं ॥ १ ॥" एतेसिं पसंसा ण कायव्वा-

पुन्नभागिणो एए सुलद्धं एएहिं जम्मंति एवमाइया। एत्थोदाहरणं–पाडलिपुत्ते चाणक्को चंदगुत्तेण भिक्खुगाणं वित्ती हरिया, ते तस्स धम्मं कहेंति, राया तूसति, चाणक्कं पलोएति, न पसंसतित्ति न देति, तेहिं चाणक्कभज्जा ओलग्गिया, तीए सो करणिं गाहिओ, तेहिं कहिए तेण भणियं–सुभासियंति, रण्णा तं च अन्नं च दिन्नं, बितियदिवसे चाणक्को भणति–कीस ते दिण्णं ?, राया भणति–तुज्झेहिं पसंसियंति, सो भणति–न मे पसंसियं, सवारंभपवत्ता कहं लोगं पत्तियावेंति, पच्छा ठिओ, केत्तिया एरिसया, तम्हा न कायवा। 'परपासंडसंथवो'त्ति परपासंडेहिं–अन्नतित्थिएहिं सह संथवो–संवसणभोयणआलावाइपरिचओ, एसोवि न कायवो। जओ एगत्थ संवासे तद्धम्मदंसणसवणाओ अणाइभवब्भासेण मिच्छत्तोदयाओ सम्मत्तब्भंसो होइत्ति, अओ एसोवि न कायवो। इत्थोदाहरणं–सोरट्ठसड्ढगो चेव सो पुवभणिओ, उवलक्खणं च एए, तेण साहम्मियाणुववूहणं १ सीयंताथिरीकरणं २ आवइगयसाहम्मिया अवच्छल्लकरणं ३ सइ सामत्थे तित्थापभावणं यत्ति ४ एएवि चत्तारि दट्ठवा, जओ–"नो खलु अप्परिवडिए निच्छयओ मइलिए व संमत्ते। होइ तओ परिणामो जत्तोऽणुववूहणाईया ॥ १ ॥" भणिया संमत्तस्स अइयारा। संपयं भंगो–"संमत्तं पत्तं पि हु रोरेण निहाणगं व अइदुलहं। पावेहिं अंतरिज्जइ पढमकसाएहिं जीवस्स ॥ १ ॥" पढियसिद्धा चेव, भावणा पुण–"मिच्छत्तकारणाइं करेंति नो कारणेवि ते धन्ना। इय चिंतेज्जा मइमं कत्तियसेट्ठी उदाहरणं ॥ १ ॥" एतीए भावत्थो अक्खाणगाओ नायवो, तं पुण रायाभिओगे भणियं, भणियं सम्मत्तं। इयाणिं वयाणं अवसरो—

पंच उ अणुव्वयाइं थूलगपाणवहविरमणाईणि। उत्तरगुणा उ अन्ने दिसिव्वयाई इमेसिं तु ॥ ७ ॥

'पंच'त्ति संख्या, तुसद्दो अवधारणे, ततो पंचेव अणुव्वयाणि, न चत्तारि, जहा मज्झिमबावीसतित्थयराणं तित्थेसु चत्तारि महव्वयाणि होंति, जओ सेलगनाए सेलगराया नेमिनाहसीसस्स थावच्चापुत्तस्स सगासे पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं समणोवासगधम्मं पडिवन्नोत्ति भणियं, अणुव्वयाइंति महव्वयावेक्खाए लहुगाणि वयाणि अणुव्वयाणि, 'थूलगपाणवहविरमणाईणि'त्ति थूलगपाणा–वेइंदियादओ तेसिं वहो–हिंसा तस्स वेरमणं–विरई निवित्ती, आदिसद्दाओ थूलगमुसावायाईणि चत्तारि घेप्पंति, पंचवि एयाणि मूलगुणा । 'उत्तरगुणा उ अन्ने दिसिवयाइ'त्ति अन्नाणि दिसिवयाईणि सत्त उत्तरगुणा भन्नंति, 'इमेसिं तु'त्ति अणुव्वयाणं, भणियाणि सामन्नेण वयाणि । संपयं विसेसेण भण्णंति, तत्थ ताव पढमं भन्नति, तत्थवि पाणाइवायसरूवं कहिज्जइ–"दोन्नि सया तेयाला पाणइवाए पमाउ अट्ठविहो । पाणा चउराईया परिणामद्दुत्तरसयं च ॥१॥" दोन्नि सया तेयाला पाणाइवाए–पाणाइवायविसए, कहं ?, पुढवाइवणस्सइकायपज्जवसाणा एगिंदिया पंच बितिचउपंचिदिएहिं सह नव भवंति, ते य मणवयणकायरूवेण करणतिगेण गुणिया सत्तावीसं भवंति, ते य करणकारावणअणुमइरूवयोगतिगेण गुणिया एकासीई भवन्ति, तेऽवि अतीतअणागयवट्टमाणकालतिगेण गुणिया दोन्नि सया तेयाला २४३ भवंति । तहा पमाओ अट्ठविहो–" अन्नाणं १ संमओ चेव २ मिच्छानाणं ३ तहेव य । रागो ४ दोसो ५ मइब्भंसो ६ धम्मंमि य अणायरो ७ ॥ १ ॥ जोगाणं दुप्पणिहाणं ८ पमाओ अट्ठहा भवे । " एसोवि पाणाइवायसरूवं, जओ पमत्तो हिंसगो होइ, भणियं च "प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसे"ति, के ते पाणा ?, जेसिं विसए एत्तिया भेया उट्ठंति, भन्नइ–पाणा चउराईया, आइसद्दाओ छ सत्त अट्ठ नव दसविह पाणा घेप्पंति. भणियं च–" इंदिय ५ बल ३ ऊसासाउ २ पाण चउ छच्च सत्त अट्ठेव ।

इगविगलऽसन्निमन्नी नव दस पाणा य बोद्धवा ॥ १ ॥ " 'परिणामे अट्ठुत्तरसयं च 'त्ति परिणामविसेसे जं अट्ठुत्तरसयं भंगाणं, तंपि पाणाइवायसरूवंति, तं पुण इमेण विहिणा संरंभसमारंभआरंभा मणवयकायतिगेण गुणिया नव भवंति, एए चेव करणकारणअणुमतितिगेण गुणिया सत्तावीसं भवंति, एए चेव कोहमाणमायालोभेहिं चऊहिं गुणिया अट्ठुत्तरं सयं १०८ होइ। संरंभसमारंभारंभाणं च इमं सरूवं-"संकप्पो संरंभो परितावकरो भवे समारंभो। आरभो उद्दवओ सव्वनयाणं विसुद्धाणं ॥२॥" इह सुद्धनया नेगमसंगहववहारा, उवएसदिक्खादाणाइसव्ववहारपसाहगत्ताउ संरंभाइतिविहवहत्थुवगमाओ य। इयरे पुण उज्जुसुयादयो निच्छइया असुद्धनया, तम्मएण सव्ववहाराभावाओ, आया चेव अहिंसा आया हिंसत्ति एगविहं हिंसांगीकरणाओ य त्ति। अहवा संरंभं मणेणं सयं करेइ संजायकोहपरिणामो एगो, एवं माणमायालोभेहिवि, सव्वेवि चत्तारि, एते करणेण चत्तारि कारावणेण अणुमइहिंपि, सव्वेवि बारस एए मणेण, बारस वयणेण काएणवि बारस चेव, एए छत्तीसा संरंभेण, एए चेव समारंभेण आरंभेणवि, सव्वे अट्ठुत्तरसयंति। समारंभारंभा मणेण कहं संभवंति? भन्नइ-मरणाइजणगमंताइ परिजवेंतस्स संभवंति चेव। वायाकायाएहिं संरंभो कहं?, तिव्वसंकप्पपुव्वगं जं किंपि वायाए भणइ चेट्ठइ वा काएण तं उवयारओ वयणकायसंरंभोत्ति। एवं सामन्नेण पाणाइवायसरूवे कहिए जारिसस्स पाणाइवायस्स विरई पढमाणुव्वयं होइ तं दरिसेइ-

थूलगपाणवहस्स विरई दुविहो य सो वहो होइ। संकप्पारंभेहिं वज्जइ संकप्पओ विहिणा ॥ ८ ॥

इह दुविहा जीवा भवंति-थूला सुहुमा य, तत्थ थूला बेइंदियाई, सुहुमा पुणेह एगिंदिया, तत्थ थूलगपाणाणं बेइंदियाईणं वहो-विणासो तस्स विरती-निवित्ती पढमाणुव्वयं होइ। एएण य गाहावयवेण वयसरूवं भणियं। सेसावयवेहिं बीयं

भेयदारं भणइ–'दुविहो य सो वहो होइ' सो पुव्वभणिओ वहो दुविहो–दुविकप्पो होइ, कहं दुविहो होइ ?, भन्नइ–'संकप्पारंभेहिं'ति तत्थ जीवमारणाभिप्पाओ संकप्पो, पयणकिसिमाई पुण आरंभो, एवं ताव दुविहो वहो, तत्थ थूलगपाणवहविरइपडिवज्जमाणो सावगो 'वज्जइ'–पच्चक्खाणेण परिहरइ थूलगपाणवहं। पच्चक्खाणं च आवस्सयचुन्नीए एवं भणियं–"थूलगं पाणाइवायं संकप्पओ पच्चक्खामि जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि"। कहं वज्जेइ ?, 'संकप्पओ'त्ति वहपरिणामं आसज्ज, न आरंभओ वि, गिहत्थाणं आरंभवज्जणं न संभवइत्तिकाउं, 'विहिण'त्ति आगमभणियनीईए। सो य विही इमो–

गुरुमूले सुयधम्मो संविग्गो इत्तरं व इयरं वा। वज्जित्तु तओ संमं वज्जेइ इमे य अइयारे ॥ ९ ॥

गुरु–सन्नाणकिरियाजुओ संमं धम्मसत्थअत्थदेसगो, अहवा "जो जेण सुद्धधम्मे निओइओ संजएण गिहिणा वा। सो चेव तस्स भन्नइ धम्मगुरू धम्मदाणाओ ॥ १ ॥" तस्स गुरुस्स मूले–सगासे समीपे इत्यर्थः। अणेण अन्नत्थधम्मसवणपडिसेहो दरिसिओ, विवरीयबोधसंभवाओ, 'सुयधम्मो'त्ति आयन्नियअणुव्वयादिसरूवो, अणेण अस्सुयधम्मस्स नाणाभावाउ वयपडिवत्ती न सुंदरत्ति (ग्रं. १०००) असुयधम्मस्स वयपडिवत्तिनिसेहो दंसिओ, जओ भणियं आगमे–"जस्स नो संमं उवगयं भवई, इमे जीवा इमे अजीवा इमे तसा इमे थावरा, तस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुप्पच्चक्खायं भवइ, से दुप्पच्चक्खाई मोसं भासं भासइ, णो सच्चं भासं भासइ"त्ति। तथा 'संविग्गो'त्ति मोक्खसुहाभिलासी संसारभयभीओ वा, न पुणो रिद्धिजसाइकामो, 'इत्तरं'–अप्पकालं–चउमासाइकालावहिणा इत्यर्थः, वासद्दो विगप्पे, 'इयरं'–बहुकालं जावज्जीवं इत्यर्थः,

एत्थवि वासद्दो विगप्पे, थूलपाणवहं 'वज्जित्तु'-पच्चक्खेऊण ' तगो 'त्ति, सो सावगो 'संमं'ति भावसुद्धीए, 'वज्जेइ' परिहरइ, नो आसेवइ, 'इमे य अइयारे' इमे-उवरि भन्नमाणे अइयारे-अइक्कमे वधविरइदूसणाणि इत्यर्थः, भणियं बीयं भेयदारं। संपयं तइयदारं—

तस्स विवरणं जहा संमत्ते। संमत्तलाभविहिसरिसो पाएण देसविरइलाभविही अओ एत्थ न भन्नइत्ति, जो पुण विसेसो पुव्वं न भणिओ सो भन्नइ-" संमत्तंमिवि पत्ते बीयकसायाण उवसमखएणं। तव्विरईपरिणामो एवं सव्वाणवि वयाणं ॥ १ ॥ " 'संमत्ते पत्ते 'त्ति अपत्तसंमत्तस्स विरइपरिणामो ताव न होइ चेव, अओ पत्तेऽवित्ति भणियं। 'बीयकसायाणं' अपच्चक्खाणनामगाणं, 'उवसमखएणं 'ति खओवसमेण पढमवयलाभो, एवं सव्वाणवि मुसावायाईणं वयाणं लाभो होइत्ति। संपयं दोसदारं—

" पाणाइवायअनियत्तणंमि इहलोयपरभवे दोसा। पइमारिया य एत्थं जत्तादमगो य दिट्ठंता ॥१॥ " भावत्थो अक्खाणगाणुसारेण नेयव्वो, तत्थ पढमं इमं-एगो मरुओ अज्झावओ, तस्स तरुणी महिला, सा बलिं वइसदेवं करंती भणइ-' अहं कागाण बीहेमि 'त्ति, तत्तो उवज्झायनिउत्ता चट्टा दिणे दिणे धणुगेहिं गहिएहिं रक्खंति, बलिं वइसदेवं करेति, तत्थेगो चट्टो चिंतेइ-न एसा मुद्धा जा कागाण बीहेति असतिया एसा, सो य तं परिचरइ, सा य नम्मयाए पारकूले पिंडारो तेण समं संपलग्गिया, अन्नया नम्मयं घडएण तरंती पिंडारसगासं वच्चति, चोरा य उत्तरंति, तेसिमेगो सुंसुमारेण गहिओ, सो रडति, ताए भन्नइ-अच्छि ढक्केहिसि, ढंकिए मुक्को, तीए भणिया-किं व कुतित्थेण उत्तिन्ना ? सो खंडितो तं

य नियत्तो, बितियदिवसे बलिं करेति, तस्स य चट्टस्स रक्खणवारओ, तेण भण्णइ–" दिया काागाण बीहेसि रत्तिं तर . नम्मयं। कुतित्थाणि य जाणासि अच्छीणं ढंकणाणि य ॥ १ ॥" तीए भणाति–किं करेमि? तुम्हारिमा मे णेच्छंति, सा तं उवचरति भणति य–' ममं इच्छसु 'त्ति, सो भणइ–कहं उवज्झायस्स पुरओ ठाइस्संति, तीए चिंतियं मारेमि एयं अज्झावगं, तो मे एस भत्ता भविस्सतित्ति, मारिउं पिडियाए छुहेऊण अडवीए उज्झिउमारद्धो, वाणमंतरीए थंभिया, अडवीए भमिउमारद्धा, छुहं न सक्केति अहियासेउं, तं च से कुणिमं गलति उवरिं, लोगेण हीलिज्जति–पतिमारिया हिंडतीति, तीसे पुणरावत्ती जाता, ताहे सा भणाति–देह अम्मो! पतिमारियाए भिक्खंति, एवं बहुकाले गए अन्नया साहुणीणं पाएसु पडंतीए पेडिया पडिया वत्तिणी जाया। जत्तादमगक्खाणय–" भोगे अभुंजमाणावि केइ मोहा पडंति अहरगइं। कुविओ आहारत्थी जत्ताए जणस्स दमगोव ॥ १ ॥"त्ति उवएसमालागाहाए दट्ठवं। अण्णं च हिंसगो इहेव वहबंधपरिकिलेसाइणि दुक्खाणि लहइ, परलोगे य असुभगइं जाइ गरहिओ य भवइ। तहा–" पाणवहे वट्टंता भमंति भीमासु गब्भवसहीसु। संसारमंडलगया नरगतिरिक्खासु जोणीसु ॥ १ ॥" एवमाई दोसा। संपयं गुणदारं–जीवे अवहंतस्स इमे गुणा–" दीहाउओ सरूवो नीरोगी होइ अभयदाणेण। जंमंतरेऽवि जीवो सयलजणसलाहणिज्जो य ॥ १ ॥" एवमाइ। संपयं जयणा–" परिसुद्धजलगहणं दारुयधन्नाइयाण य तहेव। गहियाण य परिभोगो विहीए तसरक्खणट्ठाए ॥ १ ॥" परिसुद्धजलगहणं–वत्थगालियतसरहियसलिलगहणं, दारुधन्नाइयाणं च तहेव–परिसुद्धाणं–अनीलअज्झिन्नाणं दारुगाणं अकीडविद्धधन्नस्स य गहणं कायवं, आइसद्दाउ असंसत्तफलाइया दट्ठवा, गहियाणंपि परिभोगो विहिणा परिमियपडिलेहियाइणा

कायवो, तसरक्खणट्ठाए-बेइंदियाइरक्खणनिमित्तं। तहा गमणागमणाइयंपि तसहरियाइ जहसत्तीए रक्खंतेणं कायवं, जओ-“ जयणा उ धम्मजणणी जयणा धम्मस्स पालणी चेव। तव्वुड्ढिकरी जयणा एगंतसुहावहा जयणा ॥ १ ॥ जयणाए वट्टमाणो जीवो संमत्तनाणचरणाणं। सद्धाबोहासेवणभावेणाराहगो भणिओ ॥ २ ॥ रागदोसविउत्तो जोगो असढस्स होइ जयणा उ। रागदोसाणुगओ जो जोगो सो अजयणा उ ॥ ३ ॥ ” संपयं अइयारा भन्नंति—

बंधवहछविच्छेयं अइयभारं भत्तपाणवोच्छेयं। कोहाइदूसियमणो गोमणुयाईण नो कुणइ ॥ १० ॥

बंधो-रज्जुदामगाईहिं बंधणं १, वहो-कसलयाईहिं हणणं, बंधवहं न करेतित्ति संबज्झइ २, छवी-सरीरं तस्स छेदो कत्तिगाईहिं कत्तणं छविच्छेदो तं न करेति ३, अईव भारो-अइभारो, बहुगस्स पूगफलाइदवस्स गवादिपिट्ठादिसु आरोवणं ४, भत्तं-भोयणं पाणं-उदगं तेसिं वोच्छेओ भत्तपाणवुच्छेओ तं च ५, एवं सामन्नेणं बंधाईणं निसेहे कए पियपुत्ताईणं विणयगाहणरोगविगिच्छाइसुवि बंधाइसु कीरमाणेसु जा वयविराहणा पावइ, तन्निसेहणत्थं भन्नइ-‘ कोहाइ-दूसियमणो’त्ति कोहलोभाइकसायकलंकियचित्तो जीवघायनिरवेक्खो इत्यर्थः। सावेक्खस्स पुण बंधाइकरणेऽवि सद-यत्तणेण नाइयारोत्ति भणियं होइ, ‘ गोमणुयाईणं ’ ति बलीवद्दमाणुसाईणं, आइसद्दाओ खरतुरगकरहाईणो घेप्पंति, नो कुणइ-न करेति। एत्थ य आवस्सगचुण्णिमाइसु भणिओ एस विही-“ बंधो दुपयाणं चउप्पयाणं वा होइ, सोऽवि अट्ठाए अणट्ठाए वा, तत्थ अणट्ठाए ताव बंधो काउं न कप्पइ (जुज्झइ), अट्ठाए पुण बंधो दुविहो होइ, सावेक्खो

मुसावायवयस्स सरूवं होइ, तप्पदरिसणत्थमाह—

थूलमुसावायस्स य विरई सो य पंचहा समासेणं । कन्नागोभूमालियणासहरणकूडसक्खेज्जं ॥ ११ ॥

थूलमुसावायस्स विरई बिइयाणुवयं होइ । तत्थ दुविहो मुसावाओ–थूलो सुहुमो य । तत्थ परिथूलविसओ अइदुट्ठविवक्खासमुब्भवो थूलमुसावाओ । अन्नो सुहुमप्पयत्थविसओ अदुट्ठविवक्खासमुब्भवो हासखेड्डाइगो सुहुमो, सो इह नाहिगओ, महव्वयविसउत्तिकाउं, एत्तिएण वयसरूवं भणियं । सेसेहिं सुत्तावयवेहिं भेया भन्नंति–' सो 'त्ति थूलमुसावाओ पंचहा–पंचभेदा, **समासेणं**ति संखेवेणं, सेसभेया सव्वेवि एएसु चेव पविसंतित्तिकाउं, पंचपगारत्तमेव भन्नइ–' **कन्नागोभूमालियनासहरणकूडसक्खेज्जं** 'त्ति कन्नालियं १ गवालियं २ भूमालियं ३ रक्खणनिमित्तं अन्नेसिं जं रूवगाइ अप्पिज्जइ सो नासो वुच्चइ, तस्स हरणं नासहरणं ४ कूडसक्खेज्जंति–अलियसक्खिज्जदाणं ५ । तत्थ कन्नालियं–अभिन्नकन्नं भिन्नकन्नं भणेइ (भिन्नकन्नं अभिन्नकन्नं भणइ), कन्नागहणं उवलक्खणं तेण कुमाराइदुपयविसयाणि सव्वालीयाणि एत्थ दट्ठव्वाणि । गवालीयं–पुण अप्पखीरं गाविं बहुखीरं भणइ, बहुखीरं वा अप्पखीरं, एयंपि सव्वचउप्पयमुसावायउवलक्खणं । भूमिअलियं–पुण परसंतियंपि भूमिं आयसंतियं भणइ, भूमिगहणं पुण सेसपुढवाइअपयदव्वविसयमुसावायउवलक्खणं । ननु दुपयचउप्पयअपयगहणमेव सुत्ते आयरिएण केण कारणेण न कयं ?, एत्थ भन्नइ–कन्नागोभूमिअलियाणि लोए अइगरहियाणि, तेण तेसिं गहणं कयंति । नासहरणं अदत्तादाणसरूवं, तत्थ य अवलवणवयणं मुसावाओ, एयं च एएण चेव विसेसेण पुव्वअलीगेहिंतो भेएण भणियं । कूडसक्खेज्जं पुण लंचा(चा)मच्छराईहिं अभिभूतो पमाणीकओ

कूड भणइ—जहा एयस्स अहं एयंमि विवादे सक्खिगो, एयं च परसंबंधिपात्रसमत्थणासरूवं विसेसं पडुच्च पच्छिमेहिंतो भेएण भणियंति। जहा जायइत्ति पुव्वं भणियमेव। दोसा इमे—" जं जं वच्चइ जाइं अप्पियवाई तहिं तहिं होइ। न य सुणइ सुहे सद्दे सुणइ असोयवए सद्दे ॥ १ ॥ हीणस्सरदीणस्सरभिन्नस्सरअप्पियस्सरा चेव। होंति य अगेज्झवयणा अलिएण परं उवहणंता ॥ २ ॥" हीणस्सरा—लहुयसरा, दीणस्सरा—दयाजणगसद्दा, भिन्नस्सरा—खाहुलसद्दा, अपियस्सरा—अणिट्ठसरा। तहा—" दुग्गंधो पुइमुहो अणिट्ठवयणो य फरुसवयणो अ। जलएलमूयमम्मण अलियवयणजंपणे दोसा ॥ १ ॥" दुग्गंधो—सरीरेण, पुइमुहो—दुग्गंधवयणो, जलत्ति जलमूगो, एलत्ति एलमूगो, जहा जलमूओ जलबुड्डो व बुडबुडे एरिसो घणी जस्स सो, एलगो जहा पुण बुब्बुयई एलमूओ, मम्मणो जस्म भासंतस्स वायाउ खंचिज्जइ। मुसावायं अभासंतस्स इमे गुणा—" थंभंति नईवेगे सावं देंति गगणेण वच्चंति। कंपंति माणुसा देवया य सच्चेण संजुत्ता ॥ १ ॥ सच्चेण परिगहियं न डहइ अग्गी विसं न मारेइ। न वहति आउहाइं कह नाम न उत्तमं सच्चं ? ॥ २ ॥ विज्जाओ (सवा उ) मंतजोगा सिज्झंती धम्मअत्थकामा य। सच्चेण परिग्गहिया रोगा सोगा य नस्संति ॥ ३ ॥ सच्चं सग्गद्दारं सच्चमत्तसमग्गं(?) तवोकम्मं। सच्चं जसस्स मूलं सच्चं सिद्धीएँ सोवाणं ॥३॥" एवमाइ, जयणा पुण एवं—" जइवि गिही अनियत्तो निच्चं भयकोहलोहहासेसु। नाइपमत्तो तेसुवि न होज्ज जंकिंचि भणओ य ॥१॥ किंतु—बुद्धीएँ निएऊणं भासेज्जा उभयलोगपरिसुद्धं। सपरोभयाण जं खलु न सव्वहा पीडजणगं तु ॥ २ ॥" संपयं अइयारा भन्नंति—

इह सहसब्भक्खाणं रहसा य सदारमंतभेयं च। मोसोवएसयं कूडलेहकरणं च वज्जेइ ॥ ११ ॥

इहत्ति-थूलमुसावायविरइए, सहसा-अणालोचिऊण, अब्भक्खाणं-असंतदोसारोवणं, जहा-चोरो तुमं पारदारिगो वा एवमादि, तं वज्जेइत्ति। तहा रहसा-एगंतेण हेउणा अब्भक्खाणं रहसब्भक्खाणं, किं भणियं होइ? भन्नइ-एगंते मंतमाणे भणइ-एते हि इमं च इमं च रायविरुद्धाइयं मंतंति। तहा सदारमंतभेदंति सकलत्तेण गुत्तभासियस्स अन्नेसिं कहणंति। दारगहणं मित्ताइ उवलक्खणनिमित्तं। तहा मोसोवएसयंति-अलियमुवएसं देइ, इमं एवं च २ भणाहि एवमाइयं, असच्चाभिहाणसिक्खवणं इत्यर्थः। तहा कूडलेहकरणंति-अलियक्खरलिहणं, तं च वज्जेइ-परिहरइ। जओ एयाणि समायरंतो अइयरइ विइयाणुव्वयंति। नणु आइमाणं दोण्हं अइयाराणं न परोप्परं विसेसो अत्थि, दोसुवि असंतदोसारोवणं तुल्लंतिकाउं। सच्चमेयं, नत्थि विसेसो, नवरं रहसब्भक्खाणं एगंतमंतनिमित्तवियक्कमेत्तपुव्वगं [परियापुव्वगं] इत्यर्थः संभवंतदोसाभिहाणं, सहसब्भक्खाणं तु अवियक्कपुव्वगमेव, अओ परोप्परं विसेसो। नणु अब्भक्खाणं असंतदोसाभिहाणसरूवं, तं पुण पच्चक्खायमेव तओ तब्भणणे भंगो चेव, न पुण अइयारो? सच्चमेयं, केवलं जया परोवघायगं वयणं अणाभोगाइणा भणइ, तया संकिलेसाभावातो विरइसावेक्खस्स न वयस्स भंगो, परोवघायहेउत्तणेण य भंगो य, अओ भंगाभंगरूवो अइयारो। जया पुण तिव्वसंकिलेसेण अब्भक्खाणं देइ, तया भंग एव, वयनिरवेक्खोत्तिकाउं। जओ भणियं-"सहसब्भक्खाणाई जाणंतो जइ करेज्ज तो भंगो। जइ पुणऽणाभोगाईहिंतो तो होइ अइयारो॥ १॥" सदारमंतभेदो पुण अणुवादसरूवत्तणेण सच्चोत्तिकाउं, जइवि अइयारो न घडइ, तहावि मंतियत्थपगासणजणियलज्जाइणा सदाराइमरणाइसंभवेण परमत्थेण असच्चमेयं तओ भंगाभंगरूवोत्तिकाउं अइयारो चेव। तहा मोसोवएसो जइवि मुसं न भणावेमि एयंमि वए १, न भणामि न भणावेमि एयंमि य २

भंग एव। मुसं न भणामित्ति एयंमि पुण न किंचि, न भंगो, न यावि अइयारो, तहावि सहसाकारअणाभोगेहिं अइक्कमवइक्कमअइयारेहिं वा पढमवयदुगस्स मुसावाए परंपयट्टावेंतस्स अइयारो होइत्ति। अहवा वयसंरक्खणबुद्धीए परवुत्तंतकहणदुवारेण मोसोवएसं देंतस्स अइयारो, वयसावेक्खत्तणेण मुसावाए परपवत्तणेण य भङ्गाभङ्गरूवं वयंतिकाउं। कूडलेहकरणं तु जइवि काएण मुसावायं न करेमित्ति एयस्स वयस्स, काएण न करेमि न कारवेमित्ति एयस्स वा वयस्स भंग एव, एयब्भयपगारंतरे पुण न किंचिवि, तहावि सहसाकाराइणा अइक्कमाइणा वा अइयारो। अहवा मुसावाउत्ति मुसाभणणं मए पच्चक्खायं, एयं पुण लिहणं, एवंविहभावणाए मुद्धबुद्धिस्स वयसावेक्खस्स अइयारोत्ति। भंगो अइयारभावणाउ भणिओ। भावणा पुण इमा–" तेसिं नमामि पयओ साहूणं गुणसहस्सकलियाणं। जेसिं मुहाउ निच्चं सच्चं अमयं व पज्झरइ ॥१॥ " त्ति भणियं बीयाणुवयं। संपयं तइयं भन्नइ, तत्थ अदत्तादाणसरूवं ताव निरूविज्जइ—

" सामीजीवादत्तं तित्थयरेणं तहेव य गुरूहिं। एयमदत्तसरूवं परूवियं आगमधरेहिं ॥ १ ॥ " सामिअदत्तं जीवअदत्तं तित्थगरअदत्तं गुरुअदत्तं च, तत्थ जं वत्थुं हिरन्नाइयं सामिणा सयं न दिन्नं तं सामिअदत्तं, जं पुण पसुमाई जीवरूवं नियगं कोइ विणासेइ तं तस्स जीवादत्तं, जओ तेण पसुमाइणा जीवेण न खलु नियपाणा तस्स विणासणत्थं दिन्ना, सव्वे जीवा पियपाणत्तिकाउं, जओ भणियं–'सव्वे जीवावि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं 'ति, तित्थयरेण अदत्तं तित्थयरादत्तं जं घरसामिणा आहाकम्माइ दिन्नंपि तित्थयरेण अणणुन्नायं घेप्पइ तं तित्थयरेण अदत्तंति, तहा–गुरुअदत्तं–जं बायालीसदोसविशुद्धंपि गुरूणं अणणुमईए परिभुंजइ तं गुरुअदत्तंति, जओ भणियं–' सतविहालोयविवज्जिए भुंजमाणस्स

तेणियं होइ ' सत्तविहालोगो पुण इमो–" ठाण १ दिसि २ पगासणया ३ भायण ४ पक्खेवणा य ५ गुरु ६ भावे ७। सत्तविहो आलोगो सयावि जयणा सुविहियाणं ॥ १ ॥ "ति, इह दुविहा साहुणो भवंति मंडलिउवजीविणो मंडलिअणुवजीविणो य, उवजीविणो पसिद्धा, अणुवजीविणो इमे–" आगाढजोगवाही निज्जूढत्तठिया अ पाहुणगा। सेहा सपायच्छित्ता बाला वुड्ढेवमाईया ॥ १ ॥ " आगाढजोगवाहिणो–गणिजोगवाहिणो, ते मंडलिं नोवजीवंति, निज्जूढत्ति अमणुन्ना कारणंतरेण अच्छंति, तेवि पुढो भुंजंति, अत्तद्विगा य पुढो भुंजंति, जेण ते अन्नस्स न किंचि विगिण्हंति, तहा पाहुणगा पुढो भुंजंति जओ तेसिं पढममेव पाउग्गं पडिपुन्नं दिज्जइ अओ ते एगागिणो

भवंति, सिक्खगा वि [illegible] पुढो भुंजाविज्जंति, तहा सपायच्छित्ता आवण्णपायच्छित्ता, ते इह न भुंजंति, जओ तेसिं केवलं चोदिज्जं भवइ, [illegible] न भुंजिज्जइ, तहा बाला वुड्ढा [illegible] काइं पढममेव भुंजंति, तओ ते वि एगागिणो[1]

त्ति, एवमादीयत्ति आदिसद्दाओ कुट्ठवाहिउवद्दुया घेप्पंति। ते य भुंजंता आलोगे भुंजंति, सो पुण दुविहो जहा–" दुविहो खलु आलोगो दव्वे भावे य दवि दीवाई। सत्तविहो पुण भावे आलोगो तं पुण कहेह ॥ १ ॥ " ठाणगाहाए एयाए इमाओ

---

१ आगमोद्धारकश्रीमद्–आनन्दसागरसूरीश्वरस्य हस्ताक्षराणि।

वक्खाणगाहाओ–" निक्खमपवेसमंडलि सागारियठाण परिहरिय ठाइ । मा एगासणभंगो अहिगरणं अंतरायं वा ॥ १ ॥ " निक्खमपवेसा वज्जिऊण उवविसंति, तहा मंडलिपवेसं च वज्जंति, तहा सागारियठाणं च परिहरिउं भुंजंति, मा सागारिए समागए एक्कासणभंगो भवेज्जा, अधिकरणं वा अन्नेण पव्वइएण सह, अट्ठाणे उववि सिउं भुंजंतस्स अंतरायं च भवइ, कहं ?, सो साहू अन्नस्स ठाणे उवविट्ठो, सोवि साहू आगओ पडिक्खंतो अच्छंति, एवं च अंतराइयं कम्मं बज्झइ । इयाणिं दिसित्ति–" पच्चुरसि परम्मुहपट्ठि पक्खए या दिसा विवज्जेत्ता । ईसाणग्गेईय ठाएज्ज गुरुस्स गुणकलिओ ॥ १ ॥" पच्चुरसित्ति गुरुअभिमुहं वज्जेउंति भणियं होइ, सेसं सुगमं । इयाणिं पगासणयत्ति–"मच्छियकंटाईणं तु जाणणट्ठा पगासभुंजणया । गललग्गणठिदोसा वागुलिदोसा जढा एवं ॥ १ ॥" सुगमा, एवं इयाणिं भायणत्ति–" जे चेव अंधयारि दोसा ते चेव संकडमुहंमि । परिसाडी बहुलेवाडणं च तम्हा पगासमुहे ॥ १ ॥ पुवद्धं सुगमं, बियद्धेण अहिगदोसे भणइ–परिसाडिन्ति बाहिं छडिज्जइ, बहुलेवाडणं चत्ति बहु(वड्ड)विच्चं खरंटिज्जइ, हत्थस्स उवरिंपि भुंजंतस्स संकडे, तम्हा पगासमुहे भायणे भोत्तवंति । इयाणिं पक्खेवणत्ति–'कुकुडिअंडगमेत्तं अविगियवयणो उ पक्खिवे कवलो' सुगमं । इयाणिं गुरुत्ति–'अइखद्धकारगं वा जं च अणालोइयं होज्जा ।' गुरुस्स आलोए भोत्तव्वं, जइ पुण गुरुदरिसणपहे न भुंजइ, ततो कयाइवि अइखद्धं–अइबहुगं भक्खेज्जा निस्संकोत्तिकाउं पच्छा गिलाणो भवेज्जा, अपडुसरीरो य गुरुअदरिसणपहे भुंजंतो कयावि अकारगं–अपत्थंति भुंजेज्जा निम्मउत्तिकाउं, कयावि भिक्खामडंतेण निद्धमहुरं दव्वं लद्धं भवेज्जा, तं च अणालोइयंपि भुंजेज्जा एगंते, मा ममं आयरिओ निवारिहित्ति, अओ एएसिं जाणणट्ठा गुरुआलोए तओ उवभुंजेज्जा, जेण गुरुसमीवत्थं भुंजंतं दट्ठुं पउरं भक्खेंतं निवारेइ, तहा

अणालोइयं चोरियंतं खायंतं निवारेइ, मा अनिवारणे अज्जिन्नाइदोसा भवेज्जा । इयाणिं भावेत्ति नाणाइसंधणट्ठा न वन्नबलरूवविसयट्ठा । नाणाईणं तुट्टंताणं संधणनिमित्तं भुंजिज्जइ, न वन्नट्ठा वन्नो-गोरत्तं मम होउत्ति, एयनिमित्तं न भुंजेज्जा, एवं बलरूवनिमित्तमवि, उवचियमंससोणिओ बलवं रूववं च भविस्सामित्ति, एयमट्ठंपि न भुंजेज्जा, तहा विसयट्ठा-मेहुणासेवणनिमित्तं न भोत्तव्वंति, एयं सामन्नेण अदत्तसरूवं भणियं । संपयं एयस्स निरई भन्नइ—

थूलअदत्तादाणे विरई तं दुविहमो उ निद्दिट्ठं । सच्चित्ताचित्तेसुं लवणहिरन्नाइवत्थुगयं ॥ १३ ॥

थूलअदत्तादाणेत्ति इह अदत्तादाणं दुविहं होइ-थूलं सुहुमं च, तत्थ परिथूलवत्थुविसयं चोरंकारकारणं थूलं,तव्विवरीयं सुहुमं, तत्थ चुन्नी-" थूलगअदत्तादाणं नाम जेण चोरसद्दो होइ, तं परिहरियव्वं, चोरबुद्धीए अप्पं जणनादसामन्नं पच्चक्खाइ, खेत्ते वा खले वा पंथे वा न गिण्हियव्वं, जं पुण लेट्ठुगाइ अणणुन्नवेत्ता गेण्हइ, तं सुहुमंति ।" तत्थ थूलादत्तदाणे विरई-निवित्ती तइयमणुव्वइयं होइत्ति, एवं वयसरूवं। तं पुण अदत्तादाणं दुविहं-दुभेयं, 'मो'इति पायपूरणे, तुसद्दो पुणसद्दत्थे, निद्दिट्ठं-कहियं आगमे, दुप्पगारत्तमेव भन्नइ-सच्चित्ताचित्तेसुत्ति, सचेयणवत्थुविसयं अचेयणवत्थुविसयं च, एयं चेव आहरणेहिं भन्नइ-लवणहिरन्नाइवत्थुगयंति लवणं-लोणं, हिरन्नं-सुवन्नं, एवमाइवत्थुगयं-एवमादिपयत्थविसयं, तत्थ लवणसद्देण सच्चित्तादत्तादाणोदाहरणं भणियं, हिरन्नसद्देणाचित्तादत्तादाणोदाहरणं भणियं, आइसद्देण आसवत्थाई घेप्पंति। मिस्सादत्तादाणं तु एएसु चेव निवडइ, तेण भिन्नं न भणियं ॥ १३ ॥ एएण भेयदारं वक्खाणियं । अदत्तहारिस्स इमे दोसा-" दुक्खज्जियं च दव्वं बहूहिं परिपिंडियं उवाएहिं । हरइ परस्स अकरुणो, कह नाम न दारुणो चोरो ॥ १ ॥ काऊण चोरियाओ वच्चइ नरएसु

निरभिरामेसु। अणुभवइ चोरियाए पुप्फं च फलं च चिरकालं ॥ २॥ जइवि न पावइ मरणं, पावइ जाजीवियं परिकिलेसं। चारगबंधणमोडणनगपाडणकक्खडं दुक्खं ॥ ३ ॥ रूढनहकेससंमुत्रविडमुत्तंमि नियगंमि लोलंतो। नियलजुयलसंदाणो सोयइ बहुवेयणो निच्चं ॥ ४ ॥ चंडमडबद्धकक्खडखरफरुमपहारसद्दवित्तत्थो। अणुबद्धखुप्पिवा उण्हसीयदुक्खदुओ निच्चं ॥ ५ ॥ चोरिक्कं कुणमाणो नियगजणे परजणे परियणे य। होइ अवीससणिज्जो पुरिसो कम्माणुभावेणं ॥ ६ ॥ उग्घोसणं च पावई तिए तिए चच्चरे चउक्के य। छेयणभेयणमारणसूलरुहणं च सो लहइ ॥ ७ ॥ परधणहरणपवत्तो विमाणणसएहिं मारिओ संतो। नरगंमि पुणो पावइ दुक्खसहस्साइं णेगाइं ॥ ८ ॥ करकयविकत्तणं कंडुपायणं सामलीसु आरुहणं। असिपत्तवणच्छेज्जं कोलसुणगभक्खणं चेव ॥ ९ ॥ वेयरणीउत्तरणं डहणं च कलंबवालुगापुलिणे। लोहरसतत्तपाणं तवतउयतत्तपाणं च ॥ १० ॥ एयाणि य अन्नाणि य बहूणि पावेंति ते दुहसयाइं। जे अविरया मणुस्सा परधणहरणप्पसंगाओ ॥ ११ ॥" अदत्तादाणविरयस्स इमे गुणा-"जेसिं चोरेउं जे पच्चक्खाणं इमंमि लोगंमि। बहुरत्तरयणभरिए कुलंमि सो जायई विउले ॥ १ ॥ लोहीलोहकडाहं दासीदासं च जाणजोगं च। अवक्कित्तंपि न हीरइ अचोरियाए फलं एयं ॥ २ ॥ खेत्ते खले य रन्ने दिया व राओ व सत्थघाए वा। अत्थो से न विणस्सइ अचोरियाए फलं एयं ॥ ३ ॥ गामागरनगराणं दोणमुहमडंबपट्टणाणं च। सुइरं हवंति सामी अचोरियाए फलं एयं ॥ ४ ॥" एत्थ गुणदोसेसु एगं चेव उदाहरणं-जहा एगा गोट्ठी, सावगोवि ताए गोट्ठीए कहवि मिलिओ, एगत्थ य पगरणं वट्टति, जणे गए गोट्ठिल्लएहिं घरं पेल्लियं, थेरीए एक्केको मोरपिच्छेण पाए पडंतीए अंकिओ, पभाए रन्नो निवेदितं, राया भणति-कहं ते जाणियव्वा ?, थेरी भणति-मए पाएसु अंकिया नगरसमागमे दिट्ठा

अणालोइयं चोरियंतं खायंतं निवारेइ, मा अनिवारणे अज्झिन्नाइदोसा भवेज्जा । इयाणिं भावेत्ति नाणाइसंधणट्ठा न वन्न-बलरूवविसयट्ठा । नाणाईणं तुट्टंताणं संधणनिमित्तं भुंजिज्जइ, न वन्नट्ठा वन्नो-गोरत्तं मम होउत्ति, एयनिमित्तं न भुंजेज्जा, एवं बलरूवनिमित्तमवि, उवचियमंससोणिओ बलवं रूववं च भविस्सामित्ति, एयमट्ठंपि न भुंजेज्जा, तहा विसयट्ठा-मेहुणा-सेवणनिमित्तं न भोत्तव्वंति, एयं सामन्नेण अदत्तसरूवं भणियं । संपयं एयस्स विरई भन्नइ—

थूलअदत्तादाणे विरई तं दुविहमो उ निद्दिट्ठं । सचित्ताचित्तेसुं लवणहिरन्नाइवत्थुगयं ॥ १३ ॥

थूलअदत्तादाणेत्ति इह अदत्तादाणं दुविहं होइ-थूलं सुहुमं च, तत्थ परिथूलवत्थुविसयं चोरंकारकारणं थूलं, तव्विवरीयं सुहुमं, तत्थ चुन्नी-" थूलगअदत्तादाणं नाम जेण चोरसद्दो होइ, तं परिहरियव्वं, चोरबुद्धीए अप्पं जणन्नादसामन्नं पच्चक्खाइ, खेत्ते वा खले वा पंथे वा न गिण्हियव्वं, जं पुण लेट्ठुगाइ अणणुन्नवेत्ता गेण्हइ, तं सुहुमंति ।" तत्थ थूलादत्तदाणे विरई-निवित्ती तइयमणुव्वइयं होइत्ति, एवं वयसरूवं । तं पुण अदत्तादाणं दुविहं-दुभेयं, 'मो' इति पायपूरणे, तुसद्दो पुणसद्दत्थे, निद्दिट्ठं-कहियं आगमे, दुप्पगारत्तमेव भन्नइ-सच्चित्ताचित्तेसुत्ति, सचेयणवत्थुविसयं अचेयणवत्थुविसयं च, एयं चेव आहरणेहिं भन्नइ-लवणहिरन्नाइवत्थुगयंति लवणं-लोणं, हिरन्नं-सुवन्नं, एवमाइवत्थुगयं-एवमादिपयत्थविसयं, तत्थ लवणसद्देण सच्चित्ता-दत्तादाणोदाहरणं भणियं, हिरन्नसद्देणाचित्तादत्तादाणोदाहरणं भणियं, आइसद्देण आसवत्थाई घेप्पंति । मिस्सादत्तादाणं तु एएसु चेव निवडइ, तेण भिन्नं न भणियं ॥ १३ ॥ एएण भेयद्दारं वक्खाणियं । अदत्तहारिस्स इमे दोसा-" दुक्खज्जियं च दव्वं बहूहिं परिपिंडियं उवाएहिं । हरइ परस्स अकरुणो, कह नाम न दारुणो चोरो ॥ १ ॥ काऊण चोरियाओ वच्चइ नरएसु

निरभिरामेसु। अणुभवइ चोरियाए पुप्फं च फलं च चिरकालं ॥ २॥ जइवि न पावइ मरणं, पावइ जाजीविंयं परिकिलेसं। चारगवंधणमोडणनगपाडणकक्खडं दुक्खं ॥ ३॥ रूढनहकेसमंसूविडमुत्तंमि नियगंमि लोलंतो। नियलजुयलसंदाणो सोयइ बहुवेयणो निच्चं ॥ ४॥ चंडभडबद्धकक्खडखरफरुसपहारसद्दवित्तत्थो। अणुबद्धखुप्पिवासुण्हसीयदुक्खदुओ निच्चं ॥ ५॥ चोरिक्कं कुणमाणो नियगजणे परजणे परियणे य। होइ अवीससणिज्जो पुरिसो कम्माणुभावेणं ॥ ६॥ उग्घोसणं च पावई तिए तिए चच्चरे चउक्के य। छेयणभेयणमारणसूलारुहणं च सो लहइ ॥ ७॥ परधणहरणपवत्तो विमाणणसएहिं मारिओ संतो। नरगंमि पुणो पावइ दुक्खसहस्साइं णेगाइं ॥ ८॥ करकयविकत्तणं कंडुपायणं सामलीसु आरुहणं। असिपत्तवणच्छेज्जं कोलसुणगभक्खणं चेव ॥ ९॥ वेयरणीउत्तरणं डहणं च कलंबवालुगापुलिणे। लोहरसतत्तपाणं तत्ततउयतत्तपाणं च ॥ १०॥ एयाणि य अन्नाणि य बहूणि पावेंति ते दुहमयाइं। जे अविरया मणुस्सा परधणहरणप्पसंगाओ ॥ ११॥" अदत्तादाणविरयस्स इमे गुणा-"जेसिं चोरेउं जे पच्चक्खाणं इमंमि लोगंमि। बहुरत्तरयणभरिए कुलंमि सो जायई विउले ॥ १॥ लोहीलोहकडाहं दासीदासं च जाणजोगं च। अवकिन्नंपि न हीरइ अचोरियाए फलं एयं ॥ २॥ खेत्ते खले य रन्ने दिया व राओ व मत्थवाए वा। अत्थो से न विणस्सइ अचोरियाए फलं एयं ॥ ३॥ गामागरनगराणं दोणमुहमडंबपट्टणाणं च। सुइर हवंति सामी अचोरियाए फलं एयं ॥ ४॥" एत्थ गुणदोसेसु एगं चेव उदाहरणं-जहा एगा गोट्ठी, सावगोवि ताए गोट्ठीए कहवि मिलिओ, एगत्थ य पगरणं वट्टति, जणे गए गोट्ठिल्लएहिं घरं पेल्लियं, थेरीए एक्केको मोरपिच्छेण पाए पडंतीए अंकिओ, पभाए रन्नो निवेदितं, राया भणति-कहं ते जाणियव्वा ?, थेरी भणति-मए पाएसु अंकिया नगरसमागमे ढिक्का

दो तिन्नि चत्तारि, सव्वा गोट्ठी ग या, एगो सावगो भणति न हरामि न लंञ्छितो, तेहिं वि भणियं–न एस हरति, मुक्को, इयरे सासिया । अविय सावगेण गोट्ठिं न पविसियव्वं, जइ किहवि पओयणे पविसति तो ओहारगं हिंसादि न देति, न य तेसिं आओगट्ठाणेसु ठाति । इयाणिं जयणा दंसिज्जइ–"उचियकलं मोत्तूणं दव्वाइकमागयं च उक्करिसं । निवडियमविजाणंतो परस्स संतं न गेण्हेज्जा ॥ १ ॥" उचियकला–पंचगसयवुड्ढिमाइसरूवा, तं मोत्तूण सेसं परस्स संतं न गेण्हेज्जा, दव्वं–गणिमधरिमाइ, आईसद्दाउ एएसिं चेव सगयभेदा अणेगे लब्भंति, तेसिं दव्वाणं कमेण–दव्वक्खयलक्खणेण आगओ–संपन्नो जो उक्करिसो–अग्घवुड्ढिसरूवो तं च मोत्तूणं, किं भणियं होइ ? भन्नइ–जइ कहिंचि पूगफलाईणं दव्वाणं खयाओ दुगुणाइलाभो होइ, तं अदुट्ठज्झवसाओ गिण्हइ, न पुण एवं चिंतेइ–सुन्दरं संजायं जं पूगफलाईणं खयाओ संवुत्तोत्ति । तहा निवडियमवि परस्स संतं जाणंतो न गेण्हेज्जा । एत्थ एस भावत्थो–सव्वत्थ गणिमधरिमाईणं कयविक्कयाइसु कलंतराइसु य देसकालादि अवेक्खाए जो उचिओ सिट्ठजणअनिंदिओ लाभो सो चेव गहेयव्वो, न पुण दसेगादसिगादित्ति । संपयं अस्स अइयारा भन्नंति—

वज्जइ इह तेणाहडतक्करजोगं विरुद्धरज्जं च । कूडतुलकूडमाणं तप्पडिरूवं च ववहारं ॥ १४ ॥

वज्जइ–परिहरइ, तेणाहडंति तेना–चोरा तेहिं आहडं–आणीयं किंचि कंकुमाइ तेनाहडं तक्करजोगंति तक्करा–चोरा तेसिं जोगो–हरणकिरियाए पेरणं हरह तुज्झेत्ति अणुन्ना तक्करजोगो । तहा विरुद्धरज्जंति विरुद्धो–सदेसराइणो सत्तू तस्स रज्जं-कडगं देसो वा विरुद्धं रज्जं तं वज्जेइ, न तत्थ वच्चइ । चसद्दो समुच्चए । तहा कूडतूलकूडमाणंति कूडा–पसिद्धसभावावेक्खाए ऊणा अहिया वा तुला कूडतुला, कूडमाणं च हीणमहियं वा कुडवाइ, तं वज्जेइ । तहा तप्पडिरूववववहारंति तेण–विक्किणि-

दो तिन्नि चत्तारि, सव्वा गोट्ठी ग या, एगो सावगो भणति न हरामि न लंच्छितो, तेहिं वि भणियं–न एम हरति, मुक्को, इयरे सासिया। अविय सावगेण गोट्ठिं न पविसियव्वं, जइ किहवि पओयणे पविसति तो ओहारगं हिंसादि न देति, न य तेसिं आओगट्ठाणेसु ठाति। इयाणिं जयणा दंसिज्जइ–"उचियकलं मोत्तूणं दव्वाइकमागयं च उक्करिसं। निवडियमविजाणंतो परस्स संतं न गेण्हेज्जा ॥ १ ॥" उचियकला–पंचगसयवुड्ढिमाइसरूवा, तं मोत्तूण सेसं परस्स संतं न गेण्हेज्जा, दव्वं–गणिमधरिमाइ, आईसद्दाउ एएसिं चेव सगयभेदा अणेगे लब्भंति, तेसिं दव्वाणं कमेण–दव्वक्खयलक्खणेण आगओ–संपन्नो जो उक्करिसो–अग्घवुड्ढिसरूवो तं च मोत्तूणं, किं भणियं होइ ? भन्नइ–जइ कहिंचि पूगफलाईणं दव्वाणं खयाओ दुगुणाइलाभो होइ, तं अदुट्ठज्झवसाओ गिण्हइ, न पुण एवं चिंतेइ–सुन्दरं संजायं जं पूगफलाईणं खयाओ संवुत्तोत्ति। तहा निवडियमवि परस्स संतं जाणंतो न गेण्हेज्जा। एत्थ एस भावत्थो–सव्वत्थ गणिमधरिमाईणं कयविक्कयाइसु कलंतराइसु य देसकालादि अवेक्खाए जो उचिओ सिट्ठजणअनिंदिओ लाभो सो चेव गहेयव्वो, न पुण दसेगादसिगादित्ति। संपयं अस्स अइयारा भन्नंति—

वज्जइ इह तेणाहडतक्करजोगं विरुद्धरज्जं च। कूडतुलकूडमाणं तप्पडिरूवं च ववहारं ॥ १४ ॥

वज्जइ–परिहरइ, तेनाहडंति तेना–चोरा तेहिं आहडं–आणीयं किंचि कंकुमाइ तेनाहडं तक्करजोगंति तक्करा–चोरा तेसिं जोगो–हरणकिरियाए पेरणं हरह तुज्झेत्ति अणुन्ना तक्करजोगो। तहा विरुद्धरज्जंति विरुद्धो–सदेसराइणो सत्तू तस्स रज्जं-कडगं देसो वा विरुद्धं रज्जं तं वज्जेइ, न तत्थ वच्चइ। चसद्दो समुच्चए। तहा कूडतूलकूडमाणंति कूडा–पसिद्धसभावावेक्खाए ऊणा अहिया वा तुला कूडतुला, कूडमाणं च हीणमहियं वा कुडवाइ, तं वज्जेइ। तहा तप्पडिरूववववहारंति तेण–विक्किणि-

वयरक्खणउज्जुयस्स अइयारो। अहवा तेनाहडगहणाई पंचवि एए पयडं अदत्तादाणसरूवा एव, केवलं सहसाकारअणाभोगेहिं अइक्कमवइक्कमअईयारेहिं वा कीरमाणा अइयारा भवंति, संभवंति य एते रायरायरोवगाईणंपि तेनाहडगहणतक्करपओगा, दोन्नि वि ताव पयडा चेव तेसिं संभवंति, विरुद्धरज्जाइक्कमो पुण जया सामंतादाओ सामिणोविचिं उवजीवंति सामिविरुद्धस्स य सहाइत्तं करेंति तया तेसिं अइयारो भवति। कूडतुलकूडमाणववहारतप्पडिरूववहारा पुण जया भंडागारदव्वाणं विणिमयं कारवेति, तया राइणोवि अइयारा भवंतित्ति ॥ १४ ॥ भंगो अइयारभावणाए दरिसिओ चेव, भावणा पुण इमा–" इणमवि चिंतेयव्वं अदत्तदाणाउ निच्चविरयाणं। समतिणमणिमुत्ताणं नमो सया सव्वसाहूणं ॥ १ ॥ जे दंतसोहणंपि हु गेण्हंति अदिन्नयं न य मुणिंदा। तेसिं नमामि पयओ निरभिस्संगाण गुत्ताणं ॥ २ ॥" इच्चाइ, भणियं तइयमणुवयं। संपयं चउत्थं भन्नइ–

तत्थ सामन्नेण बंभवयसरूवं ताव दंसिज्जइ–" अट्ठारसहा बंभं नवगुत्तीपंचभावणासहियं। कामचउवीसरहियं दसहा वा अट्ठहा वावि ॥ १ ॥" केरिसं बंभचेरंति सरूवे पुच्छिए भन्नइ–अट्ठारसहा बंभं। न करेति १ न कारवेति २ नाणुमन्नइ ३ मणेणं, एवं वायाए तिन्नि ३, काएणवि तिन्नि ३, सव्वे नव ९, वेउव्वियकामसुहाउ एएहिं नवहिं पगारेहिं विरई, एवं ओरालियसुहाओवि नवहिं सव्वे अट्ठारस १८, एवं अट्ठारसहा बंभं जइणो, केरिसं? नवगुत्तीपंचभावणासहियंति, नवहिं गुत्तीहिं पंचहिं भावणाहिं सहियंति, तत्थ नवगुत्तीओ–" वसहिकहनिसिज्जेंदियकुड्डंतरपुव्वकीलिएपणीए। अइमायाहारविभूसणा य नव बंभगुत्तीओ ॥ १ ॥" भावणा पंच–" आहारगुत्ते अविभूसियप्पा, इत्थिं न निज्झाइ न संथवेज्जा। बुद्धे मुणी खुद्दकहं न कुज्जा, धम्मणुप्पेही संधए बंभचेरं ॥ १ ॥" क्षुद्राः स्त्रियः। पुणोऽवि केरिसं? कामचउवीसरहियं दसहा वा अट्ठहा

वा वित्ति [ग्रन्थान्तरादवसेयं] । कामिज्जति–अभिलसिज्जंति जे ते कामा तेसिं चउवीसा एवं, दुविहो ताव कामो संपत्तकामो असंपत्तकामो य, तत्थ संपत्तो चउद्दसविहो, तंजहा–"दिट्ठीए संपाओ १ दिट्ठोसेवा य २ संभासो ३ ॥ १ ॥ हसिय ४ ललिओ ५ वगूहिय ६ दंत ७ नह ८ निवायचुंवणं चेव ९ । आलिंगण १० मायाणं ११ कर १२ सेवण १३ णंगकीडा १४ य ॥ २ ॥" तत्थ दिट्ठीसंपाओ–इत्थीणं पज्जणणावयवावलोयणं १, दिट्ठिसेवा–पुण भावसारं थीदिट्ठीए दिट्ठीमीलणं २, संभासो–संभासणं उचियकाले कामकहाहिं संलावो ३, हसियं–चंकमणियगसंपसिद्धं ४, ललियं–पासगाइकीडा ५, उवगूहियं–आलिंगियं ६, दंतनिवाओ–दंतछेयविही ७, नहनिवाओ–नहविदारणविही ८, चुंबणं–मुहसंजोगो ९, आलिंगणं–गायसंमीलणं १०, आयाणं–कुयाइगहणं ११, करत्ति करणं–नागरगाइपारंभजंतं १२, सेवणंति–आसेवणं मेहुणकिरिया १३, अणंगकिरिया–मुहमाइसु मेहुणसेवणं १४ । एस पढमद्धऊणगाहादुगस्स अत्थो । असंपत्तकामो दसप्पगारो एवं–"तत्थ असंपत्तो अत्थो १ चिंता २ तह सद्ध ३ संभरणमेव ४ । विक्कवय ५ लज्जनासो ६ पमाय ७ उम्माय ८ तब्भावो ॥ १ ॥ ९ मरणं १० च होइ दसमोत्ति" तत्थ असंपत्तो कामो अत्थत्ति–अदिट्ठेवि विलयाइपयत्थे सवणाओ तदभिप्पायमित्त १, तत्थेव अहो रूवाइगुणा एवंविहअभिनिवेसेण चिंतणं चिंता २, तहा सद्धा–संगमाभिलासो ३, संभरणं–संकप्पियस्स तीए रूवस्स आलिहणाइणा विणोदो ४, विक्कवया–सोगाइरेगाओ आहाराइसुवि निरवेक्खया ५, लज्जानासो–गुरुमाईणसमक्खंपि तग्गुणुक्कित्तणं ६, पमाओ–तदत्थमेव सव्वारंभेसु अ पवत्तणं ७, उम्माओ–नट्ठचित्तयाए आलजालभासणं ८, तब्भावो–थंभाइणं पि तब्बुद्धीए आलिंगणाइचेट्ठा ९, मरणं च–सोगाइरेगाओ पाणच्चाओ १० । अन्नत्थवि भणियं—"पढमे

जायइ चिंता, बिइए दट्ठुमिच्छई। तइए दीहनिस्सासो, चउत्थे जरमादिसे ॥ १ ॥ पंचमे डज्झए अंगं, छट्ठे भत्तं न रुच्चई। सत्तमे उ भवे कंपो, उम्माओ अट्ठमे तहा ॥ २ ॥ नवमे जीवसंदेहो, दसमे जीवियं चए।" अहवा अण्णेण पगारेण बंभचेरसरूवं भण्णइ-दसहा वा अट्ठहा वा वि, तत्थ दसहा-मेहुणाइदसपगारकामवज्जणा दसविहं बंभचेरं होइ, दसविहकामो य इमो-"मेहुण १ मणुसरणं २ वासणाईय ३ इच्छा ४ तहिंदियालोगो ५। विस्सरस ६ विसय ७ विगहा ८ विभूसा ९ संसत्तसेवा य १० ॥ १ ॥" एईए अत्थो-मेहुणंति-सचित्ताचित्तछिद्दासेवणं, अणुसरणंति पुव्वकीलियचिंतणं, वासणत्ति धारणाविसेसरूवा, इच्छत्ति-सेवाभिलासो, तहत्ति पायपूरणे, इंदियालोगत्ति-इत्थीणं मणोरमिंदियनिज्झायणं, विस्सरसत्ति विहंगरसा जेहिं उवभुंजंतेहिं सत्तमधाऊवचओ होइ, विसयत्ति सद्दरसाई, विगहत्ति इत्थीनेवत्थाइकहा, विभूसत्ति राढा संसत्तसेवत्ति इत्थियाहिं सह तप्परिभुत्ताणं वा सयणासणाईणं आसु ताओ परिभोगो, चसद्दो समुच्चए। अट्ठहा पुण एवं-"सरणं १ कित्तणं २ केली ३ पेखणं ४ गुज्झभासणं ५। संकप्पो ६ अज्झवसाओ य ७ किरियानिप्फत्ति अट्ठमा ॥ १ ॥" एयाओ अट्ठपगाराओ निवित्ती अट्ठपगारं बंभचेरं होइत्ति। एवं सामन्नेण अणेगपगारं बंभचेरं भणियं। संपयं जारिसं अणुवयं होइ तारिसं भन्नइ-

परदारस्स य विरई ओरालविउव्विभेयओ दुविहं। एयमिह मुणेयव्वं सदारसंतोसमो एत्थ ॥ १५ ॥

परदारस्सत्ति परे अत्तणो अन्ने पुरिसा १ तहा मणुस्सजाइअवेक्खाए देवा २ तिरिया य ३ परे। तेसिं दारा-परिणीयाणि संगहियाणि य कलत्ताणि १ देवीओ २ तिरिच्छिओ य ३ परदारा भन्नंति, जइवि अपरिग्गहियदेवीओ

अंतेण वीहिमाइणा घयाइणा वा पडिरूवं–सरिसं पलंजिमाइ वसाइ वा दव्वं जत्थ ववहारे स तप्पडिरूवो, अहवा सुवन्नकुंकुमकप्पूरमुत्ताहलादिसरिसेण जुत्तिसुवन्नकुंकुमकप्पूरमुत्ताहलाइणा दव्वेण जो ववहारो सो तप्पडिरूवववहारो तं वज्जेइ। जओ एयाणि समायरंतो अतियरति तइयाणुव्वयं। अतियारभावणा य एवं–तेणाहडं काणकएण लोभदोसेण पण्णं गेण्हंतो चोरो होइ,जओ भणियं–"चोरो चोरावगो मंती, भेयण्णु काणगक्कयी। अन्नदो ठाणदो चेव, चोरो सत्तविहो मतो ॥ १ ॥" ततो चोरियाकरणेण वयभंगो, वणिज्जमेव अहं करेमि न चोरियंति अणेण अज्झवसाएण य वयसावेक्खोत्तिकाउं न वयभंगो, अओ भंगाभंगरूवो अइयारो। तक्करपओगो पुण जइवि चोरियं न करेमि, न कारवेमित्ति, एवं पडिवन्नवयस्स भंग एव, तहावि किं अहुणा तुम्हे निव्वावारा अच्छह ?, जइ तुम्हाणं संबलगाई णत्थि तं अहं देमि, तुम्हेहिं आणियमोसस्स वा जइ विकायगो नत्थि तया अहं विक्कयं करिस्सामित्ति, एवंविहवयणेहिं चोरे वावारंतस्स सकप्पणाए चोरवावारणं परिहरंतस्स वयसावेक्खस्स अइयारोत्ति। विरुद्धरज्जाइक्कमो पुण जइवि नियसामिणा अणणुण्णायस्स परकडगदेसपवेसस्स 'सामीजीवादत्तं तित्थयरेणं तहेव य गुरूहिं' एवंविहअदत्तादाणलक्खणजोगेणं तहा विरुद्धरज्जाइक्कमकारिणं चोरदंडजोगेणं अदत्तादाणरूवत्ताओ भंग एव, तहावि विरुद्धरज्जाइक्कमं करेंतेण मए वणिज्जमेव कयं न पुण चोरियत्ति भावणाए वयसावेक्खत्तणेण लोए य चोरो एसो एवंविहववएसाऽभावाओ अइयारोत्ति। उवलक्खणं च विरुद्धरज्जाइक्कमो तेण सदेसेवि जं वत्थाइ विक्कणिउं वा किणिउं वा निसिद्धं नियसामिणा तंपि इह दट्ठव्वं। तहा कूडतुलकूडमाणववहारो तप्पडिरूवववहारो य परवंचणेण परधणगहणाओ भंग एव, केवलं खत्तखणणाइगमेव अदत्तादाणं कूडतुलकूडमाणववहारतप्पडिरूवववहारा पुण वाणियगकला चेवत्ति, एवंविहनियकप्पणाए

निद्रावस्थस्स मोहोदयाओ होइ तया तक्कालमेव उट्ठित्ता इरियापडिक्कमणपुव्वं अट्ठुत्तरसयऊसासपरिमाणो काउस्सग्गो कायव्वोत्ति भणियं होइ, तहा इंदियावलोयणे जयणा कायव्वा, जओ भणियं–" वज्जेज्जा मोहकरणं परजुवईदंसणाइ सवियारं । एए खु मयणबाणा चरित्तपाणे विणासंति ॥ १ ॥ " दंसणाइत्ति दंसणं–अवलोयणं, आइसद्दाओ संभासणाइ घेप्पइत्ति । सवियारं–सविब्भमंति, तहा–" अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं । इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥ १ ॥ जहा कुक्कुडपोयस्स, निच्चं कुललओ भयं । एवं बंभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ भयं ॥ २ ॥ " कुललओत्ति मज्जाराओ, " गुज्झोरुवयणकक्खोरुअंतरे तह थणंतरे दट्ठुं । साहरइ तओ दिट्ठिं न य बंधइ दिट्ठिए दिट्ठिं ॥ ३ ॥ तहा–रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं । दित्तं च कामा समभिद्दवंति दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ ४ ॥ जहा–दवग्गी पउरिंधणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ । एविंदियग्गिवि पगामभोइणो न बंभयारिस्स हियाय कस्सइ ॥ ५ ॥ " एवमाइ । संपयं अइयारा भन्नंति–

वज्जइ इत्तरिअपरिग्गहियागमणं अणंगकीडं च । परवीवाहक्करणं कामे तिव्वाभिलासं च ॥ १६ ॥

एत्थ चउत्थाणुव्वयविरईए वज्जेइ-परिहरइ इत्तरिअपरिग्गहियागमणंति इत्तरी–गमणसीला भाडिप्पयाणेण थोवकालं परिग्गहिया वेसा, तहा अपरिग्गहिया–वेसा चेव अग्गहियअन्नसंबंधिभाडी कुलंगणा वा अणाहत्ति, तासु इत्तरिअपरिग्गहियासु गमणं–आसेवणं इत्तरिअपरिग्गहियागमणं । तहा अणंगकीडत्ति अंगं देहावयवो मेहुणावेक्खाए जोणी लिंगं च, तव्वइरित्ताणि अणंगाणि कुचकक्खोरुमुहाईणि, तेसु कीडा–रमणं अणंगकीडा, अहवा अणंगो–कामो भन्नइ, तेण कामेण कीडा अणंगकीडा, किं भणियं होइ?, भन्नइ–सलिंगेण निष्फन्नपओयणस्स कारिमेहिं चम्माइघडियलिंगेहिं थीगुज्झदेसासेवणंति, अतो तं वज्जेइ ।

चसद्दो समुच्चए। तहा परवीवाहकरणंति परेसिं-नियअवच्चवइरित्ताणं जणाणं विवाहकरणं कन्नाफललामिच्छाए नेहेण वा संबंधाइणा वा परिणयणविहाणं परविवाहकरणंत्ति, इह च सकीयावच्चेसुवि संखाभिग्गहो जुत्तो। तहा कामे तिव्वाभिलासं च-कामे-कामोदयजणिए मेहुणे तिव्वाभिलासं, अहवा कामेत्ति 'सूयणमेत्तं सुत्तं'ति काउं कामभोगेसु, तत्थ कामा-सद्दरूवाणि, भोगा-गंधरसफरिसा तेसु तिव्वाभिलासो-अच्चंतअज्झवसाओ जेणज्झवसाएण ओसहपाणाईहिं अणवरयमेहुणसुहनिमित्तं मयणमुद्दीवेइ तं वज्जेइ। चसद्दो समुच्चए, एयाणि समायरंतो अइयरइ चउत्थाणुवयं, अओ एयाणि वज्जेइ। एत्थ य पढमबिईयाइयारा सदारसंतुट्ठस्स चेव न परदारवज्जगस्स, सेसा पुण दोण्हवि भवंति। भावणा पुण एत्थ एवं कायवा-भाडिप्पयाणेण इत्तरकालं नियसत्ताए काऊण वेसं भुंजमाणस्स सकप्पणाए सकलत्तं मण्णमाणस्स वयसावेक्खचित्तस्स न भंगो, इत्तरकालपरिग्गहभावेण य परमत्थओ सकलत्तं सा न होइ, अतो भंगो तेण भंगाभंगरूवो अतिचारो। अपरिग्गहियागमणं पुण सहसाकारअणाभोगेहिं अइक्कमवइक्कमअइयारेहिं वा अइयारो, परदारवज्जगस्स एए दोन्निवि अइयारा न होंति जेण वेसा अणाहकुलंगणा य परकलत्तं न होंति। अन्ने आयरिया भणंति-"इत्तरपरिग्गहियागमणं सदारसंतुट्ठस्स अइयारो, अपरिग्गहियागमणं तु परदारवज्जगस्स, तत्थ पढमभावणा जहा पुव्वं भणिया तहा भणियव्वा, बिईयभावणा पुण एवं-अपरिग्गहिया नाम वेसा तं जया अन्नपुरिससंबंधिगहियभाडिं अभिगच्छइ तया परदारगमणजणियदोससंभवाउ कहिंचि परदारत्तणेणं भंगो, वेसत्तिकाउं अभंगो, अओ भंगाभंगरूवो अइयारो।" अन्ने पुण अन्नहा भणंति-"परदारवज्जिणो पंच होंति तिन्नि उ सदारसंतुट्ठे। इत्थीए तिन्नि पंच व भंगविगप्पेहिं नायवं ॥ १ ॥ इह भावणा-परेण इत्तरकालं जा परिग्गहिया वेसा तग्गमणं अइयारो, पर-

दारवज्जगस्स तन्नियं कालं परदारत्तिकाउं। तहा अपरिग्गहियाए अणाहकुलंगणाए जं गमणं तंपि परदारवज्जगस्स चेव अइयारो, कह? भन्नइ–जेण लोए परदारत्तणेण मा पसिद्धा तेण भंगो, जेण य तीए कामुगो भत्ताराई नत्थि, तेण कारणेण परकलत्तं न होइत्तिकाउं अभंगो, अओ भंगाभंगरूवो अइयारो एसोत्ति। सेसा पुण तिन्निवि सदारसंतुट्ठपरदारवज्जगाणं दोण्हंपि संभवंति, सदारसंतुट्ठस्स सकलत्तेवि, परदारवज्जगस्स पुण वेमासकलत्तेसुवि जा अणंगकीडा सा सक्खं अपच्चक्खायावि न कायव्वा, किं कारणं?, भन्नइ–जओ सावगो अच्चंतपावभीरूययाए बंभचेरं काउकामोवि जया वेदोदयं सहिउं असमत्थो बंभचेरं काउं न सक्केइ तया वेदोदयोवसममित्तनिमित्तं सदारसंतोसं परदारवज्जणं वा पडिवज्जेइ, मेहुणमेत्तेण चेव वेदोदयपसमो संभवइ अतो अणंगकीडा सामत्थओ पच्चक्खाया चेव, एवं परविवाहतिव्वकामाभिलासावि अत्थओ पच्चक्खाया दट्ठव्वा, अओ अत्थओ पच्चक्खायत्ति तेसु पयट्टंतस्स भंगो, सक्खं न पच्चक्खायत्ति पयट्टंतस्सवि अभंगो, अओ भंगाभंगरूवा अइयारा ते भवंति।"

अन्ने पुण अणंगकीडाइयारभावणं एवं करेंति, तंजहा–"किर सो सावगो मेहुणमेव वयविसओत्ति एवंविहनियकप्पणाए मेहुणं परिहरंतो सदारसंतोसी गणियाअणाहकुलंगणासु, परदारवज्जगो पुण परदारेसु आलिंगणाइरूवं अणंगकीडं कुणंतो वयसाः वेक्खोत्तिकाउं अइयारे वट्टइ। तहा सदारसंतुट्ठेण सकलत्ताउ अन्नत्थ, परदारवज्जगेण सकलत्तवेसाहिंतो अन्नत्थ मणवयणकाएहिं मेहुणं न कायव्वं न य कारवेयव्वंति, एवं जया पडिवन्नं वयं होइ तया परविवाहकरणेण मेहुणकारवणं अत्थओ कयं भवइ, बंभवयधारी पुण भन्नइ–विवाहो चेव एस मए कीरइ, न मेहुणंति, ततो वयसावेक्खोत्तिकाउं अइयारो होइत्ति।"

ननु परविवाहकरणे कन्नाहललाभेच्छा कारणं भणियं, तत्थ किं संमदिट्ठी एस वयधारी मिच्छदिट्ठी वा?, जइ सम्मदिट्ठी

तया सम्मद्दिट्ठिस्स कन्नाहललाभेच्छा न संभवइ, मिच्छत्तविरउत्तिकाउं, अह भणह मिच्छद्दिट्ठी तया मिच्छद्दिट्ठिस्स अणुव्वयाणं संभवो चेव नत्थित्तिकाउं कहं कन्नाहललाभिच्छा परविवाहकरणरूवाइयारकारणंति ?, सच्चमेयं, केवलं सम्मद्दिट्ठिस्सवि अनिउणस्स सा संभवइ, तहा अहाभद्दगस्स मिच्छद्दिट्ठिस्सवि सुमग्गपवेसणनिमित्तं अभिग्गहमेत्तं देंतिवि गीयत्था। जहा किर अज्जसुहत्थिणा आयरिएण दमगस्स सव्वविरई दिन्ना। एयं पुण परविवाहवज्जणं नियअवच्चवइरित्तेसु चेव जुत्तं, अन्नहा जइ नियअवच्चाणि न विवाहिज्जंति तया अपरिणीया कन्ना सच्छंदचारिणी होइ, ततो सासणोवघाओ, कयविवाहा पुण विहियविरइबंधणत्तिकाउं न सच्छंदचारिणी होइ। जं पुण पुव्वं भणियं नियअवच्चेसुवि संखाभिग्गहो जुत्तो, तं जइ कोइ अन्नो चिंतगो होइ तया जुत्तं, अहवा अवच्चसंखासमत्तीए जइ अहिगावच्चुप्पत्तिपरिहारोवायं करेइ तो संखाभिग्गहो जुत्तोत्ति। अन्ने आयरिया एवं भणंति-" परो अन्नो जो विवाहो अप्पणो चेव स परविवाहो, किं भणियं होइ ?, भन्नइ-विसिट्ठसंतोसाभावाओ अप्पणा अन्नाउ कन्नगाउ परिणेइत्ति। एसो पुण अइयारो सदारसंतुट्ठस्स होइ, " इत्थीए पुण सदारसंतोसपरदारवज्जणभेया नत्थि, सपुरिसवइरित्ता अन्ने सव्वे परपुरिसत्तिकाउं, तओ अणंगकीडापरविवाहकरणकामभोगतिव्वाभिलासलक्खणा तिन्नि अईयारा जहा सदारसंतुट्ठस्स तहा इत्थियाएवि सपुरिसविसए होंति। इत्तरपरिग्गहियागमणरूवो पढमइयारो पुण जया सपुरिसो सवक्कीए नियवारयदिवसे परिग्गहिओ होइ, तया सवक्किवारगं अइक्कमिऊण सपुरिसं परिभुंजंतीए अइयारो होति। अपरिग्गहियागमणलक्खणो बीयाइयारो पुण अइक्कमाइणा पुरिसं गच्छंतीए नायव्वो, बंभयारिस्स पुण सव्वत्थ अइक्कमाइणा सव्वे वि अइयारा भवंति करकम्माईहि य ॥ १६ ॥ भंगो अइयारभावणाए विभाविओ चेव। भावणा पुण इमा-" चिंतेयव्वं च नमो

जोगे जोहिं निविहेण अबंभं । तं अधम्ममूलं मूलं भवगहणबाणाणं ॥ १ ॥" भणियं चउत्थाणुव्वयं । संपयं पंचमं भन्नइ-
इच्छापरिमाणं खलु असयारंभविनिवित्तिसंजणगं। खेत्ताइवत्थुविसयं चित्तादवि(व)रोहओ चित्तं ॥१७॥

इच्छापरिमाणंति इच्छा-गहियवत्थुविसया कंखा ताए इच्छाए परिग्गहियवत्थूणं परिमाणं-एत्तिओ मम परिग्ग-होत्ति, एयरूवं इच्छापरिमाणं, खलुसद्दो पायपूरणे, पंचमाणुव्वयं होइ, गाहाए अभणियं पि तु पत्थावाओ लब्भइ। तं पुण इच्छा-परिमाणं केरिसफलजणगं?, भन्नइ-असयारंभविनिवित्तिसंजणगंति असुभारंभविनिवित्तिकारण, संभवइ य इच्छापरिमाणे कए परिमियपयत्थाणं किंचिवि सुहवावारेहिंतोवि संपत्तीए असुभारंभविनिवित्ती, जओ पउरदव्वलाभनिमित्तमेव जीवघायाइ-असुभारंभेसु पाएण पाणिणो पयट्टंति। अणेण पढमगाहद्धेण सरूवं भणियं, बीयद्धेणं भेयदारं सूएइ। तं पुण इच्छापरिमाणं किंविसयं?, भन्नइ-खेत्ताइवत्थुविसयंति खेत्ताइपयत्थगोयरं, जओ भणियं-धण, धन्न, खेत्तं, वत्थुं, रूप्प, सुवन्नं, कुवियं, दुपयं, चउप्पयं च एमाइ। चित्तादवरोहओ चित्तंति चित्तं-मणो भन्नइ, आइसद्दाउ दव्वदेसवंसाईणि घेप्पंति, तेसिं अवरोहेण-अणुसारेण वसेण, चित्तं-बहुप्पगारं-बहुभेयं इच्छापरिमाण, तहाहि-कोवि दरिद्दोवि विपुलचित्तो होइ, अन्नो पुण निभवाणु-रूवचित्तो, तहा कस्सइ पभूयं दव्व होइ, अन्नस्स थोवं, तहा कम्मिवि देसे अच्चंत धन्नचउप्पयाईसंगहो कीरइ, अन्नत्थ पुण न कीरइ, तहा कोइ रायवंसो होइ अन्नो माहणवणियवंसाई, तत्थ जो रायवंसो होइ तस्स पाएण रज्जाइसंभवो, एवं चित्तदव्वदेस-वंसाइअणुसारेण पुरिसेहिं इच्छापरिमाण कीरमाणं अणेगहा होइत्ति ॥ १७॥ (ग्रंथाग्रं १५००) अनियत्तस्स दोसा-" जणय-सुयाणं च जए जणणीसुण्हाण भाउयाणं च । चड्डुलस्स धणस्स कए नासइ नेहो खणद्धेणं ॥१॥ अडइ बहुं वहइ भरं सहइ छुहं

पावमायरइ धिट्ठो। कुलसीलजाइपच्चयट्ठिइं च लोमहुओ चयइ ॥ २ ॥ धावेइ रोहणं तरइ सायरं वसइ गिरिनिगुंजेसु। बंधवजणं च मारइ पुरिसो जो होइ धणलुद्धो ॥ ३ ॥ तणकट्ठेहिं व अग्गी लवणजलो वा नईसहस्सेहिं। न इमो जीवो सक्को तिप्पेउं अत्थसारेण ॥ ४ ॥ धणसंचओ य विउलो आरंभपरिग्गहो य विच्छिन्नो। नेइ अवस्सं मणुसं नरगं च तिरिक्खजोणिं वा ॥ ५ ॥ एयाणि य अन्नाणि य बहूणि पावंति ते दुहसयाइं। जे अविरया मणुस्सा परिग्गहे जे असंतुट्ठा ॥ ६ ॥" विरयस्स गुणा–"जह जह अप्पो लोभो जह जह अप्पो परिग्गहारंभो। तह तह सुहं पवड्ढइ धम्मस्स य होइ संसिद्धी ॥ १ ॥" एवमाइया, जयणासरूवं इमं–" संभरइ वारवारं मोकलतरयं व गेण्हइस्सामि। एय वयं पुणोविय मणेण न य चिंतए एवं ॥ १ ॥" एवमादि। एत्थ अइयारा भन्नंति—

खेत्ताइहिरन्नाइधणाइदुपयाइकुप्पमाणकमे। जोयणपयाणबंधणकारणभावेहि नो कुणइ ॥ १८ ॥

खेत्ताइ १ हिरन्नाइ २ धणाइ ३ दुपयाइ ४ कुप्पमाणकमे ५, खेत्ताइविसए जं परिमाणं गहियं तस्स अइक्कमे जोयण १ पयाण २ बंधण ३ कारण ४ भावेहिं ५ एएहिं जोयणाईहिं जहक्कमं न करेइ, एस समुदायत्थो। तत्थ खेत्तं–सस्सुप्पत्तिभूमी जत्थ धन्नमुप्पज्जइ, तं पुण सेतुकेतुउभयभेयाओ तिविहं, तत्थ सेतुखेत्तं अरहट्टपावट्टाईहिं जं सिंचिज्जइ १, केतुखेत्तं पुण आगासजलेण जं निप्फज्जइ २, जं पुण अरहट्टाइणा आगासजलेण य निप्फज्जइ तं उभयखेत्तं ३, आइसद्दाउ वत्थू घेप्पइ, वत्थू पुण अगारगामनगराईणि य वुच्चंति, तत्थ अगारं तिविहं–खायं ऊसियं खाऊसियं च, तत्थ खायं भूमिहरयाइ, ऊसियं भूमिघररहियं पासायमाई, उभयं भूमिघरस्सोवरि पासाओ, एएसिं खेत्तवत्थूणं पमाणस्स जोयणेण–अन्नखेत्तघरमीलणेण अइक्कमो

अइयारो होइ। जहा किर एक्कं चेव मम खेत्तं वत्थू वा एवंविहअभिग्गहसहियस्स अहिगखेत्ताभिलासे अहिगवत्थुअभिलासे वा वयभंगभएणं पुव्वगहियखेत्तस्स वा घरस्स वा समीवे अन्नं खेत्तं घरं वा गहेऊणं पच्छा पुव्वगहिएण सह अभिणवगहियस्स एगत्तकरणनिमित्तं वाडिवरंडगाइअवणयणेण अभिणवं पुव्विल्ले जोयंतस्स वयसावेक्खत्तणेण किंचि विरइविराहणेण य अइयारो १, तथा हिरण्णं-रूप्पं आइसद्दाउ सुवन्नं घेप्पइ, एएसिं परिमाणस्स पयाणेण-दाणेण अइक्कमो-अइयारो होइ, तंजहा-केणवि चाउम्मासाइअवहिणा हिरन्नसुवन्नपरिमाणं गहियं तत्थ य तेण सावएण परितुट्ठराइणो अन्नस्स वा कस्सवि सगासाउ परिमाणाहिगं हिरन्नाइ लद्धं, तं पुण वयभंगभएणं अन्नस्स देइ, अवहीए पुण्णाए गिण्हिस्सामि एवंविहभावणाए वयसावेक्खस्स अइयारो २, तहा धणं-गणिमधरिममेयपारिच्छेज्जभेयाओ चउव्विहं, तत्थ गणिमं-पूगफलाइ धरिमं-गुडखंडाई, मेय-घयतेलाइ, पारिच्छेज्जं-माणिकवत्थाइ, आइसद्दाउ धन्नं सालिजववीहिकोद्दवरालयतिलमुग्गमासादि घेप्पइ, एएसिं परिमाणस्स बंधणेण अइक्कमो-अइयारो होइ, जहा किर कस्सवि कयधणधन्नपरिमाणस्स कोवि लभ्भं अन्नं वा धणाइ देइ, तं पुण वयभंगभयाउ चाउम्मासाइपरओ गिहट्ठियधणधन्नविकए वा गिण्हिस्सामि एवंविहभावणाए बंधणेण मूढगाइसरूवेण सच्चंकारदाणाइरूवेण वा सीकरेऊण तस्स घरे चेव तं धणाइ ठावेंतस्स अइयारो ३, तहा दुपयं-पुत्तकलत्तदासीदासकम्मकरसुगसारिगाइरूवं, आइसद्दाओ गोमहिसीबलीवद्दाईचउप्पया गहिया, तेसिं जं परिमाणं गहियं तस्स कारणेण-गब्भगाहणेण इत्यर्थः, अइक्कमो-अइयारो होइ, जहा किर केणावि सावगेण संवच्छराइकालमाणेण दुपयचउप्पयाण परिमाणं कयं, ताइं च संवच्छरमज्झे चेव जइ पसविंति तओ परिमाणाहिगदुपयचउप्पयसंभवाउ वयभंगो होइ, अओ वयभंगभयाउ केवइयंमि वि

काले गए गब्भगाहणं कारवेंतस्स गब्भे दुपयाइभावाओ बाहिं च अभावाओ वयमाविक्खस्स अइयारो होइ ४, तहा कुवियं—आसणसयणथालकच्चोलाइ घरउवक्खरं तस्स जं माणं—परिमाणं तस्स माणस्स भावेण—तप्पज्जायंतररूवेण अइक्कमो—अइयारो होइ, जहा किर केणवि वइणा दस करोडगादीणि कुवियपरिमाणं कयं, तओ ताणि कहिंचि दुगुणाणि संजायाणि तओ वयभंगभएण तेसिं दुगेण दुगेण एगेगं महंतं कारावेंतस्स पज्जायंतरकरणेणं संखापूरणाउ साहावियसंखाबाहाउ य अइयारो होइ। अन्ने पुण भणंति—“ भावेण तदत्थित्तलक्खणेण विवक्खियकालावहिए परओ अहं एय गहिस्सामि अओ न अन्नस्स देयं, एवंविहवयणेहिं तं दव्वं परघरे ठावेंतस्स अइयारो ” ५ ॥१८॥ भंगो अइयारभावणाए दंसिओ, अओ मेएण न विवरिज्जइ। भावणा पुण इमा—“धन्ना परिग्गहं उज्झिऊण मूलमिह सव्वपावाणं। धम्मचरणं पवन्ना मणेण एवं विचिंतेज्जा ॥ १ ॥” भणियाणि मूलगुणरूवाणि अणुव्वयाणि। संपयं उत्तरगुणाणं अवसरो, ते पुण गुणव्वयसिक्खावयरूवा, तत्थ पढमगुणव्वयं ताव भन्नइ—

उड्ढाहोतिरियदिसिं चाउम्मासाइकालमाणेणं। गमणपरिमाणकरणं गुणव्वयं होइ विन्नेयं ॥ १९ ॥

उड्ढाहोतिरियदिसिंति उड्ढं—उवरि पव्वयाआइविसए, अहो—भूमिहरसरकूवाइसु, तिरियदिसिं—पुव्वाइदिसिं एयासु दिसासु विसए, गमणपरिमाणकरणंति एवं पयं संबज्झइ। अणेण गाहावयवेण लाघवत्थं अणवसरपत्तंपि भेयदारं सूइयति, सेसावयवेहिं सरूवं भण्णइ—चाउम्मासाइकालमाणेणंति चाउम्मासं—मासचउक्कं आइसद्दाउ संवच्छराई लब्भइ, एवंविहकालमाणेण गमणस्स जं परिमाणकरणं, एत्तियाउ खेत्ताउ परओ न गंतव्वं एवंविहमाणकरण, गुणव्वयं होइत्ति गुणाय—अणुव्वयाणं उवगाराय वयं गुणव्वयं, भवइ य अणुव्वयाणं गुणव्वएहिंतो उवगारो, विवक्खियखेत्ताईणं अन्नत्थ हिंसाइनिसेहाओ, विन्नेयं—

नायव्वं, पढममिति अभणियंपि गाहाए लब्भइ ॥ १९ ॥ दोसा इमे–" तत्तायगोलकप्पो पमत्तजीवोऽनिवारियप्पसरो। सव्वत्थ किन्न कुज्जा पावं तक्कारणाणुगओ ॥ १ ॥" गुणा पुण–दिसिपरिमाणे कए विवक्खियखेत्ताओ परउ जे तसथावरा तेसिं दंडो परिचत्तो होइ, एए पुण दोसे नाऊणं जइयव्वमेव–" जत्थत्थि सत्तपीला दिसासु अहो पेलवं तहिं कज्जं। कुज्जा नाइपसंगं सेसासु य सत्तिओ मइमं ॥ १ ॥" संपइ अइयारा–

वज्जइ उड्ढाइक्कममाणयणप्पेसणोभयविसुद्धं। तह चेव खेत्तवुड्ढीं कहिंचि सइअंतरद्धं च ॥ २० ॥

वज्जइ–परिहरइ उड्ढाइक्कमंति विवक्खियखेत्ताओ परओ उड्ढाहोतिरियदिसासु कम्मं–अइकमं वज्जेइ, अणेण य तिन्नि अइयारा भणिया, तंजहा–उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमेत्ति, एए पुण तिन्निवि अणाभोगाइक्कमाईहिं चेव अइयारा भवंति, आभोगाइपवित्तीए पुण भंगा एव भवंति। उड्ढादिक्कमं कहं वज्जेइ ? भन्नइ–आणयणप्पेसणोभयविसुद्धंति आणयणं–नियखेत्ताओ परओ ठियस्स वत्थुणो परेण अन्नेण सखेत्ते पावणं, पेसणं–नियखेत्ताओ परेण नयणं, उभयं च जुगवं आणयणं नयणं च, एएहिं तिहिं विसुद्धं–निद्दोसं आणयणप्पेसणोभयविसुद्धं, विवक्खियखेत्ताउ परओ सयं गमणेण आणयणपेसणाईहि य पगारेहिं दिसिपरिमाणाइक्कमं वज्जेइत्ति। भावणा एस पुण आणयणपेसणाइसु अइक्कमो जेण न कारवेमित्ति दिसिव्वयं गहियं तस्सेव संभवइ। अन्नस्स पुण आणयणाईसु अणइक्कमो चेव तारिसस्स पच्चक्खाणस्स अभावाओ १–३। तह चेव खेत्तवुड्ढित्ति तह चेव, जहा उड्ढाइक्कमं आणयणाइविसुद्धं वज्जेइ, एवं खेत्तवुड्ढीवि आणयणाइविसुद्धा, खेत्तस्स पुव्वाइदेसस्स दिसिव्वयविसयस्स थोवस्स वुड्ढी–अहिगकरणं अन्नदिसिपरिमाणपक्खेवओ अन्नदिसिदीहत्तकरणं खेत्तवुड्ढी तं वज्जेइ।

किर केणावि पुव्वपच्छिमदिसासु पत्तेयं जोयणसयं गमणपरिमाणं कयं, सो पुण उप्पणपओयणे एगाए दिसाए नउइं जोयणाइं ठवेउ अण्णाए दिसाए दसोत्तरं जोयणसयं करेइ, एवंपि किर पुव्वावरेण जोयणसतदुगरूवं परिमाणं संभवइत्ति, एवं एगदिसाए खेत्तं वद्धारेंतस्स वयसावेक्खत्ताओ अइयारो ४, तहा कहिंचि सइअंतरद्धं चत्ति कहिंचि-केणचि पगारेण अईववाउलत्तणेण अइपमाइत्तणेण मंदमइत्ताइणा वा सईए-सुमरणस्स जोयणसयाइरूवदिसिपरिमाणविसयस्स अंतरद्धा-परिब्भंसो सइअंतरद्धा। किर केणवि पुव्वाए दिसाए जोयणसयरूवं परिमाणं कयं आसि, पच्छा गमणकाले फुडं न सरइ, किं सयं परिमाणं कयं उयाहु पन्नासा? तस्स य एवं संसए वट्टमाणस्स पन्नासं अइक्कमंतस्स अइयारो सावेक्खत्ताओ, सयमइक्कमंतस्स भंगो निरवेक्खत्ताओ ५। एत्थ य आवस्सयचुन्निभणिओ इमो विही-" उड्ढं जं परिमाणं गहियं [तत्थ जयावि लग्गो भवइ जइ] तस्स उवरिं पव्वयसिहरे वा रुक्खे वा मक्कडो पक्खी वा वत्थं आभरणं वा गहेउं वच्चेज्जा तत्थ तस्स न कप्पए गंतुं, जया पुण तं पडियं अन्नेण वा आणीयं तया कप्पइ गिण्हिउं। एयं पुण अट्ठावय[मिहमक्कड]संमेयसुपइट्ठउज्जेंतचित्तकूडअंजणगमंदराईसु पव्वएसु संभवइ। एवं अहेवि कूवाइसु भाणियव्वं। तहा तिरियं जं परिमाणं गहियं तं तिविहेण करणेण नाइक्कमियव्वं, खेत्तवुड्ढी य न कायव्वा, कहं? सो सावगो पुव्वेण भंडं गहेऊण गओ जाव तं परिमाणं, तओ परेण भंडं अग्घइत्तिकाउं पच्छिमाए जाणि जोयणाणि ताणि पुव्वदिसिपरिमाणे पक्खिवेइत्ति। जइ अणाभोगेण परिमाणं अइक्कंतो होज्जा तया नियत्तियव्वं, विन्नाए वा न गंतव्वं, अन्नेवि न विसज्जियव्वा, अह अणाणाए कोऽवि गओ होज्जा, तया जं तेण लद्धं सयं अणाभोगगएण वा जं लद्धं तं न घेप्पइत्ति" ॥ २० ॥ अइयारभावणाएवि भंगो भाविओ। भावणा इमा-"चिंतेयव्वं च नमो साहूणं जे सया निरारंभा।

विहरंति विप्पमुक्का गामागरमंडियं वसुहं ॥ १ ॥ " एवमाइ । भणियं पढमगुणव्वयं । अहुणा बीयं भन्नइ–

वज्जणमणंतगुंबरिअच्चंगाणं च भोगओ माणं । कम्मयओ खरकम्माइयाण अवरं इमं भणियं ॥ २१ ॥

इमं किर बीयं गुणव्वयं उवभोगपरिभोगनामगं दुहा होइ, भोयणओ कम्मओ य, तत्थ सइं–एगवारं भोगो उवभोगो आहार-पुप्फतंबोलविलेवणाई, पुणो पुणो भोगो परिभोगो वत्थाभरणघरसयणमहिलाई, जओ भणियं–"उवभोगो विगईओ तंबोला-हारपुप्फफलमाई । परिभोगो वत्थसुवन्नगाइयं इत्थिहत्थाई ॥१॥" स्त्रीहस्त्यादि । अहवा जं अंतो भुज्जइ स उवभोगो जं पुण बाहिं स परिभोगो, तत्थ गाहापुव्वद्धेण भोयणओ ताव इमं वयं भन्नइ–वज्जणमणंतगुंबरिअच्चंगाणं च भोगओ माणंति वज्जणं–परिहरणं, अणंतगं–अणंतकाइगं आगमपसिद्धं जहा–"चक्कागं भज्जमाणस्स गंठी चुन्नघणो भवे । पुढविसरिसेण भेएण, अणंतजीवं वियाणाहि ॥१॥ गूढसिरागं पत्तं सच्छीरं जं च होइ निच्छीरं । जंपि य पणट्ठसंधिं, अणंतजीवं वियाणाहि ॥२॥ जस्स मूलस्स साराउ, छल्ली बहलतरी भवे । अणंतजीवा हु सा छल्ली, जे यावन्ना तहाविहा ॥३॥ सव्वा य कंदजाई सूरणकंदो य वज्ज-कंदो य । अल्लहलिद्दा य तहा अल्लं तह अल्लकच्चूरो ॥४॥" एवमाइ, उंबरी–वडपिप्पलउंबरपिलखुकाउंबरिफलाणि आगम-भासाए भन्नंति । तहा अच्चंगाणित्ति अइसएण भोगस्स कारणाणि महुमज्जमंसाईणि राईभोयणपुप्फविलेवणअंगणाईणि य वुच्चंति । अओ एएसिं अणंतगउंबरिअच्चंगाणं अन्नेसिं च बहुदोसाणं, जहा–"पलंकलट्टसागा मुग्गगयं वाऽऽमगोरसुम्मीसं । संस-ज्जए उ अइरा तंपि य नियमा दुदोसा य ॥१॥" तत्थ पल्लंकसागो मिवालगाणित्ति जो पसिद्धो, अन्ने भणंति–"देसविसेसप-सिद्धो, वणस्सइविसेसो," दुदोसा यत्ति एरिसं भुज्जमाणं सरीरविगारं करेइत्ति एगो दोसो, जीवविणासेण पावकम्मबंधोत्ति

बीओ, तहा सव्वअसणाइदव्वाणं च भोगओ–भोयणओ उवभोगपरिभोगभेयमासज्ज वज्जणं माणं च-परिमाणकरणं च एएसिं चेव–अणंतगाईणं पढमगुणव्वयावेक्खाए अन्नं वयं भवइ, भणियं च–" मज्जं मंसं महु मक्खणं च पंचुंबरीयफलनियमं । राईभोयण तह गज्जराइकरगाइमट्टी य ॥ १ ॥ ण्हाणं पियणविलेवण वत्थाभरणे य बंभचेरे य । अब्भंगणकुणमाणं जुत्ता तंबोलपुप्फाई ॥२॥ फलफलिपत्ते पुप्फे कट्ठे बहुबीय विगइवग्गे य। सच्चित्ताणंते दव्ववग्गमाणं च उवभोगे ॥ ३ ॥" इयाणिं बीयद्धेण कम्मओ भोगवयं भन्नइ–कम्मयओ खरकम्माइयाण अवरं इमं भणियंति जीविगानिमित्तं आरंभो कम्मं भन्नइ, तओ कम्मयओ खरकम्माइयाणं निद्दयजणजोग्गदारुणआरंभाणं तलारगोत्तिवालकम्माईणं, आइसद्दाओ अंगारकंमाईणं च परिवज्जणं माणं च-अवरं–अन्नं बीयं इमं गुणव्वयं भणियं–परूवियं पुव्वायरियेहिं । एत्थं पुव्वायरियउवएसो इमो–" भोयणओ सावगो फासुयं एसणीयमाहारं आहारेज्जा, तस्सासइ अणेसणियंपि सच्चित्तवज्जं आहारेज्जा, तस्स अभावे अणंतकायबहुबीयगाणि परिहरेज्जा, असणे अल्लगमूलगमंसाई, पाणे मंसरसमज्जाइ, खाइमे पंचुंबराइ, साइमे पुण महुमाई । एवं परिभोगेऽवि वत्थाइए थुल्लधवल-अप्पमुल्लाणि य परिमियाणि य परिभुंजेज्जा, सामणगोरवत्थं चांबराणि वरतराणि जाव देवदूसाणि वि परिभुंजेज्जा, नवरं परिमाणं करेज्जा, जहा दंतवणविहिपरिमाणं फलविहिपरिमाणं अब्भंगणविहिप० उव्वलणविहीप० मज्जणजलप० वत्थप० विलेवणविही य आभरणविही य पुप्फविही य धुवविही य भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे पेज्जाविही य खज्जगविहिपरि० ध्रयग-विहिप० चोप्पडविहिप० माहुरगविहिप० सागविहिपरि० उल्लणविहि० पाणीयविहिप० मुहवासविहिपरिमाणं एवमाइ विहि-परिमाणं करेइ अवसेसं पच्चक्खाइत्ति । कम्मओवि जइ अकम्मा न सकेइ जीविउं तया अच्चंतसावज्जाति परिहरेज्जा, तहा

रंधणकडणपीसणदलणं पयणं च एवमाईणं । निच्चपरिमाणकरणं, अविरइबंधो जओ गरुओ ॥ १ ॥" एत्थ वि एक्कसिं चेव जं कीरए कम्मं पहारववहरणाइ विवक्खाए तं उवभोगो, पुणो पुणो य जं कीरइ तं पुण परिभोगोत्ति, अन्ने पुण कम्मपक्खे उवभोगपरिभोगजोयणं न करेंति, उवभोगपरिभोगवए कम्मुणो पुण भणणं उवभोगाइकारणभावेण, उवभोगाइकारणं कम्मं तेण इह वए भणियं ॥ २१ ॥ दोसगुणा आगमानुसारेण वत्तव्वा । जयणा पुण-"जत्थ बहूणं घाओ जीवाणं होइ भुञ्जमाणंमि । तं वत्थुं वज्जेज्जा अइप्पसंगं च सेसेसु ॥ १ ॥" एवमादि कायव्वा । उभयरूवेवि एत्थ अइयारा भन्नंति—

सच्चित्तं पडिबद्धं अपउलदुपउलतुच्छभक्खणयं । वज्जइ कम्मयओवि एत्थं इंगालकम्माय ॥ २२ ॥

सावगेण हि भोयणओ किर उस्सग्गेण निरवज्जाहारेण होयव्वं, कम्मओ पुण पाएण निरवज्जकम्माणुट्ठाणेण, भणियं च—"निरवज्जाहारेणं निज्जीवेणं परित्तमीसेणं । अप्पा संथारेज्जा कम्मं च चएज्ज सावज्जं ॥ १ ॥" अओ एवंविहसावगावेक्खाए अभिग्गहविसेसं वा पडुच्च जहासंभवं एए अइयारा दट्ठव्वा, तत्थ य भोयणओ ताव भन्नंति-सच्चित्तंति सचेतणं कंदादि तं वज्जेइ, इह सहसाकारअणाभोगेहिं अइक्कमवइक्कमअइयारेहिं वा सच्चित्तं आहारेंतस्स अइयारो होइ; अन्नहा पुण भंग एव। तहा पडिबद्धं-संबद्धं सच्चित्तरुक्खेसु गुंदाइ पक्कफलाणि वा, पडिबद्धभक्खणं हि सावज्जाहारवज्जगस्स सावज्जाहारपवित्तिरूवत्ताओ अणाभोगाइणा अइयारो, अहवा मज्झट्ठिगं सचेयणं छड्डिस्सामि कडाहं पुण अचेयणं भक्खइस्सामि, एवंविहबुद्धीए पक्कखज्जुराइफलं मुहे पक्खिवंतस्स सच्चित्तवज्जगस्स सच्चित्तपडिबद्धाहारो अइयारो । तहा अपउलत्ति अपक्कं-अग्गिणा अपरिकम्मियं धन्नं, दुप्पउलियं-दुपक्कं अद्धसिन्नं धन्नं, तुच्छंति निस्सारं कोमलमुग्गफलिमाइ, एएसिं धन्नाणं भक्खणं अइयारो, तत्थ

सचिताहारो १ सचित्तपडिबद्धाहारो २, एए पढमा दोन्निवि अइयारा सचेयणकंदफलाइविसया, अप्पउलियोसहिभक्खणं दुप्पउलिओसहिभक्खणं तुच्छोसहिभक्खणं च, एए तिन्निवि अइयारा सालिगोहुमादिसचित्तोसहिविसया दट्ठव्वा, तत्थ दोण्हं भावणा भणिया, अप्पउलिओसहिभक्खणं पुण अणाभोगअइक्कमाईहिं अइयारो, अहवा कणिकाइ दव्वं सचित्तावयव-मीसंपि पिट्ठत्ताइणा पगारेण अचित्तमेयंति नियबुद्धीए विगप्पिय भक्खेंतस्स वयसावेक्खस्स अइयारो होइ। दुप्पउलिओसहि-भक्खणं पुण जवगोहुमचणगपिहुगाइधन्नस्स दुप्पक्कयाए सचित्तावयवसंभवेण मिस्सस्स पक्कत्ताओ य अचेयणमेयंति एवं-विहबुद्धीए भुंजंतस्स अइयारो। तुच्छोसहिभक्खणं पुण कोमलमुग्गाइफलीओ विसिट्ठतित्तिअजणगाओ तुच्छाओ सचित्ताओ चेव अणाभोगअइक्कमाईहिं भुंजंतस्स अइयारो, अहवा अच्चंतपावभीरुययाए सचित्ताहारपरिहारो कओ तत्थ य जं तित्ति-जणगं सचित्तं तं थिराहेऊणंपि भक्खेउ, सचित्ताहारपरिवज्जणस्स चेव अब्भुवगमाउ, जं पुण तित्तिजणणअसमत्थाओवि ओमहीओ लोलुययाए अचित्तीकाऊण भुंजेइ, एवं तुच्छोसहिभक्खणं अइयारो, जओ तत्थ भावओ विरती विराहिया, दव्वओ पुण पालियत्ति। एवं राइभोयणमहुमज्जमंसाइवएसुवि आणाभोगअइक्कमाईहिं अइयारा भावेयव्वा। संपयं कम्मवया-इयारा भवंति-वज्जइ कम्मयओऽवित्ति वज्जइ-परिहरइ, कम्मयओ-कम्मवयमासज्ज, एत्थंति भोयणउवभोगवए सचित्तभक्खणाईणि पंच वज्जेइ, कम्मयओ पुण इत्थ बीयगुणवए अंगारकम्माईणि वज्जेइ, कम्मओ बीयगुणवए पनरस अइयारा भवंति, जओ भणियं—

"इंगाले १ वणसाडी २ भाडी ४ फोडीसु ५ वज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत १ लक्ख २ रस ३ केस

४ विस ५ विसयं (६-१०) ॥ १ ॥ एवं खु जंतपिल्लणकम्मं १ निल्लंछणं २ च दवदाणं ३। सरदहतलाय-
सोसं ४ असईपोसं च वज्जेज्जा ५ (११-१०) ॥२॥" भावत्थो-आवस्सगचुन्नीअक्खरेहिं वुच्चइ-" इंगालकम्मंति
अंगारे काऊण विकिणइ, तत्थ छण्हं जीवनिकायाणं वहो भवइ, तओ तन्न कप्पइ, अहवा लोहकाराइ १, वणकम्मं-जं वणं
किणइ तओ रुक्खे छिंदिउं विक्किणिऊण मुल्लेण जीवइ, एवं पत्ताईणिवि पडिसिद्धाणि भवंति २, सगडीकम्मं-सागडित्तणं
जीवइ, तत्थ गवाईणं वहबंधादयो दोसा भवंति ३, भाडीकम्मं-जं सएणं परभंडं वहइ, अन्नेसिं वा सगडबलीवद्दाईणि अप्पेइ
४, फोडीकम्मं-उड्डत्तणं, अहवा हलेण जं भूमी फोडिज्जइ ५, दंतवाणिज्जं-जं पुव्वमेव पुलिंदाणं मुल्लं देइ, दंता मम देज्जह,
पच्छा ते पुलिंदा हत्थिणो मारिंति, सिग्घं सो वाणियओ एहित्ति, एवं कम्मकराणं संखमुल्लं देइ, एवं चमराईणंपि, पुव्वाणीए
पुण किणइ ६, लक्खवाणिज्जंपि एवं चेव, दोसो पुण तत्थ किमिया भवंति ७, रसवाणिज्जं-कलालत्तणं, तत्थ य सुराईहिं अणेगे
दोसा मारणअक्कोसवहाईणो ८, केसवाणिज्जं-जं दासीमाइ घेत्तूणं अन्नत्थ विकिणिज्ज, एत्थवि अणेगे दोसा परवसित्तादयो
९, विसवाणिज्जं-विसविक्किणणं, तं च न कप्पइ, जओ तेण बहूणं जीवाण विराहणा होइ १०, जंतपिल्लणकम्मं-
तिलजंतउच्छुजंताईहिं तिलउच्छुमाईणं पीलणं ११, निल्लंछणं-गवाईणं वद्धियकरणं १२, दवग्गिकम्मं-जं वणदवं देइ
खेत्तरक्खणनिमित्तं जहा उत्तरावहे, दड्ढे पच्छा तरुणतिणमुट्ठेहत्ति, तत्थ य सत्तसयसहस्साण वहो होइ १३, सरदहतलाय-
[परि]सोसणं-जं सरदहाईणि सोसेइ, तत्थ य धन्नं वाविज्जइ १४, असईपोसणं-जं जोणीपोसगा दासीओ पोसंति तासिं
संबंधिणिं भाडिं गेण्हंति, जहा गोल्लविसएत्ति १५। दिसिमेत्तपदरिसणं च एयं बहुसावज्जाणं कम्माणं, न पुण

परिगणणंति, इह चेव वीसइयारभणणं अन्नवएसुवि पंचाइयारसंखाए तज्जाइयाणं वयपरिणामकलुसकारणाणं भेयाणं अन्नेसिं संगहो दट्ठव्वोत्ति। एयस्स अत्थस्स जाणावणत्थं कयं, तेण सइअंतद्धाणाई जहासंभवं सव्ववएसु अइयारा दट्ठव्वा इति, अंगारकम्मादओ खरकम्माइपगारा चेव, अओ खरकम्माइवयधारगेण परिहरणीया, जया पुण एएसु अणाभोगाइणा पयट्टइ तया खरकम्मवयाइयारा भवंति, जया पुण आउट्टियाए एएसु पयट्टइ तया भंग एव ॥ २२ ॥ भावणा एरिसी—" सव्वेसिं साहूणं नमामि जेहिं अहियंति नाऊणं। तिविहेण कामभोगा चत्ता एवं विचिंतेज्जा ॥ १ ॥" तहा—" मलमइलजुन्नवत्थो परिभोगविवज्जिओ जियाणंगो। कइया परीसहचमुं अहियासंतो हु विहरिस्सं ॥ २ ॥" एवमाइ, भणियं बीयं गुणव्वयं। इयाणिं तइयं भन्नइ—

तहऽणत्थदंडविरई अन्नं स चउव्विहो अवज्झाणे। पमयायरिएहिंसप्पयाण पावोवएसे य ॥ २३ ॥

तहत्ति जहा भोगवया अणुव्वयाणं गुणकरा तहा एयंपि, अत्थो—पओयणं धम्मत्थं इंदियत्थं सयणत्थं च जं पावाणुट्ठाणं कीरइ, तत्थ धम्मत्थं चेइहरकरणाइसु, इंदियत्थं भोयणतंबोलाइसु, सयणत्थं किसिवाणिज्जाइसु, तं अट्ठाय, जं पुण अवज्झाणाइसु धम्मिंदियसयणपओयणं विणा कीरइ तं अणत्थाय, तेण दंडो—जीवस्स निग्गहो अणत्थदंडो तस्स विरई—निवित्ती, अन्नं—तइयं गुणव्वयं होइ, एयं वयसरूवं। अह भेदा भन्नंति—स चउव्विहोत्ति सो—अणत्थदंडो चउव्विहो—चउप्पगारो, तंजहा—अवज्झाणेत्ति निरत्थयं अट्टरुद्दचिंतणं अवज्झाणं, जहा मम रज्जं भवउ, अजरामरत्तं मम होउ, लच्छी भोगा वा हुंतु, वेरिगो वा मरउ, सुंदरं वा संजायं जं सो वेरिगाइ मओ, रट्ठभंगो वा भवउत्ति एवमाइ। तहा पमायायरिएत्ति तत्थ

पमाओ–मज्जविसयकसायनिद्दाविगहासरूवो तेण आयरियं–अणुट्ठियं पमायायरियं, अहवा पमायायरियं–जं आलस्सोवहएहिं किज्जइ; तं पुण अपिहियघयगुडतेल्लभायणअग्गिचुल्लगाइधारणं जीवोवघायकारणंति । तहा जूयरमणकुक्कुडहत्थिसंडमल्लजुज्झपेच्छणगदंसणाईणिवि एत्थ चेव भाणियव्वाणि । तहा हिंसाजणगं हिंसं–आउहअनलहलविसाइ तस्स पयाणं–अन्नेसिं समप्पणं हिंसप्पयाणं । तहा–पावं–पावकारणं किसिमाइकम्मं तस्स उवएसो पावोवएसोत्ति, भणियं च–" खेत्ताइं कसह गोणे दमेह एमाइ सावगजणस्स । उवइसिउं नो कप्पइ जाणियजिणवयणसारस्स ॥ १ ॥ " चसद्दो समुच्चये, एवं चउभेओ अणत्थदंडोत्ति ॥ २३ ॥ जह जायइत्तिदारं जहा पुव्वं भणियं तहा दट्ठव्वं, अहवा–"दट्ठूणं दोसजालं अणत्थदंडंमि न य गुणो कोई । तव्विरती होइ दढं विवेगजुत्तस्स सड्ढ(त्त)स्स ॥ १ ॥ " त्ति, एवं भावंतस्स अणत्थदंडविरइ होइत्ति, दोसा पुण–अणत्थदंडस्स बहुकम्मबंधाइया, जओ भणियं–" अट्ठेण तं न बंधइ, जमणट्ठेणंति थेवबहुभावा । अट्ठे कालाईया, नियामगा न उ अणट्ठाए ॥ १ ॥ " अट्ठेण–कुडुंबाइनिमित्तेण पवत्तमाणो तं–तेत्तियं कम्मं न बंधइ जं–जेत्तियं अणट्ठेण–पओयणं विणा पवत्तमाणो, किं कारणं ?, भन्नइ–थेवबहुभावत्ति जेण पओयणं थेवं–परिमियं, अपओयणं पुण बहुयं, पमायस्स परिमाणाभावाउ, जओ भन्नइ–अट्ठे कालाईया नियामगत्ति–अट्ठे पओयणे कालाईया नियामगा–वरिसारत्तकालाइअवेक्खं चेव किसिकम्माईवि भवइ–न उ अणट्ठाएत्ति, पओयणं विणा पयट्टंतस्स नियामगं–निसेहगं किंपि नत्थित्ति अओ अणट्ठेण बहु बंधति जीवो थोवं अट्ठेणंति । गुणा पुण अणत्थदंडं परिहरंतेणं कम्मबंधाईया परिचत्ता भवंति, तहा इहलोए वि–" जे पुण अणत्थदंडं न करेंति कयंपि कहव निंदंति । ते अंगरक्खसड्ढो व सावया गुण(सुख)निही होंति ॥ १ ॥ " कहाणगं च इमं—

वसंतपुरे नयरे अजियसेणस्स रन्नो परिचारगा दुवे कुलपुत्तगा, तत्थेगो समणसड्ढो, इयरो मिच्छदिट्ठी, अन्नया रयणीए रन्नो निस्सरणं, संभमतुरंताणं तेसिं घोडगारूढाणं खग्गा पणट्ठा, सड्ढेण मग्गियं, जणवामद्देण य न लद्धं, मिच्छदिट्ठीणा हसियं किमन्नं न होहित्ति, सड्ढेण अहिगरणंतिकाउं वोसिरियं, ते य पुण खग्गा बंदिग्गहस्स साहसिगेहिं लद्धा, तओ गहिओ तेहिं रायवल्लहो, पलायमाणो वावाइओ य, तओ ते आरक्खिगेहिं गहेऊण रायसमीवं नीया, कुविओ राया, पुच्छियं च णेण कस्स तुब्भे ?, तेहिं भणियं—अणाहा कप्पडिया अम्हे, कल्लंपि य एत्थ पत्ता खग्गा, कहिं लद्धत्ति पुच्छिए तेहिं भणियं—पडियत्ति, तओ सामरिसेणं रन्ना भणियं—गवेसह तुरियं मम अणवरद्धवेरीणं ईसरपुत्ताणं महापमत्ताणं केसिं इमे खग्गत्ति, तओ आरक्खियपुरिसेहिं निउणं गवेसिऊण विन्नत्तं रन्नो—सामि ! सुणसु गुणचंदबालचंदाणंति, तओ रन्ना पिहंपिहं सद्दावेऊण भणिया—लेह नियखग्गे, एक्केण गहियं, पुच्छिओ य रन्ना—कहं ते ?, पणट्ठं तेण कहियं, कीस तए न गविट्ठं ?, भणइ—सामि ! तुज्झ पसायणं एद्दहमेत्तंपि गवेसामि ?, सड्ढो णेच्छइ, रन्ना पुच्छिओ—कीस न गेण्हसि ?, तेण भणियं—सामि ! अम्हाणं एस ठिती चेव णत्थि जं एवविहं अहिगरणं पडिज्जइ, संभमे य मग्गंतेणवि न लद्धं, अओ वोसिरियं, ततो ण कप्पइ गिण्हिउं, ततो रन्ना पमायकारी अणुसासिओ, इयरो मुक्कोत्ति, किंच जहा एसो पमायगब्भेण अवोसिरणदोसेण अवराहं पत्तो एवं संसाराडवीए परिब्भमंतेहिं सव्वजीवेहिं तेसु तेसु ठाणेसु सरीराउहाइणो विप्पमुक्का तेहिं सत्थभूएहिं जया कस्सइ सतो परतो वा परियावणादयो भवंति तदा तस्सामी भवंतरगओवि जम्मंतरदेहाउहाइ अवोसरंतो अणुमइभावओ दोसं पावेइ, श्रूयते च जातिस्मरणादिना पूर्वभवदेहं विज्ञाय अत्यंतमोहात् गंगाए णइए अट्ठियाणि नयं-

तीति, तम्हा भवंतरसरीराईणिवि अहिगरणंतिकाउं वोसिरियव्वाणि। संपयं जयणा—" कज्जं अगिहिच्च गिही कामं कम्मं सुभासुभं कुणइ। परिहरियव्वं पावं निरत्थमियरं च सत्तीए ॥१॥" कज्जं-पओयणं अगिहिच्च गिही-गिहत्थो कामं-अईव अइसएण कम्मं-किसिवाणिज्जाइ सुभासुभंति सुभं-किंचि निरवज्जं असुभं-बहुसावज्जं करेइ, तत्थवि परिहरियव्वं पावं-सावज्जं निरत्थयं परिहरियव्वं इयरं च-सपओयणंपि बहुदोसं जहासत्तीए परिहरियव्वं। इयाणिं अइयारा भण्णंति—

कंदप्पं कुक्कुइयं मोहरियं संजुयाहिगरणं च। उवभोगपरीभोगाइरेगयं चेत्थ वज्जेइ ॥ २४ ॥

कंदप्पो-कामो तस्स कारणं वयणंपि कंदप्पो भन्नइ, मोहुद्दीविगा वाइगकिरिया इत्यर्थः तं वज्जेति, एत्थ य सामायारी—"सावगस्स अट्टट्टहासो न वट्टति, जति नाम हसियव्वं, तया ईसि हसियव्वं"। तहा कुक्कुइयंति कुक्कुओ-कुच्छियसंकोयणाइकिरियाजुत्तो तस्स भावो कुक्कुइयं अणेगपगारा मुहनयणाइविगारपुव्विगा परिहासाइजणिया भंडाणंपिव विडंवणकिरिया इत्यर्थः, एत्थ सामायारी—" तारिसाणि भणिउं न कप्पंति जारिसेहिं लोगस्स हासमुप्पज्जइ, " एवं गईए गंतु ठाणेण वा ठाइउंति, एए दोन्निवि अइयारा पमायायरियवयस्स नायव्वा, पमायसरूवा एएच्चिकाउं। मोहरियंति मुखरता-वाचालता इत्यर्थः, धिट्ठत्तेणं असच्चासंबद्धपलावित्तं तं. अहवा मुहेण अरिं आणेइ मोहरिओ, जहा कुमारामच्चेणं रन्नो किंपि तुरियं कज्जं जायं ताहे पुच्छियं-को सिग्घयरो होज्जत्ति ?, कुमारामच्चो भणइ-अमुगो चारहडो, ताहे रन्ना पट्ठविओ, पच्छा सो कुमारामच्चस्स पओसमावन्नो, एएण अहं रन्नो कहिउत्ति, तओ तेण रुट्ठेण मारिओ कुमारामच्चोत्ति एवमाइ, एसो पुण पावोवएसवयस्स अइयारो, मोहरिए होंते पावोवएमसंभवाओ। तहा संजुयाहिगरणंति अहिकिज्जइ-खिप्पइ नरगालएसु जेण जीवो तं

अहिगरणं . वासिउक्खलसिलापुत्तगगोहुमजंत्ताइ संजुयं–संजुत्तं किरियासमत्थं अहिगरणं, तत्थ **सामायारी**–" सावगेण न संजुत्ताणि चेव सगडाईणि धारेयव्वाणि एवं वासीफरसुमाइविभासा पुव्वं चेव कए कज्जे विसंजोइज्जंति, पच्छा लोगा न रूसंति, अग्गीवि जाहे गिहत्थेहिं सगिहेसु पज्जालियो होइ ताहे पज्जालेइ, गाविओ पढमं न पसरावेइ न आहेडेइत्ति जं भणियं होइ, हलवत्तयंपि पढमं न करेइ एवमादि, " एसो पुण हिंसप्पयाणवयस्स अइयारो । तहा **उवभोगपरीभोगाइरे-गयंति**–उवभोगाणं–पुप्फतंबोलण्हाणविलेवणाईणं अइरेगयं–अहिगत्तं उवभोगपरिभोगातिरेगयं, चकारो समुच्चये, एत्थ–अणत्थदंडविरतीए वज्जेइ–परिहरइ, एत्थवि **सामायारी**–"उवभोगपरिभोगाइरित्ताणि जइ बहूणि तेल्लामलगाणि गेण्हइ तदा तल्लोभेण बहुगा ण्हायगा तडागाइसु ण्हाउं वच्चंति, तओ य पूयरगआउक्कायाइवहो बहुगो होइ, एवं पुप्फतंबोलमाइसु विभासा, एवं च न वट्टइ, तओ को विही उवभोगे ?, तत्थ ण्हाणे ताव घरे चेव ण्हाइयव्वं, जइ नत्थि घरे सामग्गी तदा तेल्लामलएहिं सीसं घसित्ता ताणि य सव्वाणि साडेऊण तडागाईणं तडनिविट्ठो पालियं च काऊण वत्थाइगालियजलेण अंजलीहिं ण्हाइ, तहा जेसु पुप्फेसु कुंथुमाईणि संभवंति ताणि परिहरइत्ति," एसोवि पमायायरियवए चेव अइयारो विसयसरूवो एसोत्ति काउं, अवज्झा-णायरियवए पुण अणाभोगाइणा अवज्झाणे पयट्टंतस्स अइयारो, कंदप्पाई पंचवि आउट्टीयाए कीरमाणा भंगा एव नायव्वा, जओ भणियं–"कंदप्पाइ उवेच्चा कुव्वंतो अइकिलिट्ठपरिणामो । पावस्सुदएण गिही भंजइ एयं अविन्नाणो ॥ १ ॥" संपयं भाव-णादारं–तत्थ–"चिंतेयव्वं च नमो सअत्थगाइंपि जेहिं पावाइं । साहूहिं वज्जियाइं निरत्थगाइं च सव्वाइं ॥ १ ॥" तहा–"चिंतिति करेंति सयंति जंति जंपंति किंपि जयणाए । तम्मुत्तउत्ता संमं जे ते साहू नमंसामि ॥ १ ॥" भणियं तइयं गुणव्वयं ॥ २४ ॥

तब्भणणाओ भणियाणि गुणव्वयाणि। इयाणिं सिक्खावयाणि भन्नंति, तत्थ सिक्खा–अब्भासो ताए जुत्ताणि वयाणि सिक्खावयाणि पुणो पुणो आसेवणीयाणि इत्यर्थः, ताणि पुण सामाइयाईणि चत्तारि, तत्थ तात्र सामाइयं भन्नइ—

सिक्खावयं तु एत्थं सामाइयमो तयं तु विन्नेयं। सावज्जेयरजोगाण वज्जणासेवणारूवं ॥ २५ ॥

सिक्खावयंतिपयस्स अत्थो कहिओ चेव, अहवा दुविहा सिक्खा–गहणसिक्खा, आसेवणसिक्खा य, तत्थ गहणसिक्खा–सुत्तपढणाइसरूवा, आसेवणसिक्खा पुण उवहिपडिलेहणपप्फोडणाइविसया एवंविहासिक्खासहियं वयं सिक्खावयं, तुसद्दो पुणसद्दत्थे, एत्थंति-सावगधम्मे, सामाइयंति–समस्स रागदोसरहियस्स आओ–लाभो समाओ, समभावो हि जीवो पइक्खणं अपुव्वेहिं नाणदंसणचरित्तपज्जवेहिं निरुवमसुहहेऊहिं अहोकयचिंतामणिकप्पदुमोवमेहिं संजुज्जए, एवंविहलाभकारणं किरियाणुट्ठाणं सामाइयं वुच्चइ, उसद्दो पायपुरणे, तयं तुत्ति तं पुण सामाइयं विन्नेयं–नायव्वं सावज्जेयरजोगाण वज्जणासेवणारूवंति सावज्जजोगाणं–असुभवावाराणं वज्जणं–परिहरणं, निरवज्जजोगाणं–सुभवावाराणं आसेवणं–अणुट्ठाणं सामाइयस्स सरूवंति, एत्थ पुण इमा सामायारी–“इह सावगो दुविहो–इड्ढिपत्तो अणिड्ढिपत्तो य, जो सो अणिड्ढिपत्तो सो चेइयहरे वा साहुसमीवे वा गिहे वा पोसहसालाए वा जत्थ वा वीसमति निव्वावारो वा अच्छइ तत्थ सव्वत्थ सामाइयं करेति, चउसु ठाणेसु पुण नियमा करेइ, तंजहा–चेइयहरे साहुसमीवे पोसहसालाए वा घरे वा आवस्सयं करेंतोत्ति, तत्थ जइ साहुसमीवे करेइ, तया एसो विही–जदि परं परभयं नत्थि, जइ केणवि सह विवाओ नत्थि, जइ कस्सवि दव्वं न धरेइ, मा होउ तेण समं कड्ढाकड्ढित्ति, जइ य धरणगं दट्ठुं न गेण्हइ, मा होउ भंडणंति, जइ

पवयणमायाउ, उक्कोसेणं सुत्तत्थेहिं जाव छज्जीवणियं, अत्थओ उल्लावेणं पिंडेसणज्झयणं, न पुण सुत्तओवित्ति, एवइयं गेण्हइत्ति । आसेवासिक्खमासज्ज साहू सयलं-संपुन्नं मुहपोत्तिपेहणाइयं सामायारिं सययं जावज्जीवमासेवेइ, सावओ पुण इत्तरकयसामाइओवि अपरिन्नाणाउ अभिसंगानिवित्तीए असंभवाउ अणब्भासाउ य न पडिपुन्नसामायारिं पालेइत्ति, अओ सिक्खकओ साहुसावगाणं भेउत्ति दारं १ । तहा आगमगाहापामन्नाउ विसेसो, सा चेयं-" सामाइयंमि उ कए समणो इव सावओ हवउ जम्हा । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥" एत्थ गाहाए समणो इव भणियं, न पुण समणो चेव, जहा-समुद्द इव तडागं न पुण समुद्दो चेवत्ति, तओ सारिक्खया चेव भणिया, न पुण अभेओ, अओ विसेसोत्ति दारं २ । उववायकओ विसेसो जहा-" अविराहियसामन्नस्स साहुणो सावगस्स य जहण्णो । सोहम्मे उववाओ भणिओ तेलोक्कदंसीहिं ॥ १ ॥" अविराहियसामण्णस्स-पव्वज्जादिवसाउ आरब्भ अखंडियसमणभावस्स साहुस्स सावगस्स य अविराहियसावगभावस्सत्ति सेसं सुगमं, उक्कोसेणं साहुस्स अणुत्तरविमाणेसु, सावगस्स अच्चुयकप्पे उववाओत्ति, दारं ३ । तहा ठिइजणिओ भेओ, जहा-जहण्णेणं सोहम्मे साहुस्स पलिओवमस्स पुहुत्तं, सावगस्स पुण पलिओवमंति, उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणे उववन्नस्स साहुस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं, सावगस्स अच्चुए बावीसं ठिइत्ति दारं ४ । तहा गइभेयाओवि भेओ जहा-ववहारेण सामन्नेणं लोगठिइं पडुच्च साहुस्स नारयतिरियनरामरसिद्धिलक्खणाओ पंचगइओ, सावगस्स पुण सिद्धिगइवज्जाउ चत्तारि, अन्ने भणंति-साहुस्स देवगइसिद्धिगईओ चेव भवंति, सावगस्स सिद्धिगइवज्जाओ चत्तारित्ति दारं ५ । कसायउदयाणुदयभेयाओवि भेओ-साहुस्स चउण्हं कोहाइसंजलणकसायाणं उदओ अणुदओ वा होज्जा, जइ उदओ चउण्हं वा तिण्हं वा

दोण्हं वा एगस्स वा, अणुदओवि एवं चेव, छउमत्थवीयरागं आइं काऊण भावेयव्वो, सावगस्स पुण दुवालसण्हं अट्ठण्ह य उदओ, जया दुवालसण्हं तया अणंताणुबंधिवज्जियाण अविरयं पडुच्च उदओ नायव्वो, जया पुण अट्ठण्हं तया अणंताणुबंधिअपच्चक्खाण वज्जाणं देसविरयस्सत्ति दारं । तहा बंधभेयाओ भेओ, तंजहा-मूलपयडीणं साहू सत्तविहबंधगो अट्ठविहबंधगो छव्विहबंधगो एगविहबंधगो अबंधगो य भवइ, सावगो पुण सत्तट्ठविहबंधगोत्ति, तत्थ य-" सत्तविहबंधगा होंति पाणिणो आउवज्जगाणं तु । तह सुहुमसंपराया, छव्विहबंधा विणिद्दिट्ठा ॥ १ ॥ मोहाउयवज्जाणं पयडीणं ते उ बंधगा भणिया । उवसंतखीणमोहा केवलिणो एगविहबंधा ॥ २ ॥ ते पुण दुसमयठिइयस्स बंधगा न उण संपरायस्स । सेलेसिं पडिवन्ना अबंधगा होंति नायव्वा ॥ ३ ॥ " दारं । तहा वेयणाभेयाओ भेओ, जहा-साहु अट्ठण्हं सत्तण्हं चउण्हं वा कम्माणं वेयओ भवति, तत्थ अट्ठण्ह जो वा सो वा, सत्तण्हं मोहणीयवज्जियाणं उवसंतखीणमोहछउमत्थवीयरागा, चउण्हं अघाईणं केवली वेयगोत्ति, सावगो पुण नियमा अट्ठण्हं वेयगोत्ति दारं । तहा-पडिवत्तिकओ भेओ, जहा-साहु पंच महव्वयाणि पडिपुण्णाणि चेव पडिवज्जइ, सावगो पुण एगं दो तिण्णि चत्तारि पंच वा अणुव्वयाणित्ति, अहवा साहू एगया सामाइयं पडिवज्जइ सव्वकालं च धारेइ, सावओ पुण अणेगसो सामाइयं करेइ सयाकालं च न धारेइत्ति दारं । तहा अइक्कमजणियभेयाओ साहुसावगाणं भेओ, तहाहि-साहू एकं वयं कहिंचि अइक्कमंतो पंचवि अइक्कमइ, भणियं च-" छेयस्स जाव दाणं ताव अइक्कमइ नेव एगंपि । एगं अइक्कमंतो अइक्कमे पंच मूलेणं ॥ १ ॥ " ति, सावगो पुण एक्कमइक्कमंतो एक्कं चेव विराहेइ, न सेसाणित्ति दारं । अहिगयसामाइयस्स भेया न संभवंति, अओ ते न दंसिया । दोसगुणा सुयाणुसारेण भाणियव्वा । जयणा एरिसी कायव्वा-" धम्मज्झाणोवगओ उवसंतप्पा

सुसाहुभूओ य । सर्विंदियसंजमअ स्सुणओ य साहूणं ॥ १ ॥ इरिएसणभासासु य निक्खेवंमि तहा विउस्सग्गे । तं काल-मप्पमत्तो जह साहुजणा तह हवेज्जा ॥ २ ॥ " एवमादि । संपयं एयस्स अइयारा भन्नंति—

जोगाणं दुप्पणिहाणं इह जह जत्तओ विवज्जेइ । सइअकरणयं अणवट्ठियस्स तहकरणयं चेव ॥ २६ ॥

जोगाणं—मणवयणकायाणं दुप्पणिहाणं—सावज्जं पयट्टणं इह—सामाइए जत्तओ—आयरेण विवज्जइ—परिहरेति, एए तिन्नि अइयारा, तह सइअकरणयंति सइए—सुमरणस्स अकरणं—अणासेवणं सइअकरणं, किं भणियं होइ?, भण्णइ—अइ-पमायाओ न एवं सुमरेइ, अमुगवेलाए मए सामाइयं कायवं, अहवा न याणइ किं सामाइयं कयं न कयं वत्ति, "सुमरणमूलं च मोक्खाणुट्ठाणं"ति, अणवट्ठियस्स—अथिरसरूवस्स सामाइयस्स तहत्ति अइपमाइयवसेण करणं-आसेवणं, जो सामाइयकरणाणं-तरमेव चयइ, जहिच्छाए वा करेइ, तस्स अणवट्ठियकरणंति भन्नइ, चेवसद्दो समुच्चये, अयमेसिं भावत्थो—" सामाइयंति काउं घरकज्जं जो य चिंतए सड्ढो । अट्टवसट्टोवगओ निरत्थयं तस्स सामाइयं ॥ १ ॥ कडसामइओ पुव्विं बुद्धीए पेहिऊण भासेज्जा । सइ निरवज्जं वयणं अन्नह सामाइयं न भवे ॥२॥ अनिरिक्खियापमज्जियथंडिल्ले ठाणमाइ सेवंतो । हिंसाऽभावे वि न सो कडसामइओ पमायाओ ॥ ३ ॥ न सरइ पमायजुत्तो जो सामाइयं कया उ कायव्वं ? । कयमकयं वा तस्स हु कयंपि विफलं तयं नेयं ॥ ४ ॥ काऊण तक्खणं चियं पारेइ करेइ वा जहिच्छाए । अणवट्ठियसामइयं अणायराओ न तं सुद्धं ॥५॥" नणु मणोदुप्पणिहाणाइसु सामाइयस्स निरत्थगत्ताइभणणेण परमत्थओ अभाव एव कहिओ, अइयारो य मालिन्नसरूवो चेव होइ, अओ सामाइयाभावे कहं अइयारो ?, तओ भंगा चेव एते, न अइयारा, सच्चमेयं, किंतु अणाभोगओ अइयारा होंतित्ति । नणु दुविहं तिविहेण

सावज्जपच्चक्खाणं सामाइयं, तत्थ य मणोदुप्पणिहाणयाइसु पच्चक्खाणभंगाउ सामाइयस्स अभाव एव, पच्चक्खाणभंग-जणियं पायच्छित्तं च भवेज्जा, मणोदुप्पणिहाणं च दुप्परिहारं, मणसो अणवट्ठियत्ताउ, अओ सामाइयपडिवत्तिसगासाओ सामाइगअप्पडिवत्ती चेव सुंदरत्ति ?, आयरिओ आह–न एवं, जओ सामाइयं दुविहं तिविहेण पडिवन्नं, तत्थ य मणेणं न करोमित्ति एवमाईणि छ पच्चक्खाणाणि, अओ एगयरपच्चक्खाणभंगेवि सेसपच्चक्खाणसंभवाउ न सामाइयस्स सव्वहा अभावो, मिच्छादुक्कडेण मणोदुप्पणिहाणमेत्तस्स सुद्धिसंभवाओ य, सव्वविरइसामाइए वि मिच्छादुक्कडेण मणोदुप्पणिहाणमेत्तस्स सुद्धिअब्भुवगमाओ, जओ गुत्तिभंगे मिच्छामि दुक्कडं पायच्छित्तं भणियं, जओ आह—" बीओ असमिओमित्ति, कीस सहसा अगुत्तो वा " बीओ–अइयारो समिइगुत्तिभंगरूवो अणुतावेण सुज्झतीत्यर्थः, अओ न पडिवत्तिसगासाउ अपडि-वत्ती सुंदरत्ति, तहा–"साइयाराणुट्ठाणाओवि अब्भासओ कालेण निरइयाराणुट्ठाणं होइ"त्ति पुव्वायरिया भणंति ॥ २६ ॥ एत्थ भावणा जहा–"धन्ना जीवेसु दयं करेंति धन्ना सुदिट्ठपरमत्था । जावज्जीवं जयणं करेंति एवं विचिंतेज्जा ॥ १ ॥ कइया णु अहं दिक्खं जावज्जीवं जहट्ठिओ समणो । निस्संगो विहरिस्सं एवं च मणेण चिंतेज्जा ॥ २ ॥" एवमाइ । भणियं पढमं सिक्खावयं ।

संपयं बीयं भन्नइ—

दिसिवयगहियस्स दिसापरिमाणस्सेह पइदिणं जं तु । परिमाणकरणमेगं [illegible] ॥ २७ ॥

दिसिव्वयं–पुव्वभणियं तंमि गहियस्स दिसिपरिमाणस्स–उड्ढाइदिसिगमणमाणस्स [illegible] पइदिणं–पइदिवसं निच्चमेव, उवलक्खणं च इमं अहोरत्तपहराईणं, जं तु [illegible]

गहण, एयं-एवंविहं परिमाणकरणं अवरं-पढमाओ अन्नं बीयं सिक्खावयं देसावगासियनामगं खलु-गाहापूरणे होइ विन्नेयंति । देसावगासियसरूवफुडतरजाणणत्थं चुन्नी लिहिज्जइ-देसावगासियं नाम देसे अवगासं गेण्हइ, पुव्वं दिसिव्वयं बहूणि जोयणाणि आसि, इयाणिं दिवसे २ ओसारेइ, जत्तियं न जाहित्ति । एत्थ दिट्ठिविससप्पदिट्ठंतो, पुव्वं तस्स सप्पस्स बारस जोयणाणि दिट्ठीए विसउ आसी, पच्छा एगेणं विज्जावाइएणं ओसारिओ जोयणट्ठिओ, एवं सावयस्सवि दिसिव्वए बहू विसओ आसी पच्छा देसावगासिए ततो ओसारेइ । अहवा विसदिट्ठंतो सरीरगयं विसं अगएणं एगाए अंगुलीए ठवियं, एवं सावओ वि आवकहियाओ दिसिव्वयाओ दिणे दिणे ओसारेइ, जाव अज्ज य राओ ण णीणेमि, एवं निवेसणाओ साहीओ नगराओ, उज्जाणाओ, अह जाइउकामो होइ तो भणइ-मम अमुगदिसाए एत्तियाणि जोयणाणि एगं दो तिन्नि वत्ति, एवं करेंतो किंचिमेत्तविराहओ सेसस्स अविराहउत्ति । अन्ने भणंति-एवं सव्ववएसुवि जे पमाणा ठविया ते पुणो २ दिवसओ ओसारेइ, देवसियाओवि रत्तिं ओसारेइ, एवं-“ एगमुहुत्तं दिवसं राइं पंचाहमेव पक्खं वा । वयमिह धारेउ दढं जावइयं उच्छहे कालं ॥ १ ॥ ” तत्थ पाणाइवाए-“ पुढविदगअगणिमारुयवणस्सइ तह तसेसु पाणेसु । आरंभमेगसो सव्वसो य सत्तीए वज्जेज्जा ॥ १ ॥ न मणेज्ज रागदोसेहिं दूसियं नवि गिहत्थसंबद्धं । भासेज्ज धम्मसहियं मोणं व करेज्ज सत्तीए ॥२॥ न य गेण्हेज्ज अदिन्नं किंचिवि असमिक्खियं व दिन्नंपि । भोयणमहवा वित्तं तु एगसो सव्वसो वावि ॥३॥ होज्ज य परिमाणकडो सएवि दारंमि वत्तयारी य । दढधिइमं पंडियओ दुगुंछओ कामभोगाणं ॥ ४ ॥ संतेसु वि अत्थेसु तं कालं तेसु णाइतण्हाओ । इच्छाए एगदेसं अहवा सव्वंवि वज्जेज्जा ॥ ५ ॥ ” एवमाइ जहासंभवं भोगवयअणत्थदंडवएसुवि भाणियव्वंति । गुणदोसा

सुगमा । जयणा इमा–" देसावगासियं खलु नायव्वं अप्पकालियं एयं । एत्तो एगमवि वयं कुज्जा मइमं ससत्तीए ॥ ६ ॥"
एत्थ अइयारा भन्नंति—

वज्जइ इह आणयणप्पओग पेसप्पओगयं चेव । सद्दाणुरूववायं तह बहिया पुग्गलक्खेवं ॥ २८ ॥

वज्जइ–परिहरइ इह–बीयसिक्खावए आणवणपओगं–आणवणे–विवक्खियखेत्ताओ बहिं ठियस्स सचेयणाइदव्वस्स विवक्खियखेत्तपावणे पओगो–सयंगमणे वयभंगभयाओ अन्नस्स संदेसाइणा वावारणं आणवणपओगो तं च वज्जेइ । तहा पेसप्पओगयंति पेसो–कम्मकराई तस्स पओगो–विवक्खियखेत्ताओ बाहिं पओयणत्थं सयं गमणे वयभंगभयाओ अण्णस्स वावारणं पेमपओगो तं च वज्जेइ, चेवसद्दो समुच्चये । सद्दाणुरूववायंति छंदोभंगभयाउ अणुसद्दो मज्झे पढिओ, अन्नहा सद्दरूवाणुवायंति पढिउं जुज्जइ, तत्थ सद्दस्स–खासियाइसरूवस्स अणुवाओ–विवक्खियखेत्ताओ बाहिं ठियस्स आहवणीयस्स कन्नविवरे पाडणं सद्दाणुवाओ, एवं रूवस्स सरीरसंबंधिणो अणुवाओ–दिट्ठीए पाडणं रूवाणुवाओ, एए दोवि वज्जेइ, विवक्खियखेत्ताओ बाहि ठियं कंचि नरं वयभंगभयाओ हक्कारेउं असक्कितो जया खासियाइसद्दसुणावण-मिसेण ससरीररूवदरिसणमिसेण य तं आकारेइ तया वयसावेक्खस्स सद्दाणुवाओ रूवाणुवाओ य अइयारो । तह बहिया पोग्गलक्खेवंति तहा विवक्खियजणागमणनिमित्तं बहिया विवक्खियखेत्ताओ पोग्गलक्खेवं–लेट्ठुगाइपक्खेवणं तं वज्जेइ देसावगासियवयं हि वेप्पइ मा होउ गमणागमणाइजणिओ जीवघाउत्ति एयंविहाभिप्पाएण, सो पुण जीवघाओ सयं कओ अन्नेण वा कारिउत्ति न कोइ फले विसेसो, नवरि गुणो सयं गमणे, इरियावहविसुद्धिकरणाओ, अण्णस्स पुण अनिउणस्स

इरियावहसुद्धिअसंभवोत्ति। तत्थ य पढमा दोन्नि अइयारा अनिउणबुद्धित्तणेण सहसाकाराइणा वा, तिन्नि पुण अंतिमा असढायारस्स अइयारा भवंतित्ति, अन्नहा भंगा एव ॥ २८ ॥ एत्थ य भावणा इमा–" सव्वे य सव्वसंगेहिं वज्जिए साहुणो नमंसेज्जा। सव्वेहिं जेहिं सव्वं सावज्जं सव्वहा चत्तं ॥ १ ॥" भणियं बीयं सिक्खावयं। संपयं तइयं भन्नइ—

आहारदेहसक्कारबंभवावारपोसहं अण्णं। देसे सव्वे य इमं चरमे सामाइयं नियमा ॥ २९ ॥

कुसलधम्मं पोसेइ-वुड्ढिं नेइत्ति पोसहो–पव्वदिवसाणुट्ठाणं, स पुण चउव्विहो–आहारदेहसक्कारबंभचेरअव्वावारपोसहभेयाओ, आहारदेहसक्काराणं वज्जणं बंभचेरअव्वावाराणं च आसेवणमित्यर्थः, अन्नंति देसावगासियाउ अवरं तइयं सिक्खावयं, एयं चउव्विहंपि दुहा होइ, अओ भन्नइ–देसे सव्वे यत्ति देसे–आहाराईणं देसविसए सव्वेसु-निरवसेसेसु आहाराइसु चसद्दो समुच्चये, इमंति पोसहवयं होइ, तत्थ य चरिमे–अंतिमे भेए सव्वओ अव्वावारपोसहनामगे कए सति सामाइयं–पढमसिक्खावयं नियमा–अवस्संभावेण निच्छएण कायव्वं होइ, जइ न करेइ सामाइअफललाभाऽभावो भवेज्जा। एत्थ य भावत्थो पुव्वायरियभणिओ इमो—

आहारपोसहो दुविहो–देसे सव्वे य, तत्थ देसे विवक्खियविगइए अविगईए आयंबिलस्स वा एक्कसिं वा दो वा वारे भोयणंति, सव्वओ पुण चउव्विहस्सवि आहारस्स अहोरत्तं जाव पच्चक्खाणं। सरीरसक्कारपोसहो पुण ण्हाणुव्वत्तणवन्नगविलेवणपुप्फगंधतंबोलविसिट्ठवत्थाभरणपरिच्चाओ, सोवि दुविहो–देसे सव्वे य, तत्थ देसे अमुगं सरीरसक्कारं न करेमि, सव्वे पुण सव्वं न करेमित्ति। बंभचेरपोसहो दुविहो–देसओ सव्वओ य, तत्थ देसे दिवा रत्तिं वा एक्कसिं दो वा वारे अबंभासेवणं, सव्वओ पुण अहो-

रत्तं जाव बंभचेरपालणं। अव्वावारपोसहोऽवि देसओ सव्वओ य, तत्थ देसओ अमुगं वावारं न करेमि, सव्वओ पुण सव्वेवि वावारे हलसगडघरकम्माइ न करेमि। तत्थ अव्वावारविसए–जो देसओ पोसहं करेइ स सामाइयं करेइ वा न वा, जो पुण सव्वओ अव्वावारपोसहं करेइ स नियमा सामाइय करेइ, जइ न करेइ तया सामाइयफलेणं वंचिज्जइ। तं च कहिं केण वा विहिणा करेइत्ति? एयं भण्णइ–चेइयहरे वा साहुमूले वा घरे वा पोसहसालाए वा, उम्मुक्कमणिसुवन्नो ववगयमालावन्नगविलेवण-पहरणो, तंमि य कए पढइ पोत्थयं वा वाएइ, धम्मज्झाणं वा झियाइ, जहा–एए साहुगुणा अहं मंदभग्गो न समत्थो धारेउं एवमाई विभासा–" तं सत्तिओ करेज्जा तवो उ जो वन्निओ समणधम्मे। देसावगासिएणं जुत्तो सामाइएणं वा ॥ १ ॥ सव्वेसु कालपव्वेसु पसत्थो जिणमए तवो जोगो। अट्ठमिपन्नरसीसु य नियमेण हवेज्ज पोसहिओ ॥ २ ॥" एत्थ य जइ आहारसरीरसक्कारबंभचेरपोसहंपि न अव्वावारपोसहंपि अन्नत्थऽणाभोगेणंति एवमाइं आगारुच्चारणपुव्वगं पडिवज्जइ तया सामाइयंपि सफलं होइ, जओ थूलं पोसहपच्चक्खाणं सुहुमं सामाइयपच्चक्खाणं, तहा पोसहिएणवि सावज्जवावारा न कायव्वा चेव, तओ सामाइयं अकरेंतो सामाइयलाभाउ ससइ, जइ पुण सामायारीविसेसाउ सामाइयम्मिव ' दुविहं तिविहेण 'न्ति एवं पोसहं पडिवज्जइ तया सामाइयत्थो पोसहे चेव गउत्ति काउं न सामाइयं अच्चंतं सफलं, जइ परं पोसह-सामाइयलक्खणं वयदुगं पडिवन्नं सएत्ति एवंविहभावणाए सफलंति। एत्थ य ज भणियं ' जइ पुण सामायारीविसेसाओ सामाइयमिव दुविहं तिविहेण पोसहं पडिवज्जइ 'त्ति एवमाइ, तमियाणीं सामायारीविसेसं पुव्वायरियभणियं दंसेमि—

" अह भवसुहविरयमणो अणन्नमामन्नचरणरागेण। जइ सुहकंखी किर कुणइ सव्वओ पोसहं सड्ढो ॥ १ ॥" पढमं नमो-

कारविवोहाइ काउं उज्झितु चित्तवासंगं गोसग्गे इरियं पडिक्कमिय अंगपडिलेहणं करिय, उच्चाराइभूमिं पेहेत्ता छोभवंदणेण वंदिय इच्छाकारेण संदिसह पोत्तियं पडिलेहेमित्ति भणिय खमासमणपुव्वयं पोत्तियं पडिलेहिय खमासमणेण पोसहं संदिसाविय बीयखमासमणेण पोसहे ठामित्ति भणित्ता खमासमणं दाउं उद्धट्ठिओ ईसिं ओणयकाओ गुरुवयणमणुभासंतो नमोकारमुच्चरिय भणइ-"करेमि भंते ! पोसहं आहारपोसहं सव्वओ देसओ वा सरीरसक्कारपोसहं सव्वओ बंभचेरपोसहं सव्वओ अव्वावारपोसहं सव्वओ चउव्विहे पोसहे सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि" इमं पुण पढियसिद्धमेव, नवरं अहोरत्तठाणे दिवसं राइं वा पज्जुवासामि एयंपि दट्ठव्वं, पुणो पोसहविहिणा सामाइयमुहपोत्तिं पेहित्ता खमासमणेण संदिसाविय बीयखमासमणपुव्वं सामाइए ठामित्ति भणित्ता खमासमणपुव्वं अद्धावणयगत्तो पंचमंगलं कड्ढित्ता भणइ "करेमि भंते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।" एयस्स अत्थो-करेमि-अब्भुवगच्छामि अब्भुवगमगहणेण य *तुलादंडनायओ* नाणजयणाओ वि घेप्पंति, एवमेव विरइसंभवाओ, जओ भणियं "नाणब्भुवगमजयणाहिं वज्जविरइओ अट्ठमे भंगे।" एवमाइ, भंतेत्ति-गुरुआमंतणं, इमं च सव्वसुहाणुट्ठाणाणं गुरुपारतंतपदरिसणपरं, तहाहि-"गुरुणाऽणुन्नायाणं किच्चं किच्चंपि जमिह समणाणं। बहुवेलाइक्कमाओ सव्वत्थ पुच्छणा भणिया॥ १ ॥" तहा "गुरुपारतंतनाणं सद्दहणं एयं संगयं चेव। एत्तो उ चरित्तीणं मासतुसाईण निद्दिट्ठं॥ १ ॥" किं?, सामाइयं-समभावलाभरूवं, तत्थ य सावज्जं जोगं-असुभं

वावारं अणुमइवज्जं पच्चक्खामि–निवारेमि जाव नियमं पज्जुवासामि–जत्तियं कालं सामाइयवयमासेवेमि, वयकालो य जहन्नेण वि किल मुहुत्तो, जओ–" काऊण तक्खणं चिय पारेइ करेइ वा जहिच्छाए। अणवट्ठियसामइयं अणायराओ न तं सुद्धं ॥ १ ॥" अन्ने पुण इह ठाणे " जाव पोसहं पज्जुवासामि "त्ति भणावेंति।

पच्चक्खाणं च सामन्नेण नवहा 'तिविहं तिविहेणं' इच्चाइ, तत्थ ठवणा गाहा–" तिदुगेगाणं तियतियं तिदुगेगे य तिगतिग अहे ठवसु। भेया तिन्नेग तिगे पढमे एक्को नव नवऽन्नेसु ॥१॥" ठवणा तो चउत्थपयारसंगहमाह–दुविहं तिविहेणं,

३	३	३	२	२	२	१	१	१	जोगा
३	२	१	३	२	१	३	२	१	करणाणि
१	३	३	३	९	९	३	९	९	भंगा

सोऽवि तिहा तो पढमभेयनियमं करेति–मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स-सावज्जजोगस्स, भंतेत्ति पुणो भणणं आयरक्खावणत्थं, सुगुरुपडिवत्तिं विणा न किंचि कुसलमिति जाणावणत्थं च, जओ–"गुरुसक्खिओ हु धम्मो संपुन्नविही कयाइ उ विसेसो। तित्थयराणाकरणं सुगुरुसगासे गुणा होंति ॥ १ ॥" पडिक्कमामि–नियत्तामि, निंदामि–आयसमक्खं, गरहामि–गुरुमाइपच्चक्खं, भणियं च–" मणसा मिच्छादुक्कडकरणं भावेण इह पडिक्कमणं। सचरित्तपत्थयावो निंदा गरहा परसमक्खं ॥ १ ॥" अप्पाणं–सावज्जजोगकारिणं वोसिरामि–चयामि, अहवा पागयलक्खणाउ अप्पणा–नियगाभिप्पाएण न बलाभियोगाइणा, अणेण सहजपरिणामकयं धम्माणुट्ठाणं कम्मनिज्जराकारणंति सूएइ, वोसिरामि–सावज्जजोगो संवज्झइ, संरंभसमारंभारंभरूवं संवेगपबलयाए मुंचामि एस सामाइयसुत्तसंखेवत्थो।

एवं पोसहं सामाइयं च पडिवज्जिय खमासमणदुगेण वामारत्ते कट्ठासणं उउबद्धे पाउंछणगं वा पमज्जिय खमासमणदुगेण

चेव संदिसाविय सज्झायं उवउत्तो सुहनिसन्नो कुणइ, भावओ एगे वा अणेगे वा, गीयत्थसाहुसंभवे य सबहुमाणं तप्पज्जुवासणापरो अवस्सं सिद्धंतसारसवणं विहिणा करेइ, भणियं च-"तित्थे सुत्तत्थाणं गहणं विहिणा उ एत्थ तित्थमिणं। उभयन्नू चेव गुरू विही उ विणयाइओ चित्तो ॥ १ ॥ उभयन्नूवि य किरियावरो दढं पवयणाणुरागी य। ससमयपन्नवगो परिणओ य पन्नो य अच्चत्थं ॥ २॥" तहा "सुत्ता अत्थे जत्तो अहिययरो नवरि होइ कायव्वो। एत्तो उभयविसुद्धित्ति सूयगं केवलं सुत्तं ॥ ३ ॥" तओ पउणपोरिसीए खमासमणेण संदिसाविय खमासमणपुव्वमेव पडिलेहणं करेमित्ति भणिय मुहणंतगं पडिलेहित्ता संभविभंडोवगरणं पडिलेहेइ, मज्झे सव्वत्थसज्झाओ जाव कालवेला, तओ जइ चेइहरे वंदणं न कयं तो तं करेइ। चिइवंदणं हि जइ गिहीहिं अहोरत्ते सत्तहा तिहा वा कायव्वं, तत्थ सत्तहा-सुत्तुट्ठिओ १ पच्चुसावस्सए २ चेइहरे ३ भोत्तुकामो ४ भोच्चा पच्चक्खंतो ५ पओसावस्सए ६ सुविउकामो य ७ तं करेइ, तिहा पुण तिसंझं फुडमेव, जो पुण आहारपोसही देसओ सो तत्थेव पोसहसालाए घरे वा साहुव्व गंतुं पुन्ने पच्चक्खाणे तीरिए य खमासमण दुगेण(पुव्वं)मुहपोत्ति पडिलेहिय खमासमणेण वंदिय भणइ-इच्छाकारेण संदिसह पारावह पोरिसिं पुरिमुड्ढं चउविहार एकासण निव्वीयमायंबिलं वा कयं, जा कावि वेला ताए पारावेमि, तओ सक्कत्थएण चेइए वंदिय सज्झायं सोलस वीसं वा सिलोगे काउं जहासंभवं अतिहिसंविभागं दाउं मुहहत्थपाए पडिलेहिय नवकारपुव्वं अरत्तदुट्ठो मणवइकाएहिं अकयमकारियं फासुयं भत्तपाणं भुंजइ, भणियं च-"रागद्दोसविरहिया वणलेवाइउवमाए भुंजंति। कड्ढित्तु नमोकारं विहीएँ गुरुणा अणुन्नाया ॥ १॥ असुरसुरं अचवचवं अदुयमविलंबियं अपरिसाडिं। मणवयणकायगुत्तो भुंजेज्जऽइ पक्खिवणसोहिं (इ साहुव्व उवउत्तो)॥ २ ॥" एवमाइ, एवं विहिणा भुंजितुं ईरियावहियं

पडिक्कमिय दुवालसावत्तवंदणं काउं पच्चक्खाइ, जइ पुण सरीरचिंत्ताए अट्ठो तो आवस्सियं काउं–" अजुयलिया अतुरंता विगहारहिया वयंति समणोव । निसिइत्तु डगलगहणं आवड(यम)णं वच्चमासज्ज ॥ १ ॥" इच्चाइविहिणा अवरदक्खिणाए दिसाए अणावायमसंलोयाइगुणजुत्ते तसपाणबीयरहिए थंडिले दिसिपवणगामसूरियाइविहिणा पासवणुच्चारं वोसिरिय पुव्वक्रमेण वियारभूमीओ सट्ठाणमागम्म निसीहियं काउं खमासमणपुव्वमिरियं पडिक्कम्म गुरुं पइ भणंति–इच्छाकारेण संदिसह गमणागमणं आलोयहं, आवस्सी करिय अवरदक्खिणाइ दिसिहि जाइउ दिसालोयं करिय संडासगे थंडिलं च पमज्जिय उच्चारपासवणं वोसिरिय निसीही करिय पोसहसालं पविट्ठा आवंतेहिं जंतेहिं जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं । तओ तहेव सज्झायं करेइ जाव समोगाढा चरमपोरिसी, तओ छोभवंदणं दाउं इच्छाकारेण संदिसह पडिलेहणं करेमि, पुणो वंदिय पोसहसालं पमज्जेमित्ति भणिय तओ भत्तट्ठी इयरो य दोवि मुहणंतगं सकायं पडिलेहिंति पच्छा अभत्तट्ठिओ खमासमणदुगेण अंगपडिलेहणं संदिसावेइ, तओ पोसहसालं पमज्जइ, तओ दुखमासमणपुव्वयं मुहणं-तयं पडिलेहिय अप्पणो उवहिं थंडिल्ले य संदिसाविय वत्थं कंबलाइ जाव कडिपट्टयं पडिलेहेइ, भत्तट्ठी पुण अंगपडिलेहणं संदिसाविय कडिपट्टयं पडिलेहेइ, एस विसेसो, सेसविही तुल्लो, तओ खमासमणदुगेण पोत्ति पडिलेहित्ता सज्झायं बइसणं च संदिसाविय पढणगुणणसिद्धंतसुणणाइ कुणंति जाव कालवेला, तओ सो चउवीसं उच्चारपासवणाण थंडिले पेहेइ, तओ सूरत्थमणसमए पडिक्कमिय विस्सामणाइ साहुकिच्चं किच्चा सज्झायं संदिसाविय तप्परायणो ताव अच्छइ जाव पुण्णा पढमपोरिसी, तओ काइया उवओगं काउं खमासमणदुगपुव्वं मुहपोत्तियं पडिलेहिय खमासमणं दाउं भणइ–इच्छाकारेण

संदिसह राइसंथारयं संदिसावेमि, पुण खमासमणं दाउं राइसंथारए ठामित्ति वोत्तुं संथारभूमिं गंतुं मुहणतगंतेण ससीसोवरियं कायं भूमिं संथारयं च पमज्जित्ता नमोकारं सामाइयं च तिक्खुत्तो कड्ढित्ता अणुजाणह निसीही नमो खमासमणाणंति भणिय संथारए ठाइ, बाहुवहाणेण वामपासेण अपमत्तो निद्दापमोक्खं कुणइ, जइ उवट्टइ पमज्जइ साहुव, कुक्कुडिदिट्ठंतेणं हत्थपायसंकोयपसारणं करेइ, सुत्तविउद्धो सरीरचिंतं काउं इरियावहियं पडिक्कमित्ता जहन्नेणवि गाहातिगसज्झायमणुपेहेइ असंथरंतो संथारयं पमज्जिय निवज्जइ, चित्ते चिंतेइ य जहा–"जम्मजरामरणजलो अणाइमं वसणसावयाइन्नो। जीवाण दुक्खहेऊ कट्ठं रुद्दो भवसमुद्दो ॥ १ ॥ कालंमि अणाईए जीवाण विचित्तकम्मवसगाणं। तं नत्थि संविहाणं संभवइ जं न भमिराणं ॥ २ ॥ चुलसीइजोणिलक्खसु घोगकुलकोडिलक्खगहणेसु। भमिरेण इहावयसंपयाउ णंताउ पत्ताउ ॥ ३ ॥ पिइमाइपउत्ताईसंबंधा वावहारियजिएहिं। सव्वे सव्वेहिं सया अणंतखुत्तो इहं पत्ता ॥ ४ ॥" तहेह–"रागोरगगरलभरो तरलइ चित्तं तवेइ दोसग्गी। कुणइ अणुचियपवित्तिं महामईणंपि हा मोहो ॥ ५ ॥ पुरिसेण भुत्तपुव्वं नारिं दट्ठूण अच्चुयंतसुरो। तक्खणसेवी जायइ हहा तहिं चेव ननु रमए ॥ ६ ॥ इय गुच्छाइसु सहसारंतगदेवा जमेसि तेयतणू। अंगुलअसंखभागं भणिया मरणंतसमुघाए ॥ ७ ॥" किं बहुणा! पायमिह जीवा–"अन्नाणंधा मिच्छत्तमोहिया कुग्गहुग्गगहगहिया। मग्गं न नियंति न सद्दहंति चिट्ठंति न य उचियं ॥ ८ ॥ ता कइया तं सुदिणं सा सुतिही तं भवे सुनक्खत्तं। जत्थ सुगुरुपरतंतो चरणभरधुरं धरिस्समहं ॥ ९ ॥" एवमाइ। तओ राइए चरमजामे उट्ठेऊण इरियावहियं पडिक्कमिय पुव्वं व पोत्तिं पेहिय नमोकारपुव्वं सामाइयसुत्तं कड्ढिय संदिसाविय सज्झायं कुणइ अप्पसद्देण जहा तत्तायगोलकप्पा घरकोइलगाई न जग्गंति जाव पडिक्-

मणवेला। तओ उचियकाले विहिणा पडिक्कमिय खमासमणदुगेण पडिलेहणं संदिसाविं मुहणंतयं सकायं पडिलेहिय खमासमणदुगेणं अंगपडिलेहणं संदिसावेड(इड) काउं च तं मुहपोत्तिपेहणखमासमणदुगदाणपुव्वमुव्वहिं संदिसाविय वत्थकंबलाइ-पोसहसालं पमज्जिय खमासमणदुगेण सज्झायं संदिसाविय पढइ सुणेइ। इय भावओ कुणंतेण सुत्तओ अत्थओ करणओ य पोसहव्वयमाणाए फासियमाराहियं च भवे, जया पुण पोसहं पारिउकामो तया खमासमणदुगेण मुहपोत्तिं पडिलेहिऊण खमासमणदुगेण सामाइयं च पोसहं पारेइ, पुण मुहपोत्तिपेहणपुव्वं सामाइयं पारित्ता "छउमत्थो मूढमणो" इच्चाइगाहाओ भणइ उवगरणं च मुंचइत्ति। इह पुण अहिगुणखमासमणेसु न विरोहो, पोत्तिपेहणाइसु सामायारीबहुत्ताओ विणयनय-दरिसणाओ य ॥ २९ ॥ एत्थ अइयारा भन्नंति—

अप्पडिदुप्पडिलेहियपमज्जसेज्जाइ वज्जई एत्थ। सम्मं च अणणुपालणमाहाराईसु सव्वेसुं ॥ ३० ॥

अप्पडिदुप्पडिलेहियत्ति अप्पडिलेहियं दुप्पडिलेहियं च, अप्पमज्जत्ति—अप्पमज्जियं दुप्पमज्जियं च सेज्जाइ, आदि-सद्दाओ संथारगउच्चारपासवणभूमी घेप्पंति, तं वज्जेइ—परिहरइ, एत्थ—तइयसिक्खावए, अणेण गाहद्धेण चत्तारि अइयारा दंसिया, तंजहा—अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसेज्जासंथारए, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियसेज्जासंथारए, अप्पडि-लेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमीत्ति, सुगमा य एए चत्तारि, नवरं अप्पडिलेहिओ—चक्खुणा न निरिक्खिओ, दुप्पडिलेहिओ—सम्मं अनिरिक्खिओ सेज्जासंथारओ—सयण-निमित्तं पोसहियोवओगी दब्भकुसकंबलीवत्थमाइओ, अहवा सेज्जा—सयण सव्वंगीणं वसही वा सेज्जा, संथारगो—अड्ढाइज्ज-

हत्थपरिमाणो, उवलक्खणं च एयं पीढफलगाईणं, तहा अप्पमज्जिओ रयहरणाइणा, दुप्पमज्जिओ अणुवउत्तयाए। नणु किं पोसहियस्स रयहरणं अत्थि ?, अत्थित्ति भणामो, जओ सामाइयसामायारिं भणंतेण आवस्सगचुन्नियारेण भणियं- " रयहरणेणं पमज्जइ जओ साहूणं उवग्गहियं रओहरणमत्थि तं मग्गइ असति पोत्तस्स अंतेणं "ति। वायणंतरे पुण एवं भणियं-" साहूणं सगासाओ रयहरणं निसेज्जं वा मग्गइ, अह घरे तो से उवग्गहियं रयहरणं अत्थि, तस्स असइ पोत्तस्स अंतेणं "ति, उच्चारपासवणभूमी-पुरीसमुत्तपरिट्ठवणथंडिलंति। इह पुण वुड्ढभणिया सामायारी इमा-" कयपोसहो न अप्पडिलेहियं सेज्जं आरुहइ संथारगं वा, पोसहसालं वा सेवइ, दब्भवत्थं वा सुद्धवत्थं वा न अप्पडिलेहियभूमीए संथारेइ, काइयाभूमीए य आगओ पुणरवि संथारगं पडिलेहेइ अन्नहा अइयारो भवेज्जा, एवं पीढाइसुवि विभासा"। एए चत्तारि वि अइयारा सव्वओ अव्वावारपोसहे चेव भवंति, तहा संमंति आगमाणुसारेण, चसद्दो समुच्चये, अणणुपालणं-अणासेवणं आहाराईसुत्ति-आहारपोसहमाईणं सव्वेसुत्ति सव्वेसिं-मयलाणं अव्वावारपोसहपज्जवसाणाणंति। भावणा पुण एयस्स एवं-कयपोसहो अथिरचित्तो आहारं ताव सव्वमाहारं, तद्देसं वा पत्थेइ, बीयदिवसे वा अप्पणो अत्थाए आय(हा)रं कारवेइ, सरीरसक्कारे सरीरं उवट्टेइ, दाढियाउ केसे रोमाइं वा सिंगाराभिप्पाएणं संठवेइ, दाहे वा सइ सरीरं सिंचइ, एवं सव्वं सव्वाणि सरीरभूसाकारणाणि भणियव्वाणि, बंभचेरे पुणा इहलोइए परलोइए वा भोगे पत्थेइ [संवाहेइ वा,] अहवा सद्दफरिसरूवगंधे वा अहिलसइ, कइया बंभचेरपोसहो पुण्णो भविस्सइ, चइयामो बंभचेरेणंति एवं वा विचिंतेइ, अव्वावारे सावज्जाणि वावारेइ, कयमकयं वा चिंतेइ, एवं पंचाइयारसुद्धो पोसहो अणुपालेयव्वोत्ति। एत्थ भावणा-" उग्गं तप्पंति तवं सरीरसक्कारवज्जिया

निच्च। निव्वावारा तह बंभयारि जइणो नमंसामि ॥ १ ॥"त्ति ॥ ३० ॥ भणियं तइयं सिक्खावयं, संपयं चउत्थं भन्नइ—

अन्नाइणं सुद्धाण कप्पणिज्जाण देसकालजुयं। दाणं जईणमुचियं गिहीण सिक्खावयं भणियं ॥ ३१ ॥

अन्नाईणं–भोयणमादीणं, आइसद्दाओ पाणवत्थोसहमेसज्जपीढफलगसेज्जासंथारगाइ घेप्पति, अणेण य हिरन्नाइपडिसेहं भणइ, सुद्धाणं–नायागयाणं, नाओ पुण माहणखत्तियवइससुद्दाणं नियनियवित्तीअणुट्ठाणं, एएण य अन्नायागयाणं निसेहं भणइ, कप्पणीयाणं–उग्गमाइदोसवज्जियाणं, एएण पुण अकप्पणीयाणं अफासुयअणेसणिज्जाणं निसेहं भणइ, भणियं च चुन्नीए " जइ आहाकम्मं देइ तो साहुमहे भुंजइ, हेठिल्लेहिं संजमठाणेहिं ओयारेइ, तेण आहाकम्मेणं ण सो अतिहिसंविभागो भवइ "त्ति, देसकालजुयं–पत्थावोचियं, जओ काले दिन्नं महंतोपगारकारगं होइ, भणियं च–" काले दिन्नस्स पहेणयस्स अग्घो न तीरए काउं। तस्सेवाऽथक्कपणामियस्स गिण्हंतया नत्थि ॥ १ ॥ " पहेणयस्सत्ति–लाहणगस्स, अथक्कपणामियस्सत्ति–अणवसरदिन्नस्स, अहवा देसकालजुयं–खेत्तकालाणुरूवं जं जत्थ देसे काले वा उचियंति भणियं होइ, दाणं जईणंति सुगमं, उचियं–संगयं गिहीणत्ति समणोवासगाणं सिक्खावयं–अतिहिसंविभागरूवं भणियं, अतिही–साहू तस्स पच्छाकम्माइदोसरहिओ संविभागो अतिहिसंविभागो, स एव वय अतिहिसंविभागवयति। एत्थ वुड्ढभणिया सामायारी " सावगेण पोसहं पारंतेणं नियमा साहूणं दाऊण पारेयव्वं, अन्नया पुण अनियमो, दाउं वा पारेइ, पारेउं वा देइ, तम्हा पुव्वं साहूणं दाउं पच्छा पारेयव्वं, कहं? जया देसकालो भवइ, तया अप्पणो विभूसं काउं साहुणो तप्पडिस्सयं गंतूण निमंतेइ भिक्खं गेण्हहत्ति, साहूणं तं सावगं पइ का पडिवत्ती? भन्नइ, तया एगो पडलगं अन्नो मुहणंतगं अवरो भायणं पडिलेहेइ, मा अंतरायाइया दोसा

भवइत्ति, अओ एएण कारणेण सव्वत्थ-मव्वसुत्तेसु वज्जइत्ति भणियं ॥ ३३ ॥ इयाणिं ज ह पगरणे वित्थरभया संमत्त-वयगोयरं न भणियं, तं आगमाउ नायव्वंति, तत्थ अतिदेसं भणइ—

सुत्ताउ(दु)वायरक्खणगहणपयत्तविसया मुणेयव्वा । कुंभारचक्कभामगदंडाहरणेण धीरेहिं ॥ ३४ ॥

सुत्ताउ-आगमाउ उवायरक्खणगहणपयत्तविसया मुणेयव्वा, तत्थ उवाओ-सम्मत्ताणुवयाइपडिवत्तीए अब्भुट्ठाणाइलक्खणो हेऊ, जओ भणियं-"अब्भुट्ठाणे विणए परकमे साहुसेवणाए य । सम्मद्दंसणलंभो विरयाविरईए विरईए ॥१॥" एईए चुन्नी-अब्भुट्ठाणं-आमणपरिच्चाओ, आमणत्थं वंदित्ता विणएण पुच्छइ ताहे विणीउत्ति साहू कहंति, विणओ नाम अंजलिपग्गहपणिपातादि, परक्कमेण-कमायजएण, अथवा माधुसमीपगमनेन, अथवा पराक्रमः-उच्छ्राहः पुरुषकार इत्यर्थः तेन साहुसेवणा जत्थ तत्थ ठिए खणाविखणं सेवेइ, चग्गहणा सुयसामाइयलाहो, अहवा जाइसरणादितित्थगरवयण तदन्नवयणलक्खणो उवाओ, जओ भणियं-" महसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वा सोच्चा " । अहवा पढमबीयकसायउव-समो उवाउत्ति ।" तहा रक्खणं-अंगीकयसंमत्तवयाणं परिपालणोवायसरूवं आययणसेवादी, जओ भणियं-" आययणसेवणा निन्निमित्तपरघरपवेसपरिहारो । किड्डापरिहरणं तह विकियवयणस्स परिहारो ॥ १ ॥" तहा गहणं-'तिविहं तिविहेण' एवमादिविगप्पेहिं सम्मत्तवयाणं अंगीकरणं, भणियं च-"मिच्छत्तपडिक्कमणं तिविहं तिविहेण नायव्वं" । तहा "दुविहं तिविहेण पढमउ दुविहं दुविहेण बीयओ होइ । दुविहं एगविहेणं एगविहं चेव तिविहेणं ॥ १ ॥ "ति एवमादि, तहा पयत्तो-संमत्तवय-गहणुत्तरकाले तयणुसरणाइ उवरि भन्नमाणसरूवो, अहवा अपच्चक्खायस्सवि जहासत्ति परिहारुज्जमरूवा जयणा पयत्तो, जहा—

"नो मे कप्पइ अन्नउत्थिए वा" एवमादि, तहा--"परिसुद्धजलग्गहणं दारुयधन्नाइयाण तह चेव। गहियाणवि परिभोगो विहीए तसरक्खणट्ठाए ॥ १ ॥" एवमादि, तहा विसओ--संमत्तवयाणं गोयरो, तत्थ संमत्तस्स विसओ जीवाजीवाईतत्तसरूवो, वयविसओ पुण थूलसंकप्पियजीवाइसरूवो, एए उवायादयो इह विसेसेण अभणियावि आगमाओ नायव्वा, किंचि वि पुव्वं दंसिया य, कहं नायव्वा ?, भन्नइ-'कुंभारचक्कभामगदंडाहरणेणंति' कुंभारचक्कस्स भामगो-भमणकारणं जो दंडो तल्लक्खणं जं उदाहरणं तेण धीरेहिं-बुद्धिमंतेहिं, किं भणियं होइ ?, भन्नइ-जहा कुंभारचक्कस्स दंडाउ भमणं होइ एवं उवायादओ सुत्ताउ धीरेहिं नायव्वा ॥ २५ ॥ संपयं गहियसंमत्तवएण संमत्तवयपरिणामथिरत्तनिमित्तं जं कायव्वं तब्भणणत्थं इमं ताव भन्नइ-

गहणा उवरि पयत्ता होइ असंतोऽवि विरइपरिणामो। अकुसलकम्मोदयओ पडइ अवण्णाइ लिंगमिह॥२६॥

गहणा- 'गुरुमूले सुयधम्मो' एवमाइविहिणा संमत्तवयपडिवत्तीउ उवरि--उत्तरकाले पयत्ताउ-उज्जमाउ सगासाउ होइ असंतो वि--कम्मदोसाउ अविज्जमाणोवि विरइपरिणामो-उवलक्खणं च एसो तेण सम्मत्तपरिणामोऽवि दट्ठव्वो, पयत्तं-उज्जमं अकरितस्स दोसमाह-अकुसलकम्मोदयउ-असुहकसायाइकंमाणुभावाओ पडइ- हुंतो वि वयगहणस्स उवरि पयत्तं विणा विणस्सइ विरइपरिणामो, तप्पडिवाओ य लिंगेण नज्जइ, अतो तं चेव दंसेइ अवन्नाइ लिंगमिहत्ति अवन्नो--वयाणं वयदेसगाणं वा वयधारगाणं वा अगुणथुइ, अहवा अवन्ना-अणायरो तयाईणं, आइसद्दाउ वयरक्खणोवाए अप्पवित्तिमाइयं च लिंगं-लक्खणं चिंधंति एगट्ठं, इहत्ति वयपरिणामपडिवाये ॥ २६ ॥ न य एवं वत्तव्वं विरइपरिणामाभावे कहं वयगहणंति ? उवरोहाइणा वयगहणसंभवाउ, सुव्वंति हि अणंताणि दव्वओ समणत्तमावगत्तगहणाणित्ति पुव्वमुट्ठइयं उवएससेण भणइ—

तम्हा णिच्चसईए बहुमाणे च अहिगयगुणंमि । पडिवक्खदुगुंछाए परिणइआलोयणेणं च ॥ ३६ ॥
तित्थंकरभत्तीए सुसाहुजणपज्जुवासणाए य । उत्तरगुणसद्धाए य एत्थ सया होइ जइयव्वं ॥ ३७ ॥

जम्हा असंतोऽवि विरइपरिणामो पयत्ताउ उप्पज्जइ, पयत्तं विणा पुण अकुसलकम्मोदयाउ संतोऽवि परिवडइ, तम्हा–तेण कारणेण निच्चसईए--अणवरयसुमरणेण, 'होइ जइयव्वं'ति बीयगाहाचरमपएण सह संबंधो, तहा बहुमाणेणं–भावपडिबंधेण, चसद्दो समुच्चये, अहिगयगुणंमि--अंगीकयगुणंमि संमत्ताणुव्वयाइए, इमं पयं पुव्वपएहिं उत्तरपएण य सह पत्तेगं जोइज्जइ, तहा पडिवक्खदुगुंछाए--मिच्छत्तपाणिवहाइदुगुञ्छाए, तहा परिणइआलोयणेणंत्ति–संमत्ताणुवयाईणं विवक्खभूया मिच्छत्तपाणाइवायादयो दारुणफला, अंगीकयगुणा पुण संमत्ताणुव्वयाइया परमत्थहेयवोत्ति एवंविहविवागपरिभावणेण सया जइयव्वं, चसद्दो समुच्चये ॥ ३६ ॥ तहा तित्थंकरभत्तीए–परमगुरुविणएण, तहा सुसाहुजणपज्जुवासणाए--भावजइसेवाए, चसद्दो समुच्चए, तहा उत्तरगुणसद्धाए–पहाणयरगुणाभिलासेण, सम्मत्ते सति अणुव्वयाभिलासेण अणुव्वएसु संतेसु महव्वयाभिलासेणत्ति, चसद्दो समुच्चये, एत्थत्ति सम्मत्ताणुव्वयाइविसए तप्पडिवत्तिउत्तरकाले सया–सव्वकालं होइ जइयव्वं–उज्जमो कायव्वोत्ति । एस गाहादुगस्स अत्थो ॥ ३७ ॥ अणंतरभणिओवएसमेव फलदंसणेण निगमेइ—

एवमसंतोऽवि इमो जायइ जाओऽवि न पडइ कयाइ । ता एत्थं बुद्धिमया अपमाओ होइ कायव्वो ॥ ३८ ॥

एवं–भणियपगारेण निच्चसुमरणाइणा पयत्ते कीरंते असंतोऽवि–अविज्जमाणोऽवि इमोत्ति, संमत्तपरिणामो वयपरिणामो य जायइ–उप्पज्जइ, जाओ य न पडइ कयाइ–एवं जयंतस्स संमत्ताइपरिणामो उप्पन्नो न कंमिवि काले पडइ–

विणस्सइ, जम्हा एवं तम्हा एत्थ निच्चसरणादिगे पयत्ते बुद्धिमया अपमाओ उज्जमो होइ कायव्वो ॥ ३८ ॥ पुव्वभणियवयाणमेव कोई विसेसो भन्नइ—

एत्थ उ सावगधम्मे पायमणुव्वयगुणव्वयाइं च । आवकहियाइं सिक्खावयाइं पुण इत्तराइंति ॥ ३९ ॥

एत्थत्ति पुव्वभणिए तुसद्दो विसेसं कहइ, तहाहि—जइधम्मे महव्वयाणि आवकहियाणि चेव भवंति, एत्थ पुण सावगधम्मे पायेण—बाहुल्लेणं अणुव्वयाणि गुणव्वयाणि य आवकहियाणि—जावज्जीवियाणि भवंति, पायगहणाओ पुण चाउम्मासाइकालमाणेणवि भवंति, सिक्खावयाणि पुण इत्तराइंति अप्पकालियाणि, तत्थ पइदिवसाणुट्ठेयाणि सामाइयदेसावगासियाणि, पुणो पुणो उच्चारिज्जंतित्ति जं भणियं होइ, पोसहोववासअतिहिसंविभागा पुण पतिनियदिवसाणुट्ठेया, न पइदिणाणुट्ठेया इति ॥ ३९ ॥ एवं बारसविहेवि सावगधम्मे भणिए संलेहणाभणणे अवसरो, तत्थ भन्नइ—

संलेहणा य अंते न निओगा जेण पव्वयइ कोई । तम्हा नो इह भणिया विहिसेसमिमस्स वोच्छामि ॥ ४० ॥

संलेहणा—आगमपसिद्धा सा इह पगरणे न भणिया, केण कारणेण न भणिया ?, भन्नइ—अंते—जीवियावसाणे न निओगा—न अवस्संभावेण सावगस्स संलेहणा होइ, कम्हा ?, भन्नइ—जेण कारणेण पव्वयइ—पव्वज्जं पडिवज्जइ कोई—तहाविहपरिणामजुत्तो सावगो, तम्हा—तेण कारणेण नो—न चेव इह—संखित्तपगरणे भणिया, सा पुण इह संखित्तपगरणे सुत्ते अभणियावि उवओगिणित्तिकाउं भन्नइ—

तत्थ ताव सावगेणं भवबल्लिकंदं कणगतरुविसनिव्विसेसं सयलदुहणिहाणं सुगइमग्गापिहाणं पच्चक्खिय तिविहंतिविहेण

मिच्छत्तं, अवंझमोक्खतरुबीयं सयलगुणमूलं पडिवज्जिय संमत्तं, कुगइनिबंधणकम्मबंधजलपवाहपालिं मग्गादिसुहहेउपुन्नपबंधजणणीं असंखभवोवचियकम्मवाहिनिज्जरणओ मोक्खारोग्गरमायणं गहेऊण देसविरइं "नवकारेण विबोहो" इच्चाइविहियाणुट्ठाणपरेण अहाउयं परिपालणीयं, तहा गामाइगमणसंभवे तदुचियसामायारी पउंजणपरेण य भवियव्वं, तहाहि–"अहिगरणखामणं खलु चेइयसाहूण वंदणं चेव। संदेसंमि विभासा जइगिहिगुणदोसवेक्खाए॥ १॥ साहूण सावगाण य सामायारी विहारकालंमि। जत्थत्थि चेइयाइं वंदावेंती तहिं सव्वं॥ २॥ पढमं तओ य पच्छा वंदंति सयं सिया न वेलत्ति। पढमं चिय पणिहाणं करिंति संघंमि उवउत्ता॥ ३॥ पच्छाकयपणिहाणा विहरंता साहुमाइ दट्ठूणं। जंपंति अमुगगामे देवा वंदाविया तुज्झे॥ ४॥ ते विय कयंजलिउडा सद्धा संवेगपुलइयसरीरा। अवणामिउत्तमंगा तं बहु मन्नंति सुहझाणा॥ ५॥ तेसिं पणिहाणाओ इयरेसिंपि य सुहाउ झाणाउ। पुन्नं जिणेहिं भणियं नउ संकमउत्ति तो मेरा॥ ६॥ ते पुण कयपणिहाणा वंदित्ता नेव वा निवेदंति। पच्चक्खमुसावाई पावा खु जिणेहिं ते भणिया॥ ७॥ जेविय कयंजलिउडा सद्धा संवेगपुलइयसरीरा। बहु मन्नंति न सम्मं वंदणगं ते वि पावत्ति॥ ८॥ जइवि न वंदणवेला तेणाइभएसु चेइए तहवि। दट्ठूणं पणिहाणं नवकारेणावि संघंमि॥ ९॥ तंमि वि कए समाणे वंदावणगं निवेइयव्वंति। तयभावंमि पमाया दोसो भणिओ जिणिंदेहिं॥ १०॥ एयं सामायारिं णाऊण विहीए जे पउंजंति। ते होंति एत्थ कुसला सेसा सव्वे अकुसला उ॥ ११॥" एत्थत्ति विहरणविहीए तहा–"अन्ने अभिग्गहा खलु निरइयारेण होंति कायव्वा। पडिमादओवि य तहा विसेसकरणिज्जजोगा य॥ १२॥" तत्थन्नेभिग्गहा जहा–"पइसंतगिलाणेसु य

आगमगहणे य लोयकरणे य। उत्तरपारणगंमि य दाहामी एवमाईया ॥ १३ ॥" तहा पडिमाओ–दंसणवयसामाइयादओ एकारस, आइसद्दाउ अणिच्चाइबारसभावणाओ घेप्पंति, तत्थ पडिमाओ इमाओ—

दंसणवयसामाइयपोसहपडिमा अबंभसच्चित्ते। आरंभपेसउद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥ १ ॥

एईए इमो अत्थो–दंसणत्ति–'सूयगं सुत्तं'त्तिकाउं दंसणपडिमा, एवमन्नत्थवि, तत्थ दंसणं–संमद्दंसण तस्स पडिमा–पइन्ना दंसणपडिमा, एमा पुण संकाकंखाइसम्मत्ताइयारविरहिया रायाभियोगाइसवागारविवज्जिया, अच्चत्थं पसमसंवेगाइलिंगाणुगया जहट्ठियदंसणायारपरिपालणब्भुवगमरूवा नायव्वा, भणियं च–"संकाइदोसविरहिय सम्मद्दंसणजुओ उ जो जंतु। सेसगुणविप्पमुक्को एसा खलु होइ पढमा उ ॥ १ ॥" सेसगुणा–अणुव्वयगुणव्वयादयो तेहिं विप्पमुक्को वि, भणियं च दसासुयक्खंधे–"तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं नो सम्मं पट्ठवियाइं भवंति" तत्थ सीलं–सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासो अतिहिसंविभागो य, वयाणि–पंचाणुव्वयाणि, गुणा इति तिन्नि गुणव्वयाणि, वेरमणाणि–रागाइविरइविसेसा, पच्चक्खाणाणि नमोक्कारसहियाईणि, पोसहो चउव्विहो आहाराई ४। इह च पडिमापडिवंताणं अभेयाउ कत्थइ पडिमागहणं कत्थय पडिमावंतगहणं नायव्वं। कालमाणं च एईए उवासगदसाभिप्पाएण एगो मासो १। वयत्ति वयपडिमा, एईए सरूवमिदं–"दंसणपडिमाजुत्तो पालंतोऽणुव्वए निरइयारे। अणुकंपाइगुणजुओ जीवो इह होइ वयपडिमा ॥ १ ॥" किंच–"बंधाइ असक्किरिया संतेसु इमेसु पहवइ न पायं। अणुकंपधम्मसवणाइया उ पहवइ विसेसेणं ॥ १ ॥" पायोगहणाउ पमायाइणा होज्जात्ति, विसेसेणंति दंसणपडिमावेक्खाए वयमेत्तावेक्खाए वा अइसएण,

एवमिह मासदुगमाणेणं बीया पडिमत्ति २। सामाइयंति सामाइयपडिमा, एयाए सरूवमिदं "वरदंसणवयजुत्तो सामइयं कुणइ जो उ संझासु। उक्कोसेण तिमासा एसा सामाइयप्पडिमा ॥ १ ॥" ३। पोसहत्ति पोसहपडिमा तस्सरूवमिमं— "पुव्वोइयपडिमजुओ पालइ जो पोसहं तु संपुन्नं। अट्ठमिचउदसाइसु चउरो मासे चउत्थेसा ॥ १ ॥" आइसद्दाओ पुन्निमामावसाउ घेप्पंति ४। पडिमत्ति पडिमापडिमा-काउस्सग्गपडिमा इत्यर्थः तस्सरूवमिमं—"सम्ममणुव्वयगुणवयसिक्खावयवं थिरो य णाणी य। अट्ठमिचउद्दसीसुं पडिमं ठाएगराईयं ॥ १ ॥" सम्मंति—संमत्तं थेरोत्ति अविचलसत्तो, अन्नो हि तव्विराहगो होइ, जओ सा राइए चउप्पहाइसु कीरति, तत्थ उवसग्गा भवंतीति, अट्ठमीचउद्दसीगहणं उवलक्खणं, तेण पोसहदिवसेसुत्ति दट्ठवं, तथा च दसासुत्तं—"से णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्निमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं पालित्ता से णं एगराइयं उवासगपडिमं सम्मं अणुपालित्ता भवति" सेसदिणेसु पुण—"असिणाणवियडभोई मउलियडो दियह बंभयारी य। राई परिमाणकडो पडिमावज्जेसु दियहेसु ॥ १ ॥" वियडे—पयडे मोत्तुं सीलं जस्स सो वियडभोई चउव्विहाहारराइभोयणवज्जगोत्ति वुत्तं होत्ति, मउलियडोत्ति मुक्कलकच्छो, साडगस्स दोवि अंचला हेट्ठा करेतित्ति वुत्तं होति। जाव पडिमा पंचमासिया न समप्पति ताव दिवसओ बंभयारी रत्तिं परिमाणं करेति, एगं दो तिन्नि वा वारे अपोसहिओ, पोसहिओ रत्तिंपि बंभयारी, काउस्सग्गे ठिओ पुणरेवं चिंतेति—"झायइ पडिमाए ठिओ तिलोगपुज्जे जिणे जियकसाए। नियदोसपच्चणीयं अन्नं वा पंच जा मासा ॥ १ ॥" नियदोसपच्चणीयंति अप्पणिज्जरागाइदूसणपडिवक्खं कामनिंदादिकं, अन्नंति जिणाविक्खाए अवरंति ५। अबंभत्ति अबंभवज्जणपडिमा तस्सरूवमिमं—"पुव्वोइयगुणजुत्तो विसेसओ विजियमोहणिज्जो य। वज्जइ अबंभमेगंतओ उ

राईपि थिरचित्तो ॥ १ ॥" पुव्वोइयगुणजुत्तोत्ति असिणाणाइपुव्वभणियगुणकलिओ दंसणवयसामाइयपोसहपडिमासरूवगुणकलिओ वा, विजियमोहणिज्जोत्ति निज्जियकामविगारो, एगंतओत्ति सव्वहा, राईपित्ति सव्वं रयणिं, न केवलं सव्वदिणंत्ति, एसेव य पंचमछट्ठपडिमाणं विसेसोत्ति, थिरचित्तो वा इमो–"सिंगारकहाविरओ इत्थीए समं रहंमि नो ठाइ। चयइ य अतिप्पसंगं तहा विभूसं च उक्कोसं ॥ १ ॥" इत्थीए–नारीए समं–सह रहंमित्ति–एगंते न ठाइ–न गच्छइ, एगंते चित्तविगारो भवतितिकाउं, जओ लोइयावि पढंति–"मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, नो विविक्तासनो भवेत्। बलवानिन्द्रियग्रामः, पंडितोऽप्यत्र मुह्यति ॥ १ ॥" अइप्पसंगंति–इत्थीए समं अइपरिचयं, जओ–"सइ दंसणाउ पेम्मं पेमाउ रई रईइ विस्संभो। विस्संभाओ पणओ पंचविहो वड्ढए मयणो ॥ १ ॥" तहा–"वसीकुणंति जे लोगमिगे दंसणतंतुणा। संसग्गवागुराहिं ते, थीवाहा किं कुणंति नो ॥ २ ॥" विभूसंति–अलंकारांगरागाईहिं सरीरसकारा, उक्कोसगहणाउ सरीरठितिमेत्तसंभवं करेइत्ति, "एवं जा छम्मासा एसोऽहिगओ इहरहा दिट्ठं। जावज्जीवंपि इमं वज्जइ एयंमि लोगंमि ॥ १ ॥" एसोत्ति सावगो, अहिगओत्ति–छट्ठपडिमापडिवन्नओ चेव, एवं जाव छम्मासे अबंभं वज्जेइत्ति, इहरहा–छट्ठपडिमापडिवन्नगाउ अन्नत्थ दिट्ठमेतं यदुत जावज्जीवंपि इमं–अबंभं वज्जेति, कत्थ दिट्ठं ?, उच्चते–एयंमि–सव्वजणपच्चक्खे सावगलोगंमित्ति ६। सचित्तेति–सचित्ताहारवज्जणपडिमा, तस्सरूवमिमं–"सच्चित्तं आहारं वज्जइ असणाइयं निरवसेसं। असणे चाउलउंबिगचणगाई सव्वहा सम्मं ॥ १ ॥" चाउला–तंदुला उंबिगा–जवगोहुमाइणं सव्वहत्ति अपक्कदुपक्कतुच्छोसहीं(वज्जणेण)भक्खणेणं, सम्मंति–भावसुद्धीए, "पाणे आउकायं सचित्तरससंजुयं तहन्नंपि। पंचुंबरिकक्कडगाइयं च तह खाइमे सव्वं ॥ १ ॥" सचित्तरससंजुयंति तक्खणपडियलवणाइर-

सुम्मीसं, अन्नंपि कंजिगाइपाणगाहारं वज्जेति, "दंतवणं तंबोलं हरेडगाई य साइमे सेसं। सेसपयसमाउत्तो जा मासा सत्त विहिपुवं ॥ १ ॥" सेसपयसमाउत्तोत्ति संमत्ताइपुव्वुत्तगुणजुत्तो ७। आरंभत्ति सयमारंभवज्जणपडिमा, तस्सरूवमिमं–"वज्जइ सयमारंभं सावज्जं कारवेति पेसेहिं। पुवप्पओगओ च्चिय वित्तिनिमित्तं सिढिलभावो ॥ १ ॥" पेसेहिंति–आएसकारीहिं, पुवप्पओगओ च्चियत्ति–पयट्टवावारओ चेव, नापुववावारनिओयणेणंति, सिढिलभावो–पेसपओगओऽवि आरंभेसु अतिवपरिणामो, "निग्घिणतेगंतेणं एवंवि हु होइ चेव परिचत्ता। एद्दहमेत्तोऽवि इमो वज्जेज्जंतो हियकरो उ ॥ २ ॥" निग्घिणया–निद्दयया एगंतेण–सवहेव सयमारंभाणं करणओ परेहि य कारणओ जा निग्घिणया होइ सा एवंपि–सयमारंभवज्जणेऽवि परिचत्ता भवइ। नणु सयमारंभो थेवो अप्पणो एगत्तणओ, परारंभो बहुओ परेसिं बहुत्तणओ, तओ य बहुतमारंभायरणेण अप्पतरारंभवज्जणं कं गुणं पोसेति ?, उच्चते, एद्दहमेत्तोवि–सयंकरणमेत्तयाए थोवो वि इमो सयमारंभो वज्जिज्जंतो हियकरो उ महारोगथोवोवसमदिट्ठंतेणंति। एवं च पुवोइयगुणजुत्तो ता वज्जइ अट्ठ जा मासा ८। पेसेत्ति पेसारंभवज्जणपडिमा, तस्सरूवमिमं–"पेसेहि वि आरमं सावज्जं कारवेति नो गरुयं। अत्थी संतुट्ठो वा, एसो पुण होति विन्नेओ ॥ १ ॥" गरुयंति–महंतं किसिकम्माइयं, एएण आसणदावणाइलहुवावारे न वज्जेतित्ति भणियं होति। तथा "निक्खित्तभरो पायं पुत्ताइसु अहव सेसपरिवारे। थेवममत्तो य तहा सवत्थवि परिणओ णवरं ॥ १ ॥" तहा सव्वत्थवि–धणधन्नाइपरिग्गहे, थेवममत्तो य, अयं चेवंभूत उत्तानबुद्धिरपि भवेत्, अत आह परिणउत्ति परिणयबुद्धी णवरं–केवलं। "लोगववहारविरओ बहुसो संवेगभावियमई य। पुवोइयगुणजुत्तो नव मासा जाव विहिणा उ ॥ १ ॥" ९। उद्दिट्ठवज्जएत्ति उद्दिट्ठभत्तवज्जगपडिमा, सा पुणरेवंसरूवा–

"उद्दिट्ठकडं मत्तंपि वज्जए किमु य सेसमारंभं। सो होइ उ छुरमुंडो छिहलिं वा धारए को वि ॥ १॥" उद्दिट्ठकडंति तंनिमित्त-संसाहियं, छिहली--सिहा, जहा परिव्वायगाणं, तथा-" जं निहियमत्थजायं पुट्ठो नियएहि नवरि सो तत्थ। जइ जाणइ तो साहइ अह नवि तो बेइ न वि जाणे॥ १ ॥" एईए भावत्थो-तेण किंचि दव्वजायं निक्खायगं, तं च से पुत्ताइ न जाणंति, संचाइओ वा से अत्थि, ताहे पुच्छंति कहिं कयं तं दव्वियं ?, जइ न कहेति तो वित्तिच्छेयअंतराइयदोसा, अचियत्तं संकाई वा तेसिं होज्जा-नूणं एस गिण्हिउकामो खइयं वा पेण, तम्हा जइ जाणइ तो कहेति, अह ण याणइ तो भणति-अहंपि ण याणामि, एयाउ दो भासाउ मोत्तुं अन्नं न किंपि तस्स घरकिच्चं काउं कप्पतित्ति। तहा-"जइपज्जुवासणपरो सुहुमपयत्थेसु निच्चतल्लिच्छो। पुव्वोइयगुणजुत्तो दस मासा कालमासे(णे)णं ॥ १॥" १०। समणभूए यत्ति समणभूयपडिमा, चसद्दो समुच्चये तस्सरूवमिदं-"खुरमुंडो लोएण व रयहरणं उग्गहं च घेत्तूण। समणब्भूओ विहरइ, धम्मं काएण फासेंतो ॥ १॥" रयहरणं-पसिद्धं, उग्गहं यत्ति पडिगाहगं, उवलक्खणं च एयं सेससव्वसमणोवगरणस्स, तओ तमादाय समणब्भूओ-साहु-सरिसो सयलसाहुसामायारीसेवणओ विहरइ-गिहाओ निक्खमित्ता गामाईसु हिंडइ त(ज)हा साहू, धम्मंति चरित्तधम्मं समिइगुत्तिमाइयं काएण-सरीरेण, न मणोरहमेत्तेण फासंतो-पालंतो, तथा सव्वं तेण परिच्चत्तं मायाइयसयणवग्गपेज्जबंधणं मोत्तूणं, एवं च से कप्पति नियसयणसंनिवेसं आगंतुं, तत्थगयस्स नायओ जइवि सिणेहाओ अणेसणीयंपि भत्ताइ करेंति, आय-रेण य निमंतंति, अणुवत्तणीया य ते पाएण भवंति, तहावि तं न गेण्हति, भणियं च-" ममकारेऽवोच्छिन्ने वच्चइ संनायपल्लि दट्ठुं जे। तत्थवि जहेव साहू गेण्हइ फासुं तु आहारं ॥१॥" फासुंति-अचेयणं, उवलक्खणत्तओ एसणीयं च। तथा-"पुव्वाउत्तं

सुम्मीसं, अन्नंपि कंजिगाइपाणगाहारं वज्जेति, "दंतवणं तंबोलं हरेडगाई य साइमे सेसं। सेसपयसमाउत्तो जा मासा सत्त विहिपुव्वं ॥ १ ॥" सेसपयसमाउत्तोत्ति संमत्ताइपुव्वुत्तगुणजुत्तो ७। आरंभत्ति सयमारंभवज्जणपडिमा, तस्सरूवमिमं—"वज्जइ सयमारंभं सावज्जं कारवेति पेसेहिं। पुव्वप्पओगओ च्चिय वित्तिनिमित्तं सिढिलभावो ॥ १ ॥" पेसेहिंति—आएसकारीहिं, पुव्वप्पओगओ च्चियत्ति—पयट्टवावारओ चेव, नापुव्ववावारनिओयणेणंति, सिढिलभावो—पेसपओगओऽवि आरंभेसु अतिव्वपरिणामो, "निग्घिणतेगंतेणं एवंवि हु होइ चेव परिचत्ता। एद्दहमेत्तोऽवि इमो वज्जेज्जंतो हियकरो उ ॥ २ ॥" निग्घिणया—निद्दयया एगंतेण—सव्वहेव सयमारंभाणं करणओ परेहि य कारणओ जा निग्घिणया होइ सा एवंपि—सयमारंभवज्जणेऽवि परिचत्ता भवइ। नणु सयमारंभो थेवो अप्पणो एगत्तणओ, परारंभो बहुओ परेसिं बहुत्तणओ, तओ य बहुतमारंभायरणेण अप्पतरारंभवज्जणं कं गुणं पोसेति ?, उच्चते, एद्दहमेत्तोवि—सयंकरणमेत्तयाए थोवो वि इमो सयमारंभो वज्जिज्जंतो हियकरो उ महारोगथोवोवसमदिट्ठंतेणंति। एवं च पुव्वोइयगुणजुत्तो ता वज्जइ अट्ठ जा मासा ८। पेसेत्ति पेसारंभवज्जणपडिमा, तस्सरूवमिमं—"पेसेहि वि आरंभं सावज्जं कारवेति नो गरुयं। अत्थी संतुट्ठो वा, एसो पुण होति विन्नेओ ॥ १ ॥" गरुयंति—महंतं किसिकम्माइयं, एएण आसणदावणाइलहुवावारे न वज्जेतित्ति भणियं होति। तथा "निक्खित्तभरो पायं पुत्ताइसु अहव सेसपरिवारे। थेवममत्तो य तहा सव्वत्थवि परिणओ णवरं ॥ १ ॥" तहा सव्वत्थवि—धणधन्नाइपरिग्गहे, थेवममत्तो य, अयं चेवंभूत उत्तानबुद्धिरपि भवेत्, अत आह परिणउत्ति परिणयबुद्धी णवरं—केवलं। "लोगववहारविरओ बहुसो संवेगभावियमई य। पुव्वोइयगुणजुत्तो नव मासा जाव विहिणा उ ॥ १ ॥" ९। उद्दिट्ठवज्जएत्ति उद्दिट्ठभत्तवज्जगपडिमा, सा पुणरेवंसरूवा—

"उद्दिट्ठकडं मत्तंपि वज्जए किमु य सेसमारंभं। सो होइ उ छुरमुंडो छिहलिं वा धारए को वि ॥ १ ॥" उद्दिट्ठकडंति तंनिमित्त-संसाहियं, छिहली--सिहा, जहा परिव्वायगाणं, तथा-" जं निहियमत्थजायं पुट्ठो नियएहि नवरि सो तत्थ। जइ जाणइ तो साहइ अह नवि तो बेइ न वि जाणे ॥ १ ॥" एईए भावत्थो-तेण किंचि दव्वजायं निक्खायगं, तं च से पुत्ताइ न जाणंति, संचाइओ वा से अत्थि, ताहे पुच्छंति कहिं कयं तं दवियं ?, जइ न कहेति तो वित्तिच्छेयअंतराइयदोसा, अचियत्तं संकाई वा तेसिं होज्जा-नूणं एस गिण्हिउकामो खइयं वा णेण, तम्हा जइ जाणइ तो कहेति, अह ण याणइ तो भणति-अहंपि ण याणामि, एयाउ दो भासाउ मोत्तुं अन्नं न किंपि तस्स घरकिच्चं काउं कप्पतित्ति। तहा-"जइपज्जुवासणपरो सुहुमपयत्थेसु निच्चतल्लिच्छो। पुव्वोइयगुणजुत्तो दस मासा कालमासे(णे)णं ॥ १ ॥" १०। समणभूए यत्ति समणभूयपडिमा, चसद्दो समुच्चये तस्सरूवमिदं-"खुरमुंडो लोएण व रयहरणं उग्गहं च घेत्तूण। समणब्भूओ विहरइ, धम्मं काएण फासेंतो ॥ १॥" रयहरणं-पसिद्धं, उग्गहं यत्ति पडिगाहगं, उवलक्खणं च एयं सेससव्वसमणोवगरणस्स, तओ तमादाय समणब्भूओ-साहु-सरिसो सयलसाहुसामायारीसेवणओ विहरइ-गिहाओ निक्खमित्ता गामाईसु हिंडइ त(ज)हा साहू, धम्मंति चरित्तधम्मं समिइगुत्तिमाइयं काएण-सरीरेण, न मणोरहमेत्तेण फासंतो-पालंतो, तथा सव्वं तेण परिच्चत्तं मायाइयसयणवग्गपेज्जबंधणं मोत्तूणं, एवं च से कप्पति नियसयणसंनिवेसं आगंतुं, तत्थगयस्स नायओ जइवि सिणेहाओ अणेसणीयंपि भत्ताइ करेंति, आयरेण य निमंतंति, अणुवत्तणीया य ते पाएण भवंति, तहावि तं न गेण्हति, भणियं च-" ममकारेऽवोच्छिन्ने वच्चइ संनायपल्लि दट्ठुं जे। तत्थवि जहेव साहू गेण्हइ फासुं तु आहारं ॥१॥" फासुंति-अचेयणं, उवलक्खणत्तओ एसणीयं च। तथा-"पुव्वाउत्तं

कप्पइ, पच्छाउत्तं तु न खलु एयस्स। ओयणभिलंगसूयाइ सवमाहारजायं तु ॥ १ ॥" पुवं-तदागमणकालाओ पढमं आउत्तं-रंधणथालिमाइसु पक्खित्तं पुवाउत्तं, आयनिमित्तमेव रंधेउमाढत्तंति भणियं होति। ओयणं-कूरो भिलंगू-सूवो मसूराभिहाण-विदलधन्नपागविसेसो, तहा-सो भिक्खं हिंडंतो न धम्मलाभेति, तस्स णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठस्स कप्पइ एवं वइत्तए-समणोवासगस्स पडिमापडिवन्नस्स भिक्खं दलयह, तं चेयारूवेणं विहारेणं विहरमाणं कोइ पासेत्ता वएज्जा, के आउसो! तुमंति वत्तवं सिया, स आह-समणोवासए पडिमापडिवन्नए अहमंसीति वत्तवं सिया। "एवं उक्कोसेणं एक्कारस मास जाव विहरेति। एगाहादियरेणं, एवं सवत्थ पाएणं ॥१॥" एवंति खुरमुंडए लुत्तसिरए वा गहियायारभंडगनेवत्थे। "जे इमे समणाणं निग्गंथाणं धम्मे तं सम्मं काएण फासेमाणे" इच्चाइ समयभणियपगारेण उक्कोसेणं एक्कारस मासे मासकप्पाइणा विहारेणं विहरेति, इयरेणंति-जहन्नेणं एगाहादिति एगाहोरत्ताइ, तथा चाह-"सेणं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जहन्नेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा जाव उक्कोसेणं एक्कारस मास" त्ति, पुवपडिमासुवि एगाहाइयं जहन्नं कालमाणं दट्ठवं, अत एवाह-एवं सवत्थ पाएणंति, प्रायोग्रहणात् अंतोमुहुत्ताइसंभवो दंसिओ, एयं पुण एगाहाइयं सवपडिमाणं जहन्नं कालमाणं पडिमापडिवन्नस्स मरणे संजमगहणे वा णायवंति। एत्थ य उवरिमासु सत्तसु पडिमासु आवस्सगचुन्नीए मयंतरमवि अत्थि, तहाहि-"राइभत्तपरिन्नाएत्ति पंचमी ५, सच्चित्ताहारपरिन्नाएत्ति छट्ठी ६, दिया बंभयारी राओ परिमाणकडेत्ति सत्तमी ७, दियावि राओवि बंभयारी असिणाणए वोसट्ठकेसमंसरोमनहेत्ति अट्ठमी ८, सारंभपरिन्नाएत्ति नवमी ९, पेसारंभ-परिन्नाएत्ति दसमी १०, उद्दिट्ठभत्तविवज्जए समणभूए, तस्स णं एवं भवइ सवाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव सवाओ

राइभोयणाओ वेरमणं, खुरमुंडए वा लुत्तकेसए वा अचेलए वा एगसाडिए वा इच्चाइ एकारसमी ११ ”। “भावेऊणत्ताणं उवेइ पव्वजमेव सो पच्छा। अहवा गिहत्थभावं उचियत्तं अप्पणो णाउं ॥ १ ॥”

किं कारणं पडिमाहिं अप्पा भाविज्ञति ?; उच्यते–“गहणं पव्वज्ञाए जओ अजोग्गाण णियमओऽणत्थो। ता तुलिऊणऽप्पाणं धीरा एयं पव्वज्ञंति ॥ १ ॥” जइ वि तुलणं विणावि केसिंचि सत्तविसेसाणं सम्मं पव्वज्ञा संभवेति तहावि सामन्नेणं एस कमो णायसंगउत्ति, तथा चाह–“जुत्तो पुण एस कमो ओहेणं संपयं विसेसेणं। जम्हा असुभो कालो दुरणुचरो संजमो एत्थ ॥ १ ॥” तओ य एवं वट्टमाणस्स एसोऽवि सावगवन्नओ सम्मं घडइ, जहा—

“अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुन्नपावे आसवसंवरनिज्ञरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले असहिज्ञे देवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं णिग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्ञे निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ते अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं संमं अणुपालेमाणे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर(पर)घरप्पवेसे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्ञेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्ञेणं पाडिहारियपीढफलगसेज्ञासंथारएण य पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहि य अप्पाणं भावेमाणे विहरइ”, एस सावगवन्नओ सुगम एव, नवरं आसवा–पाणाइवायाइया, संवरा–पाणाइवायविरमणाइया, निज्ञरा–कम्मुणो देसक्खवणं, किरिया--काइयाइया, अधिकरणाणि–खग्गाइनिवत्तणसंजोयणाणि, बंधो–अहिणवकम्मग्गहणं, मोक्खो–कम्मुणो

सव्वहा खवणं, असहेज्जेत्ति-कुतित्थियपरिपेरिओ संमत्तनिच्चलत्ते न परसाहेज्जं अवेक्खइ, अत एवाह-देवासुरेत्यादि, तत्थ देवा-वेमाणिया, असुरनागा-भवणवइविसेसा, सुवन्नत्ति सोहणवन्ना जोइसियत्ति भणियं होइ, जक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसा-वंतर-भेया, गरुलत्ति गरुडचिंधा सुवन्नकुमारा, गंधव्वमहोरगा-वंतरा, निस्संकिएत्ति निस्संदेहो, निक्कंखिएत्ति मुक्कसेसदंसण-पक्खवाओ, निव्वितिगिच्छेत्ति फलं पइ निस्संको, लद्धट्ठे-अत्थसवणाओ, गहियट्ठे-अत्थावधारणाओ, अहिगयट्ठे-अत्थाव-बोहाओ, पुच्छियट्ठे-संसयसब्भावे, विणिच्छियट्ठे-परमत्थोवलंभाओ, अठमिंजा-धाउविसेसा, ताओ पेमाणुरागेण-जिणवयण-पीइलक्खणकुसुंभाइरागेण रत्ता इव रत्ता जस्स सो तहा, केण सरूवेण ?, तदाह-अयमाउसोत्ति इद पवयणं आउसो ! पुत्ता-ईणं आमंतणं, सेसत्ति धणधन्नपुत्तकलत्तमित्तरज्जकुप्पवयणाइयंति, उट्ठित्ति अमावसा, ऊसियफलिहेत्ति ऊसियं-उन्नयं फलिहरयणमिव फलिहं चित्तं जस्स, जिणधम्मलाभाओ परितुट्ठमाणस इत्यर्थः, अन्ने भणंति-"उस्सिया-अग्गला-ठाणाउ अवणित्ता उद्धीकओ न तिरिच्छो कवाडपच्छभागाउ अवणीओ फलिहो-अग्गला गिहदुवारे जस्स, उदारातिसया अतिसयदाणदाइत्तणेण भिक्खुगपवेसणत्थं अणग्गलियघरदुवार इत्यर्थः, अवंगुयदुवारेत्ति कवाडाईहिं अपिहियघरदुवारो, सद्दंसणलाभेण न कुओवि पासंडिगाउ बीहेइ, सोहणमग्गपरिग्गहेण उग्घाडसिरो अच्छइत्ति भणियं होइ," केई पुण भणंति-"भिक्खुगपवेसणनिमित्तं उदारासयाओ अपिहियघरदुवार" इत्यर्थः, चियत्तोत्ति लोयाण पीइकारग एव अंतेउरे वा परघरे वा पवेसो जस्स स तहा अइधम्मिययाए सव्वत्थअसंकणिज्जोत्ति भणियं होइ, अन्ने भणंति-"चियत्तो पीतिजणगो अंतेउरघरेसु पवेसो सिट्ठजणपविसण जस्स स तहा", अणिसालुत्ति जं भणियं होइ, अहवा चियत्तो-चत्तो अंतेउरघरेसु परसं-

तिएसु एवमेव पवेसो जेण, ण तहाविहपयोयणं विणा परघरं पविसइत्ति भणियं होइ, पायपुंछणंति रयोहरणं, ओसहभेसज्जेणंति ओसहं–एगदव्वसरूवं, भेसज्जं–अणेगदव्वसमुदायरूवं, पाडिहारियं नाम जं कज्जसम्मत्तीए पच्चप्पिणिज्जइ, पीढं–आसणं, फलगं–अवट्ठंभणकट्ठं, सेज्जा–वसही, अहवा जत्थ पसारियपाएहिं सुव्वइ सा सेज्जा, संथारो लहुतरं सयणमेव, सीलव्वयाणि–अणुव्वयाणि गुणा–गुणव्वयाणि विरमणाणि–रागाइविरइपगारा पच्चक्खाणाणि–नमोकारसहियाइणि पोसहोववासो-अट्ठमिमाइ-पव्वेसु आहाराइपरिच्चायोत्ति । "एवं च विहरिऊण दिक्खाभावंमि चरणमोहाओ । पत्तंमि चरमकाले करेज्ज कालं जहा विहिणा ॥ १ ॥ सावगधम्महिगारेवि एत्थ जइगोयरंपि तं भणिमो । तब्भणणा इयरो वि हु विसेसओ साहियो होइ ॥ २ ॥ मरणं च होइ सपरक्कमाण अपरक्कमाण य तहेव । एक्केक्कंपि य दुविहं निव्वाघाए य वाघाए ॥३॥" तत्थ वाघाओ जहा–अच्छभल्लेण कन्ना ओट्ठा य खइया, रोगेण वा वाघाओ हवइ, सो वाघाओ दुविहो–कालसहो होइ इयरो य । कालसहो नाम जत्थ चिरेण मरइ, जहा–पूइगोणसेण डक्को तं डक्कालमतिकम्म वीसइरत्ताइसु मरइ, इयरो नाम तद्दिवसमेव मरिउकामो भत्तं पच्चक्खाइ, निव्वाघाए पुण एस विही पाएण भत्तपच्चक्खाणस्स गणनिसिरणं कायव्वं, ततो परगणे गंतुं भत्तपच्चक्खाणं कायव्वं, किं कारणं तवोकिलन्ता संलिहियसरीरा परगणं गच्छंति ?, भन्नइ–आयरियस्स सीसाणं आयरियाणुरागेण रोयणं कंदणाईणि दट्ठुं सोउं च कारुन्नमुप्पज्जेज्जा, एवं च झाणवाघाओ होज्जा, तहा–"सगणे आणाहाणी अप्पत्तियं होइ एवमाईयं । परगणे गुरुकुलवासो अप्पत्तियवज्जिओ होइ ॥ १ ॥" आणाहाणित्ति ठवियगणहरस्साणं केई अकरेमाणे दट्ठूण अपत्तियं उप्पज्जंति । इयाणिं संलेहणा—

" संलेहणा उ तिविहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना य। बारस वासुक्कोसा सेसपमाणं उवरि वोच्छं ॥ १ ॥ " तत्थुक्कोसिया चत्तारि वरिसाणि विचित्तं तवं काउं पारणए सविगइं वा निव्विइयं वा भुंजइ, विचित्तं नाम कयाइ चउत्थं कयाइ छट्ठं कयाइ अट्ठमं, एवं दसमदुवालसाईणिवि, अन्नाणि चत्तारि वरिसाणि विचित्तं चेव तवं काउं पारणए निव्वीयं निद्धपणीयवज्जियं भुंजइ ८, अन्नाणि दोन्नि वरिसाणि चउत्थतवं काउं आयामेण पारेइ १०, एगारसमस्स वरिसस्स आइल्ला छम्मासा छट्ठं तवं काउं आयामेणं परिमियं भुंजइ, अन्ने य छम्मासा अट्ठमदसमाइविगिट्ठतवं काउं मा खिप्पमेव मरिहित्तिकाउं पारणए जहिच्छाए आयंबिलं भुंजइ ११, अन्नं एगं वरिसं कोडीसहियं काउं पढमए पारणए आयंबिलं भुंजइ, बीए पारणए निव्वीयं भुंजइ, तइए आयंबिलं, चउत्थे निव्वीयं, एवं एगंतरियं पारणएसु भुंजइ, कोडिसहियं नाम पढमदिवसे अभत्तट्ठं बीयदिवसे पुणो अभत्तट्ठं काउं पारेइ, एवं च चउत्थं कोडीसहियं, एवं छट्ठट्ठमाइकोडीसहियाणिवि, अहवा–एगं चउत्थं काउं पारेइ, तइयदिवसे पुणो अभत्तट्ठं काउं चउत्थदिणे पारेइ एयं च चउत्थं कोडीसहियं, एवं छट्ठट्ठमाइ कोडीसहियंपि भाणियव्वं, पारणएवि जहासत्तीए एक्केक्कं कवलं हावेइ जा एक्केण पारेइ, तओवि एक्केक्कसित्थं अवणेइ, जाव एक्कसित्थं आहारेइ १२, बारसमवरिसस्स य अंतिमेसु चउसु मासेसु एक्केक्कंमि पारणए एगंतरियं तेल्लगंडूसं चिरं धरित्ता खेलमल्लए छारे छुभित्ता वयणं धोवेइ, किं कारणं तेल्लगंडूसं धरेइ ?, मा वाएण मुहंमि संमिलिए मरणकाले नमोक्कारं न सक्केहि काउत्ति। " उक्कोसगा उ एसा संलेहा मज्झिमा जहन्ना य। संवच्छरछम्मासा एमेव य मासपक्खेहिं ॥ १ ॥ " जो उक्कोससंलेहणविही से मज्झिमजहन्नासुवि संलेहणासु जहक्कमं मासद्धमाससंखाए कायव्वो, अत एवाह–एमेव य मासपक्खेहिंति–" एत्तो एगयरेणं संलेहेणं खवेत्तु अप्पाणं।

कुज्जा भत्तपरिन्ना इंगिणिपाओवगमणं वा ॥ १ ॥" जइ संलेहणा न कज्जइ तो अट्टज्झाणं उप्पज्जइ, जओ भणियं-" देहंमि असंलिहिए सहसा धाऊहिं खिज्जमाणीहिं । जायइ अट्टज्झाणं सरीरिणो चरिमकालंमि ॥ १ ॥" न पुण अगीयसमीवे अणसणं कायव्वं, जओ आह-" नासेइ अग्गीओ चउरंगं सव्वलोयसारंगं । नट्ठंमि य चउरंगे न हु सुलभं होइ चउरंगं ॥ १ ॥ चउरंग-माणुसत्तसुइसद्धासंजमवीरीयलक्खणं, " किह नासेज्ज अगीओ खुहापिवासाहिं पीडिओ सो उ । ओभासइ रयणीए तो निद्ध-म्मोत्ति छड्डेज्जा ॥ २ ॥ अंतो वा बाहिं वा दिया व राओ व सो परिच्चत्तो । अट्टदुहट्टवसट्टो उन्निक्खमणाइ कुज्जाहि ॥ ३ ॥ मरिऊणऽट्टज्झाणा गच्छइ तिरिएसु वणयरेसुं वा । संभरिऊण य रुट्ठो पडिणीयत्तं करेज्जाहि ॥ ४ ॥ ॥ तम्हा गीयत्थेणं पवयणगहियत्थसव्वसारेणं । निज्जवएण समाही कायव्वा उत्तमट्ठंमि ॥ ५ ॥ तहा गीयत्थस्सवि असंविग्गस्स पासे न कायव्वं, जओ तस्स समीवे-"आहाकम्मियपाणगपुप्फा सीया य बहुजणे नायं । सेज्जा संथारोवि य उवहीवि य होइ अविसुद्धो ॥ ६ ॥ असंविग्गो बहुजणस्स नायं करेइ-भत्तपच्चक्खाउत्ति, ताहे जणो पुप्फाणि आणेइ, सीयत्ति उदगफुसियाहिं सिंचेइत्ति, तम्हा संविग्गसमीवे कायव्वंति । तहा-" एक्कंमि निज्जवए विराहणा होइ कज्जहाणी य । सो सेहाविय चत्ता पावयणं चेव उड्डाहो ॥ ७ ॥" तहा भत्तपच्चक्खाणकाले आयरिएण सयं आलोएयव्वं, नेमित्तिओ वा देवया वा पुच्छियव्वा, जाव भत्तपच्च-क्खाणं समप्पइ ताव सिवाईणि किं अत्थि उय नत्थि ?, तहा किं पच्चक्खाणस्स पारगो होही नवत्ति ?, जइ पारगो तो इच्छियव्वो, इहरा पडिसेहिंति, तहा आयरिएणं गणो पुच्छियव्वो, पुच्छासु गुणदोसविभासा, तहा जो भत्तं पच्चक्खाइ तेण गणो गणेण आयरिएण वा सो परिक्खियव्वो, तत्थ गणस्स-" कलमोयणो य पयसा अन्नं व सभाव अणुमय जस्स ।" गणेण

परिक्खा जहा–"उवणीयं जो कुच्छइ तंतुअलुद्ध पडिच्छंति ॥ ८ ॥" आयरिएणवि सो परिक्खियव्वो जहा–"अज्जो ! संलेहिओ किं कओ उ न कउत्ति ? एव उइयंमि। भंतुं अंगुलि दावे पेच्छह ता किं कओ न कओ ॥ ९ ॥ न हु ते दव्वसंलेहं, पुच्छे पामामि तं किस(किसत्तं ते)। कीम ते अंगुली भग्गा ?, भावं संलिहमाउरं ! ॥ १० ॥ इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुरु। न चेयं ते पसंसामो, किसं साहु सरीरगं ॥ ११ ॥ तहा भत्तं पच्चक्खाइउकामेण पव्वज्जाइअइयारो आलोएयव्वो, तहाहि–" आयरियपायमूलं गंतूणं सइ परकमे ताहे। सव्वेण अत्तसोही कायव्वा एस उवएसो ॥ १२ ॥ जह सुकुसलोवि वेज्जो अन्नस्स कहेइ अप्पणो वाहिं। वेज्जस्स उ सो सोउं तो परिकम्मं समारभइ ॥ १३ ॥ जाणंतेणवि एवं पायच्छित्तविहिमप्पणा निउणं। तहवि य पागडतरयं विगडेयव्वं भवे नियमा ॥ १४ ॥ छत्तीसगुणसमन्नागएण तेणवि अवस्स कायव्वा। परसक्खिया विसोही सुट्ठुवि ववहारकुसलेणं ॥ १५ ॥ तम्हा " आयाराईगुणड्ढाणं गुरूणं गुणभाविओ। काऊणं वंदणाइयं आलोएज्ज वियक्खणो ॥१६॥ सुगुरूणं अलाभंमि आलोएज्जाऽववायओ। संविग्गपक्खियाणं तु गीयत्थाणं तु अंतिए ॥ १७ ॥ तयभावम्मि आलोए सिद्धे काऊण माणसे। आराहणा ससल्लाणं जओ नत्थित्ति आगमो ॥ १८ ॥ लज्जाए गारवेण य बहुसुयमएण वावि दुच्चरियं। जे न कहिंति गुरूणं नहु ते आराहगा होंति ॥ १९ ॥ गारवपंकनिबुड्डा अइयारं जे परस्स न कहेंति। दंसणनाणचरित्त ससल्लमरणं हवेइ तेसिं ॥ २० ॥ आलोयणं अदाउं सइ अन्नमिवि तहऽप्पणा दाउं। जेविय करेंति सोहिं ते वि ससल्ला मुणेयव्वा ॥२१॥ एयं ससल्लमरणं मरिऊण महाभए दुरंतंमि। सुइरं भमंति जीवा दीहे संसारकंतारे ॥ २२ ॥ नवि तं सत्थं व विसं व दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो। जंतं व दुप्पउत्तं सप्पो व पमाइओ कुद्दो ॥ २३ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं उत्तमट्ठकालंमि। दुलह-

बोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ २४ ॥ आलोइयंमि इमे गुणा भवंति–" लहुया तहाईजणणं अप्पपरनिवत्ति अज्जवं सोही । दुक्करकरणं विणओ(आणा) निसल्लत्तं च सोहिगुणा ॥ २५ ॥ अइयारभारोयारणेण लहुओ भवइ, अणालोइए ससल्लोमित्ति सरीरमणोदाहस्स आलोइए पसमाउ पल्हातो सीइभूओ भवइ, सेसं सुगमं, कहं पुण आलोएयव्वं ? जह–" बालो जंपंतो कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोएज्जा मायामयविप्पमुक्को उ ॥ २६ ॥ उप्पन्ना २ माया अणुमग्गओ निहंतव्वा । आलोयणनिंदणगरिहणाहिं न पुणो य बी(का)यंति ॥ २७ ॥ नाणनिमित्तं आसेवियं तु वितहं परूवियं वावि । चेयणमचेयणं वा दव्वं गहियं अकप्पं तु ॥ २८ ॥ नाणनिमित्तं अद्धाणमेइ ओमेऽवि अच्छइ तदट्ठा । नाणंति आगमिस्सं कुणइ परिकम्मणं देहे ॥ २९ ॥ पडिसेवइ विगइओ मेज्झ दवे व एसइ पिबइ । वायंतस्स उ किरिया कया उ जहसत्ति जयणाए ॥ ३० ॥ एमेव दंसणंमि वि सद्दहणा नवरि तत्थ नाणत्तं । एसणइत्थीदोसो वयंति चरणासिया सेवा ॥ ३१ ॥ एवमादि, "जे ताव संभरेज्जा अइयारा ते तहेव आलोए । जे पुण न संभरेज्जा ओहेणं ते समालोए ॥ ३२ ॥ जे मे जाणंति जिणा अवराहा तेसु तेसु ठाणेसु । तेऽहं आलोएउं उवट्ठिओ सव्वभावेणं ॥ ३३ ॥ एवंपि हु वियडंतो विसुद्धभावपरिणामसंजुत्तो । आराहओ उ भणितो गारवमायाहि परिमुक्को ॥ ३४ ॥ " केरिसए पुण ठाणे पच्चक्खायव्वं ?, जत्थ गंधव्विया संगीयं करिंति सिक्खंति वा तत्थ न ठायव्वं, तेसिं समीवे वा, जओ तत्थ झाणवाघाओ भवइ, निदाणं वा करेज्जा, तहा हत्थिसालाए वा तिलपीलणसालाए वा कुंभकारसालाए वा रयगसालाए वा न ठायव्वं, जओ एयासु कम्मं करेंता अकरेंता य गायंति कंदप्पं च करेंति, रायसंदमणपहे वा न ठायव्वंति, नियाणकरणदोसाउत्ति, एवं चारगचट्टमालकल्लालारणाईणि[illegible] झाण[illegible]यहेऊणि [illegible]णि, तहा

पंचण्हं इंदियाणं जत्थ इट्ठाणिट्ठविसया न संभवंति तत्थ चाउसालाईसु दुवे वसहीओ घेत्तुं एगत्थ भत्तपच्चक्खायओ ठविज्जइ एगत्थ सेसगच्छिल्लया, किं कारणं ?, मा असणाइणं गंधेणं भत्तपच्चक्खायगस्स अभिलासो होही, जओ—" भुत्तभोगी पुरा जोवि गीयत्थो वि य भाविओ। संते साहारगंधेसु सो वि खिप्पं तु खुब्भइ ॥ ३५ ॥ निज्जवगा गाहा—"पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिवज्जियाउ निज्जवगा। पियधम्मा भवभीरूगुणसंपन्ना अपरितंता ॥ ३६ ॥ गुणसंपन्ना नाम जे विप्परिणयंपि पुणो पन्नवेंति तहातहा समाहिं च उप्पाइंति, किं तस्स ते करेंति ? केवइया वा भवंति ?, भन्नति जे तं उवत्तंति परियत्तंति य ते चत्तारि, जे अब्भंतरदारमूले तेवि ४, संथारकारया ४, तस्स धम्मकहेंतगा ४, वाइणो ४, अग्गओ जे अच्छंति ते ४, भत्तं जोग्गं जे आणंति ते ४, पाणयं जे आणेंति ४, उच्चारपरिट्ठवगा ४, पासवणपरिट्ठवगा ४, बाहिं धम्मकहिणो ४, चउसुवि दिसासु साहस्सिमल्ला ४, एए बारस चउक्कया अडयालीसं (४८) भवंति, "जो जारिसओ कालो भरहेरवएसु होइ वासेसु। ते तारिसया तइया अडयालीसं तु निज्जवगा ॥३७॥" एए अडयालीअं एक्केकपरिहाणीए परिहायमाणा जाव दोन्नि सिट्ठा तइयओ भत्तपच्चक्खायतो चेव, एएसिं दोण्हं जणाणं एगो भत्तपाणयस्स वच्चइ बीउ भत्तपच्चक्खाणिस्स पासे अच्छइ। तहा भत्तपच्चक्खायगस्स चरिमकाले आहारो दायवो, तहाहि—"तस्स य चरिमाहारो इट्ठो दायवो तण्हछेयट्ठा। सवस्स चरिमकाले अईव तण्हा समुज्जो(पज्जइ) ॥ ३८ ॥ विगइओ सवओयण अट्ठारसवंजणा य पाणं च। अणुपुवीविहारीणं च समाहिकामाण उवहरिउं ॥ ३९ ॥ को पुण गुणो भवइ ? चरिमाहारेण दिन्नेण भंते !, "तण्हा छेयंमि कए न तस्स तहियं पवत्तए भावो। चरिमं च एस भुंजइ सद्धाजणणं दुपक्खेवि ॥ ४० ॥ त्ति, भत्तपच्चक्खायगस्स निज्जवगाण य कहं पुण सद्धाजणणं ?, सो चिंतेइ अहं अब्भुज्जयमरणसमुद्दत्ती

पत्तो दुल्लभं एयं, नित्थिन्नोऽहं संसाराउत्ति धणियं झाणोवगओ भवइ, निज्जवगाणवि एवमुपज्जइ–कया णं अम्हेवि एवमब्भु-ज्जयमरणसमुद्दतीरं पत्ता होहामोत्ति । तहा–केरिसी निज्जरा तस्स भवइ ?, "कम्ममसंखेज्जभवं खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो । अन्नयरंमि वि जोगे सज्झायंमी विसेसेणं ॥ ४१ ॥" असंखेज्जभवंति जेण असंखेज्जभवे संसारे भामिज्जइ, अहवा जं असंखेज्जेहिं भवेहिं बद्धं, अन्नयरंमि वि, जोगेत्ति पडिलेहणाइवावारे १, एवं काउस्सग्गे विसेसेणं २, वेयावच्चे विसेसेणं ३, विसेसओ उत्त-मट्ठंमि ४, तहा–संथारो उत्तमट्ठे भूमिसिलाफलगमाइ नायव्वो, भूमीए पाहाणसिलातले वा दोसुवि अज्झुसिरेसु, तत्थ उद्धट्ठि-अयओ वा उवविट्ठो वा निसन्नओ वा जहा समाहीए अच्छइ, फलए वा एगंगिए, असइ अणेगंगिएवि, असइ कंबीसुवि । इयाणिं अत्थुरणं–संथारपट्टमाई दुगचीराओ बहु वावि संथारओ सउत्तरपट्टओ पत्थरणं एयं उस्सग्गेणं, अववाए पुण जइ अइखरं नाहियासेइ ताहे कप्पा पत्थरिज्जंति, असइ तणाणि अज्झुसिराणि, तहावि अणहियासेंतस्स कंबलओ पावारओ वा पत्थरिज्जइ पाउणिज्जइ वा सीए, तूलीए वा पत्थरिज्जइ, पल्लंकमाइसुवि पत्थरिज्जइ, "संथारओ उ मउओ समाहिहेतुं तु होइ कायव्वो । तहविय अविसहमाणो समाहिहेउं उदाहरणा ॥ ४२ ॥ धीरपुरिसपन्नत्ते सप्पुरिसनिसेविए अणसणम्मि । धन्ना सिलाय-लगया निरवेयक्खा निवज्जंति ॥ ४३ ॥ जइ ताव सावयाउलगिरिकंदरविसमकडदुग्गेसु । साहिंति उत्तमट्ठं धिइधणिय-सहायगा धीरा ॥ ४४ ॥ किं पुण अणगारसहायगेण अन्नोन्नसंगहबलेण । परलोगिगे न सक्का साहेउं उत्तमे अट्ठे ॥ ४५ ॥" परलोगिगेत्ति परलोगत्थिणा । "जिणवयणमप्पमेयं महुरं कन्नामयं सुणंतेणं । सक्का हु साहु मज्झे संसारमहोदहिं तरिउं ॥ ४६ ॥ सव्वे सव्वद्धाए सव्वण्णू सव्वकम्मभूमीसु । सव्वगुरुसव्वमहिया सव्वे मेरुं[सिगं]मि अभिसित्ता ॥ ४७ ॥ सव्वाहिवि लद्धीहिं

सवेवि परीसहे पराइत्ता । सवेवि य तित्थयरा पाओवगया उ सिद्धिगया ॥ ४८ ॥ अवसेसा अणगारा तीयपडुपन्नऽणागया सवे । केई पाओवगया पच्चक्खाणिंगिणिं केई ॥ ४९ ॥ सवाओ अज्जाओ सवेवि य पढमसंघयणवज्जा । सवे य देसविरया पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥ ५० ॥ तहा–सवसुहप्पभवाओ जीवियसाराउ सवजणियाउ । आहाराओ रयणं न विज्जई उत्तमं लोए ॥ ५१ ॥ विग्गहगए य सिद्धे य मुत्तुं लोगंमि जत्तिया जीवा । सवे सवावत्थं आहारे होंति आयत्ता ॥ ५२ ॥ तं तारिसयं रयणं सारं जं सवलोगरयणाणं । सवं परिच्चइत्ता पाओवगया पविहरंति ॥ ५३ ॥ तहा–निप्फेडियाणि दोन्निवि सीसा वेढेण जस्स अच्छीणि । न य संजमाओ चलिओ मेयज्जो मंदरगिरिव ॥ ५४ ॥ जो कुंचगावराहे पाणिदया कुंचगं तु नाइक्खे । जीवियमणपेहंतं मेयज्जरिसिं नमंसामि ॥ ५५ ॥ उण्हंमि सिलावट्टे जह तं अरहंनएण सुकुमालं । विग्घारियं सरीरं अणुचिंतेज्जा तमुच्छाहं ॥ ५६ ॥" तथाहि—

तगराए नयरीए अरहमित्तो णाम आयरिओ । तस्स समीवे दत्तो णाम वाणियओ भद्दाए भारियाए पुत्तेण य अरहण्णत्तेण सद्धिं पवइयो, सो तं खुड्डगं ण कयाइ भिक्खाए हिंडावेइ, पढमालियादीहिं किमिच्छएहिं पोसेति, सो सुकुमालो साधूण अप्पत्तियं, ण तरति किंचि भणिउं, अण्णया सो खंतो कालगतो, साधूहिं तस्स दो तिण्णि वा दिवसे दातुं भिक्खाए ओतारितो, सो सुकुमालसरीरो गिम्हे उवरिं हेट्ठा य डज्झंतो पस्सेयतण्हाभिभूतो छायाए वीसमंतो पउत्थपइयाए वणियमहिलाए दिट्ठो, ओरालसुकोमालसरीरोत्ति काउं तीसे तहिं अज्झोववातो जातो, चेडीय सद्दाविओ, किं मग्गसि ?, भिक्खं, दिन्ना से मोयगा, पुच्छितो–कीस तुमं धम्मं करेसि ?, भणइ–सुहणिमित्तं, भणति–तो मए चेव

समाणं भोगे भुंजाहि, सोऽवि उण्हेण तज्जितो उवसग्गिज्जंतो य पडिभग्गो, भोगे भुंजति, सो साहूहिं सवेहिं मग्गितो, न दिट्ठो, अप्पसागरियं पविट्ठो, पच्छा से माता उम्मत्तिया जाता पुत्तसोगेण, णगरं भमंती अरहण्णयं विलवंती जं जहिं पासति तं तहिं सव्वं भणति—अरहण्णतो दिट्ठोत्ति ?, एवं विलवमाणी भमति, जाव अण्णया तेण ओलोगणगतेण दिट्ठा, पच्चभिण्णाया, ताधे च ओयरित्ता पाएसु पडिओ, तं पेच्छिऊण तहेव सच्छचित्ता जाता, ताए भण्णति—पुत्त ! पव्वयाहि, मा दोग्गतिं जाहिसी, सो भणति—ण उ तरामि काउं संजमं, जइ परं अणसणं करेमि, एवं करेहि, मा पुण अस्संजतो भवाहि, मा संसारं भमिहिसि, पच्छा सो ताहेव तत्ताए सिलाए पाओवगमणं करेति, मुहुत्तेण सुकुमालसरीरो उण्हेण विलीणो, पुव्विं तेण णाहितासितो पच्छा अहियासितो । एवं अहियासिअवं ।

“ जंतेण करकएण वा सत्थेहिं व सावएहिं विविहेहिं, विद्धंसंते काए ईसिंपि अकंपणा समणा ॥ १ ॥ तहा—जाओ परवसेणं संसारे वेयणाउ घोराओ । पत्ताउ नारगत्ते अहुणा ताओ विचिंतेज्जा ॥ २ ॥ एण्हिं सयंवसस्स उ निरुवमसोक्खावसाण मुहकडुयं । कल्लाणमोसहंपि व परिणामसुहं न तं दुक्खं ॥ ३ ॥ संबंधिबंधवेसु य न य अणुराओ खणंपि कायव्वो । ते च्चिय होंति अमित्ता जह जणणी बंभदत्तस्स ॥ ४ ॥ वसिऊणवि सुहिमज्झे वच्चइ एगागिओ इमो जीवो । मुत्तूण सरीरघरं जह कण्हो मरणकालंमि ॥ ५ ॥ नरएसु वेयणाओ अणोवमा सीयउण्हवेगाउ । कायनिमित्तं पत्ता अणंतक्खुत्तो बहुविहाओ ॥ ६ ॥ देवत्ते माणुस्से पराभियोगत्तणं उवगएणं । दुक्खपरिकिेसविही अणंतखुत्तो समणुभूया ॥ ७ ॥ विगलिंदियपंचिंदियतिरिक्खकायंमि णेगसंठाणे । जंमणमरणरहट्टं अणंतखुत्तो गओ जीवो ॥ ८ ॥ घोरंमि गब्भवासे कलमलजंबालअसुइबीभच्छे ।

वसिओ अणंतखुत्तो जीवो कम्माणुभावेणं ॥ ९ ॥ जं असियं बीभत्थं असुइघोरंमि गब्भवासंमि । तं चिंतेऊण सया मोक्खंमि मइं निवेसेज्जा ॥ १० ॥ वसिऊण सुरनरीसरचामीयररिद्धिमाणहरघरेसु । वसिओ पुणो वि सोच्चिय जोणिसहस्संधयारेसु ॥ ११ ॥ मोत्तूण वि भोगसुहं सुरनरखयरेसु पुण पमाएण । पीयइ नरएसु भेरवकलकलतउतंबपाणाइं ॥ १२ ॥ सोऊण सुइय-नरवइभवंमि जयसद्दमंगलरवोघं । सुणइ नरएसु दुहयरअक्कंदुद्दामसद्दाइं ॥ १३ ॥ निहण हण गिण्ह दह पय उव्विंध पविंध-बन्धरुघाहिं । पच्चफाले लोले घोले थूरे खारेहिं सिंचेहा ॥१४॥" एवमाइ संवेगनिव्वेयवयणेहिं तस्स समाही कायव्वा । तहा—

जइ कोइ छुहाए पिवासाए वा पीडिउत्ति भत्तं पाणगं वा मग्गेज्जा, तत्थ किं पढमबीयपरीसहेहिं पीडिओ ओभासइ किंवा पंतदेवयाहिट्ठिउत्ति जाणणानिमित्तं सो भन्नइ–को तुमं ? किं गीयत्थो अगीयत्थो वा ? किं दिवसं अह राइ ?, ताहे जइ सो अवितहं भणइ तो नायव्वं न एस पंतदेवयाहिट्ठिओ, किं तु छुहादिकिलंतो ओभासइत्ति, तओ जं ओभासइ तं दायव्वं । एत्थ चोयगो भणइ–किं कारणं पच्चक्खाए पुणोवि दिज्जइ ?, उच्चते–हे चोयग ! परीसहसेन्न तेण जेयव्वं, तओ तप्पराजयनिमित्तं जोहस्सेव कयवभूओ पच्चक्खाएवि तस्स आहारो दायव्वो–"जम्हाहारेण विणा समाहिकामो न साहए तं तु । तम्हा समाहिहेउं दायव्वो तस्स आहारो ॥ १ ॥ सरीरमुज्झियं जेण को संगो तस्स भोयणे ? । समाहिसंधणाहेउं दिज्जए सो उ अंतए ॥२॥" तहा—

तस्स अब्भुज्जयमरणमब्भुवगयस्स जइ दुविहं चिंधं न कज्जइ तो मिच्छत्तं गच्छेज्जा, जहा–सो उज्जेणीसावओ, मिच्छत्तं च गयस्स पव्वज्जापरिपालणं अब्भुज्जयमरणं च निरत्थगं भवति । सरणमुवगयाणं सहायगत्तं च न कयं भवइ पायच्छित्तं च पडियरगा पावंति, तम्हा चिंधं कायव्वं, तं च दट्ठूण अप्पणो परेसिं च कल्लाणं करेइ, तं पुण दुविहं–सरीरे उवगरणे य,

तत्थ सरीरे भत्तं पच्चक्खाइउकामेण लोओ कायव्वो, जइ पच्चक्खाएवि चिरजीवित्तणेण वड्ढंति वाला तो धुवलोयं करेइ कारवेइ वा, उवगरणे पुण रयहरणं पासे कज्जइ, चोलपट्टओ अग्गओ नियंसिज्जइ, मुहपोत्तियाए मुहं बज्झइत्ति। तहा-

सो भत्तपच्चक्खायओ गिहीणं न पगासिज्जइ, किं कारणं ?, पगासिए जइ न नित्थरइ तओ सव्वेसिं लहुत्तं भवइ। को पुण तत्थ अनिव्वहणे विही ?, भन्नइ-सो एगो वा होज्ज अणेगा वा, तत्थ जो एगो सोवि नाओ अनाओ वा होज्ज, एवं बहुगावि, तत्थ बहुएसु जो नाओ न नित्थरइ, तस्स ठाणे जो अनाओ सो जवणियंतरिओ ठविज्जइ, एगो पुण नाओ जइ न नित्थरइ तो जइ बीओ संलेहणं करितो अत्थि सो तत्थ ठावेयव्वो, तस्संतरेण चिलिमिली कायव्वा, जेहिं नाओ दिट्ठो य ते जइ वंदगा एज्ज तो तेसिं न दंसियव्वो, मा जाणिए उड्डाहं करेज्ज, ते भन्नंति-बाहिं चेव ठिया वंदह, समाहीए खमगो अच्छइत्ति, अह नत्थि संलिहंतो अन्नो ताहे वसभो ठविज्जइ, एत्थवि चिलिमिलिमाइजयणा सा चेव कायव्वा, ताहे बीए तइए वा दिवसे भन्नइ-रत्तिं कालगतो सो परिठविओ य, जो सो न निच्छिन्नो सो पच्छन्नो धरिज्जइ, गिलाणपडिकम्मं च कीरइ, जाव पढमालियं करेइ, जो तं खिसइ-भत्तपच्चक्खाणपडिभग्गोत्ति तस्स पच्छित्तं, ताहे सयं चेव निग्गच्छति, अहवा सो सहाओ अन्नत्थ पेसिज्जइ, मा तत्थ अच्छंतो जणेण जाणिज्जिही, जो न नाउ सो जइवि न नित्थरेज्ज तहवि नत्थि उड्डाहो, एवं सपरक्कमं भणियं, एवं अपरक्कमंपि एएण चेव विहिणा भाणियव्वं, नवरं खीणजंघाबलो वुड्ढत्तणेण मरिउकामो मगच्छे भत्तं पच्चक्खाइ, अहवा इमेहिं पगारेहिं मरिउकामो भत्तं पच्चक्खाइज्जा, तं जहा-विसं पडणीएण दिन्नं होज्जा, विसूइयाए वा अकाल्लिभूओ आयंको वा कोवि तहाविहो जाओ, दुब्भिक्खे वा भत्ते अलब्भमाणे, जहा-एगत्थ साहूहिं अच्छंतेहिं ताव न नायं जाव

दुब्भिक्खं पत्तं, तओ निग्गंतुं न सक्केन्ति, तओ कोसलगसावएण ते समासासिया–सव्वं दुब्भिक्खकालं अहं तुज्झं जोगं वहिस्सामि, वुज्झंते य जोगे पुत्तो से पंतो चिंतेइ–सव्वं दव्वं विणासिहि–जइ मे पिया जीवीही, तओ पिया विसेण उद्दवित्ता, साहूणं छिन्नं जोग्गासणं, एएहिं कारणेहिं सगच्छे चेव भत्त पच्चक्खायव्वं, असक्केंतस्स इमो विही–उस्सासनिरोहं वा करेज्ज, गद्धपिट्ठं वेहणसं वा करेज्जा, एवं असिवविज्जुघायादिसु दट्ठव्वं। तहा–" पुव्विं सीयलगोवि हु पच्छासंजायतिव्वसंवेगो। आलोयणं तु दाउं करेइ विहिणा अणसणं तु ॥ १ ॥ एत्थ य आहारो खलु उवलक्खणमेव होइ नायव्वो। वोसिरइ तओ सव्वं उवउत्तो भावसल्लंपि ॥ २ ॥ अण्णंपि व अप्पाणं संवेगाइसयओ चरमकाले। मन्नइ विसुद्धभावो जो सो आराहओ भणिओ ॥ ३ ॥ वज्जइ य संकिलिट्ठं विसेसओ नयरभावणं एसो। उल्लसियजीववीरिओ तओ य आराहणं लहइ ॥ ४ ॥"

" कंदप्पदेव १ किब्बिस २ अभियोगा ३ आसुरा य ४ संमोहा ५। एसा उ संकिलिट्ठा पंचविहा भावणा भणिया ॥ १ ॥ जो संजओवि एयासु अप्पसत्थासु वट्टइ कहिंचि। सो तव्विहेसु गच्छइ सुरेसु मइओ चरणहीणो ॥ २ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए दुयसीले यावि हासणकरे य। विम्हावितो य पर कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ ३ ॥ कहकहकहस्स हसणं कंदप्पो अणिहुगा य संलावा। कंदप्पकहाकहणं कंदप्पुवएससंसा या ॥ ४ ॥ भुनयणवयणदसणच्छएहिं करपायकन्नमाईहिं। तं तं करेइ जह हस्सए परो अप्पणो अहसं ॥ ५ ॥ भासइ दुयं दुयं गच्छए य दरिउव्व गोविसो सरए। सवद्दवद्दकारी फुट्टइ व ठिओ वि दप्पेणं ॥ ६ ॥ वेसवयणेहिं हासं जणयंतो अप्पणो परेसिं च। अह हासणोत्ति भन्नइ घयणोव्व छले नियच्छंतो ॥ ७ ॥ सुरजालमाइएहिं तु विम्हयं कुणइ तव्विहजणस्स। तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टु कुहडएसुं च ॥ ८ ॥"

दारं । "नाणस्स केवलीणं धम्मायरियाण सव्वसाहूणं । भासं अवन्नमाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥ १ ॥ दारं । कोउगभूई-कम्मे पसिणापसिणे निमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २ ॥ अणुबद्धविग्गहोऽविय संसत्ततवो-निमित्तमाएसो । निक्किवनिरणुकंपो आसुरियं भावणं कुणइ ॥ ३ ॥ दारं । उम्मग्गदेसओ मग्गदूसओ मग्गविप्पडिवत्ती । मोहेण य मोहित्ता संमोहं भावणं कुणइ ॥ ४ ॥ एयाउ भावणाओ भावित्ता देवदोग्गइं जंति । तत्तोऽवि चुया संता पडंति भव-सागरमणंतं ॥ ५ ॥ एयाउ विसेसेणं परिहरइ चरणविग्घभूयाओ । एयनिरोहाउ च्चिय सम्मं चरणं पि पावेइ ॥ ६ ॥" एयं भत्तपच्च-क्खाणं । इयाणिं इंगिणिमरणं—

"इंगियमरणविहाणं आपवज्जं तु वियडणं दाउं । संलेहणं च काउं जहा समाहीए जहा कालं ॥१॥ पच्चक्खाइ आहारं चउव्विहं नियमओ गुरुसगासे । इंगियदेसंमि तहा चेट्ठं पि हु इंगियं कुणइ ॥२॥ उव्वत्तइ परियत्तइ काइयमाईसु होइ उ विभासा । किच्चपि अप्पणच्चिय जुंजइ नियमेण धिइबलिओ ॥ ३ ॥" एवमादि इंगिणिविहाणं सुत्ताउ नायव्वं । इयाणिं पाओवगमणविही—

"तं दुविहं नायव्वं नीहारिं चेव तह अनिहारी । बहिया गामाईणं गिरिकंदरमाइ नीहारि ॥१॥ वयाडसु जं अंतो उट्ठेउमणाण ठाइ अणिहारिं । कम्हा पायवगमणं ? जं उवमा पायवेणेत्थं ॥ २ ॥ पाओवगमं भणियं समविसमे पायवो जहा पडिओ । नवरं परप्पयोगा कंपेज्ज जहा फलतरुव्व ॥३॥ परप्पओगत्ति जइ तिरिओ मणुओ देवो वा कड्ढेज्जा, इमो य तप्पडिवत्तिविही— "अभिवंदिऊण देवे जहाविहिं सेसए य गुरुमाई । पच्चक्खाइ उ तओ तयंतिए सव्वमाहार ॥ १ ॥ समभावंमि ठियप्पा सम्मं सिद्धंतभणियमग्गेणं । गिरिकंदरं तु गंतुं पायवगमणं अह करेइ ॥ २ ॥ तसपाणबीयरहिए विच्छिन्नवियारथंडिलविसुद्धे ।

निद्दोसा निद्दोसं उवेंति अब्भुज्जयं मरणं ॥ ३ ॥ सव्वत्थापडिबद्धो दंडायवमाइठाणमिह ठाउं । जावज्जीवं चेट्ठइ निच्चेट्ठो पायवसमाणो ॥ ४ ॥ पढमंमि य संघयणे वट्टंता सेलकुड्डसामाणा । तेसिं पि य वोच्छेओ चोद्दसपुव्वीण वोच्छेए ॥ ५ ॥ तहा—पुव्वभवियवेरेणं देवो साहरइ कोइ पायाले । मा सो चरमसरीरो न वेयणं किं पावेही ॥ ६ ॥ पुव्वभविय-प्पेम्मेणं देवो देवकुरुउत्तरकुरुसु । कोई तु साहरेज्जा सव्वसुहा जत्थ अणुभावा ॥ ७ ॥ देवो नेहेण णये देवारन्नं व इंदभ-वणं वा । जहियं इट्ठाकंता सव्वसुहा होंति अणुभावा ॥ ८ ॥ पुढविदगअगणिमारुयवणस्सइतसेसु कोइ साहरइ । वोसट्ठच-त्तदेहो अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥ ९ ॥ पुव्वावरदाहिणउत्तरेहिं वाएहिं आवडंतेहिं । जह नवि कंपइ मेरू तह ते झाणाउ न चलंति ॥१०॥ उप्पन्ने उवसग्गे दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खे य । सव्वे पराइणित्ता पाओवगया पविहरंति ॥११॥ बत्तीसलक्खणधरो पाओवगओ उ पागडसरीरो । पुरिसवेसिणिकन्ना रागविइन्ना उ गिण्हेज्जा ॥ १२ ॥ मज्जणगंधं पुप्फोवयारपरियारणं सिया कुज्जा । वोसट्ठचत्तदेहो अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥ १३ ॥ एगंतनिज्जरा से दुविहा आराहणा धुवा तस्स । अंतकिरियं व साहू करेज्ज देवो व वत्ति वा ॥ १४ ॥ मुणिसुव्वयंतेवासी खंदगदाहे य कुंभकारकडे । देवी पुरंदरजसा दंडइपालकमरुओ य ॥ १५ ॥ पंचसया जंतेणं रुट्ठेण पुरोहिएण मलियाइं । वुग्गाहिय रायाणं पावेणं रुद्दचित्तेण ॥ १६ ॥" एयार्सि भावत्थो इमाउ कहाणगाओ नायव्वो—

सावत्थीए नयरीए जियसत्तू राया, धारिणी देवी, तीसे पुत्तो खंदओ णाम कुमारो, तस्स भगिणी पुरंदरजसा, सा कुंभकारकडे णगरे दंडगीणाम राया तस्स दिण्णा, तस्स दंडगिस्स रण्णो पालको णाम मरुओ पुरोहितो,

अण्णया सावत्थीए मुनिसुव्वतसामी तित्थकरो समोसरितो, परिसा णिग्गया, खंदओवि णिग्गतो, धम्मं सोच्चा सावगो जातो, अण्णता सो पालकमरुओ दूतत्ताए आगतो सावत्थीं णगरीं, अत्थाणीमज्झे साधूण अवण्णं वदमाणो खंदएणं णिप्पट्ठपसिणवागरणो कतो तप्पओसमावन्नो, तप्पभितिं चेव खंदकस्स छिद्दाणि चारपुरिसेहिं मग्गावेंतो विहरति, जाव खंदगो पंचहिं जणसएहिं कुमारोल्लग्गएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयसामिसगासे पव्वइतो, बहुस्सुतो जातो, ताणि चेव से पंच सयाणि सीसत्ताए अणुण्णाताणि, अन्नता खंदओ सामिं आपुच्छति—वच्चामि भगिणिसगासं, सामिणा भणियं—उवसग्गो मारणंतिओ, भणति–आराहगा विराहगा ?, सामिणा भणितं–सव्वे आराहगा तुमं मोत्तुं, सो भणति–लट्ठं जति एत्तिआ आराहगा, गओ कुंभकारकडं, मरुएण जहिं उज्जाणे ठिता तहिं आउहाणि नूमिताणि, राया वुग्गाहितो–जधा एस कुमारो परीसहपराजीतो, एएण उवाएण तुमं मारेत्ता रज्जं गिण्हिहित्ति, जति ते विप्पच्चयो उज्जाणं पलोएहि, आयुधाणि पुल(णूम)इताणि दिट्ठाणि, तं बंधिऊण तस्स चेव पुरोहियस्स समप्पितो, तेण सव्वे पुरिसजंतेण पीलिता, तेहिं सम्मं अहितासितं, केवलणाणं उप्पण्णं सिद्धा य, खंदओवि पासि धरितो लोहितचिरिकाहिं भरिज्जंतो, सव्वपच्छा जंते पीलितो णिदाणं काऊण अग्गिकुमारेहिं उववण्णो, तंपि से रयहरणं रुधिरलित्तं पुरिसहत्थोत्तिकाउं गिद्धेहिं (गहियं) पुरंदरजमाय पुरतो पडितं, सावि तद्दिवसं अधितिं करेति, जहा–साहू ण दीसंति, तं च णाए दिट्ठं, पच्चभिण्णातो य कंबलओ णिसेज्जाओ छिण्णाओ, ताए चेव दिण्णो, ततो णातं, जधा–ते मारिता, परिंसितो राया पाव ! विणट्ठो सि, ताए चिंतितं पव्वयामि, देवेहिं मुणिसुव्वतसगासं णीता, तेणवि देवेण णगरं दड्ढं सजणवदं, अज्जवि दंडगारण्णं पसिद्धं लोगम्मि,

एत्थ तेहिं साहुहिं वधपरीसहो अहियासितो संमं, एवं अहियासेतव्वं, ण जधा खंदएण णाभियामितं । तहा—

"धन्नसालिभद्दा पाओवगमं उवागया जुगवं । जुयलसिलासंथारे मासं तु अणूणगं धीरा ॥१॥ पडणीययाए कोई अग्गी से सव्वसो पदेज्जाहि । पाओवगए संते जह चाणक्कस्स व सरीरे ॥२॥ पडणीययाए कोई चम्मंसे खीलएहिं विहणित्ता । महुघय-मक्खियदेहं पिवीलियाणं तु देज्जाहि ॥३॥ जह सो चिलायिपुत्तो वोसट्ठनिसट्ठचत्तदेहाउ । सोणियगंधेण पिवीलियाहि किर चालणि व कओ ॥४॥ जहऽवंतीसुकुमालो वोसट्ठनिसट्ठचत्तदेहाओ । धीरो सपेल्लियाए सिवाए खइओ तिजामेणं ॥५॥" तहाहि—

अज्जसुहत्थी उज्जेणीए जिनपडिमं वंदगा गता, उज्जाणे ठिता भणिया य साहू—वसहिं मग्गहत्ति, तत्थ एगो संघाडओ भद्दाए सेट्ठिभज्जाए वरं भिक्खस्स अतिगओ, पुच्छिता ताए—कओ भगवन्तो ?, तेहिं भणियं—सुहत्थिस्स, वसहिं मग्गामो, जाणसालातो दरिसियाओ, तत्थ ठिता, अण्णया पदोसकाले आयरिया णलिणगुम्मं अज्झयणं परियट्टेंति, तीसे पुत्तो अवंतिसुकुमालो सत्ततले पासाए बत्तीसाए भज्जाहिं समं उवललति, तेण सुत्तविउद्धेण सुतं, ण एतं णाडेगंति, भूमीतो भूमीयं सुणेंतो २ उत्तिण्णो, बाहिं निग्गतो, कत्थ एरिसंति ?, जातीसरिता, तेसिं मूलं गतो साहति—अहं अवंतिसुकुमालोत्ति णलिण-गुम्मे देवो आसि, तस्स उस्सुक्को मि, पव्वयामि, असमत्थो दीहं सामण्णपरियागं अणुपालेत्ता, इंगिणीं साहेमि, ते वि माता से णापुच्छितत्ति नेच्छंति, सयमेव लोयं करेति, मा सयंगहियलिंगो होउत्ति दिण्णं लिंगं, मसाणं कंथारकुडंगं, तत्थ भत्तं पच्चक्खाति, सुकुमालएहिं पाएहिं लोहितगंधेणं सिवाए सपेल्लिकाए आगमणं, सिवा एक्कं पादं खाति एक्कं पिल्लगाणि, पढमे जण्णुगाणि, बितिए ऊरू, ततिए पोट्टं, कालगतो गंधोदगं पुप्फवासं, आयरियाण आलोयणा, भज्जाणं परंपरपुच्छा, आयरिएहिं

कहितं–सड्ढी सुण्हाहि समं, तं गंता मसाणं, पव्वइयाओ य, एगा गुव्वीणी णियत्ता, तीसे पुत्तो तत्थ देवकुलं कारेति, तं इदाणिं महाकालं जातं, लोगेण परिग्गहितं ॥ अन्नं च–एगो साहू पाओवगओ, सो पडिणीएहिं उक्खिवित्ता वंसकुडंगस्स उवरिं छोढुं मुक्को, वरिसिए य हेट्ठाउ वंसा उट्ठिया, तेहिं सो साहू विद्धो, उक्खिविउं आगासं पाविओ तहवि सम्ममहियासियं॥ तहा–गामामज्झे केई साहुणो पाओवगया, अईव वरिसिएण पाणिएण बुज्झंता संकरे लग्गा सम्मं अहियासिता कालगया ॥ तहा–केई बत्तीसं गोट्ठिल्लया पव्वइया पाओवगया, पाओवगया य ते दीविएणं पुव्वासियबहुपिसिएणं दिट्ठा, कल्लं मम एएभक्खं होहिंतित्ति रुक्खं विलग्गावित्ता पिहं पिहं खाणुएसु जीवंतगा चेव ओलइया, समं अहियासित्ता कालगया ॥ "एवं पाओवगमं निप्पडिकम्मं तु वण्णियं सुत्ते। तित्थयरगणहरेहि य साहूहि य सेवियमुयारं ॥ १ ॥ संघयणाभावाओ इय एयं काउ जो उ असमत्थो। सो पुण थोयतरागं कालं संलेहणं काउं ॥ २ ॥ इंगिणिमरणं विहिणा भत्तपरिन्नं च सत्तिओ कुणइ। संवेगभावियमणो पुव्वुत्तविहीएँ गयसल्लो ॥ ३ ॥" एवं ताव जईणं, सावगस्स पुण इमा सामायारी—

आसेवियगिहिधम्मेण किल सावगेण पच्छा निक्खमियव्वं, एवं सावगधम्मो उज्जविओ होइ, अह न सक्केइ ताहे भत्तपच्चक्खाणकाले संथारगसमणेण होयव्वं, जइ न सक्केइ तो अपच्छिमं मारणंतियसंलेहणं छट्ठट्ठमाइविगिट्ठतवोरूवं जहासंभवं साहुविहाणेणं काऊण अणसणं करेइ, भणियं च—" सड्ढो पुण संथारगपव्वज्जं संपवज्जिय जहुत्तं। आरोयावेइ तहा महव्वए भावओ एवं ॥ १ ॥ काउं चेइयपूयं जहविहवं पूइउं समणसंघं। उचियं जणोवयारं काउं च कुडुंबसुत्थत्तं ॥ २ ॥ अणुसासिय पुत्ताई संमाणिय पुरिजणं जहाजुत्तं। संथारयपव्वज्जं पवज्जए सावओ विहिणा ॥ ३ ॥ न पवज्जइ

पवज्जं, जइ पुण तोऽणुवयाइयं धम्मं। सविसेसंपि करेइ उच्चारिंतो तयं चेव ॥ ४ ॥ थूलं पाणाइवायं दुविहं तिविहेण सावराहंपि। जाजीवं वोसिरिमो सुहुमंपि वणाइयं किंपि ॥ ५ ॥ वनस्पत्यादिकं, "एमेव सेसयाइवि वयाइं गिण्हेज्ज सुहुमतरगाइं। तेसिं चिय अइयारे सवपयत्तेण वज्जेज्जा ॥ ६ ॥" तं चाणसणं कोई तिविहाहारपरिच्चागरूवं, कोइवि चउविहाररूवं करेइ, तंपि कोऽवि सागारं, कोऽवि निरागारं करेइ, भणियं च–"अह संलिहियसरीरो जोगत्तं अप्पणो मुणेऊणं। अभिवंदिऊण देवे गुरू य कुज्जा अणसणं तं तु ॥ १ ॥ तिविहं चउविहं वा आहारं मुयइ मुणियनियभावो। तं पुण सागारं वा करेज्ज अहवा निरागारं ॥ २ ॥ भवचरिमं पच्चक्खामि चउव्विहं अहव तिविहमाहारं। आगारचउक्केणं अन्नत्थिच्चाइणा संमं ॥ ३ ॥ एयं किल सागारं मयहरपभिइविवज्जियं इयरं। पाणाहारे कप्पइ सुद्धोदगमेव से नवरं ॥ ४ ॥ अब्भंगाइ सव्वं समाहिहेउत्ति तस्स न विरुद्धं। जेण समाही एत्थं सारो सुगईए हेउत्ति ॥ ५ ॥ तं च करेंतो सवं संघं सवं च जीवसंघायं। खामेइ अप्पणा वि य खमेइ तेसिं च सवेसिं ॥ ६ ॥ साहू य साहुणीओ सड्ढा सड्ढी य चउविहो संघो। आसाइओ मए जं तमहं तिविहेण खामेमि ॥ ७ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिय सीसे। अवराहं खामेमि तस्स पसायाभिमुहचित्तो ॥ ८ ॥ खामेमि य सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ॥ ९ ॥"त्ति ॥

तंमि कए वज्जेज्जा पंचइयारे इमे उ जिणभणिए। इहपरलोए मरणे जीवियकामेसु आसंसा ॥ १ ॥

एईए गाहाए वक्खाणं–इहत्ति–इहलोगासंसप्पओगो इहलोगो–मणुस्सलोगो तम्मि आसंसा अभिलासो तीसे पओगो–वावारण, जहा–राया अमच्चो सेट्ठी वा भवेज्जामि अहं, रायाईणं रिद्धिं पत्थेइत्ति जं भणियं होइ, एवं परलोगासंसप्पओगो,

परलोगो—देवलोगो, देवो होमित्ति पत्थेइ । एवं जीवियासंसप्पओगो, जइ बहुकालं जीवामित्ति, एसो पुण एवं भवइ, तत्थ मल्लपुत्थयवायणाइपूयाबहुपरिवारदंसणाओ जणसाहुसकारसवणाओ य एवं मन्नेइ, जीवियमेव मे सेयं कयअणसणस्सवि, जओ एवंविहा इमा विभूई ममुद्देसेण वट्टइत्ति । एवं मरणासंसप्पओगो, जया तं पडिवन्नाणसण न कोई गवेसेइ, पूयं गुणगहणं वा न कोई करेइ, तओ तस्स एवंविहो चित्तपरिणामो भवइ—जइ अहं अपुन्नकम्मा सिग्घं मरामि तो सुंदरंति, अहवा अणिट्ठेहिं फासाईहिं पुट्ठो मरिउमिच्छइ । तहा—कामभोगासंसप्पओगो, जधा जम्मंतरे चक्कवट्टिवासुदेवमहामंडलियभोगो रूवस्सी वा भवेज्जामित्ति पत्थेइ । एस चेव पढमचरिमाइयाराण विसेसो—जमेत्थ कामभोगे पत्थेइ तत्थ पुण रिद्धिविसेसंति, एत्थ बंभदत्तो उदाहरणं ।

"इयपडिवन्नाणसणो सम्मं भाविज्ज भावणाउ सुभा । एगत्ताणिच्चत्तासुइत्तअन्नत्तपभिइओ ॥ १ ॥ एगोहं नत्थि मे कोइ नयाहमवि कस्सवि । परं धम्मो जिणक्खाओ एत्थ मज्झ बिइज्जओ ॥ २ ॥ अणिच्चं जीवियं देहो, जोवणं पियसंगमो । नत्थि एत्थं धुवं किंपि, जत्थ राओ विहीयइ ॥ ३ ॥ देहो जीवस्स आवासो सो य सुक्काइसंभवो । धाउरूवो मलाहारो सुइनाम कहं भवे ॥ ४ ॥ एगो मे सासओ अप्पा णाणदंसणसंजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ५ ॥ संजोगमूला जीवेणं, पत्ता दुक्खपरंपरा । तम्हा संजोगसंबंधं, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ६ ॥ जम्मजरामरणजलो अणाइमं वसणसावयाइण्णो । जीवाण दुक्खहेऊ कट्ठं रुद्दो भवसमुद्दो ॥ ७ ॥ धन्नो हं जेण मए अणोरपारंमि नवरमेयंमि । भवसयसहस्सदुल्लहं लद्धं मे धम्मजाणं तु ॥ ८ ॥ एयस्स य भावेणं पालिज्जंतस्स सइ पयत्तेणं । जम्मंतरे वि जीवो पावेति न दुक्खदोगच्चं ॥ ९ ॥ चिंतामणी अउव्वो एस अउव्वो य कप्परुक्खो त्ति । एयं परमो मंतो एयं परमामयं

एत्थ ॥ १० ॥ इत्थं वेयावडियं गुरुमाईणं महाणुभावाणं । जेसि पभावेणेयं पत्तं तह पालियं चेव ॥ ११ ॥ तेसिं नमो भावेणं पुणोवि तेसिं चेव नमो । अणुवकयपरहियरया जे एयं देंति जीवाणं ॥ १२ ॥ एमाइ भावियप्पा सुद्धज्झाणो गमेइ तं कालं । आसन्नागयमरणो गेण्हेज्ज तओ नमोक्कारं ॥ १३ ॥ जओ-चोद्दसपुव्वधराविहु सुयकेवलिणोवि मुणियसव्वत्था । तेवि हु सव्वं मोत्तुं पज्जंते लिंति नवकारं ॥ १४ ॥ एवं तु भावणाओ जायइ पेच्चावि बोहिलाभोत्ति । अब्भासाइसयाओ तहोवमाणाउ एयाउ ॥ १५ ॥ कुसुमेहिं वासियाणं तिलाण तेल्लंवि जायइ सुयंधं । एओवमा हु बोही पन्नत्ता वीयरागेहिं ॥ १६ ॥ कुसुमसमा अब्भासा जिणधम्मस्सेह होंति णायव्वा । तिलतुल्ला पुण जीवा तेल्लसमो पेच्च तब्भावो ॥ १७ ॥ इय अप्परिवडियगुणाणुभावओ बंधहासभावाओ । पुव्विल्लस्स य खयओ सासयसोक्खो सयामोक्खो ॥ १८ ॥" अन्नं च-विहिसेसमिमस्स वोच्छामि-भणियविहि अवेक्खाए अभणियविही विहिसेसं तं इमस्स सावगधम्मस्स वोच्छामि-भणिस्सामि ॥ ४० ॥

निवसेज्ज तत्थ सड्ढो साहूणं जत्थ होज्ज संपाओ । चेइयहराइं जंमि य तयन्नसाहम्मिया चेव ॥ ४१ ॥

निवसेज्ज तत्थेव नगराइठाणे सड्ढो-सावगो साहूणं जत्थ होइ संपाओ-जईणं जत्थ आगमणं होइ, तहा चेइयहराइं जंमि ठाणे (तहा तयन्नसाहम्मिया) एवंविहठाणे वसंतस्स इमो गुणो होइ, जहा-" साहूण वंदणेणं नासइ पावं असंकिया भावा । फासुयदाणे निज्जर उवग्गहो नाणमाईणं ॥ १ ॥ मिच्छदंसणमहणं सम्मदंसणविसुद्धिहेउं च । चिइवंदणाइ विहिणा पन्नत्तं वीयरागेहिं ॥ २ ॥ साहम्मियथिरकरणं वच्छल्लं सासणस्स सारोत्ति । मग्गमहायत्तणओ तहा अणासो य धम्माओ ॥ ३ ॥ एवमाइ ॥ ४१ ॥ तत्थ निवसंतेण पइदिवसं जं कायव्वं तं भन्नइ—

नवकारेण विबोहो अणुसरणं सावओ वयाइं मे । जोगो चिइवंदणमो पच्चक्खाणं च विहिपुव्वं ॥ ४२ ॥

नवकारेण–परमेट्ठिपंचगनमणकिरियाए परममंगलसरूवाए विबोहो–जागरणं कायव्वं, तत्थ इमो विही–" नवकार-चिंतणं माणसंमि सेज्जागएण कायव्वं । सुत्ताविणयपवित्ती निवारिया होइ एवं तु ॥ १ ॥" तहा अणुसरणं–अणुचिंतणं कायव्वा-कायव्वपवित्तिनिवित्तिसाहगं, किं सरूवं तं ?, भन्नइ–सावगो–सड्ढोऽहं, तहा वयाणि–अणुव्वयाईणि मे अत्थि, उवलक्खणं च इमं तेण–अमुगकुलोऽहं अमुगसीसो एवमाइ दव्वओ, अमुगंमि गामघराइएत्ति खेत्तओ, पभायमिमंति एवमाइ कालओ, मुत्ताइबाहाणं मज्झे का बाहा ? एवमाइ भावओ । ततो जोगो–मुत्तपरिच्चागसुइकरणाइवावारो कायव्वो, एवं हि देहबाधापरिहारे समाहीए चेइयवंदणाईणि भावउ अणुट्ठियाणि भवंति । ततो चेइयवंदणं–पूयापुरस्सरं अरिहंतबिंबवंदणं, ओकारो गाहापूरणे । तओ पच्च-क्खाणं आगमपसिद्धं कायव्वंति, चसद्दो समुच्चये, विहिपुव्वं–आगमभणियविहिपुव्वगं, न पुण जहिच्छाए ॥ ४२ ॥ तयणंतरं–

तह चेईहरगमणं सक्कारो वंदणं गुरुसगासे । पच्चक्खाणं सवणं जइपुच्छा उचियकरणिज्जं ॥ ४३ ॥

तहा–विहिपुव्वगं चेइहरगमणं–जिणबिंबभवणे गमणं पवेसो य विहीए कायव्वो, तत्थ गमणे विही–सव्वाए इड्ढीए–आभ-रणादिरूवया सव्वाए दित्तीए सव्वाए जुत्तीए उचियपयत्थाणं–परोप्परं संजोगेणं सव्वसमुदएणं–परिवारादिसमुदाएण एवमाई । एवं हि पवयणपभावणा कया भवइ । पवेसविही पुण सच्चित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए पुप्फतंबोलाईणं १, अचित्ताणं दव्वाणं अवि-उसरणयाए वत्थमुद्दियाईणं अपरिच्चाएणं २, एगसाडिएणं उत्तरासंगेणं ३, अणेगुत्तरिज्जसाडगनिसेहणत्थं इमं भणियं, इत्थीए पुण विणओणयाए गायलट्ठीए ३, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ४, मणसो एगत्तीभावेणंति ५, तत्थ य गएण सक्कारो–मल्लाईहिं

पूयणं अरिहंतपडिमाए कायवं, वंदणं–चेइयवंदणं, तओ गुरुसगासे–गुरुसमीवे पच्चक्खाणं सयं गहियपच्चक्खाणस्स गुरुसक्खिगत्तकरणं, तओ गुरुसगासे चेव सवणं आगमस्स, तओ जइपुच्छा–साहुसरीरसंजमवत्ता पुच्छियवा, एवं हि विणओ पउत्तो भवति, तत्थ उचियकरणिज्जं–साहुस्स गिलाणाइभावे ओसहपयाण उवएसाइ कायवं, अन्नहा पुच्छा नाइसफला होइत्ति ४३॥

अविरुद्धो ववहारो काले तह भोयणं च संवरणं। चेइहरागमसवणं सक्कारो वंदणाई य ॥ ४४ ॥

अविरुद्धो–पन्नरसकम्मादाणपरिहारेण अणवज्जो ववहारो कायवो, विरुद्धववहारे पुण धम्मबाहा पवयणहेला य भवेज्जा, काले–सरीरारोग्गाणुकूले पच्चक्खाणतीरणसमयसरूवे य, अकालभोयणे हि धम्मस्स धम्मसाहगसरीरस्स य बाहा भवेज्जा, तहत्ति भणियविहिणा, तंजहा–"जिणपूजोचियदाणं परियरसंभालणा उचियकिच्चं। ठाणुववेसो य तहा पच्चक्खाणस्स संभरणं ॥१॥"ति, एवमाइ, भोयणं कायवं, अन्नहाभोयणे पावबंध एव, चसद्दो समुच्चये, संवरणंति भोयणाणंतरं जहासंभवं गंठिसहिगाइपच्चक्खाणस्स गहणं, पमायपरिहारिणो हि पच्चक्खाणं विणा न जुत्तं खणमवि अच्छेउं, तओ अवसरे चेइहरआगमणं, तओ तत्थ सवणं–साहुसमीवे जिणागमसुणणं, अहवा चेइहरे आगमस्स सवणंति चेइहरे किर पाएण आगमवक्खाणं होइ, अओ आगमगहणं, चेइहरगहणं च ठाणंतरोवलक्खणत्थं, जओ भणियं–" जत्थ पुण अनिस्सकडं पूरेंति तहिं समोसरणं। पूरिंति समोसरणं अन्नासइ निस्सचेइएसुवि ॥१॥" इहरा लोगविरुद्धं सद्धाभंगो य होइ सड्ढाणं। न च "चेइयहरे आगमसवणं कायवं" ति एयवयणाओ चेइयहरे चेव साहुणो निवसंति एवंविहसंका कायवा, जओ आगमे चेइयहरे निवासो वारिओ, तंजहा "जइवि न आहाकम्मं भत्तिकयं तहवि वज्जयंतेहिं। भत्ती खलु होइ कया इहरा आसायणा परमा ॥ १ ॥ दुब्भिगंधमलस्सावि,

तणुरप्पेसण्हाणिया । उभओ वाउवहो चेव, तेण ठुंति न चेइए ॥ ३ ॥ तिन्नि वा कड्ढई जाव, थुइओ तिसिलोइया । ताव तत्थ अणुन्नायं, कारणेण परेणवि ॥ ४ ॥" एवमाई । तओ वियाले सक्कारो—जिणबिंबाणं पुया कायव्वा, वंदणाइयत्ति अरहंत-बिंबाणं वंदणा, आइसद्दाओ चेइयसंबंधितकालोचियं कायव्वं घेप्पइ, साहुवसहिगमणं साहुवंदणाइ वा भूमिगाणुसारेण छव्विहावस्सयं वा आइसद्दाउ लब्भइ, चसद्दो समुच्चये, न च छव्विहावस्सयं सावगाणं उवासगदसाइसु न भणियंति नत्थित्ति संका कायव्वा, जओ अणुओगदारसूत्ते भणियं—" जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ कालं आवस्सयं करेंति, से तं भावावस्सयं "ति, तहा " समणेणं सावएण य अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा । अंतो अहोनिसिस्स य तम्हा आवस्सयं नाम ॥ १ ॥" तहा आवस्सयचुण्णीएवि सावगसामाइयविहिं भणंतेण भणियं, जहा—" चउसु ठाणेसु नियमा कायव्वं, तंजहा—चेइयहरे १ साहुसमीवे २ पोसहसालाए वा ३ घरे वा ४ आवस्सयं करेंतो "त्ति, तम्हा न चेइयवंदणाइ नावि मिच्छादुक्कडमेत्तं नावि आलोयणादंडगमेत्तं आवस्सयं, किंतु सामाइयाइछज्झयणरूवं आवस्सयं नायव्वंति, जओ भणियं " अज्झयणछक्कवग्गो " ॥ ४४ ॥ एवमाइ—

तहा—जइविस्सामणमुचिओ जोगो नवकारचिंतणाईओ । गिहिगमणं विहिसुवणं सरणं गुरुदेवयाईणं ॥४५॥

जईणं—साहूणं वेयावच्चाईहिं परिस्संताणं पुट्ठालंबणेणं तहाविहसावगाओवि खेयविणोयं इच्छंताणं विस्सामणं—खेयावणयणं जइविस्सामणं कायव्वं, तहा उचिओ—सभूमिगाणुरूवो जोगो—वावारो, किंरूवो ?, भन्नइ—नवकारचिंतणाइओ—नवकारो पसिद्धो, आइसद्दाओ पढियपगरणगुणणाइ दट्ठव्वं, तओ गिहगमणं, तत्थ य विहिसुवणं—विहिणा जिणवंदणविसेसपच्चक्खाण-

करणाइणा सयणं कायवं, तमेव विहिं विसेसेण दरिसेइ, सरणं-चित्ते धारणं, उवलक्खणं च इमं तेण गुणरयणाइयं वि दट्ठवं, गुरुदेवयाईणं-धम्मायरियजिणाईणं, आइसद्दाओ अण्णेसिं च धम्माणुट्ठाणाणं पच्चक्खाणमाईणंति ॥ ४५ ॥ तत्थ य—

अबंभे पुण विरई मोहदुगंछा सतत्तचिन्ता य। इत्थीकलेवराणं तव्विरएसुं च बहुमाणो ॥ ४६ ॥

अबंभे-थीपरिभोगे पुण विरई-निवित्ती कायवा, तहा मोहदुगुंछा-थीपरिभोगहेउपुरिसवेयाइमोहणियनिंदा कायवा-"जं जं नज्जइ असुइं लज्जिज्जइ कुत्थणिज्जमेयंति। तं तं मग्गइ अंगं नवरमणंगोत्थ पडिकूलो ॥ १ ॥" एवमाइ, तहा **सतत्तचिंता य**-सरूवचिंतणं कायवं, केसिं?, **इत्थीकडेवराणं**-नारीसरीराणं, जहा-"सुक्कसोणियसंभूयं,अंतो असुइपूरिअं। नाणावाहिसमावासो धी इत्थीण सरीरगं ॥१॥"ति, **तव्विरएसुं च**-अबंभनियत्तेसु साहूसु, चसद्दो समुच्चये, बहुमाणो कायवोत्ति ॥४६॥ तहा—

सुत्तविउद्धस्स पुणो सुहुमपयत्थेसु चित्तविण्णासो। भवठिइणिरूवणे वा अहिगरणोवसमचित्ते वा ॥४७॥

सुत्तविउद्धस्स-निद्दावगमेण जग्गंतस्स पुण सावगस्स **सुहुमपयत्थेसु** कम्मजीवपरिणामाईसु **चित्तविन्नासो**-मणनिवेसो होइ कायवो, जहा-"जीवपरिणामहेऊ कम्मत्तं पोग्गला परिणमंति। पोग्गलकम्मनिमित्तं जीवोवि तहेव परिणमइ ॥१॥" एवमाइ, **भवठितिनिरूवणे वा**-संसारसरूवपरिभावणे वा चित्तविन्नासो कायवो, जहा भणियं "भज्जा जायइ माया, धीया पत्ती पियावि पुण पुत्तो। दासो जायइ सामी संसारे संसरंताणं ॥ १ ॥" एवमादि, **अहिगरणोवसमचित्ते वा**-अहिगरणाणि किंसि आदीणि णि कलहाईणि वा तेसिं उवसमाय जं चित्तं तं अहिगरणोवसमचित्तं, तत्थ केण पगारेण कम्मि वा काले मम अहिगरणोवसमचित्तं भविस्सइत्ति एवं चित्तविन्नासो कायवो, वासद्दा विगप्पे ॥ ४७ ॥ तहा—

आउयपरिहाणीए असमंजसचेठियाण व विवागे। खणलाभदीवणाए धम्मगुणेसुं च विविहेसु ॥४८॥

आउयपरिहाणीए-पइक्खणं आउयक्खए चित्तविन्नासो कायव्वोत्ति सव्वपएसु दट्ठव्वं, तहा-असमंजसचिठियाणं-पाणवहाईणं वा त्रिगप्पे, विवागे-नरगाइअसुभफलजणगत्ते, जहा [व किसिमाउ] "वहमारणअब्भक्खाणदाणपरधणविलोवणाईणं। सव्वजहन्नो उदउ दसगुणिउ एक्कसि कयाणं ॥१॥" एवमाइ, तहा-खणे-थोवकाले वि लाभो-असुभज्झवसाएण महंतस्स असुभकंमस्स सुभज्झवसाएण पुण सुभकम्मस्स बंधो तस्स दीवणा-पगासणा खणलाभदीवणा ताए चित्तनिवेसो कायव्वो। जहा "नरएसु सुरवरेसु य जो बंधइ सागरोवमं एक्कं। पलिओवमाण बंधइ कोडिसहस्साण दिवसेणं ॥१॥" अहवा खणो-अवसरो मोक्खसाहणो, सो पुण दव्वखेत्तकालभावभेयाउ चउव्विहो, तत्थ दव्वओ माणुसत्तं, खेत्तओ आरियखेत्तं, कालओ दूसमसुसमाइकालविसेसो, भावओ बोही, संमत्ताई गुणा इत्यर्थः, तस्स एवंविहखणस्स लाभो जुगसमिलाइनाएण किच्छेण संपत्ती तस्स दीवणा-खणलाभदीवणा ताए चित्तविन्नासो कायव्वो, जहा भणियं-"माणुस्सखेत्तजाई कुलरूवारोग्गमाउयं बुद्धी। सवणोग्गह सद्धा संजमो य लोगंमि दुलहाइं ॥ १ ॥" एएसिं दुलभत्ते इमे दिट्ठंता-" चोल्लग १ पासग २ धण्णे ३ जूए ४ रयणे य ५ सुमिण ६ चक्के य ७। चम्म ८ जुगे ९ परमाणू १० दस दिट्ठंता मणुयलंभे ॥ १ ॥"।

चुल्लगत्ति भोयणं, तस्स दिट्ठंतो, जहा-बंभदत्तस्स एगो कप्पडिओ ओलग्गओ, बहुसु आवईसु अवत्थासु य सव्वत्थ ससहाओ आसी, सो य रज्जं पत्तो, बारस संवच्छरो अभिसेओ कओ, कप्पडिओ तत्थ अल्लियावंपि ण लहति, ततो णेण उवाओ चिंतिओ, उवाहणाओ धए बंधिऊणं धयवाहएहिं समं पहाविओ, रन्ना दिट्ठो, उत्तिण्णेणं अवगूहिओ, अन्ने भणंति-"(ताहे)तेण

दारवाले सेवमाणेण बारसमे संवच्छरे राया दिट्ठो ", ताहे राया तं दट्ठूणं संभंतो, इमो सो वराओ मम सुहदुक्खसहायगो, एत्ताहे करेमि वित्तिं, ताहे भणति–किं देमि वित्तिं ?, सो भणति–देहकर(देहि ममं) चोल्लए घरे जाव सव्वंमि भरहे, जाहे निट्ठियं होज्जा ताहे पुणोवि तुज्झ घरे आढवेऊण भुंजामि, राया भणति–किं ते एएण ?, देसं ते देमि तो सुहं छत्तच्छायाए हत्थिखंधवरगओ हिंडिहिसि, सो भणइ–किं मम एद्दहेण आडोवेण ?, ताहे से दिन्नो चोल्लगो, ततो पढमदिवसे राइणो घरे पजिमिओ, तेण से जुगलयं दीणारो य दिन्नो, एवं सो परिवाडीए सव्वेसु राउलेसु बत्तीसा य रायवरसहस्सेसु, तेसिं च जे भोइया, तत्थ य नगरे अणेगाउ कुलकोडीउ, णयरस्स चेव सो कया अंतं काहिति ?, ताहे पुणो गामेसु, ताहे पुणो भरहवासस्स, अवि सो वच्चेज्ज अंतं ण य माणुसत्तणाओ भट्ठो पुणो माणुसत्तणं लहइ १ ।

पासगत्ति चाणक्कस्स सुवन्नं नत्थि, ताहे केण उवाएण विढवेज्ज सुवन्नं ?, जंतपासया कया, केइ भणंति–वरदिन्नया, ततो एगो दक्खो पुरिसो सिक्खविओ दीणाराण थालं भरियं, सो भणइ–जइ ममं कोइ जिणइ सो थालं गेण्हउ, अह अहं जिणामि तो एगं दीणारं जिणामि, तस्स इच्छाए जंतं पडति, अओ न तीरइ जिणिउं, जहा सो न जिप्पति एवं माणुसलंभोवि, अवि णाम सोवि जिप्पेज्ज ण य माणुसाउ भट्ठो पुणरवि माणुसत्तणं लहइ २ ।

धण्णेत्ति जेत्तियाणि भरहे धण्णाणि ताणि सव्वाणि पिंडियाणि, तत्थ पत्थो सरिसवाण छूढो, ताणि सव्वाणि अंबाली(अड्डयालि)याणि, तत्थेगा जुन्नथेरी सुप्पं गहाय ते वी(विय)णेज्ज, पुणोऽवि पत्थं पूरेज्ज, अवि सा देवयापसाएण पूरेज्ज ण य माणुसत्तणं ३ ।

जूए, जहा–एगे राया, तस्स सभा खंभट्ठसयसंनिविठा, तत्थ तत्थ अत्थाणियं देति, एक्केक्को य खंभो अट्ठसयंसिओ, तस्स

रन्नो पुत्तो रज्जकंखी, चिंतेइ–थेरो राया, मारेऊण रज्जं गेण्हामि, तं च अमच्चेण नायं, तेण रन्नो सिट्ठं, ततो राया पुत्तं भणति–अम्ह जो न सहइ अणुक्कमं सो जूयं खेल्लउ, जइ जिणति रज्जं से दिज्जति, किह पुण जिणियव्वं ?, तुज्झं एगो आओ अम्हं अन्नसेमा आया, जइ तुमं एगेण आएण (हारेज्जा पुणो मूलओ जेयव्वा), अट्ठसयस्स थंभाणं एक्केक्कं अंसिं अट्ठसए वारा जिणसि तो तुब्भे रज्जं, अविय देवया विभासा ४ ।

रयणे जहा–एगो वाणियओ वुड्ढो, रयणाणि बहूणि से अत्थि, तत्थ य महे अन्ने वाणियगा कोडिपडागाओ उब्भेंति सो न उब्भवेति, तस्स पुत्तेहिं थेरे पउत्थे ताणि रयणाणि देसिविणियगाणं हत्थे विक्कियाणि, वरं अम्हेवि कोडिपडागाओ उब्भवेमो, ते य वाणियगा समंतओ पडिगया पारसकूलाइणि, थेरो आगओ, सुयं जहा–विक्कियाणि, ते अंबाडेइ, लहुं रयणाणि आणेह, ताहे ते सव्वओ हिंडिउमारद्धा, किं ते सव्वरयणाणि पिंडेज्ज ?, अवि देवयापभावेण विभासा ५ ।

सुविणत्ति एगेण कप्पडिएण सुविणे चंदो गिलिओ, कप्पडियाण कहियं, ते भणंति–संपुन्नचंदमंडलसरिसं पावत्तियं (पूयलियं) लभिहिसि, लद्धा घरछायणियाए, अण्णेणवि दिट्ठो, सो ण्हाइऊण पुप्फफलाणि दाऊणं सुविणयपाढगस्स कहेइ, तेण भणियं–राया भविस्ससि, इओ य सत्तमे दिवसे तत्थ राया मओ अपुत्तो, सो य निव्वण्णो अच्छति जाव आसो अहिवासिओ आगओ, तेण तं दट्ठूण हेसियं पयक्खिणी कओ य, तओ विलइओ पट्ठे, एवं सो राया संजाओ, ताहे सो कप्पडिओ तं सुणेइ, जहा–तेण वि दिट्ठो, एरिसो सुमिणओ, सो आएसफलेण किर राया जाओ, सो चिंतेइ–वच्चामि जच्छगोरसोत्थ तं पिवित्ता सुवामि, जा पुणो तं चेव सुविणगं पासामि, अत्थि पुण सो पेच्छेज्ज ? अवि य सो० ण य माणुसाओ० ६ ।

चक्कत्ति दारं, इंदपुर नगरं, इंददत्तो राया, तस्स इट्ठाण वराणं देवीणं बावीसं पुत्ता, अन्ने भणंति–"एक्काए चेव देवीए पुत्ता," रइणो पाणसमा, अन्ना एक्का य अमच्चधूया, सा पर परिणेंतेण दिट्ठेल्लिया, सा अन्नया कयाइ ण्हाया समाणी अच्छइ, रण्णा दिट्ठा, का एसत्ति ?, तेहिं भणियं–तुज्झं देवी एसा, ताहे सो ताए समं रत्तिं एक्कं वसिओ, सा य रिउण्हाया, तीसे गब्भो लग्गो, सा य अमच्चेण भणिएल्लिया–जया तव गब्भो आहूओ भवइ तया ममं साहेज्जासु, तीए तस्स कहितं दिवसो मुहुत्तो जं च रण्णएण उल्लवियं, तेण तं पत्तए लिहियं, सो सारवेति, णवण्हं मासाणं दारओ जाओ, तस्स दासचेडाणि तद्दिवसं जायाणि, तं० अग्गियओ, पव्वयओ, बहुलिया, सागरओ य, ताणि सहजायगाणि, तेण कलायरियस्स उवणीओ, तेण लेहाइयाइयाउ गणियप्पहाणाउ कलाउ पगाहिओ, जाहे ताउ गहेति आयरिओ ताहे ताणि तं कुट्टेंति पेल्लेंति य, पुव्वपरिसएणं ताणिति रोडेंति, तेण ताणि ण चेव गणियाणि, गहियाउ कलाउ, ते अन्ने बावीसं कुमारा गाहिज्जंता तं आयरियं पिट्टंति अवयणाणि य भणंति, जाहे ते आयरिओ पिट्टेंति ताहे गंतूणं माऊणं साहंति, ताहे ताओ आयरियं खिसंति, कीस आहणसि तं, किं सुलभाणि पुत्तजम्माणि ? अओ ते न सिक्खिया, इओ य महुराए पव्वयओ (जियसत्तू) राया, तस्स निव्वुइ नाम दारिया, सा रण्णो अलंकिया उवणीया, राया भणति–जो तव रोयइ भत्तारो तं गेण्हाहि, ततो ताए भणियं जो भूरि वीरो विक्कंतो सो मम भत्ता होउ, सो पुण रज्जं देज्जा, ताहे सा बलवाहणं गहाय गया इंदपुरं नगरं, तत्थ इंददत्तस्स रन्नो बहवे पुत्ता, इंददत्तो तुट्ठो चिंतेति–णूणं अहं अन्नेहिंतो सइहिंतो लट्ठो जेणेमा आगया, तओ णेण उस्सियपडायं णयरं कारियं, तत्थ एक्कंमि अक्खे अट्ठ चक्काणि, तेसिं पुरओ धीउल्लिया, सा अच्छिमि विंधियव्वा, तओ इंददत्तो राया सन्नद्धो निग्गओ सह पुत्तेहिं, सा

त्रि कन्ना सवालंकारविभूसिया एगंमि पासे अच्छति, सो रंगो रायाणो ते य दंडभडभोइया जारिसो दोवईए, तत्थ रन्नो जेट्ठो पुत्तो सिरिमालीनामकुमारो, सो भणिओ-पुत्त एसा दारिया रज्जं च घेत्तव्वं, अओ विंध एयं पुत्तलियंति, ताहे सो अकयकरणो तस्स समूहस्स मज्झे धणुं चेव गेण्हिउं न तरति, कहवि गहियं तेण, जओ वच्चउ तओ वच्चउत्ति मुक्को सरो, चक्केहिं अप्फिडिऊण भग्गो, एवं कस्सइ एगं अरगतरं वोलीणो कस्सइ दोन्नि कस्सइ तिन्नि अन्नेसिं बाहिरेण चेव नीति, ताहे राया अधितिं पकओ-अहोऽहं एएहिं धरिसिउत्ति, ततो अमच्चेण भणियं-कीस अधितिं करेह ?, राया भणति-एतेहिं अह अप्पहाणो कओ, अमच्चो भणति-अत्थि अन्नो तुज्झ पुत्तो मम धूयाए तणओ सुरिंददत्तो नामा, सो समत्थो विंधिउं, अभिण्णाणि से कहियाणि, कहिं ?, सो दरिसिओ, ततो राइणा अवगूहितो भणिओ य-सेयं तव एए अट्ठ रहचक्के भेत्तूण पुत्तलियं अच्छिमि विंधेत्ता रज्जसहियं नेव्वुइं दारियं संपावित्तए, तओ कुमारो जं आणवेहत्ति भणिऊणं ठाणं ठाइऊणं धणुं गेण्हति, लक्खाभिमुहं सरं सज्जेति, ताणि य दासरूवाणि चउदिसिं ठियाणि रोडेंति, अण्णे य उभओ पासिं गहियखग्गा, जइ कहवि लक्खस्स चुक्कइ तो सीसं छिंदियव्वंति, सोवि से उवज्झाओ पासे ठिओ भयं देइ-मारिज्जसि जइ चुक्कसि, ते बावीसंपि कुमारा एस विंधिस्सतित्ति, ते विसेसओ उल्लंठाणि विग्घाणि करेंति, ततो ताणि चत्तारि ते य दो पुरिसे बावीसं च कुमारे अगणेंतो ताणं अट्ठण्हं रहचक्काणं अंतरं जाणिऊण तंमि लक्खे निरुद्धाए दिट्ठीए अन्नमई अकुणमाणेण सा वीवीइया वामे अच्छिमि विद्धा, तओ लोगेण कलयलुम्मिस्सो साहुक्कारो कओ, जह तं चक्कं दुक्खं भेत्तुं, एवं माणुसत्तणंपि ७ ।

चम्मेत्ति सेवालो, जहा-एगो दहो जोयणसतसहस्सविच्छिण्णो चम्मेण णद्धो, एगं मज्झे छिड्डं, तत्थ कच्छभस्स गीवामाइ,

तत्थ कच्छभो वाससए वाससए तए गीवं पसारेइ, तेण कहवि गीवा पसारिया जाव तेण छिड्डेण निग्गया, तेण जोइसं दिट्ठं कोमुइयाए, सो गओ सयणिज्जयाणं दाएमि, आणेत्ता सव्वतो पलोएति ण पेच्छति, अवि सो न य माणुसाओ० ८।

जुगदिट्ठंतो जहा–" पुव्वंते होज्ज जुगं अवरंते तस्स होज्ज समिला उ। जुगछिड्डंमि पवेसो इय संसइओ मणुयलंभो ॥ १ ॥ जह समिला पब्भट्ठा सागरसलिले अणोरपारंमि। पविसेज्ज जुग्गछिड्डं कहवि भमंती भमंतंमि ॥ २ ॥ सा चंडवायवीई पणोल्लिया अवि लभेज्ज जुगछिड्डं। न य माणुसाउ भट्ठो जीवो पडिमाणुसं लहइ ॥ ३ ॥ " ९।

इयाणिं परमाणू, जहा–एगो खंभो महप्पमाणो, सो देवेणं चुन्नेऊण अविभागिमाणि खंडाणि काऊण नलियाए पक्खित्तो, पच्छा मंदरचूलियाठिएण फूमिओ, ताणि णट्ठाणि, अत्थि पुण कोइ तेहिं चेव पोग्गलेहिं तमेव खंभं णिव्वत्तेज्जा, नो इणट्ठे समट्ठे, एव भट्ठो माणुस्साओ० न पुणो, अहवा सभा अणेगखंभसयसन्निविट्ठा, सा कालंतरेण झामिया पडिया, अत्थि पुण कोई तेहिं चेव पोग्गलेहिं करेज्जा ?, नो इ० १०। एवं माणुस्सत्तं दुल्लभं।

" इय दुल्लहलंभं माणुसत्तणं पाविऊण जो जीवो। न कुणइ पारत्तहियं सो सोयइ संकमणकाले ॥ १ ॥ जह वारिमज्झछूढोव्व गयवरो मच्छउव्व गलगहिओ। वग्गुरपडिउव्व मओ संवट्टइओ जह व पक्खी ॥ २ ॥ " वारिसद्देण हत्थिबंधणं भन्नइ, संवट्टइउत्ति संवट्ट–जालं तत्थ इओ संवट्टइउत्ति, " सो सोयइ मच्चुजरासमोच्छुओ तुरियनिद्दपक्खित्तो। तायारमविंदंतो कम्मभरपणोल्लिओ जीवो ॥ ३ ॥" सो पुण एवं मओ समाणो "काऊणमणेगाइं जम्ममरणपरियट्टणसयाइं। दुक्खेण माणुसत्तं जइ लहइ जहिच्छया जीवो ॥ ४ ॥ तं तह दुल्लहलंभं विज्जुलयाचवलं माणुसत्तं। लद्धूण जो पमायइ सो काउरिसो न

सप्पुरिसो ॥ ५ ॥"त्ति । अहवा–खणलाभो दीवनायं च, तत्थ खणलाभो वक्खाणिओ चेव, दीवनायं पुण जहा–" अंधयारे महाघोरे, दीवो ताणं सरीरिणं । एवमन्नाणतामिस्से, भीसणंमि जिणागमो ॥ १ ॥ अहवा–" दीवो ताणं सरीरीणं, समुद्दे दुत्तरे जहा । धम्मो जिणिंदपन्नत्तो, तहा संसारसागरे ॥ २ ॥" तहा–धम्मस्स–सुयचारित्तरूवस्स गुणा–उवगारा फलाणि धम्मगुणा तेसु, चसद्दो समुच्चये, विविहेसु–बहुविहेसु इहलोगपरलोगविसएसु, जहा भणियं–"तणसंथारनिसण्णोवि मुणिवरो भट्ठरागमयमोहो । जं पावइ मुत्तिसुहं कत्तो तं चक्कवट्टीवि ? ॥ १ ॥" एवमाइ ॥ ४८ ॥ तहा—

बाहगदोसविवक्खे धम्मायरिए य उज्जयविहारे । एमाइचित्तणासो संवेगरसायणं देइ ॥ ४९ ॥

जेहिं जेहिं अत्थकामरागाइहिं धम्माहिगारी पुरिसो कुसलाणुठाणाओ पाडिज्जइ ते बाहगदोसा तेसिं विवक्खो–पडिवक्खभावणा तत्थ चित्तविन्नासो कायव्वो, जओ भणियं–" जो जेणं बाहिज्जइ दोसेणं वेयणाइविसएणं । सो खलु तस्स विवक्खं तव्विसयं चेव झाएज्जा ॥ १ ॥" वेयणत्ति अत्थमाई–" अत्थंमि रागभावे तस्सेव उवज्जणाइसंकेसं । भावेज्ज धम्महेउं अभावमो तहय तस्सेव ॥ १ ॥" एवमाइ, तहा–धम्मायरिए–बोहिदायगे गुरुंमि, एवं चित्तविन्नासो कायव्वो, जहा–" संमत्त-दायगाणं दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु । सव्वगुणमेलियाहिवि उवयारसहस्सकोडीहिं ॥ १ ॥" एवमाइ, तहा उज्जयविहारे चित्त-विन्नासो कायव्वो, "जहा कइया होही सो वासरो उ गीयत्थगुरुसमीवंमि । सव्वविरइं पवज्जिय विहरिस्सामी अहं जंमि ॥१॥" एवमाइ, चित्तनासो किं करेइ ?, भन्नइ–'संवेगरसायणं देइ' त्ति संवेगो–संसारनिव्वेओ मोक्खाणुरागो वा सो चेव रसायणं–अमयं अजरामरत्तकारणत्ताओ संवेगरसायणं, तं देइ–पयच्छइ, एवं चित्तविन्नासे संवेगो उप्पज्जइत्ति ॥ ४९ ॥ ततो—

गोसे भणिओ य विही इय अणवरयं तु चिट्ठमाणस्स । भवविरहबीयभूओ जायइ चारित्तपरिणामो ॥५०॥

गोसे-पभाए भणिओ चेव विही "नवकारेण विबोहो" एमाई, पुणोवि न भन्नइ, अणवरयं तु चेट्ठमाणस्स इति पुव्वभणियविहिणा नवकारविबोहाइणा अणवरयं-सयाकालं चेट्ठमाणस्स-भणियाणुठाणं करेंतस्स सावगस्स, किं होइ ?, भन्नइ-भवविरहबीयभूओ जायइ चारित्तपरिणामोत्ति भवविरहो-संसारविओगो तस्स बीयभूओ-कारणं भवविरहबीयभूओ जायइ-उप्पज्जइ चारित्तपरिणामो सव्वविरइपरिणामो, एवं हि देसविरइमणुसीलंतस्स उवायपवित्तीए अवस्सं भवविरहबीयभूओ चारित्तपरिणामो तंमि अन्नंमि वा भवे होइत्ति ॥ ५० ॥

पंचासगवित्तीओ आवस्सगसुत्तवित्तिचुन्नीणं । नवपयसावयपन्नत्तिमाइसत्थाण मज्झाओ ॥ १ ॥
मंदमईण हियत्थं एसा चुन्नी समुद्धिया सुगमा । सिरिचंदकुलनहंगणमयंकसिरिचंदसूरीणं ॥ २ ॥
सिरिवीरगणिमुणीसरकप्पूरसिद्धंतसिंधुसिस्साणं । सिस्सेहिं सिवमणेहिं सिरिमज्जसदेवसूरीहिं ॥ ३ ॥
नयणमुणिथाणुमाणे(११७२)काले विगयंमि विक्कमनिवाओ । संसोहिया य एसा विबुहेहिं समयनिउणेहिं ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीश्रीचन्द्रसूरिशिष्याचार्यश्रीयशोदेवदृब्धा आद्य(श्रावक)पंचाशकचूर्णिः समाप्ता ॥

इति श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई-जैन-पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०२ ॥

पुष्पिका

संवत् १९६४ वै शाके १८२९ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे शुभमाहाशुक्लपक्षे पुनमे(१५) लिखितं जयतारणमारवाड-माहात्मा दीपचंद । तपागच्छे विराजमानमहाराजजीपूज्यपंन्यासजी (अधुना आचार्यप्रवर) महाराजजी श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीमुनिराज आणंदसागरजी महाराजजीनी ॥ शुभं भवतु ॥

इति श्रीश्रीचन्द्रसूरिशिष्याचार्यश्रीयशोदेवहब्धा

आद्य(श्रावक)पंचाशकचूर्णिः समाप्ता ॥

इति श्रेष्ठि देवचन्द्र लालाभाई-जैन-पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०२ ॥

प्रथमं परिशिष्टम्



आद्य(श्रावक)पञ्चाशकचूर्णावुद्धृतानां गाथादिप्रमाणानामकारादिक्रमः

गाथाद्याद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्याद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
अइखद्धकारगं वा जं	६३	(ओघ० भा० २७९)*	अणभिग्गहियकुदिट्ठी	१३	(उत्त० गा० १०८६)
अज्जो ! संलेहिओ	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६०)	अणहुयं उब्भावइ	५७	(नव० प्र० गा० ३०)
अजुयलिया अतुरंता	१०७	(ओघ० गा० ३१३)	अणिच्चं जीवियं देहो	१४५	( )
अज्झयणछक्कवग्गो	१४९	(अनु० गा० २)	अणुबद्धविग्गहोऽविय	१३९	(बृह० गा० १३२४)
अट्ठारसहा बभं नवगुत्ती	६८	(नव० प्र० गा० ४८)	अणुसासिय पुचाई	१४३	( )
अट्ठेण त न बधइ	८९	(आव० चू० भा० २, पृ० २९७)	अण्णपि व अप्पाणं	१३८	( )
अडइ बहुं वहइ भरं	७७	(नव० स्वो० प० २७)	अत्थमि रागभावे	१५७	(पंचव० गा० ८९१)

* दर्शितग्रंथेषु किंचित् पाठभेदेऽप्येतानि प्रमाणानि सन्ति केषुचित्स्थलेषु संस्कृतस्यापि प्राकृत कृत संभवति च ।

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांश	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
अनिरिक्खियापमज्जिय	९८	(श्रा० प्र० गा० ३१५)	असिणाणवियडभोई	१२०	(पंचा० गा० ४६२)
अन्नदाणा हरे बालं	३१	(आव० चू० भा०१, पृ. ४६२)	असियसयं किरियाण	४८	(आचा० टी० प० १७)
अन्नाणंधा मिच्छत्त	१०८	( )	असुरसुरं अचवचवं	१०६	(ओघ० भा० २८९)
अन्नाण ससओ चेव	५०	(नव० स्वो०, प० १२)	अह भवसुहविरयमणो	१०३	( )
अन्ने अभिग्गहा खलु	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७६)	अह सलिहियसरीरो	१४४	( )
अन्नेसि सत्ताण	४५	( )	अहिगयजीवाजीवे	१२५	(औप० सू० ४१)
अबुहजणपत्थणिज्जं	७१	( )	अहिगरणखामण	११८	(श्रा० प्र० गा० ३६५)
अब्भंगाइ सव	१४४	( )	अगपच्चगसठाणं	७३	(उत्त० गा० ३९२)
अब्भुट्ठाणे विणए परक्कमे	११४	(आव० नि० ८४८)	अंतो वा बाहिं वा	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४२५)
अभिवंदिऊण देवे	१३९	( )	अंधयारे महाघोरे	१५७	(पचा० टी०, प० ३६)
अयस जीवियणासं	७२	( )	आगाढजोगवाही	६२	(ओघ० गा० ५४९)
अवसेसा अणगारा	१३४	(व्य० उ० १० गा० ५२४)	आणाईसरियं वा इड्ढी	७२	( )
अविराहियसामन्नस्स	९६	(श्रा० प्र० गा० ३००)	आययणसेवणा निन्निमित्त०	११४	(पंचा० टी० प० २८)

गाथाद्यंशः	पृष्ठांक.	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
आयरियपायमूलं	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६५)	इय गुच्छाइसु सहसा	१०८	( )
आयाराईगुणड्ढाण	१३०	( )	इय दुलहलंभ	१५६	(आव० नि० ८३६)
आरंभाणुमईओ	९५	(श्रा० प्र. गा. २९४)	इयपडिवन्नाणसणो	१४५	( )
आलोयण अदाउ सइ	१३०	(पचा० गा० ७३३)	इरिएसणभासासु	९८	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०१)
आसीविसेण खेलइ	७१	( )	इह सावगो दुविहो	९३	(आव० चू० भा० २, पृ० २९९)
आसेवियगिहिधम्मेण	१४३	(श्रा० प्र० टी०, प० २०५)	इंगालकंमंति	८७	(आव० चू० भा० २, पृ० २९६)
आहाकम्मियपाण	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४३७)	इंगाले वणसाडी	८६	(श्रा० प्र० गा० २८७)
आहारगुत्ते अविभूसियप्पा	६८	(आव० स० गा० ४१)	इंगियमरणविहाण	१३९	(पंचव० गा० १६२३)
आहारपोसहो दुविहो	१०२	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०४)	इगिणिमरण विहिणा	१४३	(पचव० गा० १६२२)
इणमवि चिंतेयव्वं	६८	(आव० चू० भा० २, पृ० २८८)	इदनागेण अरहया	३५	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६६)
इत्तरपरिग्गहियागमण	७४	( )	इदियबलऊसासाउ	५०	(प्रव० सा० गा० १०६६)
इत्ता गेणावडिय	१४६	( )	इंदियाणि कसाए य	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६४)
इय अप्पवडिय	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३८९)	उक्कोसगा उ एसा	१२८	(जीत० भा० गा० ३५५)

गाथाद्यांश:	पृष्ठांक:	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
उग्ग तप्पति तवं सरीर	११०	(नव० प्र० गा० ११९)
उग्घोसण च पावई तिए	६५	( )
उच्चियकलं मोत्तूणं	६६	(आव०चू०भा०२,पृ०२८८)
उड्ढं जं परिमाण	८२	(श्रा० प्र० टी०, पृ० १५०)
उण्हंमि सिल्लावट्टे	१३४	(मर० गा० ४७८)
उद्दिट्ठकडं भत्तंपि	१२३	(पंचा० गा० ४७६)
उप्पन्ना २ माया	१३१	(व्य० उ० १० गा० ४७०)
उप्पन्ने उवसग्गे	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५६८)
उभयन्नूवि य किरियावरो	१०६	( )
उम्मग्गदेसओ मग्ग	१३९	(बृह० गा० १३३०)
उवणीय जो कुच्छइ	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४५९)
उवभोगपरिभोगाइरित्ताणि	९२	(श्रा० प्र० टी०,पृ० १५७)
उवभोगो विगईओ	८३	(नव० स्वो०, प० ३०)

गाथाद्यांश:	पृष्ठांक:	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
उवसमसम्मत्ताओ	१०	(विशे० गा० ५३१)
उवसामगसेढीगयस्स	१०	(श्रा० प्र० गा० ४५)
उव्वत्तइ परियत्तइ	१३९	(पंचव० गा० १६२५)
उस्सिया—अग्गला	१२६	( )
एए चेव उ भावे	११	(उत्त० गा० १०७९)
एक्कमि निज्जवए	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४४३)
एगमुहुत्तं दिवस राइं	१००	(आव० चू०भा०२, पृ०३०२)
एगतनिज्जरा से	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५८६)
एगेण अणेगाई	१२	(उत्त० गा० १०८२)
एगो मे सासओ	१४५	(आतु० गा० २६)
एगोहं नत्थि मे	१४५	( )
एण्हिं सयवसस्स	१३५	(मर० गा० ३७५)
एत्तो एगयरेण सलेहण	१२८	(जीत० भा० गा० ३५६)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांक.	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांक.	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
एत्थ य आहारो	१३८	( )	एव उक्कोसेण एक्कारस	१२४	(पंचा० गा० ४८२)
एगाइ भाविगप्पा	१४६	( )	एवं खु जंतपिल्लण कम्मं	८७	(श्रा० प्र० गा० २८८)
एमेव दंसणमिवि	१३१	(व्य० उ०१० गा०४७६)	एवं च विहरिऊण	१२७	(श्रा० प्र० गा० ३७७)
एमेव सेसगाइवि	१४४	( )	एवं जा छम्मासा एसो	१२१	(पंचा० गा० ४६६)
एयस्स य भावेणं	१४५	(भक्त० गा० १६६)	एवं तु भावणाओ	१४६	( )
एग किल सागारं	१४४	( )	एव पाओवगमं	१४३	(व्य० उ० १० गा० ५९९)
एगं ससल्लमरण मरिऊण	१३०	(उत्त० नि० २२०)	एव पि हु वियडतो	१३१	( )
एगं सामायारिं णाऊण	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७५)	एवं सव्ववएसुवि	१००	(आव० चू० भा०२, पृ०३०२)
एयाउ भावणाओ	१३९	(बृह० गा० १३३६)	कइयाणु अह दिक्खं	९९	(आव० चू० भा०२, पृ० ३०२)
एयाउ विसेसेण	१३९	(पंचव० गा० १६६२)	कइया होही सो वासरो	२५७	(पंचा० टी०, प० ३६)
एयाणि य अन्नाणि	६५	( )	कज्ज अगिहिघगिही	९१	(आव० चू० भा०२, पृ०२९७)
एयाणि य अन्नाणि य	७८	( )	कडसामइओ पुव्विं	४८	(श्रा० प्र० गा० ३१४)
एत्त अप्पविडिए	८	(विशे० गा० १२२३)	कम्ममसखेज्जभव	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५०८)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
कयपोसहो न अप्पडिलेहियं	११०	(श्रा० प्र० टी०, पृ० १७७)
कयसामाइएण	९४	(आव० चू० भा०२, पृ०३००)
कयसामाइओ सो	९५	(श्रा० प्र० गा० २४३)
करकयविकत्तणं कंडुपायणं	६५	( )
करेमि भंते ! पोसहं	१०४	( )
करेमि भंते ! सामाइय	९४, १०४	(आव० चू०भा०२, पृ०२९९)
कलमोयणो य पयसा	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४५०)
कहकहकहस्स	१३८	(बृह० गा० १३०५)
कंखा अन्नोन्नदंसण	४६	(श्रा० प्र० गा० ८७)
कंदप्पदेवकिब्बिस	१३८	(बृह० गा० १३०२)
कंदप्पाइ उवेच्चा	९२	(नव० प्र० गा० ९०)
कंदप्पे कुक्कुइए	१३८	(बृह० गा० १३०४)
काउ चेइयपूयं	१४३	( )

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
काऊण गंठिमेयं	१५	(नव० प्र० गा० १४)
काऊण चोरियाओ वच्चइ	६४	( )
काऊण तक्खणं चिय	९८, १०५	(श्रा० प्र० गा० ३१७)
काऊणमणेगाइं	१५६	(आव० नि० ८३९)
का य रई परदारे	७१	( )
कालम्मि अणाईए जिवाण	१०८	( )
कालंमि वट्टमाणे अईयकाले	११३	(आव० चू०भा०२, पृ०३०६)
काले दिन्नस्स पहेणयस्स	१११	(आव० चू०भा०२, पृ०३०६)
किर सो सावगो मेहुणमेव	७५	( )
किह नासेज्ज अगिओ	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४२४)
किं पुण अणगारसहाय	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५२०)
कुक्कुडिअंडगमेत्तं	६३	(ओघ० भा० २७९)
कुणमाणो वि य किरियं	४	(आचा० नि० २१९)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
कुणमाणोऽनिविर्त्ति	४	(आचा० नि० २२०)
कुसमयसुईण	४४	(उप० मा० गा० २७१)
कुसुमसमा अब्भासा	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३८८)
कुसुमेहिं वासियाणं	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३८७)
कोउगभूई कम्मे	१३९	(बृह० गा० १३१६)
खुरमुडो लोएण व	१२३	(पंचा० गा० ४७९)
खामेमि य सव्वजीवे	१४४	(आव० सू० गा० ८)
खितिगमणंपि व	१७	(विशे० गा० १२०९)
खितिसामावियगमणं	१६	(विशे० गा० १२०८)
खीणे दसणमोहे	१०	(श्रा० प्र० गा० ४८)
खेत्ताइ कसह गोणे	८९	(आव० चू० मा०२, पृ० २९७)
खेत्ते खले य रन्ने	६५	( )
गहण पव्वज्जाए जओ	१२५	(पंचा० गा० ४८४)
गामागरनगराणं	६५	( )
गारवपंकनिब्बुडा	१३०	(उत्त० नि० २१९)
गिरिसिहरे पयलायइ	७२	( )
गुज्झोरुवयणकक्खोरुअंतरे	७३	( )
गुरुणाऽणुन्नायाणं किंचं	१०४	( )
गुरुपारतंतनाणं सद्दहणं	१०४	( )
गुरुमूले सुयधम्मो	११५	(पचा० गा० ९)
गुरुसक्खिओ हु धम्मो	१०५	(श्रा० प्र० गा० ३५१)
गूढसिरागं पत्तं सच्छीरं	८३	(प्रज्ञा० गा० ८५)
घोरंमि गब्भवासे	१३५	(मर० गा० ३८५)
चउसु ठाणेसु नियमा	१४९	(आव० चू० मा० २, पृ० २९९)
चक्कागं भज्जमाणस्स	८३	(प्रज्ञा० गा० ८४)
चंडभडबद्धकक्खडखर	६५	( )

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
चियत्तो पीतिजणगो	१२६	( )
चिंतामणी अउव्वो	१४५	(भक्त० गा० १६७)
चिंतिंति करेंति सयंति	९२	(नव० प्र० गा० ९१)
चिंतेयव्वं च नमो तेसिं	७६	(आव० चू० भा० २, पृ० २९२)
चिंतेयव्वं च नमो	८२	(आव० चू० भा० २, पृ० २९५)
चिंतेयव्वं च नमो	९२	(आव० चू० भा० २, पृ० २९८)
चुलसीइजोणिलक्खसु	१०८	( )
चोद्दसपुव्व	१४६	( )
चोरिकं कुणमाणो	६५	( )
चोरो चोरावगो मंती	६७	(प्रश्न० टी० पृ० ५८)
चोल्लगपासगधण्णे	१५१	(आव० नि० ८३२)
छउमत्थो मूढमणो	१०९	( )
छत्तीसगुणसमन्नागएण	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६८)

गाथाद्यांश.	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
छन्नंगदसणे फासणे य	७२	(नव० प्र० गा० ५३)
छेयस्स जाव दाणं ताव	९७	( )
जइ आहाकम्मं देइ	१११	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०५)
जइ जिणमयं पवज्जइ	१०	(विशे० गा० १३८२)
जइ ताव सावयाउ	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५१९)
जइवि गिही अनियत्तो	५९	(आव० चू० भा० २, पृ० २८६)
जइवि न आहाकम्मं	१४८	(पंचा० टी०, प० ३२)
जइवि न वंदणवेला	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७३)
जइवि न पावइ मरणं	६५	( )
जइ पज्जुवासणपरो	१२३	(पंचा० गा० ४७८)
जणयसुयाणं च जए	७७	(नव० स्वो०, प० २७)
जण्णं इमे समणे वा	१४९	(अनु० सू० २७)
जत्थ अनिस्सकडं	१४८	(पंचा० टी०, प० ३२)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
जत्थत्थि सत्तपीला	८१	(आव० चू० भा० २, पृ० २९४)
जत्थ बहूण घाओ	८५	( )
जम्मजरामरणजलो	१०८, १४५	(भक्त० गा० १६४)
जम्हा हारेण विणा	१३६	(व्य० उ० १० गा० ५४१)
जयणा उ धम्मजणणी	५५	(पंचा० गा० ३२४)
जयणाए वट्टमाणो	५५	(पंचा० गा० ३२५)
जस्स नो समं	५२	(पंचा० टी०, प० ८)
जस्स मूलस्स कट्ठाउ	८३	(प्रज्ञा० गा० ७६)
जह जह अप्पो लोभो	७८	(आव० चू० भा० २, पृ० २९४)
जह बालो जंपंतो कज्ज	१३१	(व्य० उ० १०, गा० ४६९)
जहऽवतीसुकुमालो	१४१	(व्य० उ० १०, गा० ५९५)
जह वारिमज्झछूढो	१५६	(आव० नि० ८३७)
जह समिला पब्भट्ठा	१५६	(आव० नि० ८३४)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
जह सुकुसलोवि वेज्जो	१३०	(व्य० उ० १०, गा० ४६६)
जह सो चिलायिपुत्तो	१४२	(व्य० उ० १०, गा० ५९२)
जहा कुक्कुडपोयस्स	७३	(दश० गा० ३८८)
जं असियं बीभत्थं	१३६	(मर० गा० २८७)
जं कुणइ भावसल्लं	१३०	(ओघ० गा० ८०५)
जं जह भणियं तं	१०	(श्रा० प्र० गा० ४९)
जं जं नज्जइ असुइं	१५०	(उप० मा० गा० २०९)
जं जं वच्चइ जाइं	५९	( )
जंतेण करकएण	१३५	(मर० गा० ४८१)
जं दट्ठुं वड्ढए कोहो	४१	(आव० चू० भा० १, पृ० ४७४)
जं दट्ठुं वड्ढए नेहो	४१	(आव० चू० भा० १, पृ० ४७५)
जं निहियमत्थजायं	१२३	(पंचा० गा० ४७७)
जं मोणं तं सम्मं	९	(श्रा० प्र० गा० ६१)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
जं मोणति पासहा	९	(आचा० सू० १५६)
जाओ परवसेण	१३५	(मर० गा० ३७४)
जाणतेणवि एवं	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६७)
जारिसओ जइभेओ	४	(आव० चू० भा० २, पृ० २७४)
जारिसे समणाण	१२४	(दशा० सू० ३०)
जाव पोसह पज्जुवासामि	१०५	( )
जिणपूजोचियदाणं	१४८	(पंचा० टी०, पृ० ३२)
जिणवयणमप्पमेयं	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५२१)
जिण वयणमेव तत्तं	९	(पंचव० गा० १०६३)
जीवपरिणामहेऊ	१५०	( )
जीववहं इच्छंतो जइ	५७	( )
जुत्तो पुण एस कमो	१२५	(पंचा० गा० ४९३)
जे उच्चट्ठाणगया रमंति	७२	( )
जे चेव अधयारि दोसा	६३	(ओघ० भा० २७८)
जे ताव संभरेज्जा	१३१	( )
जे दंतसोहणंपि हु	६८	(नव० प्र० गा० ४७)
जे दंसणवावन्ना	८	(पंचव० गा० १०३९)
जे पुण अणत्थदंड	८९	(नव० प्र० गा० ८७)
जे मे जाणति जिणा	१३१	(व्य० उ० १० गा० ४७९)
जे वि य कयंजलिउडा	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७२)
जेसिं चोरेउं जे पच्चक्खाणं	६५	( )
जो अत्थिकायधम्म	१३	(उत्त० गा० १०८७)
जो कुंचगावराहे	१३४	(आव० नि० ८६९)
जोगाण दुप्पणिहाणं	५०	(नव० स्वो०, प० १२)
जो जहवायं न कुणइ	९	(उप० मा० गा० ५०४)
जो जारिसओ कालो	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४९२)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
जो जिणदिट्ठे भावे	११	(उत्त० गा० १०७८)	तम्हा कम्माणीयं	४	(आचा० नि० २२१)
जो जेण सुद्धधम्मे	५२	(पंचा० टी०, प० ८)	तम्हा गीयत्थेणं	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४३४)
जो जेणं वाहिज्जइ	१५७	(पंचव० गा० ८९०)	तयभावम्मि आलोए	१३०	( )
जो सजओ वि एयासु	१३८	(बृह० गा० १३०३)	तसपाण बीयरहिए	१३९	(व्य० उ० १० गा० ५६६)
जो सुत्तमहिज्जतो	११	(उत्त० गा० १०८१)	तस्स णं बहूइं सीलवय	११९	(दशा० सू० २०)
झायइ पडिमाए ठिओ	१२०	(पचा० गा० ४६३)	तस्स य चरिमाहारो	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४१४)
ठाणदिसिपगासणया	६२	(ओघ० गा० ५६४)	तं च करेंतो सव्वं	१४४	( )
ण्हाणं पियणविलेवण	८४	(नव० स्वो०, प० ३२)	तं तह दुल्लहलभं	१५६	(आव० नि० ८४०)
तणकट्ठेहिं व अग्गी	७८	( )	त तारिसय रयणं	१३४	(व्य० उ० १० गा० ५२८)
तणसथारनिसण्णोवि	१५७	(सस्ता० गा० ४८)	तं दुविहं नायव्व	१३९	( )
तण्हा छेयमि कए	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४९७)	तमि कए वज्जेज्जा	१४४	( )
तत्तायगोलकप्पो	८१	(आव० चू० भा० २, पृ० २९४)	तंमि वि कए समाणे	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७४)
तत्थ असंपत्तो अत्थो	७०	(दश० नि० २६२)	त सत्तिओ करेज्जा	१०३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०४)

गाथाद्याद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्याद्यंशः	पृष्ठांक	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
ता कइया त सुदिण	१०८	( )	तेसिं नमामि पयओ	६१	(नव० प्र० गा० ३८)
तारिसाणि भणिउं न	९१	(श्रा० प्र० टी०, पृ० १५७)	तेसिं नमो भावेणं	१४६	( )
(ताहे)तेण दारवाले	१५१	(आव० चू० भा० १, पृ० ४४६)	तेसिं पणिहाणाओ	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७०)
तित्थे सुत्तत्थाण गहणं	१०६	( )	तो सक्कारेयव्वा बुहेण	११३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०६)
तिदुगेगाणं तियतियं	१०५	( )	थाणुव्व गठिदेसो गंठिय	१७	(विशे० गा० १२१०)
तिन्नि वा कड्ढई जाव	१४९	(प्रव० सा० गा० ४३९)	थंभंति नईवेगे सावं	५९	( )
तिन्नि सया तेसट्ठा	४८	( )	थूलगअदत्तादाणं	६४	(आव० चू० भा० २, पृ० २८७)
तिविहं चउव्विहं	१४५	( )	थूलगं पाणाइवायं	५२	(आव० चू० भा० २, पृ० २८२)
तिविहं तिविहेण	११४	( )	थूलं पाणाइवायं	१४४	( )
ते ज करेंति धीरा	११३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०६)	दट्ठूण पाणिनिवहं	१५	(श्रा० प्र० गा० ५८)
ते पुण कयपणिहाणा	११८	(श्रा० प्र० गा० ३७१)	दट्ठूणं दोसजाल	८९	(नव० प्र० गा० ८५)
ते पुण दुसमयठिइयस्स	९७	(श्रा० प्र० गा० ३०८)	दवग्गी पउरिंधणे	७३	( )
ते विय कयजलिउडा	११८	(श्रा० प्र० गा० ३६९)	दव्वाण सव्वभावा	१२	(उत्त० गा० १०८४)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
दव्वेण मग्गइ कलिं	७१	( )
दतवणं तंबोल	१२२	(पंचा० गा० ४६९)
दंसणनाणचरित्ते	१२	(उत्त० गा० १०८५)
दसणपडिमाजुत्तो	११९	(उपा० टी०, प० १५)
दंसणवयसामाइय	११९	(दशा० नि० ४६)
दंसणविराहगा	४४	( )
दिट्ठीए सपाओ दिट्ठीसेवा	६९	( )
दिट्ठे सुएऽणुभूए	२२	(आव० नि० ८४४)
दिया कागाण बीहेसि	५४	(आव० चू० भा० २, पृ० ६१)
दीहाउओ सरूवो	५४	( )
दीवो ताण सरीरीण	१५७	(पंचा० टी०, प० ३६)
दुक्खज्जिय च दव्व	६४	( )
दुग्गधो पुइमुहो	५९	( )

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
दुब्भिगधमलस्साविं	१४८	(प्रव० सा० गा० ४३८)
दुविहं तिविहेण	११४	(आव० नि० १६५५)
दुविहो खलु आलोगो	६२	(ओघ० गा० ५५०)
देवत्ते माणुस्से	१३५	(मर० गा० ३८२)
देवो नेहेण नये	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७८)
देसविसेसपसिद्धो	८३	( )
देसावगासियं खलु	१०१	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०३)
देसावगासियं नाम	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०२)
देहंमि असलिहिए	१२९	(पंचव० गा० १५७७)
देहो जीवस्स आवासो	१४५	( )
दो चेव देवयाइं	३८	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६९)
दोन्नि सया तेयाला	५०	(नव० प्र० गा० २१)
धणसंचओ य विउलो	७८	( )

गाथाद्यांश	पृष्ठांक:	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
धन्ना जीवेसु दयं	९९	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०२)
धन्ना परिग्गह उज्झिऊण	८०	(आव० चू० भा० २, पृ० २९४)
धन्ना सालिभद्दा	१४२	( )
धन्नो अणुग्गिहीउ संपत्ती	११३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०६)
धन्नो हं जेण मए	१४५	(भक्त० गा० १६५)
धम्मग्गिट्टिग	४४	(नव० स्वो०, प० ९)
धम्मज्झाणोवगओ	९७	(आव० चू० भा० २, पृ०३०१)
धावेइ रोहण तरइ सायरं	७८	(नव० स्वो०, प० २७)
धीरपुरिसपन्नत्ते	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५१८)
न भणेज्ज रागदोसेहिं	१००	(आव० चू० भा०२, पृ० ३०२)
न पवज्जइ पवज्जं	१४३	( )
नरएसु वेयणाओ	१२५	(मर० गा० ३८१)
नरविबुहेसरसोक्खं	१४	(श्रा० प्र० गा० ५६)

गाथाद्यांश	पृष्ठांक:	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
नवकारचिंतण	१४७	(पंचा० टी० प० ३१)
नवकारेण विबोहो	११८	(श्रा० प्र० गा० ३४३)
नवमे जीवसंदेहो	७०	( )
नवविगइ सत्त ओयण	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४९५)
नवि त सत्थं व विसं	१३०	(ओघ० गा० ८०४)
न सरइ पमायजुत्तो	९८	(श्रा० प्र० गा० ३१६)
न य गेण्हेज्ज अदिन्नं	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०३)
न सक्क रूवमदट्ठुं	७२	( )
न हु ते दवसलेह	१३०	(व्य० उ० १० गा० ४६१)
नाणनिमित्तं अद्धाणमेइ	१३१	(व्य० उ० १० गा०४७४)
नाणनिमित्त आसेवियं	१३१	(व्य० उ० १० गा०४७३)
नाणब्भुवगमजयणाहिं	१०४	( )
नाणस्स केवलीण	१३९	(बृह० गा० १३१०)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानि ग्रंथस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
दव्वेण मग्गइ कलिं	७१	( )	दुब्भिगधमलस्सावि	१४८	(प्रव० सा० गा० ४३८)
दतवणं तवोल	१२२	(पंचा० गा० ४६९)	दुविहं तिविहेण	११४	(आव० नि० १६५५)
दसणनाणचरित्ते	१२	(उत्त० गा० १०८५)	दुविहो खलु आलोगो	६२	(ओघ० गा० ५५०)
दसणपडिमाजुत्तो	११९	(उपा० टी०, प० १५)	देवत्ते माणुस्से	१३५	(मर० गा० ३८२)
दंसणवयसामाइय	११९	(दशा० नि० ४६)	देवो नेहेण णये	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७८)
दंसणविराहगा	४४	( )	देसविसेसपसिद्धो	८३	( )
दिट्ठीए सपाओ दिट्ठीसेवा	६९	( )	देसावगासिय खलु	१०१	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०३)
दिट्ठे सुएऽणुभूए	२२	(आव० नि० ८४४)	देसावगासियं नाम	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०२)
दिया कागाण बीहेसि	५४	(आव० चू० भा० २, पृ० ६१)	देहंमि असलिहिए	१२९	(पंचव० गा० १५७७)
दीहाउओ सरूवो	५४	( )	देहो जीवस्स आवासो	१४५	( )
दीवो ताण सरीरीण	१५७	(पचा० टी०, प० ३६)	दो चेव देवयाइं	३८	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६९)
दुक्खज्जिय च दव	६४	( )	दोन्नि सया तेयाला	५०	(नव० प्र० गा० २१)
दुग्गधो पुइमुहो	५९	( )	घणसचओ य विउलो	७८	( )

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
नाणीसु बभयारिसु	११२	(आव० चू० भा० २, पृ०३०६)
नारयतिरियनरामरभवेसु	१४	(श्रा० प्र० गा० ५७)
नासइ इमीए नियमा	४५	(श्रा० प्र० गा० ९०)
नासेइ अग्गीओ	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४२२)
निक्खमपवेसमंडलि	६३	(ओघ० भा० २७५)
निक्खित्तभरो पाय	१२२	(पचा० गा० ४७४)
निग्घिणतेगंतेणं	१२२	(पंचा० गा० ४७१)
निद्दाविगहापरि	३	(पञ्चव० गा० १००६)
निप्फेडियाणि दोन्निवि	१३४	(आव० नि० ८७०)
निरवज्जाहारेण	८५	(नव० स्वो० प० ३२)
निसग्गुवएसरुई	१०	(प्रव० सा० गा० ९५०)
निहण हण गिण्ह	१३६	(मर० गा० ३९४)
नो इहलोगट्टयाए	४६	( )

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
नो खलु अप्परिवडिए	४९	(श्रा० प्र० गा० ९५)
नो मे कप्पइ अन्नउत्थिए	११५	(उपा० सू० ८)
नो से कप्पइ अज्जप्पमिइं	१८	(आव० सू० ३६)
पच्चक्खाइ आहारं	१३९	(पचव० गा० १६२४)
पच्चुरसि परम्मुहपट्ठि	६३	(ओघ० भा० २७६)
पच्छाकयपणिहाणा	११८	(श्रा० प्र० गा० ३६८)
पडणीययाइ कोई अग्गी	१४१	(व्य० उ० १० गा० ५९०)
पडणीययाइ कोई	१४२	(व्य० उ० १० गा० ५९१)
पडिसेवइ विगईओ	१३१	(व्य० उ० १० गा० ४७५)
पढमबीयकसाय	११४	(पचा० टी० प० २८)
पढम तओ य पच्छा	११८	(श्राव० प्र० गा० ३६७)
पढमंमिय सघयणे	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७१)
पढमे जायइ चिंता	६९	( )

गाथाद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
पणमामि अह निच्चं	५७	(नव० प्र० गा० २९)
पत्तपुडपडिच्छन्ने	३३	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६५)
पयईए कम्माणं	१४	(श्रा० प्र० गा० ५५)
परदारवज्जिणो पच	७४	(पंचा० टी० प० १५)
परदारेसु पसत्ता सएसु	७१	( )
परधणहरणपवत्तो	६५	( )
परमत्थसत्थवो वा	१३	(उत्त० गा० १०८८)
परिसुद्धजलगहण	५४	(आव० चू० भा० २, पृ० २८४)
परिसुद्धजलग्गहण	११५	(पंचा० टी० प० २९)
परो अन्नो जो विवाहो	७६	(पंचा० टी० प० १५)
पलंकलट्टसागा	८३	(नव० स्वो० प० ३२)
पल्लग गिरिसरिउवल	१६	(आव० नि० १०७)
पहसतगिलाणेसु य	११८	( )
पंचमे डज्झए अंगं	७०	( )
पंचसया जतेण	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५८८)
पाओवगमणं भणियं	१३९	(व्य० उ० १० गा० ५६५)
पाणाइवायअनियत्तणंमि	५३	(नव० प्र० गा० २४)
पाणवहे वट्टता	५४	( )
पाणे आउकायं सचित्त	१२१	(पंचा० गा० ४६८)
पासत्थोसन्नकुसील	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४९०)
पिइमाइपउत्ताईसंबंधा	१०८	( )
पुढविदगअगणिमारुय	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०२)
पुढविदगअगणि	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७४)
पुरिसेण भुत्तपुव्वं नारिं	१०८	( )
पुव्वते होज्ज जुगं	१५६	(आव० नि० ८३३)
पुव्वभवियप्पेम्मेण	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७७)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
पुव्वभवियवेरेण	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५६७)
पुव्वाउत्त कप्पइ	१२३	(पचा० गा० ४८१)
पुव्वावरदाहिण	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७०)
पुव्वावरसजुत्त	३	(आव० नि० १३००)
पुव्विं सीयलगोवि	१३८	( )
पुव्वोइयगुणजुत्तो	१२०	(पंचा० गा० ४६४)
पुव्वोइयपडिमजुओ	१२०	(उपा० टी० प० १५)
पेसेहि वि आरंभ	१२२	(पंचा० गा० ४७३)
फलफलिपत्ते पुप्फे	८४	(नव० प्र० प० ३२)
बत्तीसलक्षणधरो	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५७९)
बहुसोवि य सो जायइ	७१	( )
बधाइ असक्किरिया	११९	(पंचा० गा० ४५४)
बंधो दुपयाण चउप्पयाणं	५५	(आव० चू० भा० २, पृ० २८४)
बावीससतमोहस्स	१०	( )
बीओ असमिओमित्ति	९९	(पंचा० टी० प० २४)
बुद्धिएँ निएऊण भासेज्जा	५९	(आव० चू० भा० २, पृ० २८६)
भज्जा जायइ माया	१५०	( )
भवचरिमं पच्चक्खामि	१४४	( )
भावेऊणत्ताण उवेइ	१२५	(पंचा० गा० ४८३)
भावेण तदरिथत्तलक्खणेण	८०	( )
भासइ दुयं दुयं	१३८	(बृह० गा० १३०७)
भिक्खुगपवेसणनिमित्तं	१२६	( )
भीओ भीयाए समं	७१	( )
भुत्तभोगी पुरा	१३२	(व्य० उ० १० गा० ४८८)
भुनयणवयण	१३८	(बृह० गा० १३०६)
भोगे अभुजमाणावि	५४	(उप० मा० गा० १२२)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
भोत्तूण वि भोगसुह	१३६	(मर० गा० ३९३)
भोयणओ सावगो फासुय	८४	(श्रा० प्र० टी० पृ० १५२)
मउड न अवणेइ	९५	(आव० चू० भा०२, पृ० ३००)
मच्छियकंटाईणं	६३	(ओघ० भा० २७७)
मज्जण गंधं पुप्फो	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५८०)
मज्जं मंसं महु मक्खणं	८४	(नव० स्वो० प० ३२)
मणसा मिच्छादुक्कडकरणं	१०५	( )
मत्तगयमारुहंतीए	३२	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६३)
मन्नइ तमेव सच्चं	१५	(श्रा० प्र० गा० ५९)
ममकारेऽवोच्छिन्ने	१२३	(पंचा० गा० ४८०)
मरणं च होइ सपरक्कमाण	१२७	( )
मरिऊणऽट्टज्झाणा	१२९	(व्य० उ० १० गा० ४२६)
मलमइलजुन्नवत्थो	८८	(नव० प्र० गा० ८२)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
मंसपेसिं परिच्चज्ज	३३	(आ० चू० भा० १, पृ० ४६५)
माणुस्सखेत्तजाई	१५१	(आव० नि० ८३१)
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा	१२१	(आचा० टी० प० २११)
मिच्छद्दंसणमहण	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३४१)
मिच्छत्तकारणाइं	४९	(नव० प्र० गा० २०)
मिच्छत्तपडिक्कमणं	११४	(पंचा० टी० प० २८)
मिच्छत्तपरिच्चाएण	१८	( )
मिच्छत्तं जमुइण्णं	१०	(विशे० गा० ५३२)
मुणिसुव्वयतेवासी	१४०	(व्य० उ० १० गा० ५८७)
मूलं दारं पइट्ठाण	४	(आव० चू० भा० २, पृ० २८१)
मेहुणमणुसरणं वासणाईय	७०	( )
मेहुणवयभंगंमि आसे	७२	(नव० स्वो० प० २३)
मोहाउयवज्जाणं पयडीणं	९७	(श्रा० प्र० गा० ३०७)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांक.	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
रयहरणेणं पमज्जइ	११०	(आव० चू० भा० २, पृ० २९९)
रसा पगामं न निसेवियव्वा	७३	(उत्त० गा० ११६५)
रंधणकडणपीसणदलणं	८५	(नव० स्वो० प० ३२)
राइभत्तपरिन्नाएचि	१२४	(आव० चू० भा० २, पृ० १२०)
रागदोसविउत्तो	५५	(नव० स्वो० प० १५)
रागद्दोसविरहिया	१०६	( )
रागोरगगरलभरो	१०८	( )
रागो दोसो मोहो	११	(उत्त० गा० १०८०)
रूढनहकेसमंसुविडमुत्तंमि	६५	( )
लज्जाए गारवेण	१३०	(उत्त० नि० २१८)
लहुया तहाईजणणं	१३१	( )
लोइयतित्थे पुण	४४	(नव० प्र० गा० १७)
लोगववहारविरओ	१२२	(पंचा० गा० ४७५)
लोहीलोहकडाह दासीदास	६५	( )
विग्गहगए य सिद्धे	१३४	(व्य० उ० १० गा० ५२७)
वज्जइ सयमारंभ	१२२	(पंचा० गा० ४७०)
वज्जइ य संकिलिट्ठं	१३८	( )
वज्जेज्जा मोहकरणं	७३	(आव० चू० भा० २, पृ० २९१)
वयाइसु जं अंतो	१३९	( )
वरदंसणवयजुत्तो	१२०	(उपा० टी० प० १५)
वरसाहुगुणसमिद्धं	११३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०६)
वसहिकहनिसिज्जेंदिय	६८	(आव० स० गा० २)
वसिऊणवि सुहिमज्झे	१३५	(मर० गा० ३७७)
वसिऊण सुरनरीसर	१३६	(मर० गा० ३९०)
वसिकुणंति जे	१२१	(पंचा० टी० प० १६९)
वहभावाभावेवि हु	५७	( )

गाथाद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यंशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
वह मारण	१५१	(उप० मा० गा० १७७)	सत्तविहालोयविवज्जिए	६१	( )
विगलिंदियपंचिंदिय	१३५	(मर० गा० ३८३)	समणेणं सावएण	१४९	(अनु० गा० ३)
विज्जाओ(सव्वा उ)मंतजोगा	५९	( )	समभावंमि ठियप्पा	१३९	( )
वेयरणीउत्तरणं डहणं	६५	( )	सम्मत्तदायगाणं	१५७	(उप० मा० गा० २६९)
वेसवणेहिं हासं	१३८	(बृह० गा० १३०८)	सम्मत्तपरिब्भट्ठो	४४	(नव० प्र० गा० १५)
सइ दंसणाउ पेम्मं	१२१	( )	सम्मत्तं पत्तपि हु	४९	(नव० प्र० गा० १९)
सगणे आणाहाणी	१२७	(व्य० उ० १० गा० ४०३)	सम्मत्तंमि उ लद्धे	४, ८	(विशे० गा० १२२२)
सच्चं सग्गद्दारं	५९	( )	सम्मत्तमि उ लद्धे ठइयाइं	४४	(उप० मा० गा० २७०)
सच्चित्तं आहारं वज्जइ	१२१	(पंचा० गा० ४६७)	सम्मत्तंमिवि पत्ते	५३	(नव० प्र० गा० २३)
सच्चेण परिगहियं	२९	( )	सम्ममणुव्वयगुणवय	१२०	(पंचा० गा० ४६१)
सड्ढो पुण सथारग	१४३	( )	सम्मं अन्नायगुणे	९	(पंचव० गा० १०६४)
सत्तण्ह पयडीणं	४	(आव० नि० १०६)	सयमिह मिच्छद्दिट्ठी	१०	(श्रा० प्र० गा० ५०)
सत्तविहबंधगा होंति	९७	(श्रा० प्र० गा० ३०६)	सरणं कित्तण केली	७०	(नव० स्वो० प० २२)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
सरीरमुज्झिय जेण	१२६	(व्य० उ० १० गा० ५४२)	सव्वेसिं साहूण नमामि	८८	(आव० चू० भा० २, पृ० २८५)
सल्ल कामा विस कामा	७२	(उत्त० गा० २८०)	सवेसिं साहूण नमामि	८८	(आव० चू० भा० २, पृ० २९७)
सव्वजियाण जम्हा	८	(पंचव० गा० १०३८)	सव्वेसु कालपव्वेसु	१०३	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०४)
सव्वत्था पडिबद्धो	१४०	( )	सव्वेहिंपि जिणेहिं	२२	(आव० नि० ३३१)
सव्वसुहप्पभवाओ	१३४	(व्य० उ० १० गा० ५२६)	सहसब्भक्खाणाई	६०	(पंचा० टी० प० १२)
सव्वस्स समणसघस्स	१४४	( )	सहसंमुइयाए परत्तागरणेणं	११४	(पंचा० टी० प० २८)
सव्वति भाणिऊण विरई	९५	(आव० नि० ८००)	संकाइदोसविरहिय	११९	(उपा० टी० प० १५)
सव्वाओ अज्जाओ	१३४	(व्य० उ० १० गा० ५२५)	संकाए मालिन्नं जायइ	४५	(श्रा० प्र० गा० ८९)
सव्वा य कंदजाई	८३	(पचा० टी० प० १८)	संकप्पो सरंभो परिताव	५१	(प्रव० सा० गा० १०६०)
सव्वाहिवि लद्धीहिं	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५२३)	संघयणाभावाओ	१४३	(पंचव० गा० १६२१)
सव्वे जीवावि इच्छंति	६१	(दश० गा० २१९)	संजोगमूला जीवेण	१४५	( )
सव्वे य सव्वसंगेहिं	१०२	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०४)	संतेसुवि अत्थेसु तं	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०३)
सव्वे सव्वद्धाए	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५२२)	सथारओ उ मउओ	१३३	(व्य० उ० १० गा० ५१७)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
सपन्नदसणाई	३	(श्रा० प्र० गा० २)	सावगस्स अट्टहासो	९१	(श्रा० प्र० टी० पृ० १५७)
संबधिवंधवेसु य	१३५	(मर० गा० ३७६)	सावगेण न संजुत्ताणि	९२	(श्रा० प्र० टी० पृ० १५७)
सभरइ वारवारं मोक्कल	७८	(नव० प्र० गा० ६२)	सावगेण पोसहं पारंतेणं	१११	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०५)
सलेहणा उ तिविहा	१२८	(जीत० भा० गा० ३४२)	साहम्मिय थिरकरणे	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३४२)
संसयकरण सका	४५	(श्रा० प्र० गा० ८७)	साहूण वंदणेणं	१४६	(श्रा० प्र० गा० ३४०)
ससारगइद्दारं दारं	७१	( )	साहूण सावगाण य	११८	(श्रा० प्र० गा० ३६६)
साइयाराणुट्ठाणाओवि	९९	(पंचा० टी० प० २४)	साहूणं सगासाओ रयहरणं	११०	(आव० चू० भा० २, पृ० २९९)
सा चंडवायवीई	१५६	(आव० नि० ८३५)	साहू य साहुणीओ	१४४	( )
सामाइयम्मिव दुविहं	१०३	( )	सिक्खा दुविहा गाहा	९५	(श्रा० प्र० गा० २९५)
सामाइयति काउं	९८	(श्रा० प्र० गा० ३१३)	सिंगारकहाविरओ	१२१	(पचा० गा० ४६५)
सामाइयंमि उ कए	९६	(आव० नि० ८०१)	सुक्कसोणियसंभूयं	१५०	(पंचा० टी० प० ३५)
सामीजीवादत्तं तित्थयरेणं	६१, ६७	(प्रश्न० टी० प० १२५)	सुगुरूणं अलाभमि	१३०	( )
सावगधम्महिगारेवि	१२७	( )	सुण्हायं ते पुच्छति	३०	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६१)

गाथाद्यांशः	पृष्ठांकः	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि	गाथाद्यांशः	पृष्ठांक.	निर्दिष्टानिर्दिष्टस्थलानि
सुत्तं गणहररइयं	३	(बृह० स० गा० १५४)	सोऊण मुइयनर	१३६	(मर० गा० ३९३)
सुत्ता अत्थे जुत्तो	१०६	( )	सो वानरजूहवई	३०	(आव० नि० ८४७)
सुभगा होंतु णईओ	३१	(आव० चू० भा० १, पृ० ४६२)	सो सोयइ मच्चुजरा	१५६	(आव० नि० ८३८)
सुमरणमूलं च	४८	(पंचा० टी० प० २३)	सो होइ अभिगमरुई	१२	(उत्त० गा० १०८३)
सुरजालमाइएहिं	१३८	(बृह० गा० १३०९)	हसियललिओ	६९	( )
से णं एयारूवेण	१२४	(दशा० सू० ३०)	हीणस्सरहीणस्सरमिन्नस्सर	५९	( )
से णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ	१२०	(दशा० सू० २३)	होज्ज य परिमाणकडो	१००	(आव० चू० भा० २, पृ० ३०३)



द्वितीयं परिशिष्टम् ।

प्रथमपरिशिष्टगतसंज्ञास्पष्टीकरणम् ।

संज्ञा	स्पष्टीकरणं
अनु० गा०=	अनुयोगद्वारसूत्रगाथा
अनु० सू०=	अनुयोगद्वारसूत्रांकः
आचा० टी० प०=	आचारागटीकापत्रः
आचा० नि०=	आचारांगनिर्युक्तिगाथा
आतु० गा०=	आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकगाथा
आव० चू० भा० पृ०=	आवश्यकचूर्णेर्भागस्य पृष्ठम्
आव० नि०=	आवश्यकनिर्युक्तिगाथा
आव० स० गा०=	आवश्यकसंग्रहणिगाथा
आव० सू०=	आवश्यकसूत्रांकः
उत्त० गा०=	उत्तराध्ययनसूत्रगाथा
उत्त० टी० प०=	उत्तराध्ययनटीका (शांतिसूरि)
उत्त० नि०=	उत्तराध्ययननिर्युक्तिगाथा
उप० मा० गा०=	उपदेशमालागाथा
उपा० टी० प०=	उपाशकदशाटीकापत्रः
उपा० सू० =	उपाशकदशासूत्रांकः
ओघ० गा०=	ओघनिर्युक्तिगाथा
ओघ० भा०=	ओघनिर्युक्तिभाष्यगाथा
औप० सू०=	औपपातिकसूत्रांकः
जीत० भा० गा०=	जीतकल्पभाष्यगाथा
तदु० गा०=	तंदुलवैचारिकप्रकीर्णकगाथा

संज्ञा	स्पष्टीकरणं
दश० गा०=	दशवैकालिकसूत्रगाथा
दश० नि०=	दशवैकालिकनिर्युक्तिगाथा
दशा० नि०=	दशाश्रुतस्कधनिर्युक्तिगाथा
दशा० सू०=	दशाश्रुतस्कंधसूत्राकः
नव० प्र० गा०=	नवपदप्रकरणगाथा
नव० स्वो० प०=	नवपदप्रकरणस्वोपज्ञवृत्तिपत्रः
पंचव० गा०=	पंचवस्तुकगाथा
पंचा० गा०=	पंचाशकप्रकरणगाथा
पंचा० टी० प०=	पंचाशकप्रकरणटीकापत्रः
प्रज्ञा० गा०=	प्रज्ञापनासूत्रगाथा

संज्ञा	स्पष्टीकरणं
प्रव० सा० गा०=	प्रवचनसारोद्धारगाथा
प्रश्न० टी० प०=	प्रश्नव्याकरणटीकापत्रः
बृह० गा०=	बृहत्कल्पगाथा
बृह० सं० गा०=	बृहत्संग्रहणिगाथा
भक्त० गा०=	भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकगाथा
मर० गा०=	मरणसमाधिप्रकीर्णकगाथा
विशे० गा०=	विशेषावश्यकभाष्यगाथा
व्य० उ० गा०=	व्यवहारसूत्रोद्देशकगाथा
श्रा० प्र० गा०=	श्रावकप्रज्ञप्तिगाथा
श्रा० प्र० टी० पृ०=	श्रावकप्रज्ञप्तिटीकापृष्ठं

तृतीयं परिशिष्टम् ।

प्रमाणत्वेनोद्धृतानां ग्रंथानामकारादिक्रमः ।

ग्रन्थनाम	पृष्ठादि
अनुयोगदारसुत्तं	१४९
(अनुयोगद्वारसूत्रगाथा	परिशिष्टं १)
आगम	३, ७, ५२, ८५, ११०, ११७
आगमगाहा	९६
(आचारागटीका	परि० १)
(आचारागनिर्युक्तिः	परि० १)
आयारंग	९
आयाराई	११, १२
(आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम्	परि० १)
(आवश्यकचूर्णिः, भा. १, २	परि० १,५)
(,, निर्युक्तिः	परि० १)
(,, संग्रहणि	परि० १)
(आवश्यकसूत्रम्	परि० १)
आवस्सगचुन्नी	५२, ८२, १२४, १४४, १५८
आवस्सगचुन्नीअक्खरा	८७
आवस्सगवित्ति	१५८
आवस्सगसुत्तं	१५८
आवस्सयचुन्नीमाइ	५५
उत्तरज्झयणाई	११, १२
उत्तराध्ययनटीका (शातिसू०)	परि० ५)
(उत्तराध्ययननिर्युक्तिः	परि० १)
(उत्तराध्ययनसूत्रं	परि० १)
(उपदेशमाला	परि० १,५)
(उपाशकदशासूत्रं सटीकं	परि० १,५)
उवएसमालागाहा	५४
उववाइयाइ	१२
उवासगदसा	२३, ११९
उवासगदसाइ	१४९
(ओघनिर्युक्तिभाष्यगाथा	परि० १)
(औपपातिकसूत्रं	परि० १)
चुन्नी	६४, १००, १११
छज्जीवणिया	९६
जिणभद्दगणिखमासमणविरइयगाहा	१६
जोणीपाहुडाइं	३
(जीतकल्पभाष्य	परि० १)

ग्रन्थनाम	पृष्ठादि
ठाणगाहा	६२
णलिणगुम्मं	१४२
(तंदुलवैचारिकप्रकीर्णकं	परि० १)
(दशवैकालिकसूत्रं	परि० १)
(दशवैकालिकनिर्युक्तिः	परि० १)
(दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्तिः	परि० १)
(दशाश्रुतस्कंधसूत्र	परि० १)
दसासुत्त	१२०
दसासुयक्खंध	११९
दिट्ठिवाओ	१२
(नवपदप्रकरणं	परि० १)
(नवपदप्रकरण स्वोपज्ञवृत्तियुत	परि० १)
नवपय	१५८
नायाधम्मकहा	४४

ग्रन्थनाम	पृष्ठादि
पंचमगल	१०४
(पंचवस्तुकप्रकरणं	परि० १)
(पचाशकप्रकरणं	परि० १)
(पचाशकप्रकरणं सटीकं	परि० १)
पंचासगपगरणवित्ती	१
पचासगवित्ती	१५८
पिंडेसणज्झयण	९६
पुव्वायरियउवएसो	८४
(प्रज्ञापनासूत्रं	परि० १)
(प्रवचनसारोद्धारः	परि० १)
(प्रश्नव्याकरण सटीकं	परि० १)
(बृहत्कल्पसूत्र सनिर्युक्तिभाष्यं	परि० १)
(बृहत्सग्रहणि	परि० १)
(भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकं	परि० १)

ग्रन्थनाम	पृष्ठादि
मयंतरमवि	१२४
(मरणसमाधिप्रकीर्णकं	परि० १)
(विशेषावश्यकभाष्यं	परि० १)
वुड्ढभणियासामायारी	१११
(व्यवहारसूत्रं सनिर्युक्तिभाष्यं	परि० १)
(श्रावकप्रज्ञप्तिः	परि० १)
(श्रावकप्रज्ञप्तिः सवृत्तिका	परि० १)
समयभणियपगारो	१२४
सामाइयसामायारिं	११०
सामाइयसुत्तं	१०५, १०८
सामायारी	९१, ९२, ९३, १०३, ११०, ११८
सावयपन्नत्ति	१५८
सावयपन्नत्तिमाइ	२

चतुर्थं परिशिष्टम् ।

चूर्णिगतविशिष्टनाम्नामकारादिक्रमः ।

नाम	पृष्ठ
अग्गिकुमारो	१४१
अग्गियओ	१५४
अजियसेणो	९०
अज्जसुहत्थी	१४९
अट्ठावयं	८२
अद्धमागहभासा	३
अन्ने	७४, ७५, ७६, ८०, ८५, ९४, १००, १०५, ११०, ११४, ११५, ११७, १२६, १५१, १५४,
अपइट्ठाण	२९
अभओ	३७, ४८
अभयदेवसुणिवइ	१
अरहंनयो	१३४
अरहण्णत्तो	१३४, १३५
अरहमित्तो	१३४
अवंतीसुकुमालो	१४२
असोगवणिया	३१
अंगओ	२८
अगरक्खसड्ढो	८९
अगरिसि	२८
अंजणगो	८२
आणदो	२३
आवस्सगचुन्नियारो	११०
इब्भवड्ढगा (इसवड्ढगा)	३०
इला	४३
इलापुत्तो	२९, ४२, ४३
इलावद्धणो	४३
इंददत्तो	१५४
इदनागो	२९, ३४, ३५
इंदपुरं	१५४
इदमहो	४१
उज्जेणि	२१
उज्जेणी	१४२
उज्जेंतो	८२
उत्तरमहुरा	३९
उमासाइवायगो	१
उल्लगो	१९
एरावणो	२०, ४२
कण्हो	२९
कत्तिओ	२०
कत्तियसेट्ठी	४९
कयपुण्णओ	३७, ३८

नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं
कयपुण्णगपुत्तो	३७	गयपुरं	२२	चाणक्को	४९, १४२, १५३	दक्खिणपुत्तो	३९
कयपुन्नो	२९, ३५	गगदत्तो	४१	चारगो	१९	दक्खिणमहुरावाणियओ	३९
कविलाइ	१३	गंगा	२९, ४४, ९०	चित्तकूडं	८२	दत्तो	१३४
कंथारकुडगो	१४२	गुणचंदो	९०	चिलातीपुत्तो	१३	दसन्नो	२९
कामदेवो	२३	गेरुयओ	२०	चिलायिपुत्तो	१४२	दसन्नकूडं	४२
कालंजरो	२९	गोतमो	३४	जत्तादमगो	५४	दसन्नपुरं	४२
कुभकारकड	१४०, १४१	गोब्बरगाम	३८	जसदेवसूरि	१५८	दसन्नभद्दो	४२
कुरुजणवयो	२२	गोविंदवायगो	१२	जिणभद्दगणिखमासमणो	१६	दंडइ	१४०
केइ	१२६	चम्पा	२८	जियसत्तू	२०, १४०	दंडगारण्णं	१४१
कोसलगसावयो	१३८	चडकोसियो	२७, २८	जोइजसा	२८	दंडगी	१४०
कोसिउ	२७	चंदकुलं	१५८	जोतिजसा	२९	दाहिणामहुरा	३९
कोसियज्जो	२८	चंदगुत्तो	४९	तगरा	१३४	दुमहुरवणिया	२९
खदओ	१४०, १४१,१४२			थावच्चापुत्तो	५०	दोवई	१५५

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं
धणावहो	३५	पारसकूलाइ	१५३	वाहुबलि	२२	मरुओ	५३
धन्नंतरी	२९	पालको	१४०	बुद्धमयाइ	१३	महाकालो	१४३
धन्नो	१४२	पुप्फसालो	३८	बुद्धाइ	१९	महाकालाइ	१९
धारिणी	२४, १४०	पुप्फसालसुओ	२९, ३८	बुद्धाइदंसण	४६	महुरा	३९
नदमणियारो	४४	पुरंदरजसा	१४०, १४१	बेण्णायड	४३	महुरादुगवासि	३९
नदीसरवरं	४७	पोयणं	२४, २५	बोडियओ	१९	मंदरचूलिया	१५६
नेमनाहो	५०	पोयणपुरं	२४	भद्दा	३५,३८,१३४,१४२	मंदराइ	८२
नेव्वुइ	१५५	पोयणासमो	२५	भरहं	२३, १५२	मंदरो	२२
पयागाइ	४४	बंभदत्तो	१४५, १५१	भरहवासं	१५२	मासतुसाई	१०४
परिव्वायओ	१९	बहुलिया	१५४	भिक्खु	१९	मासतुसादि	११
पव्वयओ	१५४	बालचंदो	९०	भिक्खुउवासगपुत्तो	२१	मुणिसुव्वतो	१४१
पसण्णचंदो	२४,२५,२६,२७	बारवइ	६०	मगहाजणवयं	३८	मुनिसुव्वतसामी	१४१
पाडलिपुत्तो	४९	बारवती	२९, ३०, ४१	मगहाविसयो	३८	मुणिसुव्वयो	१४०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं	नाम	पृष्ठं
मुणिसुव्वयसामि	२०	वरुणो	२०, २१	सल्लरोहिणी	३०	सेणिओ	३८, ४८
मेयज्जरिसि	१३४	वसतपुरं	३०, ३४, ९०	सल्लुद्धरणि	३०	सेयणओ	३७
रायगिहं	३४, ३५, ४८	वसुदेवो	४१	ससरक्खाइ	१९	सेयविया	२७
रायललिओ	४१	विंझा	२९	सहस्सारं	२८, ३०	सेयंसो	२२
रुद्दओ	१९, २८, २९	विक्कमनिवो	१५८	सावत्थी	१४०, १४१	सेलगराया	५०
लंखगकुलं	४३	विण्हु	१९	सालिभद्दो	१४२	सोमचंदो	२४, २६
लंखगचेडी	४३	वीरगणि	१५८	सिरिचंदसूरि	१५८	सोमप्पभो	२२
वइरनाभो	२३	वीरभद्दो	१९	सिवरायरिसि	२८	सोरट्ठो	२१
वक्कलचीरि	२३,२४,२६,२७	वेयरणी	२९, ३०	सिवो	२९, ३८	सोरट्ठगो सड्ढो	२१
वच्छबारसि	४४	समेयो	८२	सुपइट्ठो	८२	सोरट्ठसड्ढगो	४९
वद्धमाणो	१	सक्को	२०, ४२	सुबुद्धी	२२	सोहंमो	२०
वद्धमाणसामी	२७, ३७	सयंभूरमणमच्छा	२३	सुरिंददत्तो	१५५	हत्थिणाउरं	२०
				सेज्जंसो	२२, २३	हत्थिणापुरं	४०

पंचमं परिशिष्टम् ।

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णिगतदृष्टान्ताः ।

सम्यक्त्वस्याकारेषु दृष्टान्ताः ।

विषयः	दृष्टान्तः	पृष्ठांकः	स्थलं
राजाभियोगे	कार्तिकः	२०	(आव० चू० भा० २, पृ० २७६)
गणाभियोगे	वरुणः	२०	(„ „ „ पृ० २७७)
देवाभियोगे	गृहस्थः	२१	(„ „ „ पृ० २७७)
गुरुनिग्रहे	भिक्षूपासकपुत्रः	२१	(„ „ „ पृ० २७७)
वृत्तिकान्तारे	सौराष्ट्रश्राद्धः	२१	(„ „ „ पृ० २७८)

सम्यक्त्वलाभे दृष्टान्ताः

विषयः	दृष्टान्तः	पृष्ठांकः	स्थलं
दृष्टात्	श्रेयांसः	२२	(आव० चू० भा० २, पृ० ४५२)
श्रुतात्	आनन्दादि.	२३	(उपाशदशाङ्ग)
अनुभूतात्	वल्कलचीरी	२३	(आव० चू० भा० २, पृ० ४५५)

विषयः	दृष्टान्तः	:	स्थलं
कर्मक्षयात्	चण्डकौशिकः	२७	(आव० चू० भा० २, पृ० ४६०)
कर्मोपशमात्	अङ्गर्षिः	२८	(,, ,, ,, पृ० ४६०)
अनुकंपातः	वैतरणीवैद्यः	२९	(,, ,, ,, पृ० ४६०)
अकामनिर्जरातः	मेण्ढः	३०	(,, ,, ,, पृ० ४६१)
बालतपसः	इंद्रनागः	३४	(,, ,, ,, पृ० ४६५)
सुपात्रदानतः	कृतपुन्यः	३५	(,, ,, ,, पृ० ४६६)
विनयात्	पुष्पशालसुतः	३८	(,, ,, ,, पृ० ४६९)
विभंगतः	शिवर्षिः	३८	(,, ,, ,, पृ० ४६९)
सयोगवियोगाभ्याम्	मथुरावणिजौ	३९	(,, ,, ,, पृ० ४७२)
व्यसनतः	गङ्गदत्तः	४०	(,, ,, ,, पृ० ४७४)
उत्सवात्	आभीरः	४१	(,, ,, ,, पृ० ४७५)
ऋद्धिदर्शनात्	दशार्णभद्रः	४२	(,, ,, ,, पृ० ४७५)
असत्कारतः	इलापुत्रः	४२	(,, ,, ,, पृ० ४८४)

सम्यक्त्वातिचारेषु दृष्टान्ताः

विषय	दृष्टान्तः	पृष्ठांकः	स्थलं
शंकायां	पेयापायकः	४५	(आव० चू० मा० २, पृ० २७६)
काङ्क्षायां	राजामात्यौ	४६	(,, ,, ,, पृ० २७९)
विचिकित्सायां	विद्यासाधकश्राद्धः	४७	(,, ,, ,, पृ० २७९)
विद्वज्जुगुप्सायां	श्रावकसुता	४८	(,, ,, ,, पृ० २८०)
परपाषण्डप्रशंसाया	चाणिक्यः	४९	(,, ,, ,, पृ० २८१)
प्राणातिपाते	पतिमारिका	५३	(,, ,, ,, पृ० ६०)
	यात्रादमकश्च	५४	(उप० मा० गा० १२२)
अनर्थदण्डविरतौ	अङ्गरक्षकश्राद्धः	९०	( )
उष्णपरीषहे	अर्हन्नकः	१३४	(उत्त० टी० प० ८९)
अंतक्रियायां	स्कन्धकशिष्याः	१४०	(उत्त० टी० प० ११५)
पादपोपगमने	अवंतिसुकुमालः	१४२	(आव० चू० मा० २, पृ० १५७)
मानुष्यभवदुर्लभत्वे	चोल्लकादीनि (१०)	१५१	(आव० चू० मा० १, पृ० ४४६)

.o:

इति श्रीश्रीचन्द्रसूरिशिष्याचार्यश्रीयशोदेवदृब्धा—

आद्य(श्रावकधर्म)पञ्चाशकचूर्णिः समाप्ता ॥

इति श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई—जैन-पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०२॥